CAPTURING STORIES. SHARING IMPACT.

MEDIA *Clips* FILE

DOCUMENTING TODAY, INSPIRING TOMORROW.

सीएसआईआर
भारत का नवाचार इंजन
CSIR
The Innovation Engine of India

केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान, रुड़की
Central Building Research Institute, Roorkee
सुरक्षित निर्माण, सुरक्षित भविष्य
Safe Buildings, Sustainable Future

सीएसआईआर–सीबीआरआई में भारत की पहली बहु–अक्षीय इंटरैक्टिव परीक्षण सुविधा का शुभारंभ

रुड़की (दैनिक हाक): भूकंपरोधी निर्माण प्रौद्योगिकियों को सुदृढ़ करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम के रूप में सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-सीबीआरआई), रुड़की में राष्ट्रीय भूकंप अभियांत्रिकी परीक्षण सुविधा (NEETF) के अंतर्गत विकसित बहु-अक्षीय परीक्षण (MAT) सुविधा का शुक्रवार को उद्घाटन किया गया।

इस सुविधा का उद्घाटन डॉ. एन. कलैसेल्वी, महानिदेशक, सीएसआईआर एवं सचिव, डीएसआईआर द्वारा प्रो. आर. प्रदीप कुमार, निदेशक, सीएसआईआर-सीबीआरआई की उपस्थिति में किया गया। इस सुविधा को सीएसआईआर-सीबीआरआई के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. चंचल सोनकर ने मुख्य वैज्ञानिक डॉ. अजय चौरसिया के मार्गदर्शन में विकसित किया है। यह सुविधा भारत में संरचनात्मक अवयवों के लिए अपनी तरह की पहली बहु-अक्षीय इंटरैक्टिव लोडिंग परीक्षण सुविधा है। यह सुविधा आरसीसी फ्रेम के भीतर चिनाई की इन्फिल दीवारों, अल्ट्रा-हाई परफॉर्मेंस कंक्रीट (UHPC) की दीवारों तथा अन्य संरचनात्मक दीवार प्रणालियों का

पूर्ण-पैमाने पर संयुक्त अक्षीय, पार्श्व एवं आउट-ऑफ-प्लेन भार के अंतर्गत परीक्षण करने में सक्षम है। इसके माध्यम से भूकंप के दौरान संरचनाओं के वास्तविक व्यवहार के अनुरूप उनके प्रदर्शन का आकलन किया जा सकता है, जिसमें दरारों का विकास, कठोरता में कमी, ऊर्जा अवशोषण तथा विफलता तंत्र जैसे पहलू शामिल हैं।

अनुसंधान एवं विकास की दिशा में सीएसआईआर-सीबीआरआई द्वारा G+2 मंजिला प्रीफैब्रिकेटेड हाइब्रिड लाइट-गेज स्टील (PH-LGS) भवन प्रणाली भी विकसित की गई है, जिसका स्यूडो-स्टैटिक परीक्षण कृत्रिम भूकंपीय भार के अंतर्गत किया जाना है। इस प्रणाली में बिल्ट-अप LG कॉलम, LG जॉइस्ट ट्रस तथा डेक पैनल पर आरसीसी स्लैब का उपयोग किया गया है। हल्की एवं मॉड्यूलर संरचना होने के कारण इसका निर्माण न्यूनतम साइट कार्य के साथ तेजी से किया जा सकता है। 290 वर्ग फुट क्षेत्रफल वाले प्रोटोटाइप की संरचनात्मक फ्रेमिंग मात्र पांच दिनों में पूरी की गई। PH-LGS प्रणाली में G+10 मंजिल तक के भवनों में संभावित उपयोग की क्षमता है और यह पारंपरिक आरसीसी निर्माण के एक टिकाऊ विकल्प के रूप में कम कार्बन फुटप्रिंट प्रदान कर सकती है। इस अवसर पर NEETF प्रयोगशाला में विकसित अन्य उन्नत परीक्षण सुविधाओं एवं अनुसंधान गतिविधियों का भी प्रदर्शन किया गया। आशीष कपूर द्वारा PPVC के पूर्ण-पैमाने पर स्यूडो-स्टैटिक परीक्षण, जिसमें रेट्रोफिटिंग के बाद उसके प्रदर्शन का मूल्यांकन भी शामिल था, प्रस्तुत किया गया। EPS कोर पैनल प्रणाली के अक्षीय प्रदर्शन एवं नवीन कनेक्शन प्रणाली के विकास से संबंधित अनुसंधान एम.एम. दलबेहेड़ा द्वारा प्रस्तुत किया गया, जबकि बांस संरचनाओं से संबंधित अनुसंधान कार्य एम.एम. दलबेहेड़ा एवं आशीष पिप्पल द्वारा संयुक्त रूप से प्रस्तुत किया गया। इन सभी परीक्षण सुविधाओं एवं अनुसंधान कार्यों के बारे में डॉ. एन. कलैसेल्वी, महानिदेशक, सीएसआईआर को उनके भ्रमण के दौरान विस्तार से अवगत कराया गया। NEETF प्रयोगशाला में परीक्षण सुविधाओं के समग्र समन्वय एवं विकास में सुगम, सचिन, सूरज एवं सोनू की महत्वपूर्ण भूमिका रही। इन उपलब्धियों से पूर्ण-पैमाने पर संरचनात्मक परीक्षण तथा अगली पीढ़ी की भूकंपरोधी और टिकाऊ निर्माण प्रौद्योगिकियों के विकास में सीएसआईआर-सीबीआरआई की क्षमताओं को और मजबूती मिलने की उम्मीद है।

उपस्थित रहे। संवाद

गर्भवती महिला की मौत, आठ पर प्राथमिकी दर्ज

हरिद्वार। ज्वालापुर कोतवाली क्षेत्र में नौ माह की गर्भवती महिला की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत के मामले में पुलिस ने पति समेत ससुराल पक्ष के आठ लोगों के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज की है। मृतका के पिता ने ससुरालियों पर दहेज के लिए मानसिक और शारीरिक उत्पीड़न और बेटी की हत्या करने का आरोप लगाया है। पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी है। पुलिस के अनुसार, कनखल के इंद्रा बस्ती, दक्ष रोड निवासी संजीव ने पुलिस को दी तहरीर में बताया कि उनकी बेटी सोनम का विवाह 28 फरवरी 2023 को ज्वालापुर की घास मंडी निवासी आकाश के साथ हुआ था। आरोप है कि शादी के बाद से ही पति आकाश, सास सुधा, ननद अलका, सपना और अन्नु, जेठानी नीतू, अमित और सुमित दहेज की मांग को लेकर सोनम को प्रताड़ित करते थे। 22 अगस्त की दोपहर करीब तीन बजे आकाश ने सोनम की चाची को फोन कर उसकी मौत की सूचना दी। संवाद

व्यवस्था के दावे किए गए थे, लेकिन उर्स के दौरान जगह-जगह अव्यवस्थाएं दिखाई दीं। सफाई के साथ यातायात व्यवस्था को लेकर भी जायरीनों को परेशानी का सामना करना पड़ा।

रुड़की रोड के किनारे और मेला क्षेत्र के बाजारों में जगह-जगह कूड़े के बड़े-बड़े ढेर लगे हुए हैं। कूड़े से उठ रही दुर्गंध के कारण लोगों का सड़क से गुजरना तक मुश्किल हो रहा है।

बारिश के बाद स्थिति और खराब हो गई है। जगह-जगह कीचड़ और जमा गंदगी के कारण मेला क्षेत्र में आने-जाने वाले जायरीनों को परेशानी उठानी पड़ रही है। अब देशभर से आए जायरीनों की वापसी का सिलसिला जारी है। ऐसे में उन्हें गंदगी और अव्यवस्थाओं के बीच से होकर गुजरना पड़ रहा है।

स्थानीय लोगों का कहना है कि उर्स से पहले प्रशासन की ओर से व्यवस्थाओं को लेकर बड़े-बड़े दावे किए गए लेकिन मौके पर स्थिति इसके विपरीत नजर आ रही है। सफाई के नाम पर जगह-जगह कूड़े के ढेर लगे हैं और बारिश के बाद कीचड़ ने परेशानी और बढ़ा दी है। लोगों का कहना है कि यदि नियमित रूप से कूड़ा उठाया जाता और सफाई कराई जाती तो सड़क किनारे इस तरह गंदगी के ढेर नहीं लगते।

सीबीआरआई में 'सीएसआईआर ग्रामसेतु' पोर्टल का उद्घाटन

ग्रामीण विकास, डिजिटल नवाचार और उन्नत परीक्षण को मिलेगा बढ़ावा

संवाद न्यूज एजेंसी

रुड़की। सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-सीबीआरआई) में शुक्रवार को 'सीएसआईआर ग्रामसेतुः सीएसआईआर स्मार्ट विलेज वेब पोर्टल' का शुभारंभ तथा केंद्रीय परीक्षण सुविधा (सेंट्रल टेस्टिंग फैसिलिटी) का उद्घाटन किया गया।

कार्यक्रम का उद्घाटन सीएसआईआर की महानिदेशक एवं डीएसआईआर की सचिव डॉ. एन. कलैसेल्वी ने किया। इस अवसर पर सीएसआईआर-सीबीआरआई के निदेशक प्रो. आर प्रदीप कुमार रामनचारला समेत वैज्ञानिक, तकनीकी अधिकारी और कर्मचारी मौजूद रहे।

'सीएसआईआर ग्रामसेतु' एक डिजिटल

सीबीआरआई में पोर्टल और केंद्रीय परीक्षण सुविधा का उद्घाटन किया गया। स्रोत: संस्थान

प्लेटफॉर्म है जिसे सीएसआईआर स्मार्ट विलेज मिशन के अंतर्गत विकसित किया गया है। पोर्टल पर 17 सीएसआईआर प्रयोगशालाओं द्वारा किए जा रहे कार्यों की जानकारी भी उपलब्ध रहेगी।

कार्यक्रम में स्मार्ट विलेज मिशन के आधिकारिक लोगो का भी अनावरण किया गया। डॉ. एसके पाणिग्राही के नेतृत्व में विकसित यह सुविधा निर्माण तकनीकों और ...न्नत परीक्षणों को मजबूती प्रदान करेगी।

बातचीत

कुंभ सनातन के उत्था...

माई सिटी रिपोर्टर

हरिद्वार। कैबिनेट मंत्री मदन कौशिक और जयराम आश्रम के परमाध्यक्ष ब्रह्मस्वरूप ब्रह्मचारी ने शनिवार को कनखल आश्रम में जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी राजराजेश्वराश्रम महाराज से मुलाकात की। उन्होंने शंकराचार्य से आशीर्वाद प्राप्त किया। इस भेंट के दौरान सनातन धर्म की महत्ता और आगामी कुंभ 2027 के आयोजन पर विस्तृत चर्चा हुई।

जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी राजराजेश्वराश्रम महाराज ने विश्व में सनातन धर्म की महत्ता पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि आज विश्व इसी धर्म और संस्कृति को अपना रहा है। उन्होंने कहा कि श्रावण मास में महादेव शिव की महिमा अद्भुत दर्शन वैश्विक स्तर पर किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि इंडोनेशिया में आज भी महादेव का सबसे बड़ा शिवालय

जगद्गुरु ...

स्थापित है। वहां के ... पूजा करते हैं।

युवा जागरण

11 सितंबर को बिड़ला परिसर में मतदान और उसी दिन मतगणना के बाद परिणाम घोषित किए जाएंगे

टिकाऊ निर्माण प्रौद्योगिकियों में बढ़ाया कदम

केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान में भारत की पहली बहु-अक्षीय इंटरैक्टिव परीक्षण सुविधा का शुभारंभ

जागरण संवाददाता, रुड़की: भूकंपरोधी और टिकाऊ भवन निर्माण तकनीक को बढ़ावा देने की दिशा में केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआइ) रुड़की ने महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की है। संस्थान में राष्ट्रीय भूकंप अभियांत्रिकी परीक्षण सुविधा के अंतर्गत विकसित बहु-अक्षीय परीक्षण सुविधा का शुक्रवार को उद्घाटन किया गया। इसके माध्यम से भूकंप के दौरान संरचनाओं के वास्तविक व्यवहार के अनुरूप उनके प्रदर्शन का आकलन किया जा सकता है। जिसमें दरारों का विकास, कठोरता में कमी, ऊर्जा अवशोषण तथा विफलता तंत्र जैसे पहलू शामिल हैं।

सीबीआरआइ रुड़की परिसर में शुक्रवार को वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआइआर) की महानिदेशक और वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान विभाग (डीएसआइआर) की सचिव डा. एन. कलैसेल्वी ने बहु-अक्षीय परीक्षण सुविधा का उद्घाटन किया। इस सुविधा को सीबीआरआइ के प्रधान विज्ञानी डा. चंचल सोनकर ने मुख्य विज्ञानी डा. अजय चौरसिया के मार्गदर्शन में विकसित किया है। यह सुविधा भारत में संरचनात्मक अवयवों के लिए अपनी तरह की पहली बहु-अक्षीय इंटरैक्टिव लोडिंग परीक्षण सुविधा है। यह सुविधा आरसीसी फ्रेम के भीतर चिनाई की इन्फिल दीवारों, अल्ट्रा-हाई परफार्मेंस कंक्रीट की दीवारों तथा अन्य संरचनात्मक दीवार प्रणालियों का पूर्ण-पैमाने पर संयुक्त अक्षीय, पार्श्व एवं आउट-आफ-प्लेन भार के अंतर्गत परीक्षण करने में सक्षम है। वहीं अनुसंधान एवं विकास की दिशा में सीबीआरआइ ने जी प्लस टू मंजिला प्रीफैब्रिकेटेड हाइब्रिड लाइट-गेज स्टील भवन प्रणाली भी विकसित की गई है। जिसका स्यूडो-स्टैटिक परीक्षण कृत्रिम भूकंपीय भार के अंतर्गत किया जाना है। इस प्रणाली में बिल्ट-अप एलजीएस कालम, एलजीएस जाइस्ट ट्रस तथा डेक पैनल पर आरसीसी स्लैब का उपयोग किया गया है। हल्की एवं माड्यूलर संरचना होने के कारण इसका निर्माण न्यूनतम साइट कार्य के साथ तेजी से किया जा सकता है। सीबीआरआइ रुड़की के निदेशक प्रो. आर प्रदीप कुमार ने कहा कि इन उपलब्धियों से पूर्ण-पैमाने पर संरचनात्मक परीक्षण तथा अगली पीढ़ी की भूकंपरोधी और टिकाऊ निर्माण प्रौद्योगिकियों के विकास में सीएसआइआर-सीबीआरआइ की क्षमताओं को और मजबूती मिलने की उम्मीद है। इस मौके पर मुख्य विज्ञानी डा. अजय चौरसिया आदि उपस्थित रहे।

केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान रुड़की में विकसित बहु-अक्षीय परीक्षण (एमएटी) सुविधा का उद्घाटन करती वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद की महानिदेशक डा. एन. कलैसेल्वी • सौजन्य-संस्थान

संरचनात्मक फ्रेमिंग मात्र पांच दिनों में पूरी

290 वर्ग फुट क्षेत्रफल वाले प्रोटोटाइप की संरचनात्मक फ्रेमिंग मात्र पांच दिनों में पूरी की गई। पीएच-एलजीएस प्रणाली में जी प्लस टेन मंजिल तक के भवनों में संभावित उपयोग की क्षमता है और यह पारंपरिक आरसीसी निर्माण के एक टिकाऊ विकल्प के रूप में कम कार्बन फुटप्रिंट प्रदान कर सकती है।

अनुसंधान गतिविधियों का प्रदर्शन

एनईईटीएफ प्रयोगशाला में विकसित अन्य उन्नत परीक्षण सुविधाओं एवं अनुसंधान गतिविधियों का भी प्रदर्शन किया गया। आशीष कपूर द्वारा पीपीवीसी के पूर्ण-पैमाने पर स्यूडो-स्टैटिक परीक्षण, जिसमें रेट्रोफिटिंग के बाद उसके प्रदर्शन का मूल्यांकन भी शामिल था। ईपीएस कोर पैनल प्रणाली के अक्षीय प्रदर्शन एवं नवीन कनेक्शन प्रणाली के विकास से संबंधित अनुसंधान एमएम दलेबहेड़ा ने प्रस्तुत किया। जबकि बांस संरचनाओं से संबंधित अनुसंधान कार्य एमएम दलेबहेड़ा एवं आशीष पिप्पल ने संयुक्त रूप से प्रस्तुत किया। अनुसंधान कार्यों के बारे में महानिदेशक डा. एन कलैसेल्वी को अवगत कराया गया।

हिमनद झील : उत्तराखंड ने अर्ली वार्निंग सिस्टम विकसित करने में बढ़ाए कदम

तीन साल से कार्य कर रहा है सीबीआरआई, अब परीक्षण की तैयारी

विजेंद्र श्रीवास्तव

देहरादून। उत्तराखंड में हिमनद झीलों पर अर्ली वार्निंग सिस्टम विकसित करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम बढ़े हैं। सूत्रों के अनुसार केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) रुड़की इस सिस्टम पर करीब तीन साल से कार्य कर रहा है। अब इसके परीक्षण की तैयारी है और इसे पायलट प्रोजेक्ट के तौर पर वसुंधरा झील पर लगाने की योजना है। आपदा प्रबंधन विभाग ने सैद्धांतिक तौर पर परीक्षण के लिए सहमति दे दी है।

हिमनद झीलों के जल विस्फोट के जोखिम को देखते हुए यह कदम उठाए जा रहे हैं। प्रदेश में भी संवेदनशील हिमनद झीलों की पहचान, उनका अध्ययन करने के साथ ही अर्ली वार्निंग सिस्टम लगाए जाने हैं। इसके लिए राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण ने उत्तराखंड आपदा प्रबंधन प्राधिकरण को राशि दी हुई है।

आपदा प्रबंधन विभाग सैद्धांतिक तौर पर सहमत

आपदा प्रबंधन विभाग के सचिव विनोद कुमार सुमन ने बताया कि सीबीआरआई अर्ली वार्निंग सिस्टम को लेकर कार्य कर रहा है। यह प्रयास बहुत सकारात्मक है। अब इसके परीक्षण के तहत चमोली जिले में स्थित वसुंधरा झील पर लगाया जाना है। इसके लिए आपदा प्रबंधन विभाग सैद्धांतिक तौर पर सहमत है। जहां पर लगाया जाना है, वहां पर कम्युनिकेशन समेत कई चुनौतियां भी हैं।

कुछ इस तरह काम करेगा सिस्टम

जानकारी के मुताबिक अर्ली वार्निंग सिस्टम में सेंसर से लेकर सीसीटीवी कैमरे लगे होंगे। इसके माध्यम से रियल टाइम में झील का जल स्तर, उसके फ्लो और ऊंचाई की जानकारी उपलब्ध होगी। झील के आसपास के कैचमेंट एरिया और मौसम की जानकारी भी उपलब्ध हो सकेगी। कैमरे रियल टाइम फोटोग्राफ कंट्रोल रूम में पहुंचाएंगे, जिससे सेंसर की जानकारी की पुष्टि हो सके। कंट्रोल रूम के माध्यम से ही अलर्ट जारी करने की व्यवस्था होगी। इस पायलेट प्रोजेक्ट के अनुभव के आधार पर अन्य हिमनद झीलों पर सिस्टम लगाने की संभावनाओं पर कार्य हो सकेगा। वहीं, आपदा प्रबंधन एवं पुनर्वास मंत्री मदन कौशिक ने बताया कि हिमनद झीलों के अध्ययन को लेकर कार्य किया जा रहा है। सीबीआरआई ने कोई पहल की है, तो उसे भी अपने साथ जोड़ा जाएगा।

← **Post**

Press Trust of India
@PTI_News

VIDEO | Nepal floods: Warm, humid weather triggered an ice collapse from 17,000 feet, with the impact equivalent to a 5.2-magnitude earthquake, causing flash floods, says CBRI Director Pradeep Kumar.

5:55 PM · Aug 27, 2026 · **5.6K** Views

2 6

https://x.com/pti_news/status/2092951716304134348?s=46

← **Post**

BEG & Centre, Roorkee — The Bengal Sappers and CSIR-CBRI have further strengthened their strategic partnership through an advanced Junior Engineers' Promotion Programme, focusing on modern construction technologies, innovative materials and next-generation engineering practices.

By integrating CSIR-CBRI's cutting-edge scientific research with the Bengal Sappers' field-proven engineering expertise, the collaboration is driving innovation, enhancing technical capabilities and accelerating the delivery of future-ready engineering solutions for the Armed Forces.

Research meets field excellence — Engineering the future, together. IN

#BengalSappers #BEGAndCentre #CSIRCBRI #IndianArmy #CorpsOfEngineers #MilitaryEngineering #EngineeringExcellence #DefenceInnovation #FutureReadyInfrastructure #ModernConstruction #IndigenousTechnology #AtmanirbharBharat #NationFirst #ServiceBeforeSelf

@HQ_IDS_India
@DefenceMinIndia
@SpokespersonMoD
@suryacommand
@UBArea_IA
@artrac_ia
@ANI

Join the conversation

रुड़की

रुड़की में MES के लिए भवन निर्माण तकनीकों पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण शुरू

August 17, 2026 Suresh Baluni

रुड़की। बीईजी एंड सेंटर, रुड़की में सीएसआईआर-सीबीआरआई की ओर से MES के प्रथम कैप्सूल J-01 के लिए 'भवन निर्माण तकनीकों में प्रगति' विषय पर तीन दिवसीय कौशल विकास कार्यक्रम शुरू किया गया। 17 से 19 अगस्त तक चलने वाले प्रशिक्षण में 18 प्रतिभागी भाग ले रहे हैं।

कार्यक्रम का उद्देश्य प्रतिभागियों को आधुनिक भवन निर्माण तकनीकों की तकनीकी जानकारी और व्यावहारिक समझ उपलब्ध कराना है। प्रशिक्षण में टिकाऊ एवं अभिनव निर्माण सामग्री, प्रीफैब्रिकेटेड एवं मॉड्यूलर निर्माण, उभरती निर्माण तकनीकें, गुणवत्ता नियंत्रण और ऊर्जा-कुशल भवन सहित विभिन्न विषयों पर जानकारी दी जाएगी।

अमर उजाला
amarujala.com बड़ा उलटफेर विश्व बैडमिंटन चैंपियनशिप में आयुष ने विश्व नंबर-1 शी को हराया...स्पोर्ट्स

बीईजी एंड सेंटर में प्रशिक्षण शुरू

रुड़की। बीईजी एंड सेंटर रुड़की में सीएसआईआर-सीबीआरआई की ओर से एमईएस के प्रथम कैप्सूल के लिए 'भवन निर्माण तकनीकों में प्रगति' विषय पर तीन दिवसीय कौशल विकास कार्यक्रम शुरू हुआ। 17 से 19 अगस्त तक चलने वाले प्रशिक्षण में 18 प्रतिभागी हिस्सा ले रहे हैं। उद्घाटन सत्र में प्रमोशन कोर्स कंपनी के ऑफिसर कमांडिंग लेफ्टिनेंट कर्नल जीएस हवाल ने स्वागत संबोधन दिया। इस दौरान बीईजी एंड सेंटर के कमांडेंट ब्रिगेडियर गौरव अत्रेया और सीबीआरआई निदेशक प्रो. आर प्रदीप कुमार मौजूद रहे। डॉ. नीरज जैन, वैज्ञानिक 'एफ' एवं प्रमुख, ओडीएस ने प्रशिक्षण की रूपरेखा और उद्देश्यों की जानकारी दी। प्रो. आर प्रदीप कुमार ने सुरक्षित, टिकाऊ और मजबूत निर्माण व्यवस्था के महत्व पर प्रकाश डाला। ब्रिगेडियर गौरव अत्रेया ने तकनीकी दक्षता को आवश्यक बताते हुए प्रतिभागियों को व्यावसायिक [illegible]

हिन्दुस्तान

भवन निर्माण की नई तकनीकों की ट्रेनिंग

रुड़की। सीबीआरआई की ओर से बीईजी एंड सेंटर में एमईएस के प्रथम कैप्सूल जे-01 के लिए भवन निर्माण तकनीकों में प्रगति विषय पर तीन दिवसीय कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू हुआ।

इसमें 18 प्रतिभागी हिस्सा ले रहे हैं। कार्यक्रम का उद्देश्य प्रतिभागियों को आधुनिक भवन निर्माण तकनीकों का तकनीकी ज्ञान और व्यावहारिक समझ प्रदान करना है। प्रशिक्षण में टिकाऊ एवं अभिनव निर्माण सामग्री, प्रीफैब्रिकेटेड व मॉड्यूलर निर्माण, उभरती निर्माण तकनीकें, गुणवत्ता नियंत्रण और ऊर्जा-कुशल भवनों कीजानकारी दी जाएगी।

देहरादून, मंगलवार
18 अगस्त, 2026
हरिद्वार संस्करण *

दैनिक जागरण

उत्कृष्ट कार्य निष्पादन को बताया जरूरी

- सीबीआरआइ ने भवन निर्माण तकनीकों पर कौशल विकास कार्यक्रम का किया शुभारंभ

विज्ञानी डा. नीरज जैन ने आधुनिक भवन निर्माण तकनीकों के महत्व पर डाला प्रकाश

सीबीआरआइ रुड़की ने बीईजी एंड सेंटर रुड़की में भवन निर्माण तकनीकों में प्रगति विषय पर तीन दिवसीय कौशल विकास कार्यक्रम का शुभारंभ किया ● सामार संस्थान

जागरण संवाददाता, रुड़की : केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआइ) ने भवन निर्माण तकनीकों में प्रगति विषय पर तीन दिवसीय कौशल विकास कार्यक्रम का शुभारंभ किया। यह कार्यक्रम पीसी कंपनी, बीईजी एंड सेंटर रुड़की में आयोजित किया गया। इसका उद्देश्य प्रतिभागियों को आधुनिक भवन निर्माण तकनीकों से संबंधित तकनीकी ज्ञान और व्यावहारिक समझ प्रदान करना है, साथ ही निर्माण क्षेत्र में गुणवत्ता, नवाचार और व्यावसायिक उत्कृष्टता को बढ़ावा देना है।

कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र में सीबीआरआइ के निदेशक प्रो. आर प्रदीप कुमार ने भवन निर्माण व विज्ञान के क्षेत्र में संस्थान के योगदान और उपलब्धियों पर प्रकाश डाला। उन्होंने "रोटी, कपड़ा और मकान" की आवश्यकता का उल्लेख करते हुए सुरक्षित और टिकाऊ निर्माण व्यवस्था के महत्व को रेखांकित किया। उन्होंने प्रतिभागियों से तकनीकी सत्रों में सक्रिय भागीदारी करने और सीबीआरआइ की तकनीकी सुविधाओं का लाभ उठाने का आह्वान किया। बीईजी एंड सेंटर के कमांडेंट ब्रिगेडियर गौरव अत्रेया ने निर्माण तकनीकों के विकास और एमईएस द्वारा किए जा रहे उन्नत निर्माण कार्यों पर चर्चा की। उन्होंने कार्य की गुणवत्ता और निष्पादन में उत्कृष्टता की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने प्रतिभागियों को अपने व्यावसायिक दायित्वों के प्रति बौद्धिक, विश्लेषणात्मक एवं गुणवत्ता-केंद्रित दृष्टिकोण अपनाने के लिए प्रेरित किया।

सीबीआरआइ के विज्ञानी डा. नीरज जैन ने प्रशिक्षण कार्यक्रम की रूपरेखा और आधुनिक भवन निर्माण तकनीकों के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि यह प्रशिक्षण नवीनतम विकास की व्यावहारिक जानकारी और तकनीकी अनुभव प्रदान करेगा।

कार्यक्रम में प्रमोशन कोर्स कंपनी के आफिसर कमांडिंग लेफ्टिनेंट कर्नल जीएस हवाल, डा. एमडी मुस्लिम अंसारी, डा. एनके बंजारा, डा. सीएस मीणा, रजनीश, राशी, अमजद, अनिल सहित सीबीआरआइ के अन्य अधिकारी व कर्मचारी उपस्थित रहे।

CSIR-CBRI in the Limelight | 15.08.2026

सीएसआईआर-सीबीआरआई में मनाया गया भारत का 80वाँ स्वतंत्रता दिवस

By Sahara Live News

AUG 15, 2026

Day in Roorkee

Director calls for science-led solutions for safer, sustainable and disaster-resilient infrastructure

Roorkee, 15 August 2026: The CSIR-Central Building Research Institute (CSIR-CBRI) celebrated India's 80th Independence Day with patriotic fervour at its Roorkee campus. Director Prof. Pradeep Kumar Ramancharla hoisted the National Flag in the presence of scientists, officers, employees and their families.

In his address, Prof. Ramancharla paid tribute to the freedom fighters and extended Independence Day greetings to the institute community. He said Independence was not only a reminder of India's proud history but also of every citizen's responsibility to contribute to the nation's development. He stressed the role of scientific and technical institutions in addressing society's needs through research and innovation. Referring to CSIR-CBRI's work in building science and construction technology, he called for sustained efforts to develop safer, sustainable and disaster-resilient infrastructure and to address emerging challenges in the built environment.

Cultural presentations added colour to the celebrations. Children from the CBRI Colony presented a patriotic song, while students of Government Junior High School, Shanti Nagar, and Bal Vidya Mandir performed programmes centred on patriotism and national unity. The audience applauded the performances.

Scientists, officers, employees, family members and children participated in the programme, which was coordinated by the CSIR-CBRI Staff Club and its Executive Committee. The institute community reaffirmed its commitment to freedom, unity, civic responsibility and service to the nation.

सीएसआईआर-सीबीआरआई में मनाया गया भारत का 80वाँ स्वतंत्रता दिवस

निदेशक ने सुरक्षित, टिकाऊ और आपदा-रोधी अवसंरचना के लिए विज्ञान-आधारित समाधानों का आह्वान किया

रुड़की, 15 अगस्त 2026: सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-सीबीआरआई) ने अपने रुड़की परिसर में भारत का 80वाँ स्वतंत्रता दिवस देशभक्ति और उत्साह के साथ मनाया। संस्थान के निदेशक प्रो. प्रदीप कुमार रामनचरला ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया। इस अवसर पर वैज्ञानिक, अधिकारी, कर्मचारी और उनके परिवारजन उपस्थित रहे।

अपने संबोधन में प्रो. रामनचरला ने स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदान और योगदान को नमन किया तथा संस्थान परिवार को स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएँ दीं। उन्होंने कहा कि स्वतंत्रता केवल भारत के गौरवशाली इतिहास का स्मरण नहीं कराती, बल्कि प्रत्येक नागरिक को राष्ट्र के विकास में योगदान देने के अपने दायित्व का भी बोध कराती है। उन्होंने समाज की वास्तविक आवश्यकताओं का समाधान अनुसंधान और नवाचार के माध्यम से करने में वैज्ञानिक तथा तकनीकी संस्थानों की भूमिका पर बल दिया। भवन विज्ञान और निर्माण प्रौद्योगिकी में सीएसआईआर-सीबीआरआई के कार्य का उल्लेख करते हुए उन्होंने वैज्ञानिक समुदाय से सुरक्षित, टिकाऊ और आपदा-रोधी अवसंरचना विकसित करने तथा निर्मित परिवेश की उभरती चुनौतियों के समाधान के लिए निरंतर प्रयास करने का आह्वान किया।

गुणवत्ता की ओर सशक्त कदम: सीएसआईआर-सीबीआरआई में आयोजित हुआ 'NABL गुणवत्ता यात्रा कार्यक्रम'

• दैनिक राजस्थान दर्पण

कास (डॉ राकेश वशिष्ठ) ब्यूरो न्यूज रुड़की। प्रयोगशालाओं में गुणवत्ता संस्कृति को मजबूत बनाने और अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप कार्यप्रणाली को बढ़ावा देने के उद्देश्य से सीएसआईआर–केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-सीबीआरआई), रुड़की तथा राष्ट्रीय परीक्षण एवं अंशांकन प्रयोगशाला प्रत्यायन बोर्ड (एनएबीएल) के सहयोग से 27 जुलाई 2026 को सीबीआरआई में 'एनएबीएल गुणवत्ता यात्रा कार्यक्रम' का सफल आयोजन किया गया।

कार्यक्रम में सीएसआईआर-सीबीआरआई की ओर से डॉ. डी. पी. कानुनगो, डॉ. नीरज जैन, डॉ. शौरभ जैन, डॉ. एन. के. बंजारा तथा डॉ. सी. एस. मीणा सहित अनेक वैज्ञानिक एवं अधिकारी उपस्थित रहे। वहीं, एनएबीएल की ओर से डॉ. भूमि एस. राज्यगुरु (संयुक्त निदेशक, एनएबीएल) तथा शिवांशु धर दुबे ने कार्यक्रम में सहभागिता की।

डॉ. डी. पी. कानुनगो, मुख्य वैज्ञानिक ने अपने संबोधन में प्रयोगशालाओं में गुणवत्ता, तकनीकी दक्षता तथा अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप कार्यप्रणाली अपनाने के महत्व पर बल दिया। उन्होंने कहा कि गुणवत्तापूर्ण परीक्षण एवं अंशांकन प्रणाली न केवल प्रयोगशालाओं की विश्वसनीयता बढ़ाती है, बल्कि वैश्विक स्तर पर उनकी स्वीकार्यता भी सुनिश्चित करती है।

कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए डॉ. नीरज जैन, वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रमुख, ओडीएस ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए बताया कि वर्तमान समय में अनुसंधान एवं परीक्षण संस्थानों के लिए गुणवत्ता, तकनीकी दक्षता, पारदर्शिता और विश्वसनीयता को सर्वोच्च प्राथमिकता देना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि इन मूल्यों पर आधारित कार्यप्रणाली ही संस्थानों की उत्कृष्टता को सुदृढ़ बनाती है तथा राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उनकी विश्वसनीय पहचान स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. एन. के. बंजारा, प्रधान वैज्ञानिक ने कार्यक्रम की रूपरेखा एवं उद्देश्यों की जानकारी दी।

तकनीकी सत्रों में एनएबीएल के विशेषज्ञों ने ISO/IEC 17025 :2017 मानक, परीक्षण एवं अंशांकन प्रक्रियाओं, प्रत्यायन प्राप्त करने की प्रक्रिया, आवश्यक दस्तावेज़ीकरण, परीक्षण एवं अंशांकन प्रयोगशालाओं की कार्यप्रणाली तथा एनएबीएल वेबसाइट के प्रभावी उपयोग से संबंधित महत्वपूर्ण विषयों पर विस्तृत जानकारी दी। इन सत्रों में वैज्ञानिकों एवं तकनीकी कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की तथा विशेषज्ञों से अपने प्रश्नों के उत्तर प्राप्त किए।

इस अवसर पर संस्थान के वैज्ञानिकों एवं तकनीकी अधिकारियों ने प्रयोगशालाओं में उच्च गुणवत्ता मानकों को अपनाने तथा कार्यप्रणाली को निरंतर बेहतर बनाने का संकल्प लिया। यह कार्यक्रम सीएसआईआर- सीबीआरआई की गुणवत्ता, उत्कृष्टता एवं अंतरराष्ट्रीय मानकों के प्रति प्रतिबद्धता को और अधिक सुदृढ़ करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल साबित हुआ।

कार्यप्रणाली बेहतर बनाने और उच्च गुणवत्ता मानकों को अपनाने का लिया संकल्प

सीबीआरआइ रुड़की में 'एनएबीएल गुणवत्ता यात्रा कार्यक्रम' किया गया आयोजित

जागरण संवाददाता, रुड़की: प्रयोगशालाओं में गुणवत्ता संस्कृति को मजबूत बनाने और अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप कार्यप्रणाली को बढ़ावा देने के उद्देश्य से केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआइ) रुड़की में 'एनएबीएल गुणवत्ता यात्रा कार्यक्रम' आयोजित किया गया। इसमें संस्थान के विज्ञानियों एवं तकनीकी अधिकारियों ने प्रयोगशालाओं में उच्च गुणवत्ता मानकों को अपनाने और कार्यप्रणाली को निरंतर बेहतर बनाने का संकल्प लिया।

केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान रुड़की मे आयोजित कार्यक्रम मे विचार रखते मुख्य विज्ञानी डा. डीपी कानूनगो ● साभार संस्थान

सीबीआरआइ रुड़की परिसर में सोमवार को राष्ट्रीय परीक्षण एवं अंशांकन प्रयोगशाला प्रत्यायन बोर्ड (एनएबीएल) के सहयोग से आयोजित कार्यक्रम में सीबीआरआइ के मुख्य विज्ञानी डा. डीपी कानूनगो ने प्रयोगशालाओं में गुणवत्ता, तकनीकी दक्षता और अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप कार्यप्रणाली अपनाने के महत्व पर बल दिया। उन्होंने कहा कि गुणवत्तापूर्ण परीक्षण एवं अंशांकन प्रणाली न केवल प्रयोगशालाओं की विश्वसनीयता बढ़ाती है, बल्कि वैश्विक स्तर पर उनकी स्वीकार्यता भी सुनिश्चित करती है। वरिष्ठ प्रधान विज्ञानी डा. नीरज जैन ने कहा कि वर्तमान में अनुसंधान एवं परीक्षण संस्थानों के लिए गुणवत्ता, तकनीकी दक्षता, पारदर्शिता और विश्वसनीयता को सर्वोच्च प्राथमिकता देना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि इन मूल्यों पर आधारित कार्यप्रणाली ही संस्थानों की उत्कृष्टता को सुदृढ़ बनाती है। साथ ही, राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उनकी विश्वसनीय पहचान स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

कार्यक्रम के समन्वयक एवं प्रधान विज्ञानी डा. एनके बंजारा ने कार्यक्रम की रूपरेखा एवं उद्देश्यों की जानकारी दी। वहीं तकनीकी सत्रों में एनएबीएल के विशेषज्ञों ने आइएसओ/आईईसी 17025:2017 मानक, परीक्षण एवं अंशांकन प्रक्रियाओं, प्रत्यायन प्राप्त करने की प्रक्रिया, आवश्यक दस्तावेजीकरण, परीक्षण एवं अंशांकन प्रयोगशालाओं की कार्यप्रणाली तथा एनएबीएल वेबसाइट के प्रभावी उपयोग से संबंधित महत्वपूर्ण विषयों पर जानकारी दी। इस मौके पर सीबीआरआइ से डा. सौरभ जैन, डा. सीएस मीणा के अलावा एनएबीएल के संयुक्त निदेशक डा. भूमि एस. राज्यगुरु, शिवांशु धर दुबे आदि उपस्थित रहे।

उत्तराखंड

सीएसआईआर-सीबीआरआई में आयोजित हुआ 'एनएबीएल गुणवत्ता यात्रा कार्यक्रम'

July 27, 2026 Suresh Baluni

प्रयोगशालाओं में गुणवत्ता संस्कृति को बढ़ावा देने और अंतरराष्ट्रीय मानकों पर दिया गया जोर

रुड़की। प्रयोगशालाओं में गुणवत्ता संस्कृति को सुदृढ़ बनाने तथा अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप कार्यप्रणाली को बढ़ावा देने के उद्देश्य से सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-सीबीआरआई), रुड़की और राष्ट्रीय परीक्षण एवं अंशाकन प्रयोगशाला प्रत्यायन बोर्ड (एनएबीएल) के संयुक्त तत्वावधान में सोमवार को 'एनएबीएल गुणवत्ता यात्रा कार्यक्रम' आयोजित किया गया।

कार्यक्रम में मुख्य वैज्ञानिक डॉ. डी.पी. कानुनगो ने कहा कि प्रयोगशालाओं में गुणवत्ता, तकनीकी दक्षता और अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप कार्यप्रणाली अपनाना समय की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि गुणवत्तापूर्ण परीक्षण एवं अंशाकन प्रणाली न केवल प्रयोगशालाओं की विश्वसनीयता बढ़ाती है, बल्कि वैश्विक स्तर पर उनकी स्वीकार्यता भी सुनिश्चित करती है।

https://garhwalkisanskriti.com/?p=28271

खबर आपकी
सिटी बीट न्यूज
डिजिटल एवं सोशल मीडिया
ख़बर जो केवल सच हो, आपके लिए, निरंतर प्रयास में...
www.citybeatnews.in
22 जुलाई 2026,बुधवार

सीएसआईआर-सीबीआरआई द्वारा प्रधानमंत्री आवास योजना-ग्रामीण (पीएमएवाई-जी) लाभार्थियों के लिए 'आवास सक्षम' प्रौद्योगिकी प्रदर्शन का आयोजन

सिटी बीट न्यूज नेटवर्क बरेली (रायसेन)

सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान(सीएसआईआर-सीबीआरआई),रुड़की ने मध्य प्रदेश सरकार एवं बाल रक्षा भारत के सहयोग से रायसेन जिले के जनकपुर गांव में 'आवास सक्षमः पीएमएवाई-जी लाभार्थियों हेतु प्रौद्योगिकी प्रदर्शन' कार्यशाला का आयोजन किया। यह कार्यक्रम पूर्व में किए गए सामुदायिक परामर्शों के आधार पर विकसित स्थानीय जलवायु, सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों एवं सांस्कृतिक परिवेश के अनुरूप पीएमएवाई-जी आवास प्रतिरूपों के प्रदर्शन पर केंद्रित था। कार्यशाला का प्रमुख आकर्षण ऑगमेंटेड डेमोंस्ट्रेशन रहा, जिसके माध्यम से लाभार्थियों ने प्रस्तावित आवासों की रूपरेखा, निर्माण तकनीक एवं जलवायु-अनुकूल विशेषताओं का आभासी अनुभव प्राप्त किया। प्रधान वैज्ञानिक डॉ. किशोर कुलकर्णी एवं वरिष्ठ परियोजना सहयोगी आकाश पांडेय ने गुणवत्तापूर्ण चिनाई, स्थानीय निर्माण सामग्री के प्रभावी उपयोग, दरारों की रोकथाम तथा संरचनात्मक सुरक्षा जैसे विषयों पर तकनीकी मार्गदर्शन दिया। कार्यक्रम का सफल संचालन शशिकांत पांडेय एवं सौरभ साहू द्वारा किया गया।इस कार्यक्रम में तहसीलदार विक्टर रोड्रिग्स,आशा कार्यकर्ता श्रीमती प्रीतेश घुरे, ग्राम सरपंच प्रवीण कुमार कुशवाहा तथा प्रधानाचार्य राकेश वर्मा भी उपस्थित रहे। यह पहल सीएसआईआर स्मार्ट विलेज की परिकल्पना को साकार करते हुए सुरक्षित, टिकाऊ एवं आपदा-रोधी ग्रामीण आवासों को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

CSIR-CBRI in the Limelight | 06.07.2026

Tue, 4 Aug 2026 28.5°C New Delhi

≡ VIP NEWS आपकी आवाज़

ताज़ा खबर ोणों की सुरक्षा खतरे में | टीचर मनीषा की रहस्यमय मौत पर सीबीआई जांच की मांग बढ़ी | भिवानी में भरत तिव

मुखपृष्ठ राष्ट्रीय समाचार राजनीति अंतर्राष्ट्रीय समाचार खेल ज्योतिष और आध्यात्मिक अपराध व्यवसाय Protest

← Home / राष्ट्रीय समाचार / तिरछे तुंगनाथ मंदिर को वैज्ञानिक सहारा मिलेगा

तिरछे तुंगनाथ मंदिर को वैज्ञानिक सहारा मिलेगा

The tilted Tungnath temple will receive scientific support.

VIP NEWS - Reporter
Madhya Pradesh

July 06, 2026 01:29 PM
31 views

Share:

झुकते तुंगनाथ मंदिर को मिलेगा वैज्ञानिक सहारा, सीबीआरआई करेगा संरचनात्मक उपचार

रिपोर्टर: अरशद हुसैन

संपर्क: 9997204829

प्रस्तावना: विश्व के सबसे ऊंचे शिव मंदिरों में शामिल तुंगनाथ मंदिर के संरक्षण के लिए एक महत्वपूर्ण पहल की गई है। मंदिर में उत्पन्न संरचनात्मक झुकाव का अब वैज्ञानिक तरीके से उपचार किया जाएगा। इस प्रक्रिया की जिम्मेदारी **केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई)** ने ली है।

https://vipnews24x7.com/national-news/tungnath-temple-scientific-support

https://youtu.be/vyleFAeio00?si=tWUQcIfFMFGkmbs1

CSIR-CBRI in the Limelight | 25.06.2026

सतत भवन निर्माण सामग्रियों, प्रौद्योगिकी तथा उद्योग-प्रेरित अनुसंधान को बढ़ावा देने हेतु समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर

theasulofindia June 25, 2026 6:11 pm 0

Share

सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान, रुड़की और श्री सीमेंट लिमिटेड, गुरुग्राम के बीच सतत भवन निर्माण सामग्रियों, प्रौद्योगिकी तथा उद्योग-प्रेरित अनुसंधान को बढ़ावा देने हेतु समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर।

आज दिनांक 25 जून, 2026 को इंडिया हैबिटेट सेंटर, लोधी रोड, नई दिल्ली स्थित सीबीआरआई दिल्ली केंद्र में सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-सीबीआरआई), रुड़की और श्री सीमेंट लिमिटेड, गुरुग्राम के बीच एक समझौता ज्ञापन (MoU) पर हस्ताक्षर किए गए है। इसका उद्देश्य सीमेंट, निर्माण एवं भवन सामग्री क्षेत्र में सहयोगात्मक अनुसंधान, प्रौद्योगिकी विकास, ज्ञान आदान-प्रदान तथा क्षमता निर्माण के लिए एक रणनीतिक रूपरेखा स्थापित करना है।

एमओयू पर प्रो. आर. प्रदीप कुमार, निदेशक, सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की और डॉ. गौतम चटर्जी, वाइस प्रेसिडेंट, श्री सीमेंट लिमिटेड द्वारा हस्ताक्षर किए गए। इस अवसर पर प्रो. एस. के. सिंह, साइंटिस्ट-जी, डॉ. एस. के. पाणिग्रही, प्रमुख-टेक्नोलॉजी बिज़नेस डेवलपमेंट ग्रुप, डॉ. गोविंद गौरव और शिवम सोलंकी (सीएसआईआर-सीबीआरआई), डॉ. शैलेश अग्रवाल, पूर्व ईडी, बीएमटीपीसी एवं आईआईटी रुड़की में प्रोफेसर ऑफ प्रैक्टिस, तथा ईर. सुमत गुप्ता, ज़ोनल हेड-सेल्स एंड मार्केटिंग और मोहन झा, एसटीई हेड, श्री सीमेंट लिमिटेड उपस्थित थे।

समझौते के तहत, दोनों संगठन फ्लाई ऐश, जीजीबीएफएस, स्टील स्लैग और कॉपर स्लैग जैसे औद्योगिक उप-उत्पादों के सीमेंट कंपोज़िट्स में उपयोग, परिपत्र अर्थव्यवस्था के सिद्धांतों पर आधारित सतत सीमेंटयुक्त सामग्रियों के विकास, तथा निर्माण सामग्रियों में नैनोप्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग पर सहयोगात्मक अनुसंधान करेंगे।

यह साझेदारी नवोन्मेषी निर्माण सामग्रियों और प्रौद्योगिकियों के विकास तथा व्यावसायीकरण, गुणवत्ता नियंत्रण प्रोटोकॉल के निर्माण, और सीमेंट तथा कंक्रीट में उपयोग होने वाले औद्योगिक उप-उत्पादों के लिए परीक्षण विधियों के मानकीकरण पर भी केंद्रित होगी।

Dehradun Haridwar

सीबीआरआई रुड़की और श्री सीमेंट के बीच एमओयू, सतत निर्माण सामग्री व नई तकनीकों पर होगा संयुक्त अनुसंधान...पढ़ें

Uttarakhand Parikalpana [illegible]

रुड़की(मनोज यादव)। सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई), रुड़की और श्री सीमेंट लिमिटेड, गुरुग्राम के बीच गुरुवार को सतत भवन निर्माण सामग्री, प्रौद्योगिकी विकास और उद्योग-प्रेरित अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए एक महत्वपूर्ण समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए गए। यह कार्यक्रम नई दिल्ली स्थित इंडिया हैबिटेट सेंटर में आयोजित किया गया।

एमओयू पर सीबीआरआई के निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार और श्री सीमेंट लिमिटेड के वाइस प्रेसिडेंट डॉ. नीलम चटर्जी ने हस्ताक्षर किए। समझौते का उद्देश्य सीमेंट, निर्माण एवं भवन सामग्री क्षेत्र में सहयोगात्मक अनुसंधान, तकनीकी विकास, ज्ञान आदान-प्रदान और क्षमता निर्माण के लिए एक मजबूत रणनीतिक ढांचा तैयार करना है।

समझौते के तहत दोनों संस्थाएं फ्लाई ऐश, पीपीबीएफएस, स्टील स्लैग और कॉपर स्लैग जैसे औद्योगिक उप-उत्पादों के उपयोग को बढ़ावा देने, परिपत्र अर्थव्यवस्था आधारित सतत सीमेंटयुक्त सामग्रियों के विकास तथा निर्माण सामग्री में नैनो प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग पर संयुक्त शोध करेंगी।

इसके अलावा, नवोन्मेषी निर्माण सामग्रियों और तकनीकों के विकास एवं व्यावसायीकरण, गुणवत्ता नियंत्रण प्रोटोकॉल तैयार करने तथा सीमेंट और कंक्रीट में उपयोग होने वाले औद्योगिक उप-उत्पादों की परीक्षण विधियों के मानकीकरण पर भी कार्य किया जाएगा।

दोनों संस्थान तकनीकी बैठकों, प्रशिक्षण कार्यक्रमों, कार्यशालाओं, सम्मेलनों और संगोष्ठियों के माध्यम से ज्ञान के आदान-प्रदान को बढ़ावा देंगे। साथ ही शोध छात्रों के लिए फेलोशिप और संयुक्त शैक्षणिक गतिविधियों के अवसर भी उपलब्ध कराए जाएंगे।

इस अवसर पर वक्ताओं ने कहा कि उद्योग और अनुसंधान संस्थानों के बीच सहयोग निर्माण क्षेत्र की उभरती चुनौतियों के समाधान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। इससे नवाचार, टिकाऊ और लागत-प्रभावी निर्माण तकनीकों के विकास को गति मिलेगी तथा अनुसंधान के परिणामों को व्यावहारिक उपयोग में लाने में मदद मिलेगी। यह साझेदारी भारतीय निर्माण एवं अवसंरचना क्षेत्र को नई दिशा देने में सहायक सिद्ध होगी।

अभी की खबरें

नकली नोट छापने वाले गिरोह के 03 सदस्य दबोचे,50 हजार रुपये के छपे जाली नोट, लैपटॉप, प्रिंटर व अन्य उपकरण बरामद...पढ़ें

संत समाज के मार्गदर्शन और सहयोग से ऐतिहासिक बनेगा कुंभ-2027: शहरी विकास मंत्री राम सिंह कैड़ा

आयुर्वेद अपनाकर निरोग जीवन की ओर बढ़ें:डॉ. स्वास्तिक सुरेश

मानसून के दृष्टिगत सभी अधिकारी समयबद्ध ढंग से तैयारियां एवं व्यवस्थाएं पूर्ण करें :जिलाधिकारी

वनकर्मियों पर हमला करने वाले तीन आरोपी गिरफ्तार, कार से 52,500 रुपये के जाली नोट बरामद...पढ़ें

CATEGORIES

BJP
Dehradun
Education
Haridwar
Uncategorized
अपराध/पुलिस प्रशासन
उत्तर प्रदेश
उत्तरकाशी
कांग्रेस
कांवड़ यात्रा/कुम्भ मेला
काशीपुर
कोटद्वार
खाना/रेस्टोरेंट
खेती
खेती/किसान
खेल
चंपावत
चमोली
चारधाम यात्रा
दिल्ली
देहरादून
धार्मिक
नेशनल
नैनीताल
पशुपालन विभाग
पौड़ी गढ़वाल
प्रयागराज

प्रदेश) का बताया जा रहा है।   लोकतंत्र रक्षक सेनानी चौधरी महीपाल   इमरजेंसी का भारतीय लोकतंत्र के   उमेश श्रीमाली ने किया।

केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान औरश्री सीमेंट लिमिटेड के मध्य एमओयू

रुड़की सीएसआईआर–केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान, रुड़की और श्री सीमेंट लिमिटेड, गुरुग्राम के बीच सतत भवन निर्माण सामग्रियों, प्रौद्योगिकी तथा उद्योग–प्रेरित अनुसंधान को बढ़ावा देने हेतु समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर।

इंडिया हैबिटेट सेंटर लोधी रोड, नई दिल्ली स्थित सीबीआरआई दिल्ली केंद्र मे सीएसआईआर–केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर–सीबीआरआई), रुड़की और श्री सीमेंट लिमिटेड, गुरुग्राम के बीच एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए गए हैं। इसका उद्देश्य सीमेंट, निर्माण एवं भवन सामग्री क्षेत्र में सहयोगात्मक अनुसंधान, प्रौद्योगिकी विकास, ज्ञान आदान–प्रदान तथा क्षमता निर्माण के लिए एक रणनीतिक रूपरेखा स्थापित करना है।

एमओयू पर प्रो. आर. प्रदीप कुमार, निदेश, सीएसआईआर–सीबीआरआई, रुड़की और डॉ. गौतम चटर्जी, वाइस प्रेसिडेंट, श्री सीमेंट लिमिटेड द्वारा हस्ताक्षर किए गए। इस अवसर पर प्रो. एस. के सिंह, साइंटिस्ट–जी, डॉ. एस के. पाणिग्रही, प्रमुख–टैक्नोलॉजी बिज़नेस डेवलपमेंट ग्रुप, डॉ. गोविंद गौरव और शिवम (सीएसआईआर–सीबीआरआई), डॉ शैलेश अग्रवाल, पूर्व ईडी, बीएमटीपीसी एवं आईआईटी रुड़की में प्रोफेसर ऑफ प्रैक्टिस, तथा ईर. सुमत गुप्ता, ज़ोनल हेड–सेल्स एंड मार्केटिंग और मोहन झा, एसटीई हेड, श्री सीमेंट लिमिटेड उपस्थित थे।

समझौते के तहत, दोनों संगठन फ्लाई ऐश, जीजीबीएफएस, स्टील स्लैग और कॉपर स्लैग जैसे औद्योगिक उप–उत्पादों के सीमेंट कंपोज़िट्स में उपयोग, परिपत्र अर्थव्यवस्था के सिद्धांतों पर आधारित सतत सीमेंटयुक्त सामग्रियों के विकास, तथा निर्माण सामग्रियों में नैनोप्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग पर सहयोगात्मक अनुसंधान करेंगे। यह साझेदारी नवोन्मेषी निर्माण सामग्रियों और प्रौद्योगिकियों के विकास तथा व्यावसायीकरण, गुणवत्ता नियंत्रण प्रोटोकॉल के निर्माण, और सीमेंट तथा कंक्रीट में उपयोग होने वाले औद्योगिक उप–उत्पादों के लिए परीक्षण विधियों के मानकीकरण पर भी केंद्रित होगी।

इसके अतिरिक्त, सीएसआईआर–सीबीआरआई और श्री सीमेंट लिमिटेड तकनीकी बैठकों, प्रशिक्षण कार्यक्रमों, कार्यशालाओं, सम्मेलनों और संगोष्ठियों के माध्यम से ज्ञान के आदान–प्रदान को बढ़ावा देंगे। यह सहयोग आगे चलकर पारस्परिक रुचि के क्षेत्रों में संयुक्त शैक्षणिक गतिविधियों तथा शोध छात्रों के लिए फेलोशिप के अवसरों का भी समर्थन करेगा।

इस अवसर पर बोलते हुए, दोनों संगठनों के प्रतिनिधियों ने निर्माण क्षेत्र में उभरती चुनौतियों का समाधान करने तथा नवोन्मेषी, टिकाऊ और लागत–प्रभावी निर्माण सामग्री एवं प्रौद्योगिकियों के विकास में तेजी लाने के लिए उद्योग–अनुसंधान सहयोग को सुदृढ़ करने के महत्त्व पर जोर दिया। इस साझेदारी से अनुसंधान परिणामों को व्यावहारिक अनुप्रयोगों में परिवर्तित करने में सुविधा मिलने की अपेक्षा है, जिससे भारतीय निर्माण और अवसंरचना पारितंत्र की प्रगति में योगदान होगा।

सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान, रुड़की और श्री सीमेंट लिमिटेड, गुरुग्राम के बीच सतत भवन निर्माण सामग्रियों, प्रौद्योगिकी तथा उद्योग-प्रेरित अनुसंधान को बढ़ावा देने हेतु समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर

• दैनिक राजस्थान दर्पण

कास (डॉ राकेश वशिष्ठ) ब्यूरो न्यूज नई दिल्ली। इंडिया हैबिटेट सेंटर, लोधी रोड, नई दिल्ली स्थित सीबीआरआई दिल्ली केंद्र में सीएसआईआर- केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-सीबीआरआई), रुड़की और श्री सीमेंट लिमिटेड, गुरुग्राम के बीच एक समझौता ज्ञापन (MoU) पर हस्ताक्षर किए गए हैं। इसका उद्देश्य सीमेंट, निर्माण एवं भवन सामग्री क्षेत्र में सहयोगात्मक अनुसंधान, प्रौद्योगिकी विकास, ज्ञान आदान-प्रदान तथा क्षमता निर्माण के लिए एक रणनीतिक रूपरेखा स्थापित करना है।

एमओयू पर प्रो. आर. प्रदीप कुमार, निदेशक, सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की और डॉ. गौतम चटर्जी, वाइस प्रेसिडेंट, श्री सीमेंट लिमिटेड द्वारा हस्ताक्षर किए गए। इस अवसर पर प्रो. एस. के. सिंह, साइंटिस्ट-जी, डॉ. एस. के. पाणिग्रही, प्रमुख-टेक्नोलॉजी बिज़नेस डेवलपमेंट ग्रुप, डॉ. गोविंद गौरव और शिवम सोलंकी (सीएसआईआर-सीबीआरआई), डॉ. शैलेश अग्रवाल, पूर्व ईडी, बीएमटीपीसी एवं आईआईटी रुड़की में प्रोफेसर ऑफ प्रैक्टिस, तथा ईर. सुमत गुप्ता, ज़ोनल हेड-सेल्स एंड मार्केटिंग और मोहन झा, एसटीई हेड, श्री सीमेंट लिमिटेड उपस्थित थे।

समझौते के तहत, दोनों संगठन फ्लाई ऐश, जीजीबीएफएस, स्टील स्लैग और कॉपर स्लैग जैसे औद्योगिक उप-उत्पादों के सीमेंट कंपोज़िट्स में उपयोग, परिपत्र अर्थव्यवस्था के सिद्धांतों पर आधारित सतत सीमेंटयुक्त सामग्रियों के विकास, तथा निर्माण सामग्रियों में नैनोप्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग पर सहयोगात्मक अनुसंधान करेंगे। यह साझेदारी नवोन्मेषी निर्माण सामग्रियों और प्रौद्योगिकियों के विकास तथा व्यावसायीकरण, गुणवत्ता नियंत्रण प्रोटोकॉल के निर्माण, और सीमेंट तथा कंक्रीट में उपयोग होने वाले औद्योगिक उप-उत्पादों के लिए परीक्षण विधियों के मानकीकरण पर भी केंद्रित होगी।

इसके अतिरिक्त, सीएसआईआर-सीबीआरआई और श्री सीमेंट लिमिटेड तकनीकी बैठकों, प्रशिक्षण कार्यक्रमों, कार्यशालाओं, सम्मेलनों और संगोष्ठियों के माध्यम से ज्ञान के आदान-प्रदान को बढ़ावा देंगे। यह सहयोग आगे चलकर पारस्परिक रुचि के क्षेत्रों में संयुक्त शैक्षणिक गतिविधियों तथा शोध छात्रों के लिए फेलोशिप के अवसरों का भी समर्थन करेगा।

इस अवसर पर बोलते हुए, दोनों संगठनों के प्रतिनिधियों ने निर्माण क्षेत्र में उभरती चुनौतियों का समाधान करने तथा नवोन्मेषी, टिकाऊ और लागत-प्रभावी निर्माण सामग्री एवं प्रौद्योगिकियों के विकास में तेजी लाने के लिए उद्योग-अनुसंधान सहयोग को सुदृढ़ करने के महत्व पर जोर दिया। इस साझेदारी से अनुसंधान परिणामों को व्यावहारिक अनुप्रयोगों में परिवर्तित करने में सुविधा मिलने की अपेक्षा है, जिससे भारतीय निर्माण और अवसंरचना पारितंत्र की प्रगति में योगदान होगा।

उत्तराखंड

सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की और श्री सीमेंट लिमिटेड, गुरुग्राम के बीच हुए एमओयू पर हस्ताक्षर

» मदरलैंड संवाददाता

रुड़की। इंडिया हैबिटेट सेंटर, लोधी रोड, नई दिल्ली स्थित सीबीआरआई दिल्ली केंद्र में सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान, रुड़की और श्री सीमेंट लिमिटेड, गुरुग्राम के बीच एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए हैं। इसका उद्देश्य सीमेंट, निर्माण एवं भवन सामग्री क्षेत्र में सहयोगात्मक अनुसंधान, प्रौद्योगिकी विकास, ज्ञान आदान-प्रदान तथा क्षमता निर्माण के लिए एक रणनीतिक रूपरेखा स्थापित करना है।

एमओयू पर प्रो. आर. प्रदीप कुमार, निदेशक, सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की और डॉ. गौतम चटर्जी, वाइस प्रेसिडेंट, श्री सीमेंट लिमिटेड द्वारा हस्ताक्षर किए गए। इस अवसर पर प्रो. एसके सिंह साइंटिस्ट-जी, डॉ. एसके पाणिग्रही, प्रमुख-टेक्नोलॉजी बिजनेस डेवलपमेंट ग्रुप, डॉ. गोविंद गौरव और शिवम सोलंकी (सीएसआईआर-सीबीआरआई), डॉ. शैलेश अग्रवाल, पूर्व ईडी, बीएमटीपीसी एवं आईआईटी रुड़की में प्रोफेसर ऑफ प्रैक्टिस, तथा ईर. सुमत गुप्ता, जोनल हेड-सेल्स एंड मार्केटिंग और मोहन झा, एसटीई हेड, श्री सीमेंट लिमिटेड उपस्थित रहे।

समझौते के तहत, दोनों संगठन फ्लाई ऐश, जीजीबीएफएस, स्टील स्लैग और कॉपर स्लैग जैसे औद्योगिक उप-उत्पादों के सीमेंट कंपोजिट्स में उपयोग, परिपत्र अर्थव्यवस्था के सिद्धांतों पर आधारित सतत सीमेंटयुक्त सामग्रियों के विकास तथा निर्माण सामग्रियों में नैनोप्रौद्योगिकी अनुप्रयोग पर सहयोगात्मक अनुसंधान करेंगे। यह साझेदारी नवोन्मेषी निर्माण सामग्रियों और प्रौद्योगिकियों के विकास तथा व्यावसायीकरण, गुणवत्ता नियंत्रण प्रोटोकॉल के निर्माण, और सीमेंट तथा कंक्रीट में उपयोग होने वाले औद्योगिक उप-उत्पादों के लिए परीक्षण विधियों के मानकीकरण पर भी केंद्रित होगी।

इसके अतिरिक्त, सीएसआईआर-सीबीआरआई और श्री सीमेंट लिमिटेड तकनीकी बैठकों, प्रशिक्षण कार्यक्रमों, कार्यशालाओं, सम्मेलनों और संगोष्ठियों के माध्यम से ज्ञान के आदान-प्रदान को बढ़ावा देंगे। यह सहयोग आगे चलकर पारस्परिक रुचि के क्षेत्रों में संयुक्त शैक्षणिक गतिविधियों तथा शोध छात्रों के लिए फेलोशिप के अवसरों का भी समर्थन करेगा। इस अवसर पर दोनों संगठनों के प्रतिनिधियों ने निर्माण क्षेत्र में उभरती चुनौतियों का समाधान करने तथा नवोन्मेषी, टिकाऊ और लागत-प्रभावी निर्माण सामग्री एवं प्रौद्योगिकियों के विकास में तेजी लाने के लिए उद्योग-अनुसंधान सहयोग को सुदृढ़ करने के महत्व पर जोर दिया। इस साझेदारी से अनुसंधान परिणामों को व्यावहारिक अनुप्रयोगों में परिवर्तित करने में सुविधा मिलने की अपेक्षा है, जिससे भारतीय निर्माण और अवसंरचना पारितंत्र की प्रगति में योगदान होगा।

4

रुड़की में तकनीकी विकास और क्षमता निर्माण पर जोर दिया

रुड़की, कार्यालय संवाददाता। देश में सतत भवन निर्माण सामग्रियों, आधुनिक तकनीक और उद्योग-प्रेरित अनुसंधान को बढ़ावा देने की दिशा में सीबीआरआई रुड़की और श्री सीमेंट लिमिटेड गुरुग्राम के बीच गुरुवार को इंडिया हैबिटेट सेंटर में समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए।

इसका मुख्य उद्देश्य सीमेंट, कंक्रीट और निर्माण सामग्री के क्षेत्र में सहयोगात्मक अनुसंधान, तकनीकी विकास, ज्ञान का आदान-प्रदान तथा क्षमता निर्माण के लिए एक मजबूत रूपरेखा तैयार करना है। इस एमओयू पर सीबीआरआई के निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार और श्री सीमेंट लिमिटेड के वाइस प्रेसिडेंट डॉ. गौतम चटर्जी ने हस्ताक्षर किए। समझौते के तहत दोनों संगठन पर्यावरण के अनुकूल निर्माण तकनीकों को विकसित करेंगे।

इसके तहत फ्लाई ऐश, जीजीबीएफएस, स्टील स्लैग और कॉपर स्लैग जैसे औद्योगिक कचरे का सीमेंट कंपोजिट्स में प्रभावी उपयोग करना, निर्माण सामग्रियों की गुणवत्ता और मजबूती बढ़ाने के लिए नैनोप्रौद्योगिकी का इस्तेमाल सीमेंट और कंक्रीट में इस्तेमाल होने वाले औद्योगिक उप-उत्पादों के लिए गुणवत्ता नियंत्रण प्रोटोकॉल और नई परीक्षण विधियों का निर्धारण करना आदि शामिल है।

भवन सामग्री, प्रौद्योगिकी व उद्योग प्रेरित अनुसंधान को मिलेगा बढ़ावा

जागरण संवाददाता, रुड़की : केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान और श्री सीमेंट लिमिटेड, गुरुग्राम भवन निर्माण सामग्रियों, प्रौद्योगिकी व उद्योग प्रेरित अनुसंधान को बढ़ावा देंगे। दोनों संस्थानों ने इसके लिए समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं।

इंडिया हैबिटेट सेंटर लोधी रोड, नई दिल्ली स्थित सीबीआरआइ दिल्ली केंद्र में यह कार्यक्रम संपन्न हुआ। एमओयू पर सीएसआइआर-सीबीआरआइ के निदेशक प्रो.आर प्रदीप कुमार व श्री सीमेंट लिमिटेड के उपाध्यक्ष डा.गौतम चटर्जी ने हस्ताक्षर किए। समझौते के तहत दोनों संगठन फ्लाई ऐश, जीजीबीएफएस, स्टील स्लैग और कापर स्लैग जैसे औद्योगिक उप-उत्पादों के सीमेंट कंपोजिट्स में उपयोग, परिपत्र अर्थव्यवस्था के सिद्धांतों पर आधारित सतत सीमेंटयुक्त सामग्रियों के विकास तथा निर्माण सामग्रियों में नैनोप्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग पर सहयोगात्मक अनुसंधान करेंगे। यह साझेदारी नवोन्मेषी निर्माण सामग्रियों और प्रौद्योगिकियों के विकास तथा व्यावसायीकरण, गुणवत्ता नियंत्रण प्रोटोकाल के निर्माण, सीमेंट तथा कंक्रीट में उपयोग होने वाले औद्योगिक उप-उत्पादों के लिए परीक्षण विधियों के मानकीकरण पर भी केंद्रित होगी। इसके अतिरिक्त सीएसआइआर-सीबीआरआइ और श्री सीमेंट लिमिटेड तकनीकी बैठकों, प्रशिक्षण कार्यक्रमों, कार्यशालाओं, सम्मेलनों और संगोष्ठियों के माध्यम से ज्ञान के आदान-प्रदान को बढ़ावा देंगे। यह सहयोग आगे चलकर पारस्परिक रुचि के क्षेत्रों में संयुक्त शैक्षणिक गतिविधियों तथा शोध छात्रों के लिए फेलोशिप के अवसरों का भी समर्थन करेगा। इस अवसर पर प्रो. एसके सिंह, डा. एसके पाणिग्रही, डा. गोविंद गौरव और शिवम सोलंकी, डा.शैलेश अग्रवाल, सुमत गुप्ता व मोहन झा आदि रहे।

एमओयू पर हस्ताक्षर के दौरान मौजूद दोनों संस्थानों के पदाधिकारी • सौजन्य सीबीआरआइ

[redacted]

Edit PDF Comment Highlight Draw Fill & Sign More tools

सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की और श्री सीमेंट लिमिटेड, गुरुग्राम के बीच हुए एमओयू पर हस्ताक्षर

» मदरलैंड संवाददाता

रुड़की। इंडिया हैबिटेट सेंटर, लोधी रोड, नई दिल्ली स्थित सीबीआरआई दिल्ली केंद्र में सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान, रुड़की और श्री सीमेंट लिमिटेड, गुरुग्राम के बीच एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए हैं। इसका उद्देश्य सीमेंट, निर्माण एवं भवन सामग्री क्षेत्र में सहयोगात्मक अनुसंधान, प्रौद्योगिकी विकास, ज्ञान आदान-प्रदान तथा क्षमता निर्माण के लिए एक रणनीतिक रूपरेखा स्थापित करना है।

एमओयू पर प्रो. आर. प्रदीप कुमार, निदेशक, सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की और डॉ. गौतम चटर्जी, वाइस प्रेसिडेंट, श्री सीमेंट लिमिटेड द्वारा हस्ताक्षर किए गए। इस अवसर पर प्रो. एसके सिंह साइंटिस्ट-जी, डॉ. एसके पाणिग्रही, प्रमुख-टेक्नोलॉजी बिजनेस डेवलपमेंट ग्रुप, डॉ. गोविंद गौरव और शिवम सोलंकी (सीएसआईआर-सीबीआरआई), डॉ. शैलेश अग्रवाल, पूर्व ईडी, बीएमटीपीसी एवं आईआईटी रुड़की में प्रोफेसर ऑफ प्रैक्टिस, तथा ईर. सुमत गुप्ता, जोनल हेड-सेल्स एंड मार्केटिंग और मोहन झा, एसटीई हेड, श्री सीमेंट लिमिटेड उपस्थित रहे।

समझौते के तहत, दोनों संगठन फ्लाई ऐश, जीजीबीएफएस, स्टील स्लैग और कॉपर स्लैग जैसे औद्योगिक उप-उत्पादों के सीमेंट कंपोजिट्स में उपयोग, परिपत्र अर्थव्यवस्था के सिद्धांतों पर आधारित सतत सीमेंटयुक्त सामग्रियों के विकास तथा निर्माण सामग्रियों में नैनोप्रौद्योगिकी अनुप्रयोग पर सहयोगात्मक अनुसंधान करेंगे। यह साझेदारी नवोन्मेषी निर्माण सामग्रियों और प्रौद्योगिकियों के विकास तथा व्यावसायीकरण, गुणवत्ता नियंत्रण प्रोटोकॉल के निर्माण, और सीमेंट तथा कंक्रीट में उपयोग होने वाले औद्योगिक उप-उत्पादों के लिए परीक्षण विधियों के मानकीकरण पर भी केंद्रित होगी।

इसके अतिरिक्त, सीएसआईआर-सीबीआरआई और श्री सीमेंट लिमिटेड तकनीकी बैठकों, प्रशिक्षण कार्यक्रमों, कार्यशालाओं, सम्मेलनों और संगोष्ठियों के माध्यम से ज्ञान के आदान-प्रदान को बढ़ावा देंगे। यह सहयोग आगे चलकर पारस्परिक रुचि के क्षेत्रों में संयुक्त शैक्षणिक गतिविधियों तथा शोध छात्रों के लिए फेलोशिप के अवसरों का भी समर्थन करेगा। इस अवसर पर दोनों संगठनों के प्रतिनिधियों ने निर्माण क्षेत्र में उभरती चुनौतियों का समाधान करने तथा नवोन्मेषी, टिकाऊ और लागत-प्रभावी निर्माण सामग्री एवं प्रौद्योगिकियों के विकास में तेजी लाने के लिए उद्योग-अनुसंधान सहयोग को सुदृढ़ करने के महत्व पर जोर दिया। इस साझेदारी से अनुसंधान परिणामों को व्यावहारिक अनुप्रयोगों में परिवर्तित करने में सुविधा मिलने की अपेक्षा है, जिससे भारतीय निर्माण और अवसंरचना पारितंत्र की प्रगति में योगदान होगा।

4

दृष्टि से रुड़की नहीं रुड़की ही उचित

CSIR-CBRI in the Limelight | 18.06.2026

उपलब्धि

प्रदूषण घटा, पीसीबी ने आधुनिक चिमनियों का लक्ष्य पूरा किया

जिग-जैग तकनीक से बदली ईंट-भट्ठों की तस्वीर

संवाद न्यूज एजेंसी

रुड़की। प्रदूषण नियंत्रण और ईंटों की गुणवत्ता सुधारने के उद्देश्य से ईंट-भट्ठों में लागू की गई जिग-जैग तकनीक क्षेत्र में वरदान साबित हो रही है।

इससे लंढौरा और आसपास के क्षेत्रों में संचालित 190 ईंट-भट्ठों में पुरानी चिमनियों को हटाकर आधुनिक तकनीक आधारित चिमनियां स्थापित कर दी गई हैं। नई व्यवस्था लागू होने के बाद न केवल वायु प्रदूषण में कमी आई है बल्कि अव्वल श्रेणी (सुपर क्वालिटी) की ईंटों के उत्पादन में भी उल्लेखनीय बढ़ोतरी दर्ज की गई है।

प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के क्षेत्रीय अधिकारी राजेंद्र सिंह कठैत ने बताया कि 2019 से भट्ठों में नई तकनीक का इस्तेमाल शुरू हुआ था। प्रदूषण कम करने के लिए नई तकनीक की चिमनी का उपयोग अनिवार्य किया गया था।

लंढौरा स्थित ईंट-भट्ठा। -संवाद

तकनीक के लिए प्रत्येक भट्ठे को खर्च करने पड़े 20 लाख

जिग-जैग तकनीक ईंट-भट्ठों में इस्तेमाल होने वाली एक आधुनिक प्रणाली है जिसमें गर्म हवा और धुएं का प्रवाह जिग-जैग रास्ते से कराया जाता है। इससे ईंधन का बेहतर उपयोग होता है। प्रदूषण कम फैलता है और अधिक संख्या में उच्च गुणवत्ता (अव्वल) की ईंटों का उत्पादन होता है। इस तकनीक को लागू करने में करीब 20 लाख रुपये प्रति भट्ठा लागत आई है।

खास खबर

सीबीआरआई की जिग-जैग तकनीक का इसमें प्रयोग किया जा रहा है। अब इसमें संशोधित तकनीक के तहत गोल के बजाय चौकोर चिमनी का उपयोग हो रहा है।

सभी भट्ठों में नई तकनीक के लक्ष्य को पूरा कर लिया गया है। इस महत्वपूर्ण बदलाव से ईंट उत्पादन में बड़ा सुधार आया है। अब 90 से 95 फीसदी तक अव्वल गुणवत्ता वाली ईंटें बनने लगी हैं। पहले यह आंकड़ा केवल 60 से 65 फीसदी तक ही सीमित था। इसके अतिरिक्त, ईंधन की खपत में भी 20 फीसदी की कमी दर्ज की गई है। यह पर्यावरण और आर्थिक दोनों दृष्टियों से लाभकारी है।

तकनीक के लाभ : नई तकनीक से ईंटों की गुणवत्ता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। अव्वल श्रेणी की ईंटों का उत्पादन लगभग दोगुना हो गया है। इससे भट्ठा मालिकों को बाजार में बेहतर उत्पाद बेचने में मदद मिल रही है। साथ ही ईंधन की बचत से उनकी परिचालन लागत भी काफी कम हुई है। यह पहल पर्यावरण संरक्षण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम साबित हुई है।

190

भट्ठों में आधुनिक तकनीक का इस्तेमाल, 20 प्रतिशत तक कम हुई ईंधन की खपत

IIT-CBRI MoU for research in sustainable infra

PNS ■ Bhubaneswar

Strengthening collaboration between academia and scientific research institutions, the Indian Institute of Technology (IIT) Bhubaneswar and CSIR-Central Building Research Institute (CSIR-CBRI) Roorkee, have signed a Memorandum of Understanding (MoU) to advance research, innovation and capacity building in civil engineering, sustainable infrastructure and building sciences.

The agreement was signed on June 15 by IIT Bhubaneswar Director Prof Shreepad Karmalkar, and CSIR-CBRI Director Prof R Pradeep Kumar. Senior officials from both institutions, including Prof V Pandu Ranga, Prof Sumanta Haldar, Dr DP Kanungo, Dr SK Panigrahi and Dr Kishor Kulkarni, were present.

The partnership aims to leverage the expertise and resources of both institutions to advance research and develop skilled manpower in structural engineering, geotechnical engineering, engineering geology, architecture and planning, environmental engineering, disaster mitigation and sustainable construction technologies.

Under the MoU, the institutions will undertake joint research projects, organise conferences and seminars, facilitate student and faculty internships, jointly guide student projects and research work, and share laboratory facilities, software resources and research infrastructure.

Karmalkar said the collaboration would create new opportunities for students, researchers and faculty members to work on nationally relevant challenges and contribute to the development of resilient and sustainable infrastructure. Pradeep Kumar said the partnership would combine the strengths of both institutions to promote high-quality research and innovation in building science and technology.

CSIR-CBRI, a premier national laboratory under the Council of Scientific and Industrial Research (CSIR), is known for its work in building materials, housing, structural engineering, energy-efficient buildings, fire safety and disaster mitigation. The MoU will remain effective for five years and is expected to foster long-term collaboration in research, innovation and skill development for India's infrastructure sector.

CSIR-CBRI in the Limelight | 17.06.2026

देहरादून, बुधवार 17 जून 2026
हरिद्वार संस्करण
दैनिक जागरण
www.jagran.com

परियोजना के सफल क्रियान्वयन के लिए गुणवत्ता, समयबद्धता पर दिया बल

आइएचसी नई दिल्ली में सीसीएस भवन-आठ और नौ के निर्माण को थर्ड पार्टी क्वालिटी एश्योरेंस व तकनीकी सेवाओं के लिए हुई किक-आफ बैठक

सीबीआरआइ रुड़की ने गुणवत्ता, सुरक्षा और उत्कृष्टता सुनिश्चित करने की दिशा में सीसीएस भवन-8 एवं 9 परियोजना को टीपीक्यूए कार्य किया शुभारंभ

संस्थान इससे पूर्व भी सेवाएं कर चुका है प्रदान

अमर उजाला

सीबीआरआई ने शुरू किया टीपीक्यूए कार्य

रुड़की। सीएसआईआर- केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई), रुड़की ने नई दिल्ली स्थित मौलाना आजाद रोड पर प्रस्तावित सीसीएस भवन-8 एवं 9 के निर्माण कार्यों के लिए थर्ड पार्टी क्वालिटी एश्योरेंस (टीपीक्यूए) एवं तकनीकी सेवाओं का शुभारंभ कर दिया है। इस संबंध में 16 जून को इंडिया हैबिटेट सेंटर, नई दिल्ली में किक-ऑफ बैठक आयोजित की गई। केंद्रीय लोक निर्माण विभाग (सीपीडब्ल्यूडी) की ओर से सीबीआरआई को सौंपी गई इस परियोजना में संस्थान गुणवत्ता, सुरक्षा और तकनीकी मानकों की स्वतंत्र निगरानी करेगा। कार्यक्रम में सीपीडब्ल्यूडी के मुख्य अभियंता (सिविल) रामनाथ राम और मुख्य अभियंता (इलेक्ट्रिकल) एनके बंसल ने गुणवत्ता, सुरक्षा और समयबद्ध निर्माण को परियोजना की सर्वोच्च प्राथमिकता बताया। सीबीआरआई के निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने कहा कि बड़े सार्वजनिक निर्माण कार्यों में गुणवत्ता आश्वासन और तकनीकी निगरानी अत्यंत आवश्यक है। संवाद

हिन्दुस्तान

सीबीआरआई ने शुरू की गुणवत्ता निगरानी सेवाएं

रुड़की, कार्यालय संवाददाता। केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) ने मंगलवार को नई दिल्ली के इंडिया हैबिटेट सेंटर में सीसीएस भवन-8 और 9 परियोजना के लिए थर्ड पार्टी क्वालिटी एश्योरेंस तकनीकी सेवाओं के शुभारंभ के लिए बैठक आयोजित की।

केंद्रीय लोक निर्माण विभाग द्वारा सीबीआरआई को यह महत्वपूर्ण जिम्मेदारी सौंपी गई है। इससे पहले भी सीबीआरआई सीसीएस भवन-6 एवं 7 परियोजनाओं में सफलतापूर्वक इसी प्रकार की सेवाएं प्रदान कर चुका है।

मुख्य अतिथि के रूप में सीपीडब्ल्यूडी के मुख्य अभियंता (सिविल) रामनाथ राम और मुख्य अभियंता (इलेक्ट्रिकल) एन.के. बंसल उपस्थित रहे। उन्होंने परियोजना के समयबद्ध, सुरक्षित और गुणवत्तापूर्ण निष्पादन पर विशेष बल दिया।

सीसीएस भवन-8 और 9 परियोजना में सुरक्षा सुनिश्चित करेगा

सीबीआरआई के निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने कहा कि किसी भी बड़े सार्वजनिक निर्माण कार्य में गुणवत्ता नियंत्रण और तकनीकी निगरानी अत्यंत महत्वपूर्ण होती है।

उन्होंने बताया कि परियोजना के अंतर्गत सीबीआरआई निर्माण कार्यों, सामग्री, कार्य निष्पादन तथा स्वीकृत ड्राइंग, बीआईएस मानकों और संविदात्मक प्रावधानों के अनुपालन की स्वतंत्र जांच करेगा। इसके साथ ही गुणवत्ता निगरानी, सामग्री परीक्षण, प्रयोगशाला रिपोर्टों की समीक्षा, तकनीकी परामर्श और निर्माण पद्धतियों का मूल्यांकन भी किया जाएगा। प्रो. एस.के. सिंह ने निर्माण क्षेत्र में टीपीक्यूए सेवाओं की चुनौतियों पर प्रकाश डाला।

CSIR-CBRI in the Limelight | 11.06.2026

अमर उजाला

न्यूज डायरी

छात्राओं ने सीखे आपदा प्रबंधन के गुर

रुड़की में सीबीआरआई में अग्निशमन उपकरण चलाना सीखतीं छात्राएं। स्रोत : स्वयं

रुड़की। मैथोडिस्ट गर्ल्स पीजी कॉलेज की छात्राओं के लिए सीबीआरआई में आयोजित तीन दिवसीय स्किल डेवलपमेंट प्रोग्राम (आपदा प्रबंधन) का बुधवार को समापन हो गया। कार्यशाला के अंतिम दिन छात्राओं ने आपदा प्रबंधन से जुड़े विभिन्न विषयों पर विशेषज्ञों से जानकारी प्राप्त की। डॉ. देव दत्ता घोष ने सुनामी के प्रभाव, संरचना और पर्यावरण को नुकसान पहुंचाए बिना शहरीकरण के उपायों पर प्रकाश डाला। सागर तोमर ने कूलिंग मैकेनिज्म की जानकारी दी। इंजीनियर कौशिक पंडित ने भूकंपीय जोन, खतरे के आकलन और एपिसेंटर की पहचान की प्रक्रिया समझाई। वहीं इंजीनियर सिद्धार्थ बेहरा ने ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में चक्रवातों से सुरक्षित आवास के मुद्दों और समाधानों पर चर्चा की। छात्राओं को अग्निशमन यंत्र के उपयोग का प्रशिक्षण भी दिया गया और एग्जीबिशन हॉल का भ्रमण कराया गया। इस मौके पर डॉ. आयशा फरहीन, अंकित सेठी और डॉ. पुष्पांजलि आदि मौजूद रहे। संवाद

दैनिक जागरण

चुनौतियों के समाधान में योगदान को किया प्रेरित

केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान रुड़की में तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के शुभारंभ पर विचार रखते संस्थान के निदेशक प्रो. आर प्रदीप कुमार • सौजन्य

जागरण संवाददाता, रुड़की: केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआइ) रुड़की में 'आपदा प्रबंधन में नारी सशक्तीकरण की पहल' विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। इसका उद्देश्य प्रतिभागियों को आपदा जोखिम न्यूनीकरण, आपदा पूर्व तैयारी तथा आपदा की स्थिति में अपनाए जाने वाले सुरक्षा उपायों के प्रति जागरूक करना रहा।

सीबीआरआइ परिसर में कौशल विकास कार्यक्रम के अंतर्गत सोमवार को आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम में मैथोडिस्ट गर्ल्स पीजी कालेज की 40 छात्राओं ने प्रतिभाग कर विषय विशेषज्ञों से आपदा प्रबंधन के विभिन्न पहलुओं पर जानकारी प्राप्त की। उद्घाटन सत्र में संस्थान के निदेशक प्रो. आर प्रदीप कुमार ने छात्राओं को वैज्ञानिक सोच, नवाचार और अनुसंधान के माध्यम से समाज की चुनौतियों के समाधान में सक्रिय योगदान देने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि आपदा प्रबंधन केवल आपदा के बाद की प्रतिक्रिया तक सीमित नहीं है, बल्कि जोखिम न्यूनीकरण, तैयारी और सुरक्षित अवसंरचना निर्माण के माध्यम से आपदाओं के प्रभाव को कम करना भी उतना ही महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि संस्थान प्राकृतिक एवं मानवजनित आपदाओं से होने वाले नुकसान को न्यूनतम करने तथा सुरक्षित एवं सुदृढ़ भवनों और अवसंरचनाओं के विकास के लिए निरंतर अनुसंधान एवं नवाचार को बढ़ावा दे रहा है। कार्यक्रम के प्रशिक्षक प्रो. डीसी श्रीवास्तव ने विभिन्न प्रकार की आपदाओं, उनके सामाजिक एवं आर्थिक प्रभावों तथा आपदा प्रबंधन में युवाओं की भूमिका पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि यह प्रशिक्षण कार्यक्रम विद्यार्थियों में आपदा प्रबंधन के प्रति जागरूकता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, तकनीकी दक्षता एवं व्यावहारिक कौशल के विकास को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है।

इस मौके पर वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक डा. नीरज जैन ने संस्थान की ओर से संचालित इंटीग्रेटेड स्किल इनिशिएटिव कार्यक्रम की विशेषताओं पर प्रकाश डाला। वरिष्ठ प्रधान विज्ञानी डा. अनिंद्य पाइन ने कार्यक्रम की रूपरेखा, उद्देश्यों एवं अपेक्षित परिणामों की जानकारी साझा की। इस मौके पर डा. पुष्पांजलि, डा. आयशा फरीन, अंकिता सेठी आदि उपस्थित रहे।

हिन्दुस्तान

आपदा प्रबंधन और कौशल विकास बारीकियां बताईं

रुड़की, संवाददाता। सीबीआरआई में आपदा प्रबंधन विषय पर तीन दिवसीय कौशल विकास कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें प्रतिभागियों में आपदा जोखिम न्यूनीकरण, शमन रणनीतियों तथा आपदा-रोधी अवसंरचना के बारे में बताया गया।

निदेशक प्रो. आर प्रदीप कुमार के संरक्षण में आयोजित कार्यक्रम में नोडल अधिकारी डॉ. नीरज जैन तथा डॉ. अनिंद्य पैन ने समन्वयक की भूमिका निभाई। कार्यक्रम के दौरान संस्थान के विशेषज्ञों ने प्राकृतिक आपदाओं, भूस्खलन, भूकंप चेतावनी प्रणाली, सुनामी प्रभाव, शहरी ऊष्मा द्वीप, हिमस्खलन निगरानी, भवनों में अग्नि सुरक्षा, संरचनात्मक सुदृढ़ीकरण, चक्रवात-रोधी आवास, पुनर्निर्माण एवं पुनर्वास सहित अनेक महत्वपूर्ण विषयों पर व्याख्यान और संवादात्मक सत्र आयोजित किए। विशेषज्ञों ने आपदा जोखिमों को कम करने तथा निर्मित पर्यावरण की लचीलापन क्षमता बढ़ाने में वैज्ञानिक अनुसंधान, अभियांत्रिकी समाधान और तकनीकी नवाचारों की भूमिका पर प्रकाश डाला। प्रतिभागियों को जोखिम आकलन, संरचनात्मक सुरक्षा, निगरानी प्रौद्योगिकियों और आपदा तैयारी के आधुनिक तरीकों की जानकारी दी गई। समापन सत्र में प्रतिभागियों ने कार्यक्रम से प्राप्त अनुभव साझा किए और इसे अत्यंत उपयोगी बताया।

हिन्दुस्तान

छात्राओं ने सीखी आपदा से निपटने की तकनीक

रुड़की। मैथोडिस्ट गर्ल्स पीजी कॉलेज, रुड़की की छात्राओं के लिए सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की में तीन दिवसीय स्किल डेवलपमेंट प्रोग्राम (आपदा प्रबंधन) का आयोजन किया गया। कार्यशाला के प्रथम दिवस पर छात्राओं ने आपदा प्रबंधन से जुड़े विभिन्न महत्वपूर्ण विषयों पर विशेषज्ञों के व्याख्यान सुने और उपयोगी जानकारी प्राप्त की

CSIR-CBRI in the Limelight | 06.06.2026

'प्लास्टिक प्रदूषण गंभीर चुनौती, प्रकृति का संरक्षण करना साझा जिम्मेदारी'

- सीबीआरआइ रुड़की में संगोष्ठी का आयोजन किया गया
- जलवायु सुधार हेतु वैश्विक पुकार विषय पर की चर्चा

जागरण संवाददाता, रुड़की: विश्व पर्यावरण दिवस पर शुक्रवार को केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआइ) रुड़की में "जलवायु सुधार हेतु वैश्विक पुकार" विषय पर आयोजित संगोष्ठी में विज्ञानियों, शिक्षाविदों, विद्यार्थियों और विभिन्न संस्थानों के प्रतिनिधियों ने पर्यावरण संरक्षण का संकल्प लिया।

संस्थान में शुक्रवार को कार्यक्रम की शुरुआत पौधारोपण से हुई। मुख्य अतिथि अल्टूइस्ट टेक्नोलाजीज प्राइवेट लिमिटेड, पंचकुला और आइ हेट पालीथिन अभियान के संस्थापक अनुज अग्रवाल ने प्लास्टिक प्रदूषण को गंभीर चुनौती बताते हुए एकल उपयोग प्लास्टिक के स्थान पर पर्यावरण हितैषी विकल्प अपनाने की अपील की।

वक्ता पूजा अग्रवाल ने भी प्रकृति संरक्षण को सभी की साझा जिम्मेदारी बताते हुए पालीथिन के उपयोग को कम करने का आह्वान किया। सीबीआरआइ के निदेशक प्रो. आर प्रदीप कुमार ने कहा कि पर्यावरण संरक्षण मानव अस्तित्व और भावी पीढ़ियों के सुरक्षित भविष्य के लिए अनिवार्य है। आइआइटी रुड़की के प्रोफेसर नवनीत अरोड़ा ने जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों और व्यक्तिगत जिम्मेदारी पर विचार रखे। इस मौके पर राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान रुड़की के वैज्ञानिक डा. सुहास खोबरागड़े, वरिष्ठ प्रधान विज्ञानी डा. आरके वर्मा, डा. नीरज जैन आदि लोग उपस्थित रहे।

सीबीआरआइ रुड़की में 'जलवायु सुधार हेतु वैश्विक पुकार' विषय पर आयोजित संगोष्ठी में विचार रखती वक्ता • साभार संस्थान

सीएसआईआर-सीबीआरआई रुड़की में विश्व पर्यावरण दिवस का आयोजन: जलवायु सुधार की आवश्यकता पर आयोजित किया कार्यक्रम

रुड़की (दैनिक हाक): विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर सीएसआईआर, केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान रुड़की के रवीन्द्रनाथ टैगोर सभागार में शुक्रवार को "जलवायु सुधार हेतु वैश्विक पुकार" विषय पर एक का आयोजन सीएसआईआर- सीबीआरआई, द इंस्टीट्यूशन ऑफ इंजीनियर्स (इंडिया), राष्ट्रीय जल विज्ञान संस्थान तथा बेटर लाइफ ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट, रुड़की के द्वारा संयुक्त रूप से किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देना, जलवायु परिवर्तन के प्रति जागरूकता फैलाना तथा सतत विकास के लिए सामूहिक प्रतिबद्धता को सुदृढ़ करना था। कार्यक्रम का शुभारम्भ संस्थान परिसर में वृक्षारोपण से हुआ, जिसमें सीबीआरआई के निदेशक, मुख्य अतिथि, विशिष्ट वक्ता तथा वैज्ञानिकों, शिक्षाविदों, विद्यार्थियों एवं विभिन्न संस्थानों के प्रतिनिधि उपस्थित रहे। डॉ. आर.के. वर्मा, वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक, सीबीआरआई, ने अतिथियों एवं प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए विश्व पर्यावरण दिवस के महत्व पर प्रकाश डाला।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि अनुज अग्रवाल, अल्टुइस्ट टेक्नोलॉजीज प्रा. लि., पंचकुला तथा "आई हेट पॉलीथीन" अभियान के संस्थापक ने अपने संबोधन में प्लास्टिक प्रदूषण की गंभीरता पर चर्चा करते हुए पर्यावरण-अनुकूल जीवनशैली अपनाने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि एकल-उपयोग प्लास्टिक के स्थान पर टिकाऊ और पर्यावरण हितैषी विकल्पों को अपनाना समय की आवश्यकता है। मुख्य अतिथि की धर्मपत्नी पूजा अग्रवाल ने विश्व पर्यावरण दिवस की शुभकामनाएं देते हुए अपने संबोधन में कहा कि प्रकृति मानव जीवन का आधार है और इसकी सुरक्षा हम सभी की सामूहिक जिम्मेदारी है। उन्होंने पॉलीथीन के बढ़ते उपयोग से पर्यावरण को होने वाले दुष्प्रभावों पर चिंता व्यक्त करते हुए लोगों से इसके उपयोग को कम करने का आग्रह किया। साथ ही उन्होंने सभी आगुतकों से एकल प्लास्टिक का उपयोग ना करने अवाम पर्यावरण संरक्षण की सपथ दिलाई।

प्रो. आर. प्रदीप कुमार, निदेशक,

सीबीआरआई ने कहा कि पर्यावरण संरक्षण आज केवल एक विकल्प नहीं, बल्कि मानव अस्तित्व और भावी पीढ़ियों के सुरक्षित भविष्य के लिए एक अनिवार्य आवश्यकता है। उन्होंने प्रकृति के साथ संतुलित विकास की दिशा में सीबीआरआई द्वारा किए गए सामूहिक प्रयासों जैसे की जलवायु प्रतिरोधी इमारतें, अपशिष्ट से निर्माण सामग्री एवं अन्य अनुसंधानों की चर्चा करते हुए उत्तरदायी जीवनशैली अपनाने पर बल दिया। डॉ. नीरज जैन, वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक, ने कार्यक्रम के विशिष्ठ वक्ता डॉ नवनीत अरोड़ा, प्रोफेसर, आईआईटी रुड़की एवं संस्थापक बेटर लाइफ ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट, रुड़की, का संक्षिप्त परिचय दिया। उन्होंने अपने विचारोत्तेजक व्याख्यान में जलवायु परिवर्तन की बढ़ती चुनौतियों, पर्यावरणीय संतुलन तथा व्यक्तिगत विकास, जीवन मूल्य तथा सामाजिक उत्थान के क्षेत्र मे अपने मार्गदर्शन दिए। उन्होंने कहा कि पर्यावरण संरक्षण केवल सरकारी प्रयासों तक सीमित नहीं है, बल्कि प्रत्येक व्यक्ति की जागरूकता और जिम्मेदार व्यवहार से ही वास्तविक परिवर्तन संभव है। डॉ. सुहाश खोबरागड़े, वैज्ञानिक-जी एवं समूह प्रमुख, राष्ट्रीय जल विज्ञान संस्थान, रुड़की ने जल संसाधनों के संरक्षण एवं जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों के समाधान में समन्वित प्रयासों की अहम भूमिका पर अपने विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर भारतीय ज्ञान प्रणाली, आईआईटी रुड़की के विद्यार्थियों ने पर्यावरण संरक्षण से जुड़े अपने विचार साझा किए, और सीबीआरआई स्टाफ के बच्चों द्वारा प्रस्तुत पर्यावरण गीत ने प्रकृति संरक्षण का संदेश दिया। विश्व पर्यावरण दिवस 2026 का यह आयोजन इस संदेश के साथ सम्पन्न हुआ कि जलवायु परिवर्तन और पर्यावरणीय चुनौतियों से निपटने के लिए सामूहिक संकल्प, जन-जागरूकता तथा निरंतर प्रयास अत्यंत आवश्यक हैं। कार्यक्रम ने पुनः यह स्मरण कराया कि पृथ्वी की सुरक्षा और भावी पीढ़ियों के लिए एक स्वच्छ, हरित एवं स्वस्थ वातावरण सुनिश्चित करना हम सभी की साझा जिम्मेदारी है। इस अवसर पर अखिलेश वर्मा अध्यक्ष, इंस्टीट्यूशन ऑफ इंजीनियर्स (इंडिया), रुड़की, राष्ट्रीय जल विज्ञान संस्थान से पधारे वैज्ञानिक गण, बेटर लाइफ ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट और सीबीआरआई के सभी सदस्य उपस्थित रहे।

रुड़की में विश्व पर्यावरण दिवस का हुआ आयोजन

Ram gopal saini June 05, 2026

जीवन अनमोल है , इसे आत्महत्या कर नष्ट नहीं करें !

सुबह की शुरुआत माता-पिता के चरण स्पर्श से करें !

अब सिर्फ 150 रुपए में साल भर घर मंगवाएँ "संस्कार सृजन" न्यूज़ पेपर !

संस्कार सृजन @ राम गोपाल सैनी

रुड़की (संस्कार सृजन) विश्व पर्यावरण दिवस 2026 के अवसर पर सीएसआईआर–केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान, रुड़की के रवीन्द्रनाथ टैगोर सभागार में 5 जून 2026 को "जलवायु सुधार हेतु वैश्विक पुकार" विषय पर एक का आयोजन सीएसआईआर–सीबीआरआई, द इंस्टीट्यूशन ऑफ इंजीनियर्स (इंडिया), राष्ट्रीय जल विज्ञान संस्थान तथा बेटर लाइफ ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट, रुड़की के द्वारा संयुक्त रूप से किया गया।

सीएसआईआर– सीबीआरआई, रुड़की में विश्व पर्यावरण दिवस का आयोजन : जलवायु सुधार की आवश्यकता"

• दैनिक राजस्थान दर्पण

कास (डॉ राकेश वशिष्ठ) ब्यूरो न्यूज रुड़की। विश्व पर्यावरण दिवस 2026 के अवसर पर सीएसआईआर–केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान, रुड़की के रवीन्द्रनाथ टैगोर सभागार में 5 जून 2026 को "जलवायु सुधार हेतु वैश्विक पुकार" विषय पर एक का आयोजन सीएसआईआर–सीबीआरआई, द इंस्टीट्यूशन ऑफ इंजीनियर्स (इंडिया), राष्ट्रीय जल विज्ञान संस्थान तथा बेटर लाइफ ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट, रुड़की के द्वारा संयुक्त रूप से किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देना, जलवायु परिवर्तन के प्रति जागरूकता फैलाना तथा सतत विकास के लिए सामूहिक प्रतिबद्धता को सुदृढ़ करना था। कार्यक्रम का शुभारम्भ संस्थान परिसर में वृक्षारोपण से हुआ, जिसमें सीबीआरआई के निदेशक, मुख्य अतिथि, विशिष्ट वक्ता तथा वैज्ञानिकों, शिक्षाविदों, विद्यार्थियों एवं विभिन्न संस्थानों के प्रतिनिधि उपस्थित रहे। डॉ. आर.के. वर्मा, वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक, सीबीआरआई, ने अतिथियों एवं प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए विश्व पर्यावरण दिवस के महत्व पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री अनुज अग्रवाल, अल्ट्रुइस्ट टेक्नोलॉजीज प्रा. लि., पंचकुला तथा "आई हेट पॉलीथीन" अभियान के संस्थापक ने अपने संबोधन में प्लास्टिक प्रदूषण की गंभीरता पर चर्चा करते हुए पर्यावरण-अनुकूल जीवनशैली अपनाने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि एकल-उपयोग प्लास्टिक के स्थान पर टिकाऊ और पर्यावरण हितैषी विकल्पों को अपनाना समय की आवश्यकता है। मुख्य अतिथि की धर्मपत्नी श्रीमती पूजा अग्रवाल ने विश्व पर्यावरण दिवस की शुभकामनाएं देते हुए अपने संबोधन में कहा कि प्रकृति मानव जीवन का आधार है और इसकी सुरक्षा हम सभी की सामूहिक जिम्मेदारी है। उन्होंने पॉलीथीन के बढ़ते उपयोग से पर्यावरण को होने वाले दुष्प्रभावों पर चिंता व्यक्त करते हुए लोगों से इसके उपयोग को कम करने का आग्रह किया। साथ ही उन्होंने सभी आगुतकों से एकल प्लास्टिक का उपयोग ना करने अवाम पर्यावरण संरक्षण की सपथ दिलाई।

प्रो. आर. प्रदीप कुमार, निदेशक, सीबीआरआई ने कहा कि पर्यावरण संरक्षण आज केवल एक विकल्प नहीं, बल्कि मानव अस्तित्व और भावी पीढ़ियों के सुरक्षित भविष्य के लिए एक अनिवार्य आवश्यकता है। उन्होंने प्रकृति के साथ संतुलित विकास की दिशा में सीबीआरआई द्वारा किए गए सामूहिक प्रयासों जैसे की जलवायु प्रतिरोधी इमारतें, अपशिष्ट से निर्माण सामग्री एवं अन्य अनुसंधानों की चर्चा करते हुए उत्तरदायी जीवनशैली अपनाने पर बल दिया।

डॉ. नीरज जैन, वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक, ने कार्यक्रम के विशिष्ट वक्ता डॉ नवनीत अरोड़ा, प्रोफेसर, आईआईटी रुड़की एवं संस्थापक बेटर लाइफ ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट, रुड़की, का संक्षिप्त परिचय दिया। उन्होंने अपने विचारोत्तेजक व्याख्यान में जलवायु परिवर्तन की बढ़ती चुनौतियों, पर्यावरणीय संतुलन तथा व्यक्तिगत विकास, जीवन मूल्य तथा सामाजिक उत्थान के क्षेत्र मे अपने मार्गदर्शन दिए। उन्होंने कहा कि पर्यावरण संरक्षण केवल सरकारी प्रयासों तक सीमित नहीं है, बल्कि प्रत्येक व्यक्ति की जागरूकता और जिम्मेदार व्यवहार से ही वास्तविक परिवर्तन संभव है।

डॉ. सुहाश खोबरा गड़े, वैज्ञानिक-G एवं समूह प्रमुख, राष्ट्रीय जल विज्ञान संस्थान, रुड़की ने जल संसाधनों के संरक्षण एवं जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों के समाधान में समन्वित प्रयासों की अहम भूमिका पर अपने विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर भारतीय ज्ञान प्रणाली, आईआईटी रुड़की के विद्यार्थियों ने पर्यावरण संरक्षण से जुड़े अपने विचार साझा किए, और सीबीआरआई स्टाफ के बच्चों द्वारा प्रस्तुत पर्यावरण गीत ने प्रकृति संरक्षण का संदेश दिया।

विश्व पर्यावरण दिवस 2026 का यह आयोजन इस संदेश के साथ सम्पन्न हुआ कि जलवायु परिवर्तन और पर्यावरणीय चुनौतियों से निपटने के लिए सामूहिक संकल्प, जन-जागरूकता तथा निरंतर प्रयास अत्यंत आवश्यक हैं। कार्यक्रम ने पुनः यह स्मरण कराया कि पृथ्वी की सुरक्षा और भावी पीढ़ियों के लिए एक स्वच्छ, हरित एवं स्वस्थ वातावरण सुनिश्चित करना हम सभी की साझा जिम्मेदारी है। इस अवसर पर श्री अखिलेश वर्मा अध्यक्ष, इंस्टीट्यूशन ऑफ इंजीनियर्स (इंडिया), रुड़की, राष्ट्रीय जल विज्ञान संस्थान से पधारे वैज्ञानिक गण, बेटर लाइफ ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट और सीबीआरआई के सभी सदस्य आदि उपस्थित रहे।

भवन संरक्षण, संरचनात्मक सुरक्षा व कीट प्रबंधन के बारे में दी जानकारी

- सीबीआरआइ में भवनों में दीमक एवं कीट प्रबंधन विषय पर आयोजित किया प्रशिक्षण
- आठ राज्यों से आए करीब 32 अधिकारियों, तकनीक विशेषज्ञों व पेशेवर प्रतिभागियों ने लिया भाग

सीबीआरआइ रुड़की में आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम के समापन समारोह में प्रतिभागी को प्रमाण पत्र देते निदेशक प्रो. आर प्रदीप कुमार • संस्थान

जागरण संवाददाता, रुड़की: केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआइ) रुड़की में आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रतिभागियों को भवन संरक्षण, संरचनात्मक सुरक्षा व पर्यावरण-अनुकूल कीट प्रबंधन उपायों से संबंधित व्यावहारिक एवं तकनीकी ज्ञान उपलब्ध कराया गया, जिससे उन्हें भवनों के सुरक्षित व दीर्घकालिक संरक्षण के लिए प्रभावी तकनीकों की बेहतर समझ प्राप्त हुई।

शुक्रवार को "भवनों में दीमक एवं कीट प्रबंधन" के समापन समारोह में संस्थान के निदेशक प्रो. आर प्रदीप कुमार ने कहा कि इस प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रम वैज्ञानिक जागरूकता बढ़ाने, व्यावसायिक दक्षता विकसित करने व भवनों के सुरक्षित व सतत अनुरक्षण को सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उन्होंने प्रतिभागियों को प्रशिक्षण के दौरान प्राप्त ज्ञान, तकनीकों व अनुभवों का व्यावहारिक जीवन एवं कार्यक्षेत्र में प्रभावी उपयोग करने के लिए प्रेरित किया।

नोडल अधिकारी डा. नीरज जैन ने बताया कि प्रशिक्षण के दौरान आयोजित विभिन्न तकनीकी सत्रों में विशेषज्ञों द्वारा दीमक की पहचान, संक्रमण के प्रमुख कारण, रोकथाम के उपाय, रासायनिक एवं गैर-रासायनिक उपचार तकनीकों, भवन निर्माण के दौरान अपनाई जाने वाली सुरक्षा विधियों तथा भवनों के दीर्घकालिक रखरखाव से जुड़े महत्वपूर्ण विषयों पर जानकारी दी गई। प्रशिक्षण कार्यक्रम में देश के आठ राज्यों से आए लगभग 32 अधिकारियों, तकनीक विशेषज्ञों व पेशेवर प्रतिभागियों ने सहभागिता की। कार्यक्रम के समापन पर प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र दिए गए। इस दौरान समन्वयक डा. राजेश वर्मा आदि मौजूद रहे।

राहत मिल सके। आए। बिजली न होने के कारण सिर्फ प्रयास नहीं किया था।

दीमक और कीट प्रबंधन का दिया प्रशिक्षण

- सीबीआरआइ रुड़की में भवनों में दीमक एवं कीट प्रबंधन विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू
- इसमें कीटों की पहचान, निवारक उपाय, निरीक्षण पद्धतियां, उपचार तकनीकें को किया गया शामिल

जागरण संवाददाता, रुड़की: केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआइ) रुड़की में ''भवनों में दीमक एवं कीट प्रबंधन''विषय पर तीन दिवसीय कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम का बुधवार को शुभारंभ हुआ। इस कार्यक्रम का उद्देश्य भवनों एवं आधारभूत संरचनाओं में दीमक एवं कीट प्रबंधन से संबंधित व्यावसायिक ज्ञान व तकनीकी दक्षता को सुदृढ़ करना है।

कार्यक्रम के उद्घाटन पर सीबीआरआइ रुड़की के निदेशक प्रो. आर प्रदीप कुमार ने कहा कि इस प्रकार के कौशल विकास एवं क्षमता निर्माण कार्यक्रम व्यावसायिक दक्षताओं को सशक्त बनाने व उद्योगोन्मुख ज्ञान के आदान-प्रदान को बढ़ावा देने के लिए महत्वपूर्ण हैं। उन्होंने भवन विज्ञान, आधारभूत संरचना सुरक्षा एवं सतत प्रौद्योगिकियों से संबंधित व्यावहारिक चुनौतियों के समाधान के लिए अनुसंधान एवं नवाचार के माध्यम से संस्थान की महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित किया। उन्होंने प्रतिभागियों से इस प्रशिक्षण को व्यावसायिक विकास, व्यावहारिक अधिगम एवं ज्ञान-साझाकरण के अवसर के रूप में उपयोग करने की बात कही। साथ ही उन्होंने प्रतिभागियों को विशेषज्ञों के साथ सक्रिय संवाद स्थापित करने, जिज्ञासाओं का समाधान प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया। भवन रखरखाव एवं अभियंत्रण सेवाओं के प्रमुख एवं प्रशिक्षण समन्वयक वरिष्ठ प्रधान विज्ञानी डा. आरके वर्मा ने कहा कि इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में कीटों की पहचान, निवारक उपाय, निरीक्षण पद्धतियां, आधुनिक उपचार तकनीकें, समन्वित कीट प्रबंधन पद्धतियां तथा टिकाऊ नियंत्रण रणनीतियों जैसे विषयों को शामिल किया गया है। नोडल अधिकारी वरिष्ठ प्रधान विज्ञानी डा. नीरज जैन ने भवनों में दीमक एवं कीट संक्रमण से उत्पन्न हो रही चुनौतियों पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि भवनों की सुरक्षा, स्थायित्व, स्वच्छता व सतत विकास सुनिश्चित करने के लिए विज्ञानी, टिकाऊ व समन्वित कीट प्रबंधन पद्धतियों को अपनाने की आवश्यकता है। उन्होंने बताया कि इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में देश के विभिन्न शहरों से लगभग 32 अधिकारियों व पेशेवरों ने सहभागिता की। इस मौके पर उदय मेनन, रवि शंकर व्यास, राम जीवन कुटार, डा. दिलबाग सिंह, पुनीत कुमार, पर्नव, डा. तबिश आलम, डा. संदीप गुप्ता, डा. राजेंद्र आदि मौजूद रहे।

सीबीआरआइ रुड़की मे कार्यक्रम को संबोधित करते संस्थान के निदेशक प्रो. आर प्रदीप कुमार और उपस्थित प्रतिभागी ● संस्थान

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय

सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की ने राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस पर 13 स्वदेशी टेक्नोलॉजी उद्योगों को हस्तांतरित कीं

* सतत भवन प्रौद्योगिकी एवं स्वच्छ ऊर्जा नवाचारों में सीएसआईआर-सीबीआरआई की महत्वपूर्ण उपलब्धि
* "स्मार्ट विलेज" पहल के माध्यम से ग्रामीण विकास हेतु विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी आधारित समाधान
* 13 स्वदेशी टेक्नोलॉजी का उद्योगों को हस्तांतरण, सतत विकास एवं ऊर्जा सुरक्षा को मिलेगा बढ़ावा

प्रविष्टि तिथि: 12 MAY 2026 7:28AM by PIB Dehradun

नई दिल्ली, 12 मई 2026 – सीएसआईआर-केन्द्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-सीबीआरआई), रुड़की ने 11 मई 2026 को सीएसआईआर, नई दिल्ली स्थित श्री शांति स्वरूप भटनागर सभागार में राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस मनाया। कार्यक्रम में डॉ. (श्रीमती) एन. कलैसेल्वी, महानिदेशक, सीएसआईआर एवं सचिव, डीएसआईआर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहीं, जबकि प्रो. आर. प्रदीप कुमार, निदेशक, सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की भी समारोह में मौजूद रहे। कार्यक्रम का समन्वयन आयोजन समिति के अध्यक्ष डॉ. अजय चौरसिया, संयोजक डॉ. एस. के. पाणिग्रही, श्रीमती गायत्री देवी, एस.टी.ओ. तथा प्रो. एस. के. सिंह द्वारा किया गया। इस अवसर पर संस्थान ने सतत भवन प्रौद्योगिकी एवं स्वच्छ ऊर्जा नवाचारों के क्षेत्र में अपने महत्वपूर्ण योगदानों को प्रमुखता से प्रस्तुत किया।

https://www.pib.gov.in/PressReleaseDetail.aspx?PRID=2260074&reg=46&lang=45

Ministry of Science & Technology

CSIR-CBRI, Roorkee Transfers 13 Indigenous Technologies to Industry on National Technology Day

* CSIR-CBRI highlights major advancements in sustainable building technologies and clean energy innovations
* "Smart Village" initiative emphasizes science-driven solutions for rural development
* Transfer of 13 indigenous technologies to industries to promote sustainable development and energy security

Posted On: 12 MAY 2026 7:30AM by PIB Dehradun

New Delhi, 12 May 2026 – CSIR-Central Building Research Institute (CSIR-CBRI), Roorkee celebrated National Technology Day on 11 May 2026 at the Shri Shanti Swarup Bhatnagar Auditorium, CSIR, New Delhi. Dr. (Mrs.) N. Kalaiselvi, Director General, CSIR and Secretary, DSIR, graced the occasion as the Chief Guest. Prof. R. Pradeep Kumar, Director, CSIR-CBRI, Roorkee, was also present during the ceremony. The programme was coordinated by Dr. Ajay Chourasia, Chairman, Organising Committee, Dr. S. K. Panigrahi, Convener, Smt. Gayatri Devi, S.T.O., and Prof. S. K. Singh.

https://www.pib.gov.in/PressReleaseDetail.aspx?PRID=2260075&reg=46&lang=1

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय

वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद में राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस मनाया गया; इस अवसर पर सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान द्वारा विकसित 13 स्वदेशी प्रौद्योगिकियों को उद्योग को हस्तांतरित किया गया

अग्नि सुरक्षा, सतत निर्माण और अवसंरचना संरक्षण में सीएसआईआर-सीबीआरआई प्रौद्योगिकियों का उद्योगों को हस्तांतरण

प्रविष्टि तिथि: 12 MAY 2026 10:37AM by PIB Delhi

राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस के उपलक्ष्य और प्रौद्योगिकी आधारित विकास एवं आत्मनिर्भरता के की दिशा में भारत की प्रतिबद्धता को दोहराते हुए, वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) ने नई दिल्ली स्थित सीएसआईआर मुख्यालय में अपने मासिक प्रौद्योगिकी हस्तांतरण कार्यक्रम का आयोजन किया। इस कार्यक्रम का मुख्य विषय वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद- केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान रुड़की द्वारा प्रौद्योगिकी हस्तांतरण था। इस दौरान संस्थान द्वारा विकसित 13 स्वदेशी प्रौद्योगिकियों को उद्योगों और स्टार्टअप्स को हस्तांतरित किया गया।

कार्यक्रम के समन्वयक, वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद- केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान के डॉ. अजय चौरसिया ने प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए देश में नवाचार-आधारित विकास को गति देने में उद्योग-उन्मुख प्रौद्योगिकी प्रसार के महत्व का उल्लेख किया।

वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद- केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान के निदेशक, प्रोफेसर आर. प्रदीप कुमार ने संस्थान की तकनीकी उपलब्धियों और सामाजिक रूप से प्रासंगिक नवाचारों को प्रस्तुत करते हुए कहा कि राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस पर प्रौद्योगिकी हस्तांतरण कार्यक्रम का आयोजन विशेष महत्व रखता है। प्रोफेसर कुमार ने कहा कि वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद- केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान द्वारा विकसित स्वदेशी प्रौद्योगिकियों और नवाचारों का उद्योग को हस्तांतरण भारत के अनुसंधान पारिस्थितिकी तंत्र की बढ़ती क्षमता और राष्ट्र निर्माण में इसके योगदान को दर्शाता है। प्रोफेसर कुमार ने जोर दिया कि इस तरह की पहल आत्मनिर्भर भारत, सतत अवसंरचना और प्रौद्योगिकी-संचालित विकास की अवधारणा को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

CSIR-CBRI in the Limelight | 29.04.2026

8 हरिद्वार: दैनिक हाक, बुधवार, 29 अप्रैल 2026

सीबीआरआई में विश्व धरोहर दिवस का किया आयोजन

संघर्षों और आपदाओं के संदर्भ में जीवित विरासत के लिए आपातकालीन प्रतिक्रिया पर हुई चर्चा

कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य देश की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण के प्रति जागरूकता बढ़ाना तथा वैज्ञानिक एवं तकनीकी दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करना रहा

रुड़की (दैनिक हाक): सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान, रुड़की द्वारा 28 अप्रैल मंगलवार को आरएनटी सभागार में विश्व धरोहर दिवस का आयोजन किया गया, जिसमें इस वर्ष की थीम संघर्षों और आपदाओं के संदर्भ में जीवित विरासत के लिए आपातकालीन प्रतिक्रिया पर चर्चा की गई। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य देश की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण के प्रति जागरूकता बढ़ाना तथा वैज्ञानिक एवं तकनीकी दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करना रहा।

कार्यक्रम की शुरुआत में डॉ. नीरज जैन, वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक एवं ओडीएस प्रमुख ने सभी का हार्दिक स्वागत करते हुए विश्व धरोहर दिवस के बारे में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि विश्व धरोहर दिवस प्रतिवर्ष 18 अप्रैल को मनाया जाता है, जिसका उद्देश्य विश्व धरोहर स्थलों के महत्व और भविष्य की पीढ़ियों के लिए उनकी सुरक्षा सुनिश्चित करने की आवश्यकता के प्रति जागरूकता बढ़ाना है। विश्व धरोहर स्थल हमारी साझा सांस्कृतिक और प्राकृतिक विरासत का एक अमूल्य हिस्सा हैं, और उनकी रक्षा तथा संरक्षण करना हम सभी का सामूहिक दायित्व है। इसके उपरांत प्रो. आर. प्रदीप कुमार, निदेशक, सीबीआरआई ने अपने संबोधन में विरासत संरक्षण में वैज्ञानिक अनुसंधान की भूमिका को प्रमुखता से रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि पारंपरिक निर्माण तकनीकों और आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण के समन्वय से ही ऐतिहासिक संरचनाओं का दीर्घकालिक संरक्षण सुनिश्चित किया जा सकता है। उन्होंने आगे बताया कि सीबीआरआई द्वारा विरासत भवनों के संरचनात्मक मूल्यांकन, संरक्षण तकनीकों के विकास तथा आपदा जोखिम न्यूनीकरण के क्षेत्रों में निरंतर कार्य किया जा रहा है। कार्यक्रम का प्रमुख आकर्षण आमंत्रित वक्ता का व्याख्यान रहा। इस अवसर पर डॉ. अचल कुमार मित्तल एमेरिटस वैज्ञानिक ने श्विरासत संरचनाओं का संरक्षण: समस्या विवरण, केस स्टडी और भविष्य की दिशाएँ विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। उन्होंने ऐतिहासिक संरचनाओं के संरक्षण से जुड़ी चुनौतियों, विभिन्न केस स्टडी एवं भविष्य की रणनीतियों पर विस्तार से चर्चा की, जिससे उपस्थित प्रतिभागियों को महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त हुई। कार्यक्रम के दौरान Heritage and special structures समूह की वरिष्ठ वैज्ञानिक हीना गुप्ता ने विश्व विरासत दिवस 2026 के बारे में विखित जानकारी देते हुए बताया कि यह दिवस हमारी साझा मानवीय इतिहास की विविधता,उसकी संवेदनशीलता और उसके संरक्षण के प्रति जागरूकता फैलाने के लिए एक वैश्विक आह्वान के रूप में करता है। Heritage special structures स प्रमुख डॉ. सिद्धार्थ बेहरा ने अ৲ समूह की वर्तमान और पिछली गतिविधियों के बारे में जानकारी दी। इसके अतिरिक्त, सेंटर ऑफ एक्सीलेंस (CoE&Heritage) पर आधारित एक लघु फिल्म का प्रदर्शन किया गया। विश्व धरोहर विषय पर एक रोचक प्रश्नोत्तरी (क्विज) प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें सभी ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। कार्यक्रम का समापन धन्यवाद ज्ञापन एवं राष्ट्रगान के साथ हुआ। इस अवसर पर संस्थान के वैज्ञानिकों, कर्मचारियों, एसीएसआईआर के छात्रों एवं प्रशिक्षु छात्रों की सक्रिय भागीदारी रही। यह आयोजन न केवल विरासत संरक्षण के प्रति जागरूकता बढ़ाने में सफल रहा, बल्कि वैज्ञानिक दृष्टिकोण के माध्यम से सांस्कृतिक धरोहरों की सुरक्षा के लिए एक सशक्त मंच भी प्रदान किया।

CSIR-CBRI in the Limelight | 28.04.2026

सीबीआरआई में विश्व धरोहर दिवस का आयोजन : "विरासत संरचनाओं के संरक्षण की आवश्यकता "

Share

रूड़की.

सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान, रुड़की द्वारा 28 अप्रैल 2026 को आरएनटी सभागार में विश्व धरोहर दिवस का आयोजन किया गया, जिसमें इस वर्ष की थीम "संघर्षों और आपदाओं के संदर्भ में जीवित विरासत के लिए आपातकालीन प्रतिक्रिया" पर चर्चा की गई। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य देश की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण के प्रति जागरूकता बढ़ाना तथा वैज्ञानिक एवं तकनीकी दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करना रहा।

कार्यक्रम की शुरुआत में डॉ. नीरज जैन, वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक एवम ओडीएस प्रमुख ने सभी का हार्दिक स्वागत करते हुए विश्व धरोहर दिवस के बारे में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि विश्व धरोहर दिवस प्रतिवर्ष 18 अप्रैल को मनाया जाता है, जिसका उद्देश्य विश्व धरोहर स्थलों के महत्व और भविष्य की पीढ़ियों के लिए उनकी सुरक्षा सुनिश्चित करने की आवश्यकता के प्रति जागरूकता बढ़ाना है। विश्व धरोहर स्थल हमारी साझा सांस्कृतिक और प्राकृतिक विरासत का एक अमूल्य हिस्सा हैं, और उनकी रक्षा तथा संरक्षण करना हम सभी का सामूहिक दायित्व है।

इसके उपरांत, प्रो. आर. प्रदीप कुमार, निदेशक, सीबीआरआई ने अपने संबोधन में विरासत संरक्षण में वैज्ञानिक अनुसंधान की भूमिका को प्रमुखता से रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि पारंपरिक निर्माण तकनीकों और आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण के समन्वय से ही ऐतिहासिक संरचनाओं का दीर्घकालिक संरक्षण सुनिश्चित किया जा सकता है। उन्होंने आगे बताया कि सीबीआरआई द्वारा विरासत भवनों के संरचनात्मक मूल्यांकन, संरक्षण तकनीकों के विकास तथा आपदा जोखिम

https://thesoulofindia.in/world-heritage-day-organized-at-cbri-need-for-conservation-of-heritage-structures/

रुड़की | शिक्षा/स्वास्थ्य | हरिद्वार

विश्व धरोहर स्थल हमारी साझा सांस्कृतिक और प्राकृतिक विरासत का एक अमूल्य हिस्सा...पढ़ें

Uttarakhand Parikalpana April 28, 2026

रुड़की(अनिल शीर्षवाल)। सीएसआईआर–केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान, रुड़की द्वारा आरएनटी सभागार में विश्व धरोहर दिवस का आयोजन किया गया, जिसमें इस वर्ष की थीम "संघर्षों और आपदाओं के संदर्भ में जीवित विरासत के लिए आपातकालीन प्रतिक्रिया" पर चर्चा की गई। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य देश की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण के प्रति जागरूकता बढ़ाना तथा वैज्ञानिक एवं तकनीकी दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करना रहा।

कार्यक्रम की शुरुआत मे डॉ. नीरज जैन, वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक एवम ओडीएस प्रमुख ने सभी का हार्दिक स्वागत करते हुए विश्व धरोहर दिवस के बारे मे जानकारी दी। उन्होने बताया कि विश्व धरोहर दिवस प्रतिवर्ष 18 अप्रैल को मनाया जाता है, जिसका उद्देश्य विश्व धरोहर स्थलों के महत्व और भविष्य की पीढ़ियों के लिए उनकी सुरक्षा सुनिश्चित करने की आवश्यकता के प्रति जागरूकता बढ़ाना है। विश्व धरोहर स्थल हमारी साझा सांस्कृतिक और प्राकृतिक विरासत का एक अमूल्य हिस्सा हैं, और उनकी रक्षा तथा संरक्षण करना हम सभी का सामूहिक दायित्व है।

इसके उपरांत, प्रो. आर. प्रदीप कुमार, निदेशक, सीबीआरआई ने अपने संबोधन में विरासत संरक्षण में वैज्ञानिक अनुसंधान की भूमिका को प्रमुखता से रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि पारंपरिक निर्माण तकनीकों और आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण के समन्वय से ही ऐतिहासिक संरचनाओं का दीर्घकालिक संरक्षण सुनिश्चित किया जा सकता है। उन्होंने आगे बताया कि सीबीआरआई द्वारा विरासत भवनों के संरचनात्मक मूल्यांकन, संरक्षण तकनीकों के विकास तथा आपदा जोखिम न्यूनीकरण के क्षेत्रों में निरंतर कार्य किया जा रहा है।

https://uttarakhandparikalpana.com/world-heritage-sites-an-invaluable-part-of-our-shared-cultural-and-natural-heritage-read/

CSIR-CBRI in the Limelight | 17.04.2026

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय

Azadi Ka Amrit Mahotsav

सीएसआईआर–सीबीआरआई में स्मार्ट विलेज पहल पर दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला संपन्न

-कार्यशाला ग्रामीण क्षेत्रों में सीएसआईआर प्रौद्योगिकियों के परिचालन नियोजन और तैनाती पर केंद्रित है

-2027 तक चयनित गांवों में स्मार्ट विलेज पहल के कार्यान्वयन के लिए रोडमैप तैयार

-बाल रक्षा भारत के साथ सहयोग सामाजिक एकीकरण और संसाधन जुटाने की रणनीतियों को मजबूत करता है

प्रविष्टि तिथि: 16 APR 2026 10:53PM by PIB Dehradun

सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान रुड़की ने बुधवार को अपने परिसर में बाल रक्षा भारत के सहयोग से स्मार्ट विलेज पहल पर दो दिवसीय प्रशिक्षण-सह-नियोजन कार्यशाला का सफलतापूर्वक समापन किया।

दो दिवसीय कार्यशाला सीएसआईआर प्रौद्योगिकियों के जमीनी स्तर पर तैनाती के लिए परिचालन नियोजन और संसाधन जुटाने की रणनीतियों पर केंद्रित थी, जिसमें 2027 तक कार्यान्वयन के लिए एक व्यापक रोडमैप तैयार करने हेतु वरिष्ठ अधिकारियों, वैज्ञानिकों और एनजीओ प्रतिनिधियों को एक साथ लाया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत सीएसआईआर-सीबीआरआई के निदेशक श्री आर प्रदीप कुमार रामंचरला द्वारा उद्घाटन के साथ हुई, जिन्होंने नवीन और टिकाऊ प्रौद्योगिकियों के माध्यम से समग्र ग्रामीण विकास को चलाने में स्मार्ट विलेज मिशन की परिवर्तनकारी क्षमता पर प्रकाश डाला। उन्होंने संदर्भ-विशिष्ट समाधान प्रदान करने में 16 सीएसआईआर प्रयोगशालाओं की भूमिका पर जोर दिया और बाल रक्षा भारत के साथ सहयोग की सराहना की।

बाल रक्षा भारत के निदेशक श्री अविनाश सिंह ने प्रभावी कार्यान्वयन के लिए हितधारकों की भागीदारी, सामाजिक एकीकरण और सीएसआर-आधारित वित्त पोषण रणनीतियों के महत्व को रेखांकित किया।

https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2252796&reg=3&lang=2

Ministry of Science & Technology

Azadi Ka Amrit Mahotsav

Two days Training Workshop on Smart Village Initiative concludes at CSIR–CBRI

* Workshop focuses on operational planning and deployment of CSIR technologies in rural areas

* Roadmap prepared for implementation of Smart Village Initiative across selected villages by 2027

* Collaboration with Bal Raksha Bharat strengthens social integration and resource mobilization strategies

Posted On: 16 APR 2026 10:56PM by PIB Dehradun

The CSIR–Central Building Research Institute (CSIR-CBRI) Roorkee on Wednesday successfully concluded a two-day Training-cum-Planning Workshop on the Smart Village Initiative at its campus in collaboration with Bal Raksha Bharat.

The two days workshop focused on operational planning for on-ground deployment of CSIR technologies and strategies for resource mobilization, bringing together senior officials, scientists, and NGO representatives to formulate a comprehensive roadmap for implementation by 2027

https://www.pib.gov.in/PressReleaseDetail.aspx?PRID=2252797&reg=46&lang=1

सीएसआईआर–सीबीआरआई में स्मार्ट विलेज पहल पर दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला संपन्न

Uttarakhand

April 16, 2026 Garhwalkipukar Leave A Comment

-कार्यशाला ग्रामीण क्षेत्रों में सीएसआईआर प्रौद्योगिकियों के परिचालन नियोजन और तैनाती पर केंद्रित है

-2027 तक चयनित गांवों में स्मार्ट विलेज पहल के कार्यान्वयन के लिए रोडमैप तैयार

-बाल रक्षा भारत के साथ सहयोग सामाजिक एकीकरण और संसाधन जुटाने की रणनीतियों को मजबूत करता है

सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान रुड़की ने बुधवार को अपने परिसर में बाल रक्षा भारत के सहयोग से स्मार्ट विलेज पहल पर दो दिवसीय प्रशिक्षण-सह-नियोजन कार्यशाला का सफलतापूर्वक समापन किया।

दो दिवसीय कार्यशाला सीएसआईआर प्रौद्योगिकियों के जमीनी स्तर पर तैनाती के लिए परिचालन नियोजन और संसाधन जुटाने की रणनीतियों पर केंद्रित थी, जिसमें 2027 तक कार्यान्वियन के लिए एक व्यापक रोडमैप तैयार करने हेतु वरिष्ठ अधिकारियों, वैज्ञानिकों और एनजीओ प्रतिनिधियों को एक साथ लाया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत सीएसआईआर-सीबीआरआई के निदेशक श्री आर प्रदीप कुमार रामचरला द्वारा उद्घाटन के साथ हुई, जिन्होंने नवीन और टिकाऊ प्रौद्योगिकियों के माध्यम से समग्र ग्रामीण विकास को चलाने में स्मार्ट विलेज मिशन की परिवर्तनकारी क्षमता पर प्रकाश डाला। उन्होंने संदर्भ-विशिष्ट समाधान

https://garhwalkipukar.com/uttarakhand/csir/

सीएसआइआर-सीबीआरआइ में स्मार्ट विलेज पहल पर दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला संपन्न

BY LOCNIRNAY@GMAIL.COM APRIL 16, 2026 0 COMMENTS 58 VIEWS

देहरादून। (लोक निर्णय)सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीएसआइआर-सीबीआरआइ) रुड़की ने बुधवार को अपने परिसर में बाल रक्षा भारत के सहयोग से स्मार्ट विलेज पहल पर दो दिवसीय प्रशिक्षण-सह-नियोजन कार्यशाला का सफलतापूर्वक समापन किया। कार्यशाला सीएसआर प्रौद्योगिकियों के जमीनी स्तर पर तैनाती के लिए परिचालन नियोजन और संसाधन जुटाने की रणनीतियों पर केंद्रित थी। जिसमें वर्ष. 2027 तक कार्यान्वयन के लिए एक व्यापक रोडमैप तैयार करने हेतु वरिष्ठ अधिकारियों, वैज्ञानिकों और एनजीओ प्रतिनिधियों को एक साथ लाया गया।कार्यक्रम की शुरुआत सीएसआइआर-सीबीआरआइ के निदेशक आर. प्रदीप कुमार रामंचरला द्वारा उद्घाटन के साथ हुई।जिन्होंने नवीन और टिकाऊ प्रौद्योगिकियों के माध्यम से समग्र ग्रामीण विकास को चलाने में स्मार्ट विलेज मिशन की परिवर्तनकारी क्षमता पर प्रकाश डाला। उन्होंने संदर्भ-विशिष्ट समाधान प्रदान करने में 16 सीएसआइआर प्रयोगशालाओं की भूमिका पर जोर दिया और बाल रक्षा भारत के साथ सहयोग की सराहना की।बाल रक्षा भारत के

UNCATEGORIZED

CSIR-CBRI Hosts Two-Day Training-cum-Planning Workshop on Smart Village Initiative:

By Sahara Live News

CSIR-CBRI Hosts Two-Day Training-cum-Planning Workshop on Smart Village Initiative:

The CSIR-Central Building Research Institute (CSIR-CBRI) successfully organized a two-day Training-cum-Planning Workshop on the Smart Village Initiative at its campus on April 15–16, 2025, in collaboration with Bal Raksha Bharat (BRB).

The workshop focused on operational planning for on-ground deployment of CSIR technologies and strategies for resource mobilization. The workshop brought together senior officials, scientists, and NGO with the objective of formulating a comprehensive roadmap for the successful implementation of the initiative by 2027.

The programme commenced with the inauguration by Prof. R. Pradeep Kumar Ramancharla, Director, CSIR-CBRI, who emphasized the transformative potential of the Smart Village Mission in driving holistic rural development through innovative and sustainable technologies. He highlighted the critical role of 16 CSIR laboratories in deploying context-specific technological solutions aimed at improving the quality of life in rural areas and expressed his gratitude to the Bal Raksha Bharat team for their collaboration and commitment to the mission. Shri Anirash Singh, Director, Bal Raksha Bharat, underscored the importance of integrating social components, stakeholder engagement, and CSR-based funding strategies.

Representatives from CSIR-CBRI, including Dr. D.P. Kanungo, Dr. Nagesh, Dr. Ravindra, Dr. Kishor Kulkarni, Dr. Chandan, Dr. Tabish, Dr. Veena, Dr. Naveen, Ar. Anup, Mr. Abhishek Kumar, Ar. Abhishek Singh, and Ms. Nisha, actively participated in the discussions and made significant contributions toward finalizing the project roadmap.

…, the Bal Raksha Bharat team—comprising Shri Mintu Debnath, Dr. Tanvi Singh Chauhan, Mr. Abhijeet Nirmal, Shri Sanjay Mode, Mr. Naveen Shukla, Shri John Stanley, Mr. Kunal Das, Sh. Sanjay Sharma, and Shri Sandeep Sharma—engaged actively in the sessions, gaining valuable insights into technological solutions and their integration with social development components.

https://www.saharalivenews.com/archives/10874

क्विक रीड

श्री राम मंदिर में सूर्य तिलक प्रणाली का सीबीआरआई ने किया प्रदर्शन

रुड़की, 27 मार्च (अनिल) : राम नवमी के अवसर पर सीएसआईआर-सीबीआरआई रुड़की द्वारा विकसित सूर्य तिलक प्रणाली का आज राम जन्मभूमि मंदिर परिसर में दोपहर 12:00 से 12:08 बजे तक सफलतापूर्वक प्रदर्शन किया गया। इस वर्ष का आयोजन विशेष महत्व रखता है क्योंकि यह सूर्य तिलक मंदिर के निर्माण कार्यों की पूर्णता के पश्चात आयोजित किया गया। सूर्य तिलक प्रणाली के सफल प्रदर्शन को सुनिश्चित करने के लिए लेंस प्रणाली को सावधानीपूर्वक साफ किया गया और पुनः संरेखित (रियलाइन्ड) एवं पुनः अंशांकित (रीकैलिब्रेट) भी किया गया। इस कार्य में सीएसआईआर-सीबीआरआई रुड़की के वैज्ञानिक डॉ. आरएस बिष्ट और अभियंता वी. चक्रधर सहित ऑप्टिका टीम शामिल रही, जिन्होंने ऑप्टिकल सेटअप की गहन सफाई, पूर्व-कार्यक्रम अंशांकन, संरेखण एवं परीक्षण कार्य संपन्न किया।

श्री राम लला की मूर्ति पर चमकता सूर्य तिलक।

सूर्य तिलक

अयोध्या: भगवान श्रीराम के जन्मोत्सव रामनवमी पर शुक्रवार को 10 लाख से अधिक श्रद्धालु अयोध्या पहुंचे। राम मंदिर में दोपहर 12 बजे वैज्ञानिक तकनीक की मदद से रामलला का दिव्य 'सूर्य तिलक' किया गया। करीब नौ मिनट तक सूर्य की किरणें सीधे भगवान के मस्तक पर पड़ीं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने नई दिल्ली में 'सूर्य तिलक' समारोह को ऑनलाइन माध्यम से देखा।

राष्ट्रीय

Roorkee: सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की द्वारा विकसित सूर्य तिलक प्रणाली का "श्री राम मंदिर, अयोध्या" में सफलतापूर्वक प्रदर्शन

Manoj kumar · 5 days ago

302 · 1 minute read

https://www.nazariyanews.com/41526/

CSIR-CBRI in the Limelight | 03.03.2026

बढ़ते वायु प्रदूषण और तापमान वृद्धि के दुष्प्रभावों पर की चर्चा

- सीबीआरआइ रुड़की में राष्ट्रीय विज्ञान दिवस समारोह का किया गया आयोजन
- विज्ञानी बोले, जिज्ञासा ही विज्ञान की मूल प्रेरणा, जो नई खोजों का मार्ग करती है प्रशस्त

जागरण संवाददाता, रुड़की: केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआइ) रुड़की में राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के उपलक्ष्य में 'विज्ञान में महिलाएं : विकसित भारत को उत्प्रेरित करना' विषय पर विज्ञान दिवस समारोह आयोजित किया गया। इस मौके पर विज्ञानियों ने कहा कि जिज्ञासा ही विज्ञान की मूल प्रेरणा है, जो नई खोजों व नवाचारों का मार्ग प्रशस्त करती है। इस दौरान हिमालयी पारिस्थितिकी तंत्र पर बढ़ते वायु प्रदूषण, ब्लैक कार्बन व तापमान वृद्धि के दुष्प्रभावों पर भी चर्चा की गई।

सोमवार को आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में आर्यभट्ट प्रेक्षण विज्ञान शोध संस्थान (एआरआइएस) नैनीताल के उपाध्यक्ष एवं विज्ञानी डा. नरेंद्र सिंह उपस्थित रहे। उन्होंने 'हिमालय में वायु प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन' विषय पर व्याख्यान दिया। उन्होंने कहा कि जलवायु परिवर्तन के कारण ग्लेशियरों का पिघलना, जल स्रोतों में कमी व प्राकृतिक आपदाओं की तीव्रता में वृद्धि गंभीर चिंता का विषय है। सीबीआरआइ रुड़की के निदेशक प्रो. आर प्रदीप कुमार ने विज्ञान के क्षेत्र में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी की सराहना करते हुए विशेष रूप से संस्थान की महिला विज्ञानियों एवं कर्मियों के योगदान को उल्लेखनीय बताया। संस्थान के वरिष्ठ प्रधान विज्ञानी डा. नीरज जैन ने राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के महत्व व इसके उद्देश्यों की रूपरेखा प्रस्तुत की। इस मौके पर दीप्ति कर्माकर आदि उपस्थित रहे।

केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान रुड़की में आयोजित राष्ट्रीय विज्ञान दिवस समारोह में उपस्थित अतिथि और विज्ञानी • साभार-संस्थान

पर्यावास और प्रकृति के सामंजस्य से महका सीबीआरआई परिसर-51वें वार्षिक फ्लावर शो में प्रकृति संरक्षण और सतत विकास का अनूठा संदेश...

शिकायतकर्ता उपस्थित रहे। मौके पर, संतोष थापा सहित अन्य सदस्य मौजूद रहे। आधार पर उचित वेतनमान मिले।

पर्यावास और प्रकृति के सामंजस्य से महका सीबीआरआई परिसर

51वें वार्षिक फ्लावर शो में प्रकृति संरक्षण और सतत विकास का अनूठा संदेश

रुड़की, 10 मार्च (अनिल) : सीएसआईआर-सीबीआरआई रुड़की में मंगलवार को 51वां वार्षिक फ्लावर शो उत्साह और भव्यता के साथ संपन्न हुआ। इस वर्ष की थीम पर्यावास और प्रकृति का सामंजस्य रही, जो आधुनिक मानव आवास और प्राकृतिक संतुलन के बीच एक सेतु का कार्य करती दिखी।

प्रदर्शनी का अवलोकन करते अतिथि। *(दीपक)*

संस्थान के निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने कहा कि फूल न केवल सुंदरता के प्रतीक हैं, बल्कि वे हमारे जीवन में सकारात्मक ऊर्जा का संचार भी करते हैं। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि सतत विकास तभी संभव है जब हम अपने प्राकृतिक संसाधनों और हरियाली के संरक्षण को प्राथमिकता दें। डॉ. चंदन स्वरूप मीना ने आयोजन की महत्ता पर प्रकाश डाला। पुष्प प्रदर्शनी के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं ने दर्शकों का मन मोह लिया। इनमें पुष्प सज्जा में फूलों को कलात्मक रूप देकर पर्यावरण का संदेश दिया गया। गमला प्रदर्शनी में विभिन्न सजावटी और दुर्लभ पौधों की प्रजातियों का प्रदर्शन। कार्यक्रम का विशेष आकर्षण फैशन शो रहा।

कार्यक्रम को सफल बनाने में संयोजिका डॉ. लीना चौरसिया और सह-संयोजक डॉ. सोजू एलेक्जेंडर की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

epaper
हि हिन्दुस्तान

Share Copy url Save Font Size D'load Image Image Text Listen

रंग-बिरंगे फूलों से महकी प्रदर्शनी

रुड़की, कार्यालय संवाददाता। सीबीआरआई में मंगलवार को पर्यावास और प्रकृति का सामंजस्य थीम के साथ 51वां वार्षिक फ्लावर शो उत्साह और उल्लास के साथ मनाया गया। इस आयोजन ने न केवल फूलों की सुंदरता को प्रदर्शित किया, बल्कि मानव आवास और पर्यावरण के बीच संतुलन बनाए रखने का एक सशक्त संदेश भी दिया।

रुड़की के सीबीआरआई में मंगलवार को आयोजित पुष्प प्रदर्शनी का अवलोकन करते अतिथि।

कार्यक्रम की शोभा मुख्य अतिथि विधायक प्रदीप बत्रा की पत्नी मनीषा बत्रा ने बढ़ाई। संस्थान के निदेशक प्रो. आर प्रदीप कुमार ने सभी अतिथियों का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि फूल सकारात्मकता के प्रतीक हैं जो मन को शांति प्रदान करते हैं। कार्यक्रम की शुरुआत डॉ. चंदन स्वरूप मीना के स्वागत उद्बोधन से हुई। प्रदर्शनी के दौरान संस्थान का परिसर रंग-बिरंगे फूलों और दुर्लभ पौधों की प्रजातियों से महक उठा। आयोजन के मुख्य आकर्षण विविध प्रतियोगिताएं रहीं। पुष्प सज्जा, गमलों की सजावट और बागवानी श्रेणियों में प्रतिभागियों ने अपनी रचनात्मकता का प्रदर्शन किया। अस्वथी, दीप्ति कर्माकर और दीक्षा गुप्ता द्वारा आयोजित फैशन शो ने कार्यक्रम में ग्लैमर और उत्साह का तड़का लगाया। इस भव्य आयोजन को सफल बनाने में कार्यक्रम की संयोजिका डॉ. लीना चौरसिया और सह-संयोजक डॉ. सोजू एलेक्जेंडर की महत्वपूर्ण भूमिका रही। मौके पर विशिष्ट अतिथि आईआईटी के निदेशक केके पंत की पत्नी हेमा पंत, सीबीआरआई के निदेशक प्रो. प्रदीप कुमार की पत्नी सरलाश्री और पूर्व मुख्य वैज्ञानिक पूर्णिमा परिदा आदि शामिल रहे।

कमजोर महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रेरित करने का प्रयास किया है।

कानपुर से कला सीखीं हरिद्वार में मिली पहचान नमिता गुप्ता मूलतः कानपुर

पेंट तक के खर्च उठाकर मुकाम दिलाया है। नमिता के साथ सबसे अहम बात है कि उनके ससुराल में पति बेटे और अन्य सदस्यों का भी भरपूर सहयोग मिलता है।

सीबीआरआई में फ्लावर शो में फूलों का अवलोकन करतीं अतिथि महिलाएं। स्रोतःसंस्थान

सीबीआरआई में फ्लावर शो का हुआ आयोजन

रुड़की। सीबीआरआई में मंगलवार को 51वां वार्षिक फ्लावर शो उत्साह आयोजित हुआ। इस वर्ष की थीम "पर्यावास और प्रकृति का सामंजस्य" रही।

रंग-बिरंगे फूलों और दुर्लभ पौधों से सजे परिसर ने दर्शकों को आकर्षित किया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि समाजसेवी मनीषा बत्रा रहीं जबकि विशिष्ट अतिथियों में हेमा पंत, सरला श्री और पूर्णिमा परिदा शामिल रहीं। संस्थान के निदेशक प्रो. आर प्रदीप कुमार ने कहा कि सतत विकास के लिए प्राकृतिक संसाधनों और हरियाली का संरक्षण आवश्यक है। पुष्प सज्जा, गमला प्रदर्शनी और बागवानी प्रतियोगिताओं ने दर्शकों का मन मोह लिया।

वहीं अस्वथी, दीप्ति कर्माकर और दीक्षा गुप्ता की ओर से आयोजित फैशन शो भी आकर्षण का केंद्र रहा। कार्यक्रम के अंत में विजेताओं को सम्मानित किया गया। आयोजन में संयोजिका डॉ. लीना चौरसिया और सह-संयोजक डॉ. सोजू एलेक्जेंडर की अहम भूमिका रही। संवाद

तीसरे दिन पहलवानों ने दिखाया दमखम

बहादराबाद। बहादराबाद में भारतीय किसान यूनियन (बेदी) और ग्रामीणों की ओर से आयोजित तीन दिवसीय राष्ट्रीय एकता दंगल के तीसरे दिन विक्की पहलवान (पंजाब) और परवेज

सीबीआरआई ने ओडिशा में किया स्मार्ट विलेज पहल की शुरुआत

संवाद न्यूज एजेंसी

रुड़की। केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) रुड़की ने ओडिशा के केंद्रापड़ा जिले के राजनगर ब्लॉक स्थित कुसुनपुर गांव में सीएसआईआर स्मार्ट विलेज पहल का शुभारंभ किया। इस कार्यक्रम का आयोजन संस्थान के निदेशक प्रदीप कुमार रमणचारला के नेतृत्व में किया गया।

इस पहल का उद्देश्य शोध संस्थानों, स्थानीय प्रशासन और कार्यान्वयन साझेदारों के सहयोग से वैज्ञानिक नवाचारों और व्यावहारिक समाधानों को ग्रामीण समुदायों तक पहुंचाना है ताकि गांवों में आधारभूत सुविधाओं, आजीविका और पर्यावरणीय स्थिरता को मजबूत किया जा सके। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में एन कलैसेल्वी, सचिव वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान विभाग एवं महानिदेशक वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद ने वर्चुअल माध्यम से हिस्सा लिया।

स्मार्ट विलेज पहल का शुभारंभ करते अतिथि। स्रोत:संस्थान

कार्यक्रम के दौरान एक प्रदर्शनी भी आयोजित की गई जिसमें विभिन्न प्रयोगशालाओं द्वारा विकसित तकनीकों को प्रदर्शित किया गया। इन तकनीकों को कुसुनपुर गांव में लागू किया जाना प्रस्तावित है।

साथ ही कुसुनपुर स्मार्ट विलेज के लिए तैयार की गई विस्तृत परियोजना रिपोर्ट का भी अनावरण किया गया। विशेषज्ञों का मानना है कि यह पहल ग्रामीण अवसंरचना, आजीविका, पर्यावरणीय संरक्षण और आवश्यक सेवाओं तक पहुंच को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। इसे देश के अन्य गांवों में भी लागू किया जा सकेगा।

Kusunpur all set to become Odisha's first smart village

Ashis Senapati / TNN / Mar 17, 2026, 00:48 IST

Select TOI as | Comments | Share | AA

Kendrapada: With modern technologies for daily life and agriculture, Odisha is all set to get its first "smart village" in Kusunpur under Rajnagar block in Kendrapada district, home to 130 families with a population of 700.

Aligning with the Prime Minister's vision of "Viksit Bharat@2047, Council of Scientific and Industrial Research (CSIR), ministry of science and technology, has launched a mission-mode project on Monday to develop Kusunpur into a smart village, marking a significant step towards promoting technology-driven, sustainable rural development. The initiative aims to bring practical solutions to rural communities through collaboration between CSIR research institutions, local administration and implementation partners.

https://timesofindia.indiatimes.com/city/bhubaneswar/kusunpur-all-set-to-become-odishas-first-smart-village/articleshow/129618151.cms

HOME ODISHA STATE POLITICS CRIME ENTERTAINMENT INDIA SPORTS HEALTH & WELLNESS ECON

CSIR SMART VILLAGE initiative inaugurated in Kusunpur

The CSIR SMART VILLAGE: An Initiative was inaugurated today at Kusunpur Village, Rajnagar Block, Kendrapara District, marking a significant step toward promoting technology-driven and sustainable rural development

by Sambad English Bureau
March 16, 2026, 6:53 PM IST

https://sambadenglish.com/news-from-around-the-state/csir-smart-village-initiative-inaugurated-in-kusunpur-11218353

← **Post**

Collector and District Magistrate Kendrapara 🇮🇳
@dmkendrapara

Building smarter villages!
The CSIR Smart Village Initiative was inaugurated at Kusunpur,Rajnagar Block, Kendrapara with support of District Administration,Bal Raksha Bharat & Nature's Club to promote sustainable rural development and better livelihoods.
@rdmodisha
@IPR_Odisha

7:24 PM · Mar 16, 2026 · **354** Views

---

https://x.com/dmkendrapara/status/2033542479052693813

facebook

Em

Video Home Live Reels Explore

🔹 ବିକଶିତ ଭାରତ ଲକ୍ଷ୍ୟ ପୂରଣ କରିବାକୁ ହେଲେ ଗ୍ରାମାଞ୍ଚଳର ସଶକ୍ତିକରଣ ଅତି ଆବଶ୍ୟକ ।
ବିଜ୍ଞାନ ଓ ପ୍ରଯୁକ୍ତିବିଦ୍ୟାର ସଫଳ ବ୍ୟବହାର ଦ୍ୱାରା କେନ୍ଦ୍ରାପଡ଼ା ଜିଲ୍ଲାର କୁସନ୍ତପୁରକୁ ସ୍ମାର୍ଟ ଗାଁ...

https://www.facebook.com/share/v/1DXsfNQT97/

CSIR 'Smart Village' Initiative Inaugurated in Kusunpur, Hosted by CSIR-CBRI Roorkee

- The CSIR Smart Village project has been launched in Kusunpur village, Odisha

- This initiative marks a significant step towards fostering technology-driven and sustainable rural development

- The program was hosted by the CSIR–Central Building Research Institute (CSIR-CBRI), Roorkee, under the leadership of Prof. Pradeep Kumar Ramancharla

Posted On: 17 MAR 2026 11:26AM by PIB Dehradun

The CSIR SMART VILLAGE: An Initiative was inaugurated today at Kusunpur Village, Rajnagar Block, Kendrapara District, Odisha, marking a significant step toward promoting technology-driven and sustainable rural development. The initiative aims to bring scientific innovations and practical solutions to rural communities through collaboration between research institutions, local administration, and implementation partners.

The event was graced remotely by Dr. (Mrs.) N. Kalaiselvi, Secretary, Department of Scientific and Industrial Research (DSIR) and Director General, CSIR, as the chief guest. Shri Raghuram R. Iyer, IAS, Collector and District Magistrate of Kendrapara, was also present, along with senior scientists and institutional representatives from participating CSIR laboratories.

The programme was hosted by CSIR–Central Building Research Institute (CSIR-CBRI), Roorkee, under the leadership of Prof. Pradeep Kumar Ramancharla, along with the Directors of the participating CSIR laboratories, including CSIR-CIMAP, CSIR-IHBT, CSIR-CEERI, CSIR-IICT, CSIR-CMERI, CSIR-SERC, CSIR-NEERI, CSIR-AMPRI, CSIR-CLRI, CSIR-NGRI, CSIR-CSIO, CSIR-CRRI, CSIR-CFTRI, and CSIR-IMMT. The programme was organized with the support of administrative officials of the Government of Odisha and the project implementation partner, Shri Santanu Chakraborty, CEO of Bal Raksha Bharat (Save the Children India), along with Mr. Madhusmit Pati, Secretary of Nature's Club.

Distinguished dignitaries present at the event included Dr. Ramanuj Narayan, Director, CSIR-IMMT, Bhubaneswar. The programme was also attended by scientists and technical staff from several CSIR laboratories, officials from the Government of Odisha, representatives from the project implementation partner organization, and members from corporate and industry sectors, and Kusunpur villagers.

During the inaugural event, an exhibition was organized to showcase the proposed technologies from various CSIR laboratories that are planned to be deployed in the village, along with the unveiling of the Detailed Project Report (DPR) for Kusunpur Smart Village.

The initiative showcases innovative technologies designed to strengthen rural infrastructure, livelihoods, environmental sustainability, and access to essential services. By integrating science, innovation, and community participation, the CSIR Smart Village initiative aims to create a replicable model for resilient and inclusive rural development.

(Release ID: 2241035) Visitor Counter : 492
Read this release in: Hindi, Urdu, Odia

https://pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2241035

The Himachal Times

Published from Dehradun & Shimla • 77th year of Publication • *Founded by S.P Pandhi*

VOL.LXXIV, No. RNI No 15357/67 UTTARAKHAND EDITION DEHRADUN • TUESDAY • 17 MARCH, 2026

Follow us on twitter.com/HimachalTimes47 & Instagram

Pages 8 2.00

CSIR 'Smart Village' initiative inaugurated in Kusunpur, Odisha

Dehradun, March 16 (HTNS): The CSIR Smart Village initiative was inaugurated at Kusunpur village in Rajnagar Block of Kendrapara district, Odisha, marking a significant step toward promoting technology-driven and sustainable rural development. The project aims to bring scientific innovations and practical solutions to rural communities through collaboration among research institutions, local administration and implementation partners.

The programme was hosted by the CSIR–Central Building Research Institute (CSIR-CBRI), Roorkee, under the leadership of Prof. Pradeep Kumar Ramancharla. The initiative seeks to strengthen rural infrastructure, livelihoods, environmental sustainability and access to essential services through the use of innovative technologies.

The inaugural event was attended remotely by Dr. (Mrs.) N. Kalaiselvi, Secretary, Department of Scientific and Industrial Research (DSIR) and Director General, CSIR, as the chief guest. Shri Raghuram R. Iyer, IAS, Collector and District Magistrate of Kendrapara, was also present along with senior scientists and representatives from participating CSIR laboratories.

Directors and representatives from several CSIR laboratories including CSIR-CIMAP, CSIR-IHBT, CSIR-CEERI, CSIR-IICT, CSIR-CMERI, CSIR-SERC, CSIR-NEERI, CSIR-AMPRI, CSIR-CLRI, CSIR-NGRI, CSIR-CSIO, CSIR-CRRI, CSIR-CFTRI and CSIR-IMMT participated in the programme.

The event was organised with the support of officials from the Government of Odisha and the project implementation partner, Bal Raksha Bharat (Save the Children India), represented by CEO Shri Santanu Chakraborty, along with Mr. Madhusmit Pati, Secretary of Nature's Club.

Among the dignitaries present was Dr. Ramanuj Narayan, Director, CSIR-IMMT, Bhubaneswar. The programme was also attended by scientists and technical staff from various CSIR laboratories, government officials, representatives from industry and corporate sectors, and villagers of Kusunpur.

An exhibition was organised during the event to showcase technologies developed by different CSIR laboratories that are proposed to be deployed in the village. The Detailed Project Report (DPR) for the Kusunpur Smart Village initiative was also unveiled.

The initiative highlights innovative solutions aimed at improving rural infrastructure, livelihoods and environmental sustainability. By integrating science, innovation and community participation, the CSIR Smart Village initiative seeks to create a replicable model for resilient and inclusive rural development across the country.

CSIR-CBRI in the Limelight | 11.02.2026

सीबीआरआई में विकसित भारत का संकल्प

स्थापना दिवस

प्राथमिकता : थ्रीडी प्रिंटिंग और टिकाऊ तकनीक

आपदा प्रबंधन पर वैज्ञानिक कार्यशाला

सीबीआरआई रुड़की ने धूमधाम से मनाया 40वां स्थापना दिवस

रुड़की, 10 फरवरी (अनिल): केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई), रुड़की ने मंगलवार को अपनी स्थापना के 80 वर्ष पूरे होने के अवसर पर भव्य समारोह का आयोजन किया। रवींद्रनाथ टैगोर सभागार में आयोजित कार्यक्रम में वैज्ञानिकों, शिक्षाविदों, छात्रों और कर्मचारियों ने संस्थान की आठ दशकों की यात्रा और राष्ट्र निर्माण में उसके योगदान को याद किया।

संस्थान के निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार एवं अतिथियों ने सीबीआरआई के नए प्रतीक चिह्न का अनावरण किया, जो संस्थान की आधुनिक पहचान और भविष्योन्मुखी दृष्टि को दर्शाता है। इस अवसर पर खानग्पा: द लिविंग हाउस ऑफ लद्दाख पुस्तक सहित वर्ष 2024 और 2025 के शोध प्रकाशनों का विमोचन भी किया गया।

Home / राष्ट्रीय / Roorkee: सीएसआईआर–सीबीआरआई, रुड़की का 80वाँ स्थापना दिवस पर भव्य समारोह आयोजित

राष्ट्रीय

Roorkee: सीएसआईआर–सीबीआरआई, रुड़की का 80वाँ स्थापना दिवस पर भव्य समारोह आयोजित

Manoj kumar · 1 week ago · 169 · 4 minutes read

Spread the love

0 Shares

रुड़की। सीएसआईआर–केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई), रुड़की ने आज अपना 80वाँ स्थापना दिवस मनाया। इस अवसर पर संस्थान परिसर स्थित रवींद्रनाथ टैगोर सभागार में आयोजित कार्यक्रम में संस्थान के वैज्ञानिकों, शिक्षाविदों, अधिकारियों, कर्मचारियों और छात्रों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया, जहाँ संस्थान की आठ दशकों की यात्रा और राष्ट्रीय विकास में उसके योगदान को रेखांकित किया गया।

epaper

हिन्दुस्तान

Share · D'load Image

रुड़की के सीबीआरआई में मंगलवार को स्थापना दिवस पर प्रदर्शनी का अवलोकन करते निदेशक और अन्य। • हिन्दुस्तान

The Himachal Times

Published from Dehradun & Shimla • 77th year of Publication • *Founded by S.P Pandhi*

VOL.LXXIV, No. RNI No 15357/67 UTTARAKHAND EDITION DEHRADUN • WEDNESDAY • 11 FEBRUARY, 2026

Follow us on twitter.com/HimachalTimes47 & Instagram

Pages 8 2.00

CSIR-CBRI, Roorkee celebrates 80th Foundation Day

Dehradun, Feb 10 (HTNS): CSIR-Central Building Research Institute (CBRI), Roorkee, celebrated its 80th Foundation Day on February 10 with great enthusiasm at the Rabindranath Tagore Auditorium on the institute campus. The event highlighted the institute's eight-decade journey and its significant contributions to national development.

Scientists, academicians, officers, staff, and students participated in large numbers. Dr. N. Gopalakrishnan, former Director of CSIR-CBRI, attended the program as the Chief Guest, while Duryodhan Sethi, former Chief Accounts Officer (CoFA) of CSIR and currently Finance Officer at the Central University of Odisha, was the Guest of Honour.

In his address, Dr. Gopalakrishnan praised the contributions of CBRI and its scientists, noting the institute's remarkable work in building science, disaster mitigation, and research-based policy-making. He highlighted research on advanced modeling techniques for the high Himalayan region, heating technologies, innovative building materials, and state-of-the-art equipment for CSIR housing projects. He also commended CBRI's expertise in geotechnical and structural engineering, applauded the strong research culture fostered under the Director's leadership, and encouraged young scientists to pursue innovation and socially relevant research.

Sethi lauded CBRI's multifaceted contributions, emphasizing its achievements in building construction, disaster management, and technology development. He underlined the institute's scientific and technological progress, projects of national importance, and societal relevance. He also praised CBRI's administrative efficiency, financial transparency, and robust research culture, describing them as the foundation of the institute's strong and credible reputation.

Institute Director Prof. R. Pradeep Kumar elaborated on CBRI's illustrious eight-decade journey, major research accomplishments, and continued role in national development. Highlighting the institute's contribution toward realizing the vision of a "Developed India," he outlined ongoing research and technology initiatives aligned with the Prime Minister's programs and schemes. Emphasizing safe and innovative construction technologies, he identified environmentally friendly building solutions, resource efficiency, and climate-sensitive infrastructure as key future priorities. He also drew attention to CBRI's R&D achievements in 3D concrete printing, advanced building materials, digital design, and indigenous technologies.

The program was coordinated by Dr. D. P. Kanungo, Chief Scientist and Chairman of the Foundation Committee. During the event, the Director and Chief Guest formally unveiled the new CBRI logo, symbolizing the institute's identity, values, and forward-looking vision. Publications for the years 2024 and 2025 were released, and Best Research Paper Awards were presented. Staff members and participants who excelled in annual sports and other activities were also honored. The book "Khangpa: The Living House of Ladakh" was formally released, adding special significance to the occasion. The ceremony concluded with a vote of thanks, the National Anthem, and the presentation of mementos to distinguished guests.

As part of the Foundation Day celebrations, a special scientific workshop on "Advances in Cryospheric Disasters, Lessons for Preparedness and Resilience" was organized under the chairmanship of Dr. O.K. P. Mishra. The workshop featured detailed discussions on experiences and lessons from natural disasters in the Himalayan region, particularly avalanches and rock-ice events. Experts shared insights on disaster risk reduction, industry collaboration, hazard preparedness, and innovative technological solutions, offering both practical and policy perspectives.

A cultural evening was also organized, featuring vibrant performances by the institute's staff and students. Songs, dances, and other artistic presentations enriched the festive atmosphere and made the event memorable.

The 80th Foundation Day of CSIR-CBRI was not only a celebration of past achievements but also reaffirmed the institute's commitment to building a safe, sustainable, and disaster-resilient future.

सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की ने मनया 80वाँ स्थापना दिवस

BY LOCHIRNAY@GMAIL.COM FEBRUARY 11, 2026 0 COMMENTS 51 VIEWS

रुड़की। सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई), रुड़की ने अपना 80 वां स्थापना दिवस मनाया। रवींद्रनाथ टैगोर सभागार में आयोजित कार्यक्रम में संस्थान के वैज्ञानिकों, शिक्षाविदों, अधिकारियों, कर्मचारियों और छात्रों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।जहां संस्थान की आठ दशकों की यात्रा और राष्ट्रीय विकास में उसके योगदान को रेखांकित किया गया। मुख्य अतिथि वसीएसआईआर-सीबीआरआई के पूर्व निदेशक डॉ. एन. गोपालकृष्णन तथा विशिष्ट अतिथि सीएसआईआर के पूर्व मुख्य लेखा अधिकारी एवं वर्तमान में केंद्रीय विश्वविद्यालय, ओडिशा के वित्त अधिकारी दुर्योधन सेठी उपस्थित थे। डॉ. एन. गोपालकृष्णन ने कहा कि संस्थान ने भवन विज्ञान, आपदा न्यूनीकरण और अनुसंधान- आधारित नीति निर्माण के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया है। उन्होंने उच्च हिमालयी क्षेत्रों के लिए विकसित उन्नत मॉडलिंग तकनीकों, हीटिंग टेक्नोलॉजी, भवन सामग्री एवं सीएसआईआर आकस से जुड़े अत्याधुनिक उपकरणों पर किए जा रहे अनुसंधान को विशेष रूप से रेखांकित किया। साथ ही, उन्होंने भू-तकनीकी (जियोटेक्निकल) एवं संरचनात्मक अभियांत्रिकी के क्षेत्र में सीबीआरआई की विशेषज्ञता की प्रशंसा करते हुए संस्थान के निदेशक के नेतृत्व में स्थापित सुदृढ़ शोध संस्कृति की सराहा और युवा वैज्ञानिकों को नवाचार एवं अनुसंधान की दिशा में कार्य करने के लिए प्रेरित किया। दुर्योधन सेठी नेसंस्थान की सतत प्रगति और निरंतर विकास यात्रा पर प्रकाश डाला।संस्थान के निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने 3D कंक्रीट प्रिंटिंग, उन्नत निर्माण सामग्री, डिजिटल डिजाइन एवं स्वदेशी तकनीकों के क्षेत्र में सीबीआरआई की आरएंडडी उपलब्धियों को विशेष रूप से रेखांकित किया। इस दौरान वर्ष 2024 एवं 2025 की सीबीआरआई प्रकाशनों पर आधारित पुस्तकों का विमोचन किया गया। इसके साथ ही सर्वश्रेष्ठ शोध पत्र पुरस्कार प्रदान किए गए तथा वार्षिक खेलकूद एवं अन्य गतिविधियों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले कर्मचारियों

Uttarakhand Usdma
12h ·

उत्तराखण्ड में बिल्डिंग बायलॉज में होगा संशोधन

मुख्य सचिव श्री आनंद बर्द्धन ने गठित की समिति

उत्तराखण्ड के जोन छह में आने के बाद उठाया अहम कदम

सीबीआरआई के निदेशक प्रो. प्रदीप करेंगे समिति की अध्यक्षता

देहरादून। उत्तराखण्ड राज्य की बढ़ती भूकंपीय संवेदनशीलता को ध्यान में रखते हुए राज्य सरकार ने भवन निर्माण नियमों को अधिक सुरक्षित और वैज्ञानिक बनाने की दिशा में बड़ा कदम उठाया है। भारतीय मानक ISO 1893-2025 के अनुसार पूरे राज्य के भूकंप जोन छह में शामिल होने के बाद अब बिल्डिंग बायलॉज में व्यापक संशोधन किया जाएगा। माननीय मुख्यमंत्री श्री पुष्कर सिंह धामी के निर्देश पर मुख्य सचिव श्री आनंद बर्द्धन द्वारा वर्तमान बिल्डिंग बायलॉज की समीक्षा एवं संशोधन हेतु सीएसआईआर -सीबीआरआई रुड़की के निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार की अध्यक्षता में 14 सदस्यीय उच्चस्तरीय समिति का गठन किया गया है। यूएलएमएमसी के निदेशक डॉ. शांतनु सरकार को समिति का संयोजक बनाया गया है। बता दें कि वर्तमान में उत्तराखण्ड राज्य में बिल्डिंग बायलॉज भारतीय मानक ब्यूरो के पुराने संस्करण ISO 1893-2002 पर आधारित हैं।

समिति में सीबीआरआई रुड़की, भारतीय मानक ब्यूरो, आईआईटी, ब्रिडकुल, लोक निर्माण विभाग, सिंचाई विभाग, नगर एवं ग्राम नियोजन विभाग, विकास प्राधिकरणों तथा भू-वैज्ञानिक विशेषज्ञों सहित विभिन्न तकनीकी संस्थानों के प्रतिनिधियों को शामिल किया गया है। समिति वास्तुविदों के साथ ही विभिन्न अभियंताओं से भी विचार-विमर्श करेगी। समिति का उद्देश्य राज्य के मौजूदा बायलॉज का गहन अध्ययन करते हुए उन्हें वर्तमान भूकंपीय मानकों, जलवायु परिस्थितियों और आधुनिक निर्माण तकनीकों के अनुरूप तैयार करना है।

मुख्य सचिव श्री आनंद बर्द्धन ने कहा कि उत्तराखण्ड की भौगोलिक परिस्थितियों और बढ़ती भूकंपीय संवेदनशीलता को देखते हुए भवन निर्माण के नियमों में परिवर्तन किया जा रहा है। राज्य सरकार भवन बायलॉज को अधिक प्रभावी, व्यावहारिक और आपदा-सुरक्षित बनाने की दिशा में ठोस कदम उठा रही है। इसी कड़ी में विशेषज्ञ समिति का गठन किया गया है। समिति भवन बायलॉज को अधिक व्यवहारिक, सुरक्षित और आपदा-रोधी बनाने के लिए अपने सुझाव देगी। उन्होंने कहा कि संशोधित नियमों से शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में सुरक्षित निर्माण को बढ़ावा मिलेगा और आपदा जोखिम में कमी आएगी।

सचिव आपदा प्रबंधन एवं पुनर्वास श्री विनोद कुमार सुमन ने कहा कि राज्य सरकार का लक्ष्य केवल नियमों में बदलाव करना नहीं बल्कि सुरक्षित निर्माण की संस्कृति विकसित करना है। उन्होंने बताया कि संशोधित बिल्डिंग बायलॉज में भूकंप-रोधी डिजाइन, भू-तकनीकी जांच, विंड लोड और स्ट्रक्चरल सेफ्टी से जुड़े प्रावधानों को शामिल करने पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। साथ ही स्थानीय पारंपरिक निर्माण तकनीकों और जलवायु अनुकूल विकास को भी बढ़ावा दिया जाएगा, जिससे सतत एवं आपदा-सक्षम विकास सुनिश्चित हो सके।

बता दें कि नए बिल्डिंग बायलॉज लागू होने से भवनों की संरचनात्मक मजबूती बढ़ेगी, आपदा के दौरान जन-धन की हानि कम होगी और सुरक्षित व टिकाऊ शहरी विकास व निर्माण को नई दिशा मिलेगी। समिति अपनी रिपोर्ट उत्तराखण्ड राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण तथा आवास विभाग को सौंपेगी। समिति द्वारा तैयार की जाने वाली रिपोर्ट के आधार पर आवास विभाग द्वारा बायलॉज में आवश्यक संशोधन एवं कार्यान्वयन की प्रक्रिया आगे बढ़ाई जाएगी।

बढ़ते वायु प्रदूषण और तापमान वृद्धि के दुष्प्रभावों पर की चर्चा

- सीबीआरआइ रुड़की में राष्ट्रीय विज्ञान दिवस समारोह का किया गया आयोजन
- विज्ञानी बोले, जिज्ञासा ही विज्ञान की मूल प्रेरणा, जो नई खोजों का मार्ग करती है प्रशस्त

जागरण संवाददाता, रुड़की: केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआइ) रुड़की में राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के उपलक्ष्य में 'विज्ञान में महिलाएं : विकसित भारत को उत्प्रेरित करना' विषय पर विज्ञान दिवस समारोह आयोजित किया गया। इस मौके पर विज्ञानियों ने कहा कि जिज्ञासा ही विज्ञान की मूल प्रेरणा है, जो नई खोजों व नवाचारों का मार्ग प्रशस्त करती है। इस दौरान हिमालयी पारिस्थितिकी तंत्र पर बढ़ते वायु प्रदूषण, ब्लैक कार्बन व तापमान वृद्धि के दुष्प्रभावों पर भी चर्चा की गई।

सोमवार को आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में आर्यभट्ट प्रेक्षण विज्ञान शोध संस्थान (एआरआइएस) नैनीताल के उपाध्यक्ष एवं विज्ञानी डा. नरेंद्र सिंह उपस्थित रहे। उन्होंने 'हिमालय में वायु प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन' विषय पर व्याख्यान दिया। उन्होंने कहा कि जलवायु परिवर्तन के कारण ग्लेशियरों का पिघलना, जल स्रोतों में कमी व प्राकृतिक आपदाओं की तीव्रता में वृद्धि गंभीर चिंता का विषय है। सीबीआरआइ रुड़की के निदेशक प्रो. आर प्रदीप कुमार ने विज्ञान के क्षेत्र में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी की सराहना करते हुए विशेष रूप से संस्थान की महिला विज्ञानियों एवं कर्मियों के योगदान को उल्लेखनीय बताया। संस्थान के वरिष्ठ प्रधान विज्ञानी डा. नीरज जैन ने राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के महत्व व इसके उद्देश्यों की रूपरेखा प्रस्तुत की। इस मौके पर दीप्ति कर्माकर आदि उपस्थित रहे।

केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान रुड़की में आयोजित राष्ट्रीय विज्ञान दिवस समारोह में उपस्थित अतिथि और विज्ञानी • सौजन्य-संस्थान

राज्य स्तरीय मास्टर्स बैडमिंटन प्रतियोगिता 27 से

हल्द्वानी। नैनीताल जिला बैडमिंटन एसोसिएशन 24वीं योनेक्स सनराइज स्टेट मास्टर्स (वेटरेंस) बैडमिंटन चैंपियनशिप आयोजित करेगा। मिनी स्टेडियम में 27 फरवरी से एक मार्च तक होने वाली प्रतियोगिता 35 से अधिक आयु वर्ग के खिलाड़ी हिस्सा लेंगे। एसोसिएशन के सचिव नरेंद्र भुटियानी ने बताया कि प्रतियोगिता में 13 जिलों के 500 खिलाड़ी हिस्सा लेंगे। संवाद

नैनीताल/ देहरादून, बुधवार 11 फरवरी 2026 दैनिक कलम का दायित्व पृष्ठ 7

CSIR – CBRI , रुड़की ने मनाया 80वाँ स्थापना दिवस

भारत को अपनी उपलब्धियों को बचाए रखने हेतु एआई के उपयोग की जरूरत

सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की ने मनाया 80वाँ स्थापना दिवस

रुड़की। सीएसआईआर–केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई), रुड़की ने अपना 80 वां स्थापना दिवस मनाया। रवींद्रनाथ टैगोर सभागार में आयोजित कार्यक्रम में संस्थान के वैज्ञानिकों, शिक्षाविदों, अधिकारियों, कर्मचारियों और छात्रों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। जहां संस्थान की आठ दशकों की यात्रा और राष्ट्रीय विकास में उसके योगदान को रेखांकित किया गया। मुख्य अतिथि सीएसआईआर–सीबीआरआई के पूर्व निदेशक डॉ. एन. गोपालकृष्णन तथा विशिष्ट अतिथि सीएसआईआर के पूर्व मुख्य लेखा अधिकारी एवं वर्तमान में केंद्रीय विश्वविद्यालय, ओडिशा के वित्त अधिकारी दुर्योधन सेठी उपस्थित थे। डॉ. एन. गोपालकृष्णन ने कहा कि संस्थान ने भवन विज्ञान, आपदा न्यूनीकरण और अनुसंधान-आधारित नीति निर्माण के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया है। उन्होंने उच्च हिमालयी क्षेत्रों के लिए विकसित उन्नत मॉड्यूलर तकनीकों, हीटिंग टेक्नोलॉजी, भवन सामग्री एवं सीएसआईआर आवास से जुड़े अत्याधुनिक उपकरणों पर किए जा रहे अनुसंधान को विशेष रूप से रेखांकित किया। साथ ही, उन्होंने भू-तकनीकी (जियोटेक्निकल) एवं संरचनात्मक अभियांत्रिकी के क्षेत्र में सीबीआरआई की विशेषज्ञता की प्रशंसा करते हुए संस्थान के निदेशक के नेतृत्व में स्थापित सुदृढ़ शोध संस्कृति की सराहना और युवा वैज्ञानिकों को नवाचार एवं अनुसंधान की दिशा में कार्य करने के लिए प्रेरित किया। दुर्योधन सेठी नेसंस्थान की सतत प्रगति और निरंतर विकास यात्रा पर प्रकाश डाला।संस्थान के निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने 3D कंक्रीट प्रिंटिंग, उन्नत निर्माण सामग्री, डिजिटल डिजाइन एवं स्वदेशी तकनीकी के क्षेत्र में सीबीआरआई की आरएंडडी उपलब्धियों को विशेष रूप से रेखांकित किया। इस दौरान वर्ष 2024 एवं 2025 की सीबीआरआई प्रकाशनों पर आधारित पुस्तकों का विमोचन किया गया। इसके साथ ही सर्वश्रेष्ठ शोध पत्र पुरस्कार प्रदान किए गए तथा वार्षिक खेलकूद एवं अन्य गतिविधियों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले कर्मचारियों

आधुनिक तकनीक से हल होगी पर्यावरण चुनौती

इंस्टीट्यूट में आयोजित कार्यक्रम में मौजूद वक्ता। स्रोत : संस्थान

देहरादून। डॉल्फिन (पीजी) इंस्टीट्यूट ऑफ बायोमेडिकल एंड नेचुरल साइंसेज में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। सीएसआईआर-स्किल इनिशिएटिव्स के तहत सीएसआईआर-सेंट्रल बिल्डिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट (सीबीआरआई), रुड़की के सहयोग से वेस्ट टू रिसोर्स अप्रोच पर कौशल विकास कार्यक्रम आयोजित हुआ। वक्ताओं ने कहा कि आधुनिक तकनीक से पर्यावरण की चुनौतियों से निपटा जा सकता है। प्राचार्य डॉ. शैलजा पंत ने स्किल-ओरिएंटेड और सस्टेनेबिलिटी-ड्रिवन एजुकेशन के महत्व पर जोर दिया। इस दौरान डॉ. वर्षा पारचा, प्रो. ज्ञानेंद्र अवस्थी, डॉ. नूतन शर्मा, डॉ. आशिष रतूड़ी, डॉ. शालिनी सिंह, डॉ. संध्या, डॉ. दीपक, डॉ. वीरेंद्र, डॉ. अंकुर, डॉ. बीना जोशी आदि मौजूद रहे। ना.सि.रि.

राज्य स्तरीय मास्टर्स बैडमिंटन प्रतियोगिता 27 से

हल्द्वानी। नैनीताल जिला बैडमिंटन एसोसिएशन 24वीं योनेक्स सनराइज स्टेट मास्टर्स (वेटरेंस) बैडमिंटन चैंपियनशिप आयोजित करेगा। मिनी स्टेडियम में 27 फरवरी से एक मार्च तक होने वाली प्रतियोगिता 35 से अधिक आयु वर्ग के खिलाड़ी हिस्सा लेंगे। एसोसिएशन के सचिव नरेंद्र भुटियानी ने बताया कि प्रतियोगिता में 13 जिलों के 500 खिलाड़ी हिस्सा लेंगे। संवाद

सीबीआरआई रुड़की में कार्यशाला आज

रुड़की, 9 फरवरी (अनिल) : केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान रुड़की 80वें स्थापना दिवस समारोह को लेकर मंगलवार को क्रायोस्फेरिक आपदाओं में प्रगति तैयारी एवं अनुकूलन क्षमता के लिए सबक शीर्षक से तकनीकी कार्यशाला का आयोजन कर रहा है। कार्यक्रम रुड़की स्थित संस्थान परिसर के रवींद्रनाथ टैगोर सभागार में आयोजित किया जाएगा। कार्यक्रम का शुभारंभ डॉ. डीपी कानूंगो के स्वागत भाषण से करेंगे। प्रो. प्रदीप कुमार रामनचारला निदेशक, सीएसआईआर-सीबीआरआई और मुख्य अतिथि डॉ. ओपी मिश्रा निदेशक, एनसीएस, एमओईएस के संबोधन करेंगे। तकनीकी सत्र में चमोली (तपोवन-विष्णुगढ़) में हुई आपदा का विश्लेषण किया जाएगा।

Uttarakhand Usdma
12h ·

उत्तराखण्ड में बिल्डिंग बायलॉज में होगा संशोधन

मुख्य सचिव श्री आनंद बर्द्धन ने गठित की समिति

उत्तराखण्ड के जोन छह में आने के बाद उठाया अहम कदम

सीबीआरआई के निदेशक प्रो. प्रदीप करेंगे समिति की अध्यक्षता

देहरादून। उत्तराखण्ड राज्य की बढ़ती भूकंपीय संवेदनशीलता को ध्यान में रखते हुए राज्य सरकार ने भवन निर्माण नियमों को अधिक सुरक्षित और वैज्ञानिक बनाने की दिशा में बड़ा कदम उठाया है। भारतीय मानक ISO 1893-2025 के अनुसार पूरे राज्य के भूकंप जोन छह में शामिल होने के बाद अब बिल्डिंग बायलॉज में व्यापक संशोधन किया जाएगा। माननीय मुख्यमंत्री श्री पुष्कर सिंह धामी के निर्देश पर मुख्य सचिव श्री आनंद बर्द्धन द्वारा वर्तमान बिल्डिंग बायलॉज की समीक्षा एवं संशोधन हेतु सीएसआईआर -सीबीआरआई रुड़की के निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार की अध्यक्षता में 14 सदस्यीय उच्चस्तरीय समिति का गठन किया गया है। यूएलएमएमसी के निदेशक डॉ. शांतनु सरकार को समिति का संयोजक बनाया गया है। बता दें कि वर्तमान में उत्तराखण्ड राज्य में बिल्डिंग बायलॉज भारतीय मानक ब्यूरो के पुराने संस्करण ISO 1893-2002 पर आधारित हैं।

समिति में सीबीआरआई रुड़की, भारतीय मानक ब्यूरो, आईआईटी, ब्रिडकुल, लोक निर्माण विभाग, सिंचाई विभाग, नगर एवं ग्राम नियोजन विभाग, विकास प्राधिकरणों तथा भू-वैज्ञानिक विशेषज्ञों सहित विभिन्न तकनीकी संस्थानों के प्रतिनिधियों को शामिल किया गया है। समिति वास्तुविदों के साथ ही विभिन्न अभियंताओं से भी विचार-विमर्श करेगी। समिति का उद्देश्य राज्य के मौजूदा बायलॉज का गहन अध्ययन करते हुए उन्हें वर्तमान भूकंपीय मानकों, जलवायु परिस्थितियों और आधुनिक निर्माण तकनीकों के अनुरूप तैयार करना है।

मुख्य सचिव श्री आनंद बर्द्धन ने कहा कि उत्तराखण्ड की भौगोलिक परिस्थितियों और बढ़ती भूकंपीय संवेदनशीलता को देखते हुए भवन निर्माण के नियमों में परिवर्तन किया जा रहा है। राज्य सरकार भवन बायलॉज को अधिक प्रभावी, व्यावहारिक और आपदा-सुरक्षित बनाने की दिशा में ठोस कदम उठा रही है। इसी कड़ी में विशेषज्ञ समिति का गठन किया गया है। समिति भवन बायलॉज को अधिक व्यवहारिक, सुरक्षित और आपदा-रोधी बनाने के लिए अपने सुझाव देगी। उन्होंने कहा कि संशोधित नियमों से शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में सुरक्षित निर्माण को बढ़ावा मिलेगा और आपदा जोखिम में कमी आएगी।

सचिव आपदा प्रबंधन एवं पुनर्वास श्री विनोद कुमार सुमन ने कहा कि राज्य सरकार का लक्ष्य केवल नियमों में बदलाव करना नहीं बल्कि सुरक्षित निर्माण की संस्कृति विकसित करना है। उन्होंने बताया कि संशोधित बिल्डिंग बायलॉज में भूकंप-रोधी डिजाइन, भू-तकनीकी जांच, विंड लोड और स्ट्रक्चरल सेफ्टी से जुड़े प्रावधानों को शामिल करने पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। साथ ही स्थानीय पारंपरिक निर्माण तकनीकों और जलवायु अनुकूल विकास को भी बढ़ावा दिया जाएगा, जिससे सतत एवं आपदा-सक्षम विकास सुनिश्चित हो सके।

बता दें कि नए बिल्डिंग बायलॉज लागू होने से भवनों की संरचनात्मक मजबूती बढ़ेगी, आपदा के दौरान जन-धन की हानि कम होगी और सुरक्षित व टिकाऊ शहरी विकास व निर्माण को नई दिशा मिलेगी। समिति अपनी रिपोर्ट उत्तराखण्ड राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण तथा आवास विभाग को सौंपेगी। समिति द्वारा तैयार की जाने वाली रिपोर्ट के आधार पर आवास विभाग द्वारा बायलॉज में आवश्यक संशोधन एवं कार्यान्वयन की प्रक्रिया आगे बढ़ाई जाएगी।

बढ़ते वायु प्रदूषण और तापमान वृद्धि के दुष्प्रभावों पर की चर्चा

- सीबीआरआइ रुड़की में राष्ट्रीय विज्ञान दिवस समारोह का किया गया आयोजन
- विज्ञानी बोले, जिज्ञासा ही विज्ञान की मूल प्रेरणा, जो नई खोजों का मार्ग करती है प्रशस्त

जागरण संवाददाता, रुड़की: केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआइ) रुड़की में राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के उपलक्ष्य में 'विज्ञान में महिलाएं : विकसित भारत को उत्प्रेरित करना' विषय पर विज्ञान दिवस समारोह आयोजित किया गया। इस मौके पर विज्ञानियों ने कहा कि जिज्ञासा ही विज्ञान की मूल प्रेरणा है, जो नई खोजों व नवाचारों का मार्ग प्रशस्त करती है। इस दौरान हिमालयी पारिस्थितिकी तंत्र पर बढ़ते वायु प्रदूषण, ब्लैक कार्बन व तापमान वृद्धि के दुष्प्रभावों पर भी चर्चा की गई।

सोमवार को आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में आर्यभट्ट प्रेक्षण विज्ञान शोध संस्थान (एआरआइएस) नैनीताल के उपाध्यक्ष एवं विज्ञानी डा. नरेंद्र सिंह उपस्थित रहे। उन्होंने 'हिमालय में वायु प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन' विषय पर व्याख्यान दिया। उन्होंने कहा कि जलवायु परिवर्तन के कारण ग्लेशियरों का पिघलना, जल स्रोतों में कमी व प्राकृतिक आपदाओं की तीव्रता में वृद्धि गंभीर चिंता का विषय है। सीबीआरआइ रुड़की के निदेशक प्रो. आर प्रदीप कुमार ने विज्ञान के क्षेत्र में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी की सराहना करते हुए विशेष रूप से संस्थान की महिला विज्ञानियों एवं कर्मियों के योगदान को उल्लेखनीय बताया। संस्थान के वरिष्ठ प्रधान विज्ञानी डा. नीरज जैन ने राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के महत्व व इसके उद्देश्यों की रूपरेखा प्रस्तुत की। इस मौके पर दीप्ति कर्माकर आदि उपस्थित रहे।

केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान रुड़की मे आयोजित राष्ट्रीय विज्ञान दिवस समारोह मे उपस्थित अतिथि और विज्ञानी • साभार-संस्थान

भूकंपीय खतरों और आपदा न्यूनीकरण रणनीतियों पर ध्यान केंद्रित किया

● जनवाणी संवाददाता, रुड़की

सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-सीबीआरआई) ने हिमाचल प्रदेश राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (एचपीएसडीएमए) के सहयोग से ₹भूकंप रेट्रोफिटिंग तकनीकियाँ एवं विस्तृत परियोजना रिपोर्ट की तैयारी₹ पर पांच दिवसीय कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। भूकंपरोधी संरचनाओं के लिए क्षमता विकास के उद्देश्य से यह कार्यक्रम सीएसआईआर कौशल विकास पहल के तहत 27 से 31 जनवरी 2026 तक आयोजित किया जा रहा है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य इंजीनियरों, विशेषज्ञों को भूकंपरोधी मरम्मत एवं आपदा जोखिम रिपोर्ट (डीपीआर) तैयार करने के क्षेत्र में उन्नत तकनीकी ज्ञान और व्यावहारिक दक्षताओं से सक्षम बनाना है। प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक एवं ओडीएस प्रमुख डॉ. नीरज जैन ने सीएसआईआर कौशल विकास पहल के तहत कार्यक्रम के उद्देश्यों और लक्ष्यों की संक्षिप्त में चर्चा की, जिसमें क्षमता निर्माण, सतत विकास और ₹आत्मनिर्भर भारत₹ की राष्ट्रीय परिकल्पना के साथ तालमेल पर जोर दिया।

कार्यक्रम समन्वयक, इं. आशीष पिप्पल ने सीएसआईआर-सीबीआरआई का संक्षिप्त परिचय दिया, जिसमें उन्नत अनुसंधान क्षमताओं, तकनीकी नवाचारों और आपदा-प्रतिरोधी अवसंरचना के विकास के माध्यम से राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान पर प्रकाश डाला। उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए,सीएसआईआर-सीबीआरआई के निदेशक प्रोफेसर आर. प्रदीप कुमार ने भूकंपीय रूप से संवेदनशील क्षेत्रों में जानमाल की हानि और आर्थिक व्यवधान को कम करने में वैज्ञानिक रेट्रोफिटिंग तकनीकों और भूकंप सुरक्षा उपायों की महत्वपूर्ण भूमिका पर बल दिया। उन्होंने

पर्यावरणीय व सामाजिक प्रभावों को कम करते हुए जोखिम को कम करने के लिए वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित दृष्टिकोणों पर बल दिया गया

साक्ष्य-आधारित इंजीनियरिंग हस्तक्षेपों की आवश्यकता को रेखांकित किया और प्रतिभागियों से आपदा-प्रतिरोधी बुनियादी ढांचे के निर्माण के लिए तकनीकी ज्ञान को व्यावहारिक समाधानों में बदलने का आग्रह किया। कार्यक्रम के दौरान डॉ. अजय चौरसिया ने हिमाचल प्रदेश में भूकंप संबंधी जोखिमों के प्रति क्षमता को सुदृढ़ करने हेतु सीएसआईआर-सीबीआरआई द्वारा किए जा रहे निरंतर प्रयासों पर प्रकाश डाला। उन्होंने विशेष रूप से आपदा तैयारी रिपोर्ट (डीपीआर) के निर्माण तथा प्रमाणित रेट्रोफिटिंग रणनीतियों के प्रभावी कार्यान्वयन की भूमिका को रेखांकित किया। डॉ. डी. पी. कानूनगो के व्याख्यान में भूकंप की क्रियाविधियों, भूकंपीय खतरों और आपदा न्यूनीकरण रणनीतियों पर ध्यान केंद्रित किया गया, जिसमें पर्यावरणीय और सामाजिक प्रभावों को कम करते हुए जोखिम को कम करने के लिए वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित दृष्टिकोणों पर बल दिया गया। कार्यक्रम के अंतर्गत विशेषज्ञ व्याख्यान, व्यावहारिक तकनीकी सत्र तथा क्षेत्र भ्रमण आयोजित किए जाएंगे, जिनके माध्यम से प्रतिभागियों को भूकंपरोधी मरम्मत की आधुनिक तकनीकों तथा भूकंप जोखिम न्यूनीकरण से जुड़े वास्तविक अनुप्रयोगों की व्यापक जानकारी प्राप्त उद्घाटन सत्र के दौरान संस्थान के मुख्य वैज्ञानिक डॉ. पी. सी. थपलियाल, प्रधान वैज्ञानिक डॉ. तबिश आलम, डॉ. नवीन निशांत, रजनीश, अजय , राशि, संस्कृति, रजत, अनुज इत्यादि उपस्थित रहे।

CSIR-CBRI in the Limelight | 29.01.2026

पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय द्वारा आयोजित की गई प्रौद्योगिकी एवं नवाचार सम्मेलन 2.0 में सीबीआरआई की उन्नत निर्माण तकनीकों की प्रस्तुति

❍ इस अवसर पर डीएसआईआर की सचिव एवं सीएसआईआर की महानिदेशक डॉ. एन. कलैसेल्वी भी उपस्थित रहीं ❍ सीएसआईआर-सीबीआरआई के मुख्य वैज्ञानिक डॉ. संजीव कुमार सिंह ने जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए ए.आई. प्रौद्योगिकियां, अवसर और चुनौतिया विषय पर व्याख्यान दिया

प्रधान टाइम्स ब्यूरो

नई दिल्ली। सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान, रुड़की ने 28-30 जनवरी 2026 को पृथ्वी भवन, पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली में प्रौद्योगिकी एवं नवाचार सम्मेलन 2.0, जो भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय के वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान विभाग (डीएसआईआर) तथा संयुक्त राष्ट्र आर्थिक एवं सामाजिक आयोग फॉर एशिया एंड द पैसिफिक (यूएन-ईएससीएपी) के एशियाई एवं प्रशांत प्रौद्योगिकी हस्तांतरण केंद्र (एपीसीटीटी) द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित किया जा रहा है, उसमें भाग लिया। सम्मेलन के दौरान आयोजित प्रदर्शनी का उद्घाटन मुख्य अतिथि, पृथ्वी विज्ञान राज्य मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह ने किया।

इस अवसर पर डीएसआईआर की सचिव एवं सीएसआईआर की महानिदेशक डॉ. एन. कलैसेल्वी भी उपस्थित रहीं। उद्घाटन के पश्चात डॉ. जितेंद्र सिंह एवं डॉ. एन. कलैसेल्वी दोनों ने सीबीआरआई के प्रदर्शनी स्टॉल का दौरा किया, जहाँ सीएसआईआर-सीबीआरआई द्वारा भवन विज्ञान एवं निर्माण के क्षेत्र में विकसित नवीन, टिकाऊ और प्रौद्योगिकी-आधारित समाधानों को प्रस्तुत किया गया। उन्होंने स्टॉल पर प्रदर्शित पीएमएवाई-जी के अंतर्गत विकसित 3डी-प्रिंटेड ग्रामीण मकान और जिग-जैग ईंट भट्ठा तकनीक जैसे मॉडलों का अवलोकन किया और संस्थान के वैज्ञानिकों से बातचीत की। इस दौरान उन्होंने जलवायु-प्रतिरोधी और टिकाऊ अवसंरचना से जुड़ी सीबीआरआई की तकनीकों और शोध कार्यों में रुचि दिखाई। उद्घाटन सत्र के दौरान डॉ. एन. कलैसेल्वी ने उपस्थित सभी लोगों को संबोधित किया। उन्होंने अपने संबोधन में जलवायु परिवर्तन से जुड़ी समस्याओं से निपटने और आपदाओं के प्रति मजबूती बढ़ाने में उन्नत तकनीकों और कृत्रिम बुद्धिमत्ता की भूमिका पर बात की। उन्होंने इस दिशा में सीएसआईआर प्रयोगशालाओं के योगदान को अहम बताया। साथ ही, उन्होंने अनुसंधान कार्यों को उपयोगी और व्यवहारिक समाधानों में बदलने की आवश्यकता पर जोर दिया, ताकि सतत विकास को बढ़ावा मिल सके।

तकनीकी कार्यक्रम के अंतर्गत सीएसआईआर-सीबीआरआई के मुख्य वैज्ञानिक डॉ. संजीव कुमार सिंह ने -जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए ए.आई. प्रौद्योगिकियां: अवसर और चुनौतियां- विषय पर व्याख्यान दिया। उन्होंने बताया कि जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को ध्यान में रखते हुए भवनों और अवसंरचना की योजना बनाने, उनकी जांच करने और उनके प्रबंधन में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग कैसे किया जा सकता है। साथ ही, उन्होंने इस क्षेत्र में सीबीआरआई द्वारा किए जा रहे अनुसंधान कार्यों और उनके वास्तविक उपयोग के उदाहरण भी प्रस्तुत किए।

संस्थान की भागीदारी ने किफायती आवास, जलवायु-लचीले बुनियादी ढांचे, सतत ग्रामीण विकास और अत्याधुनिक निर्माण अनुसंधान को बढ़ावा देने के प्रति इसकी अटूट प्रतिबद्धता को उजागर किया, जिससे राष्ट्रीय विकास लक्ष्यों और वैश्विक तकनीकी प्रगति के साथ इसका तालमेल और मजबूत हुआ।

epaper

हिन्दुस्तान

Share | Copy url | Save | Font Size | D'load Image | Image | Text | Listen

रुड़की के सीबीआरआई के नवाचार को नई दिल्ली में आयोजित प्रौद्योगिकी और नवाचार सम्मेलन में सराहना मिली। ● हिन्दुस्तान

भवनों की बेहतर योजना बना सकेंगे

रुड़की। नई दिल्ली के पृथ्वी भवन में आयोजित तीन दिवसीय प्रौद्योगिकी और नवाचार सम्मेलन 2.0 में केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) रुड़की के नवाचार आकर्षण का केंद्र रहे। संस्थान ने भविष्य की निर्माण चुनौतियों, विशेषकर जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए अपनी अत्याधुनिक और टिकाऊ तकनीकों का प्रदर्शन किया।

टेक्नोलॉजी | सीबीआरआई के स्टॉल पर जलवायु प्रतिरोधी और टिकाऊ तकनीकों का प्रदर्शन

जलवायु संकट से मुकाबले में विज्ञान की ताकत

■ सीबीआरआई ने प्रदर्शित किया जलवायु अनुकूल निर्माण नवाचार

स्टॉल का निरीक्षण करते अतिथि।

पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय द्वारा आयोजित की गई प्रौद्योगिकी एवं नवाचार सम्मेलन 2.0 में

सीबीआरआई की उन्नत निर्माण तकनीकों की प्रस्तुति

नागरिक ब्यूरो

रुड़की। सीएसआईआर केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान, रुड़की ने पृथ्वी भवन, पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली में प्रौद्योगिकी एवं नवाचार सम्मेलन 2.0, जो भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय के वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान विभाग (डीएसआईआर) तथा संयुक्त राष्ट्र आर्थिक एवं सामाजिक आयोग फॉर एशिया एंड द पैसिफिक (यूएन-ईएससीएपी) के एशियाई एवं प्रशांत प्रौद्योगिकी हस्तांतरण केंद्र (एपीसीटीटी) द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित किया जा रहा है, उसमें भाग लिया। सम्मेलन के दौरान आयोजित प्रदर्शनी का उद्घाटन मुख्य अतिथि, पृथ्वी विज्ञान राज्य मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह ने किया। इस अवसर पर डीएसआईआर की सचिव एवं

सीएसआईआर की महानिदेशक डॉ. एन. कलैसेल्वी भी उपस्थित रहीं। उद्घाटन के पश्चात डॉ. जितेंद्र सिंह एवं डॉ. एन. कलैसेल्वी दोनों ने सीबीआरआई के प्रदर्शनी स्टॉल का दौरा किया, जहां सीएसआईआरसीबीआरआई द्वारा भवन विज्ञान एवं निर्माण के क्षेत्र में विकसित नवीन, टिकाऊ और प्रौद्योगिकी-आधारित समाधानों को प्रस्तुत किया गया। उन्होंने स्टॉल पर प्रदर्शित पीएमएवाई-जी के अंतर्गत विकसित 3डी-प्रिंटेड ग्रामीण मकान और जिग-जैग ईंट भट्ठा तकनीक जैसे मॉडलों का अवलोकन किया और संस्थान के वैज्ञानिकों से बातचीत की। इस दौरान उन्होंने जलवायु-प्रतिरोधी और टिकाऊ अवसंरचना से जुड़ी सीबीआरआई की तकनीकों और शोध कार्यों में रुचि दिखाई।

उद्घाटन सत्र के दौरान डॉ. एन. कलैसेल्वी ने उपस्थित सभी लोगों को संबोधित किया। उन्होंने अपने संबोधन में जलवायु परिवर्तन से जुड़ी समस्याओं से निपटने और आपदाओं के प्रति मजबूती बढ़ाने में उन्नत तकनीकों और कृत्रिम बुद्धिमत्ता की भूमिका पर बात की। उन्होंने इस दिशा में सीएसआईआर प्रयोगशालाओं के योगदान को अहम बताया। साथ ही, उन्होंने अनुसंधान कार्यों को उपयोगी और व्यावहारिक समाधानों में बदलने की आवश्यकता पर जोर दिया, ताकि सतत विकास को बढ़ावा मिल सके। तकनीकी कार्यक्रम के अंतर्गत सीएसआईआर-सीबीआरआई के मुख्य वैज्ञानिक डॉ. संजीव कुमार सिंह ने "जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए ए.आई. प्रौद्योगिकियां: अवसर और चुनौतियां" विषय पर व्याख्यान दिया। उन्होंने बताया कि जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को ध्यान में रखते हुए भवनों और अवसंरचना की योजना बनाने, उनकी जांच करने और उनके प्रबंधन में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग कैसे किया जा सकता है। साथ ही, उन्होंने इस क्षेत्र में सीबीआरआई द्वारा किए जा रहे अनुसंधान कार्यों और उनके वास्तविक उपयोग के उदाहरण भी प्रस्तुत किए। संस्थान की भागीदारी ने किफायती आवास, जलवायु- लचीले बुनियादी ढांचे, सतत ग्रामीण विकास और अत्याधुनिक निर्माण अनुसंधान को बढ़ावा देने के प्रति इसकी अटूट प्रतिबद्धता को उजागर किया, जिससे राष्ट्रीय विकास लक्ष्यों और वैश्विक तकनीकी प्रगति के साथ इसका तालमेल और मजबूत हुआ।

टेक्नोलॉजी | सीबीआरआई के स्टॉल पर जलवायु प्रतिरोधी और टिकाऊ तकनीकों का प्रदर्शन

जलवायु संकट से मुकाबले में विज्ञान की ताकत

■ सीबीआरआई ने प्रदर्शित किया जलवायु अनुकूल निर्माण नवाचार

रुड़की, 28 जनवरी (अनिल): सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई), रुड़की ने पृथ्वी भवन, पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय, नईदिल्ली में आयोजित प्रौद्योगिकी एवं नवाचार सम्मेलन 2.0 के दौरान प्रदर्शनी में भाग लेकर जलवायु-प्रतिरोधी और टिकाऊ निर्माण तकनीकों का प्रभावी प्रदर्शन किया। यह सम्मेलन विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय के वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान विभाग (डीएसआईआर) तथा संयुक्त राष्ट्र की एशियाई एवं प्रशांत प्रौद्योगिकी हस्तांतरण केंद्र द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित किया गया।

स्टॉल का निरीक्षण करते अतिथि।

प्रदर्शनी का उद्घाटन विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी तथा पृथ्वी विज्ञान राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) डॉ. जितेंद्र सिंह ने किया। उन्होंने सीबीआरआई के स्टॉल का निरीक्षण कर वैज्ञानिकों से संवाद किया और जलवायु परिवर्तन से निपटने में संस्थान की तकनीकों और शोध प्रयासों की सराहना की। उद्घाटन सत्र में डीएसआईआर की सचिव एवं सीएसआईआर की महानिदेशक डॉ. एन. कलैसेल्वी ने कहा कि जलवायु परिवर्तन और आपदाओं से निपटने में उन्नत तकनीकों तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता की महत्वपूर्ण भूमिका है। उन्होंने अनुसंधान को व्यावहारिक और उपयोगी समाधानों में बदलने पर बल दिया। सीबीआरआई ने भवन विज्ञान एवं निर्माण क्षेत्र से जुड़े कई नवाचार प्रदर्शित किए, जिनमें पीएमएवाई-जी के तहत विकसित 3डी-प्रिंटेड ग्रामीण आवास, किफायती निर्माण तकनीकें, स्मार्ट विलेज समाधान, रेजिलिएंट बिल्डिंग सिस्टम, श्रीराम मंदिर का संरचनात्मक मॉडल तथा जिग-जैग ईंट भट्ठा तकनीक शामिल रही।

तकनीकी सत्र में मुख्य वैज्ञानिक डॉ. संजीव कुमार सिंह ने बताया कि भवनों की योजना, जांच और प्रबंधन में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के उपयोग से जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को काफी हद तक कम किया जा सकता है।

Ministry of Earth Sciences

Technology and Innovation Conference 2.0: CBRI Presents Advanced Construction Technologies

- Dr. N. Kalaiselvi, Secretary of DSIR and Director General of CSIR also present on this occasion

- Dr. Sanjeev Kumar Singh, Chief Scientist at CSIR-CBRI, delivered a lecture on the topic "AI Technologies for Addressing Climate Change: Opportunities and Challenges."

- CBRI presents advanced construction technologies at the Technology and Innovation Conference 2.0 organized by the Ministry of Earth Sciences

प्रविष्टि तिथि: 28 JAN 2026 10:51PM by PIB Dehradun

Presentation of CBRI's advanced manufacturing technologies at the Technology and Innovation Conclave 2.0 organised by the Ministry of Earth Sciences in New Delhi. CSIR–Central Building Research Institute, Roorkee, participated in the Technology and Innovation Conclave 2.0, held from January 28-30, 2026, at Prithvi Bhawan, Ministry of Earth Sciences, Government of India, New Delhi. The conference was jointly organized by the Department of Scientific and Industrial Research (DSIR) of the Ministry of Science and Technology, Government of India, and the Asian and Pacific Centre for Transfer of Technology (APCTT) of the United Nations Economic and Social Commission for Asia and the Pacific (UN-ESCAP).

The conference was jointly organized by the Department of Scientific and Industrial Research (DSIR) of the Ministry of Science and Technology, Government of India, and the Asian and Pacific Centre for Transfer of Technology (APCTT) of the United Nations Economic and Social Commission for Asia and the Pacific (UN-ESCAP). The exhibition was inaugurated by the Chief Guest, Dr. Jitendra Singh, Minister of State (Independent Charge) for Science and Technology and Earth Sciences, Government of India. Dr. N. Kalaiselvi, Secretary, DSIR and Director General, CSIR, was also present on the occasion.

Following the inauguration, both Dr. Jitendra Singh and Dr. N. Kalaiselvi visited the CSIR-CBRI exhibition stall, where innovative, sustainable, and technology-based solutions developed by CSIR-CBRI in the field of building science and construction were showcased. They viewed the models displayed at the stall, including the 3D-printed rural house developed under PMAY-G and the zig-zag brick kiln technology, and interacted with the scientists from the institute. During their visit, they expressed keen interest in CBRI's technologies and research work related to climate-resilient and sustainable infrastructure. During the inaugural session, Dr. N. Kalaiselvi addressed the attendees. In her address, she spoke about the role of advanced technologies and artificial intelligence in tackling climate change-related challenges and enhancing resilience to disasters.

https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2219859&reg=3&lang=2

निरीक्षक रविन्द्र बालियान तथा अन्य पुलिसकर्मी शामिल रहे।

स्टाफ क्लब ने जीता फ्रेंडली क्रिकेट मैच

रुड़की, 27 जनवरी (अनिल): गणतंत्र दिवस के अवसर पर सीबीआरआई क्रिकेट ग्राउंड पर सीबीआरआई पेंशनर्स वेलफेयर टीम और सीबीआरआई स्टाफ क्लब टीम के बीच एक फ्रेंडली क्रिकेट मैच खेला गया। टॉस जीतकर स्टाफ क्लब के कप्तान डीपी कानूनगो ने पहले बल्लेबाजी का निर्णय लिया। 10 ओवर के मैच में स्टाफ क्लब की टीम ने 101 रन बनाए। लक्ष्य का पीछा करते हुए पेंशनर्स वेलफेयर टीम ने अच्छा प्रदर्शन किया, लेकिन 53 रन पर पूरी टीम आउट हो गई। निदेशक ने अंपायर की भूमिका निभाई। मैच के बाद संयुक्त फोटो लिया गया।सीबीआरआई पेंशनर्स क्रिकेट टीम में डीके गौतम, एके राजदान, डॉ. अचल मित्तल, आरडी सिंह, एसके नेगी, सुरेश गिरी, जसविंदर, डॉ. पीके यादव, नरेश यादव, अरविंद शर्मा, सुशील कुमार, मेहर सिंह उपस्थित रहे।

https://www.facebook.com/share/p/18Q5UXLgCQ/

रुड़की-हरिद्वार समाचार

2d ·

भूकंप की क्रियाविधियों, भूकंपीय खतरों और आपदा न्यूनीकरण रणनीतियों पर ध्यान केंद्रित किया गया

पर्यावरणीय और सामाजिक प्रभावों को कम करते हुए जोखिम को कम करने के लिए वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित दृष्टिकोणों पर बल दिया गया

सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान में "भूकंप रेट्रोफिटिंग तकनीकियाँ एवं विस्तृत परियोजना रिपोर्ट की तैयारी" पर पांच दिवसीय कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम

रूड़की। सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-सीबीआरआई) ने हिमाचल प्रदेश राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (एचपीएसडीएमए) के सहयोग से "भूकंप रेट्रोफिटिंग तकनीकियाँ एवं विस्तृत परियोजना रिपोर्ट की तैयारी" पर पांच दिवसीय कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। भूकंपरोधी संरचनाओं के लिए क्षमता विकास के उद्देश्य से यह कार्यक्रम सीएसआईआर कौशल विकास पहल के तहत 27 से 31 जनवरी 2026 तक आयोजित किया जा रहा है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य इंजीनियरों, विशेषज्ञों को भूकंपरोधी मरम्मत एवं आपदा जोखिम रिपोर्ट (डीपीआर) तैयार करने के क्षेत्र में उन्नत तकनीकी ज्ञान और व्यावहारिक दक्षताओं से सक्षम बनाना है। प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक एवं ओडीएस प्रमुख डॉ. नीरज जैन ने सीएसआईआर कौशल विकास पहल के तहत कार्यक्रम के उद्देश्यों और लक्ष्यों की संक्षिप्त में चर्चा की, जिसमें क्षमता निर्माण, सतत विकास और "आत्मनिर्भर भारत" की राष्ट्रीय परिकल्पना के साथ तालमेल पर जोर दिया। कार्यक्रम समन्वयक, इं. आशीष पिप्पल ने सीएसआईआर-सीबीआरआई का संक्षिप्त परिचय दिया, जिसमें उन्नत अनुसंधान क्षमताओं, तकनीकी नवाचारों और आपदा-प्रतिरोधी अवसंरचना के विकास के माध्यम से राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान पर प्रकाश डाला। उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए सीएसआईआर-सीबीआरआई के निदेशक प्रोफेसर आर. प्रदीप कुमार ने भूकंपीय रूप से संवेदनशील क्षेत्रों में जानमाल की हानि और आर्थिक व्यवधान को कम करने में वैज्ञानिक रेट्रोफिटिंग तकनीकों और भूकंप सुरक्षा उपायों की महत्वपूर्ण भूमिका पर बल दिया। उन्होंने साक्ष्य-आधारित इंजीनियरिंग हस्तक्षेपों की आवश्यकता को रेखांकित किया और प्रतिभागियों से आपदा-प्रतिरोधी बुनियादी ढांचे के निर्माण के लिए तकनीकी ज्ञान को व्यावहारिक समाधानों में बदलने का आग्रह किया। कार्यक्रम के दौरान डॉ. अजय चौरसिया ने हिमाचल प्रदेश में भूकंप संबंधी जोखिमों के प्रति क्षमता को सुदृढ़ करने हेतु सीएसआईआर-सीबीआरआई द्वारा किए जा रहे निरंतर प्रयासों पर प्रकाश डाला। उन्होंने विशेष रूप से आपदा तैयारी रिपोर्ट (डीपीआर) के निर्माण तथा प्रमाणित रेट्रोफिटिंग रणनीतियों के प्रभावी कार्यान्वयन की भूमिका को रेखांकित किया। डॉ. डी. पी. कानूनगो के व्याख्यान में भूकंप की क्रियाविधियों, भूकंपीय खतरों और आपदा न्यूनीकरण रणनीतियों पर ध्यान केंद्रित किया गया, जिसमें पर्यावरणीय और सामाजिक प्रभावों को कम करते हुए जोखिम को कम करने के लिए वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित दृष्टिकोणों पर बल दिया गया।

कार्यक्रम के अंतर्गत विशेषज्ञ व्याख्यान, व्यावहारिक तकनीकी सत्र तथा क्षेत्र भ्रमण आयोजित किए जाएंगे, जिनके माध्यम से प्रतिभागियों को भूकंपरोधी मरम्मत की आधुनिक तकनीकों तथा भूकंप जोखिम न्यूनीकरण से जुड़े वास्तविक अनुप्रयोगों की व्यापक जानकारी प्राप्त उद्घाटन सत्र के दौरान संस्थान के मुख्य वैज्ञानिक डॉ. पी. सी. थपलियाल, प्रधान वैज्ञानिक डॉ. तबिश आलम, डॉ. नवीन निशांत, रजनीश, अजय , राशि, संस्कृति, रजत, अनुज इत्यादि उपस्थित थे।

CSIR-CBRI in the Limelight | 20.01.2026

सीबीआरआई का भ्रमण कर जानी भवन निर्माण की तकनीक

संवाद न्यूज एजेंसी

रुड़की। हरिओम सरस्वती पब्लिक स्कूल धनौरी के कक्षा 6 से 9 तक के छात्र-छात्राओं ने सीबीआरआई रुड़की का शैक्षणिक भ्रमण किया। इस भ्रमण का उद्देश्य विद्यार्थियों को आधुनिक विज्ञान एवं तकनीकी ज्ञान से जोड़ना और उनके शैक्षणिक दृष्टिकोण को व्यापक बनाना रहा।

भ्रमण के दौरान विद्यार्थियों ने बिल्डिंग मैटीरियल्स, एनर्जी एफिशिएंट बिल्डिंग्स, फायर सेफ्टी एवं रूरल हाउसिंग से संबंधित विभिन्न प्रयोगशालाओं का अवलोकन किया। सीबीआरआई के वैज्ञानिकों ने छात्रों को भवन निर्माण में प्रयोग होने वाली आधुनिक एवं पर्यावरण अनुकूल तकनीकों, ऊर्जा संरक्षण के उपायों और सुरक्षित निर्माण की प्रक्रिया की जानकारी दी।

विद्यालय प्रबंधक डॉ. आदित्य सैनी ने कहा कि भ्रमण से छात्रों में वैज्ञानिक सोच विकसित होती है और वे भविष्य में नवाचार की ओर प्रेरित होते हैं। प्रधानाचार्या रीमा जैन ने बताया कि विद्यार्थियों को आधुनिक भवन तकनीक, ऊर्जा दक्षता और सुरक्षा मानकों की प्रत्यक्ष जानकारी मिली है।

छात्रों ने पूरे भ्रमण के दौरान उत्साहपूर्वक भाग लिया और वैज्ञानिकों से प्रश्न पूछकर अपनी जिज्ञासा को शांत किया। यह शैक्षणिक भ्रमण विद्यार्थियों के लिए ज्ञानवर्धक एवं प्रेरणादायक सिद्ध हुआ।

भ्रमण के दौरान छात्र, शिक्षक एवं संस्थान के निदेशक और वैज्ञानिक। स्रोत : स्वयं

सीबीआरआई का भ्रमण कर जानी भवन निर्माण की तकनीक

संवाद न्यूज एजेंसी

रुड़की। हरिओम सरस्वती पब्लिक स्कूल धनौरी के कक्षा 6 से 9 तक के छात्र-छात्राओं ने सीबीआरआई रुड़की का शैक्षणिक भ्रमण किया। इस भ्रमण का उद्देश्य विद्यार्थियों को आधुनिक विज्ञान एवं तकनीकी ज्ञान से जोड़ना और उनके शैक्षणिक दृष्टिकोण को व्यापक बनाना रहा।

भ्रमण के दौरान विद्यार्थियों ने बिल्डिंग मैटीरियल्स, एनर्जी एफिशिएंट बिल्डिंग्स, फायर सेफ्टी एवं रूरल हाउसिंग से संबंधित विभिन्न प्रयोगशालाओं का अवलोकन किया। सीबीआरआई के वैज्ञानिकों ने छात्रों को भवन निर्माण में प्रयोग होने वाली आधुनिक एवं पर्यावरण अनुकूल तकनीकों, ऊर्जा संरक्षण के उपायों और सुरक्षित निर्माण की प्रक्रिया की जानकारी दी।

विद्यालय प्रबंधक डॉ. आदित्य सैनी ने कहा कि भ्रमण से छात्रों में वैज्ञानिक सोच विकसित होती है और वे भविष्य में नवाचार की ओर प्रेरित होते हैं। प्रधानाचार्या रीमा जैन ने बताया कि विद्यार्थियों को आधुनिक भवन तकनीक, ऊर्जा दक्षता और सुरक्षा मानकों की प्रत्यक्ष जानकारी मिली है।

छात्रों ने पूरे भ्रमण के दौरान उत्साहपूर्वक भाग लिया और वैज्ञानिकों से प्रश्न पूछकर अपनी जिज्ञासा को शांत किया। यह शैक्षणिक भ्रमण विद्यार्थियों के लिए ज्ञानवर्धक एवं प्रेरणादायक सिद्ध हुआ।

भ्रमण के दौरान छात्र, शिक्षक एवं संस्थान के निदेशक और वैज्ञानिक। स्रोत : स्वयं

9:04 PM
तेजस्विनी एक्सप्रेस
देहरादून संस्करण
सोमवार 19/01/2026
www.Tejasvini express.com

सीबीआरआई रुड़की में हरिओम सरस्वती पब्लिक स्कूल धनौरी के छात्रो ने किया शैक्षणिक भ्रमण

हरिद्वार। हरिओम सरस्वती पब्लिक स्कूल, धनौरी के कक्षा 6 से 9 तक के छात्र-छात्राओं ने सीबीआरआई रुड़की का शैक्षणिक भ्रमण किया। इस भ्रमण का उद्देश्य विद्यार्थियों को आधुनिक विज्ञान एवं तकनीकी ज्ञान से जोड़ना और उनके शैक्षणिक दृष्टिकोण को व्यापक बनाना रहा।

भ्रमण के दौरान विद्यार्थियों ने बिल्डिंग मैटेरियल्स, एनर्जी एफिशिएंट बिल्डिंग्स, फायर सेफ्टी तथा रूरल हाउसिंग से संबंधित विभिन्न प्रयोगशालाओं का अवलोकन किया। सीबीआरआई के वैज्ञानिकों ने छात्रों को भवन निर्माण में प्रयोग होने वाली आधुनिक एवं पर्यावरण अनुकूल तकनीकों, ऊर्जा संरक्षण के उपायों तथा सुरक्षित निर्माण की प्रक्रिया की जानकारी दी।

विद्यालय के प्रबंधक डॉ. आदित्य सैनी ने कहा कि सीबीआरआई जैसे प्रतिष्ठित संस्थान का भ्रमण विद्यार्थियों के लिए अत्यंत उपयोगी है। इससे छात्रों में वैज्ञानिक सोच विकसित होती है और वे भविष्य में नवाचार की ओर प्रेरित होते हैं। विद्यालय का उद्देश्य छात्रों को केवल किताबी ज्ञान ही नहीं, बल्कि व्यवहारिक अनुभव भी प्रदान करना है।

विद्यालय की प्रधानाचार्या रीमा जैन ने छात्रों को संबोधित करते हुए कहा कि इस शैक्षणिक भ्रमण से विद्यार्थियों को आधुनिक भवन तकनीक, ऊर्जा दक्षता और सुरक्षा मानकों की प्रत्यक्ष जानकारी मिली है। ऐसे अनुभव छात्रों के सर्वांगीण विकास में सहायक होते हैं और उन्हें भविष्य की चुनौतियों के लिए तैयार करते हैं।

छात्रों ने पूरे भ्रमण के दौरान उत्साहपूर्वक भाग लिया और वैज्ञानिकों से प्रश्न पूछकर अपनी जिज्ञासा को शांत किया। यह शैक्षणिक भ्रमण विद्यार्थियों के लिए ज्ञानवर्धक एवं प्रेरणादायक सिद्ध हुआ।

सवाई माधोपुर में प्रदर्शनी में सीएसआईआर–सीबीआरआई ने नवाचारों और विशेषज्ञता का किया प्रदर्शन

गोल्डन टाइम्स

रुड़की (आरिफ नियाजी) सीएसआईआर–केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर– सीबीआरआई), रुड़की ने 15–16 जनवरी 2026 को [illegible] माधोपुर में [illegible] कार्यशाला एवं [illegible] भाग लिया [illegible] कार्यक्रमों के [illegible] टिकाऊ और जलवायु [illegible] के अनुकूल ग्रामीण आवास को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। प्रदर्शनी का उद्घाटन राजस्थान सरकार के ग्रामीण विकास विभाग की अतिरिक्त मुख्य सचिव श्रीमती श्रेया गुहा, आईएएस और सवाई माधोपुर के जिला कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट काना राम सिरवी, आईएएस ने किया। गणमान्य व्यक्तियों ने सीएसआईआर–सीबीआरआई के स्टॉल का दौरा किया और ग्रामीण आवास विकास एवं अवसंरचना नवाचार में संस्थान के प्रभावशाली योगदान की सराहना की। प्रदर्शनी के दौरान, सीएसआईआर–सीबीआरआई ने अपने उन्नत ग्रामीण आवास और निर्माण प्रौद्योगिकियों को प्रदर्शित करने के लिए एक सूचनात्मक और संवादात्मक स्टॉल लगाया। प्रमुख प्रदर्शनों में पीएमएवाई–जी मॉडल घर, 3डी भवन निर्माण प्रणालियाँ, मिट्टी की ईंट बनाने

की मशीनें, ईंट भट्ठे की तकनीकें, राम मंदिर मॉडल और अन्य नवोन्मेषी, कम लागत वाले और पर्यावरण के अनुकूल भवन निर्माण समाधान शामिल थे। स्टॉल ने वरिष्ठ सरकारी अधिकारियों को आकर्षित किया, जिन्होंने ग्रामीण आवास और बुनियादी ढांचे को मजबूत करने के लिए सीएस आईआर – सीबीआरआई की प्रौद्योगिकियों की व्यावहारिक उपयोगिता और विस्तार क्षमता की सराहना की।

प्रदर्शनी के साथ–साथ, कार्यशाला का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलन समारोह से हुआ, जिसके बाद राजस्थान सरकार के ग्रामीण विकास सचिव ने स्वागत भाषण दिया। इसके बाद राजस्थान के पीएमएवाई–जी पर एक ऑडियो– विजुअल प्रस्तुति दी गई, जिसमें राज्य में चल रही ग्रामीण आवास पहलों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया गया। कार्यशाला की चर्चाओं में सीएसआईआर–सीबीआरआई ने सक्रिय भूमिका निभाई। संस्थान के एक प्रतिनिधि [illegible] ने [illegible] सीबीआरआई [illegible] प्रदीप कुमार [illegible] अजय चौरसिया [illegible] इंजीनियर आशीष [illegible] शामिल थे, जिन्होंने तकनीकी [illegible] भाग लिया। डॉ. अजय चौरसिया ने किफायती और जलवायु–प्रतिरोधी ग्रामीण आवास पर एक महत्वपूर्ण प्रस्तुति दी, जिसमें सीएसआईआर–सीबीआरआई के अनुसंधान–आधारित समाधानों, जलवायु–अनुकूल आवास डिजाइनों, आपदा–प्रतिरोधी निर्माण पद्धतियों और विभिन्न ग्रामीण और जलवायु परिस्थितियों के लिए उपयुक्त टिकाऊ [illegible] पर प्रकाश डाला [illegible] और कार्यशाला दोनों में [illegible] उपस्थिति के माध्यम [illegible] सीबीआरआई ने भवन [illegible] एक राष्ट्रीय अग्रणी के रूप [illegible] और ग्रामीण विकास [illegible] के लिए आवास की परिकल्पना का समर्थन करने वाले नवीन, किफायती और जलवायु–लचीले आवास समाधान प्रदान करने की अपनी निरंतर प्रतिबद्धता की पुष्टि की।

भारतीय अर्थव्यवस्था की रफ्तार:चालू वित्त वर्ष में 7.8% तक रह सकती है GDP ग्रोथ

एजेंसी,वैश्विक अनिश्चितताओं के बीच भारतीय अर्थव्यवस्था अपनी मजबूती का प्रदर्शन कर रही है। प्रमुख सलाहकार कंपनी डेलॉयट इंडिया (Deloitte India) की नवीनतम रिपोर्ट के अनुसार, भारत की आर्थिक विकास दर चालू वित्त वर्ष (2025–26) में शानदार प्रदर्शन करने वाली है। भारतीय अर्थव्यवस्था की वृद्धि दर चालू वित्त वर्ष में 7.5 से 7.8 प्रतिशत रहने जबकि 2026–27 में 6.6 से 6.9 प्रतिशत की दर से बढ़ने का अनुमान है। सलाहकार कंपनी डेलॉयट इंडिया ने यह जानकारी दी। डेलॉयट ने कहा कि भारत के लिए 2025 को घरेलू मांग में "जुझारूपन", राजकोषीय, मौद्रिक एवं श्रम नीतियों में निर्णायक सुधारों और व्यापार नीतियों में पुनर्संमायोजन के वर्ष के रूप में याद किया जाएगा। चालू वित्त वर्ष 2025–26 की पहली छमाही (अप्रैल–सितंबर) में आधार वर्ष 2011–12 पर आधारित वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में आठ प्रतिशत की वृद्धि हुई।इसके बावजूद कि व्यापार में व्यवधान, विकसित अर्थव्यवस्थाओं में नीतिगत बदलाव एवं अस्थिर पूंजी प्रवाह जैसी वैश्विक चुनौतियां मौजूद थीं। डेलॉयट इंडिया को उम्मीद है कि त्योहारी मांग और सेवाओं की मजबूत गतिविधियों से वित्त वर्ष 2025–26 में जीडीपी की वृद्धि दर 7. 5 से 7.8 प्रतिशत रहेगी। इसके अलावा, कंपनी ने बयान में कहा कि उच्च आधार एवं वैश्विक अनिश्चितताओं के बने रहने से वित्त वर्ष 2026–27 में वृद्धि दर घटकर 6.6 से 6.9 प्रतिशत हो सकती है। डेलॉयट इंडिया की अर्थशास्त्री रुमकी मजूमदार ने कहा, " भारत की मजबूती कोई संयोग नहीं है। यह लंबे समय से अपनाई गई वृद्धि–समर्थक नीतियों का परिणाम है।

सीबीआरआई ने ग्रामीण आवास नवाचारों से छोड़ी मजबूत छाप

राजस्थान में क्षेत्रीय ग्रामीण कार्यशाला की गई आयोजित

रुड़की, 15 जनवरी (अनिल): सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई), रुड़की ने राजस्थान के सवाई माधोपुर में आयोजित क्षेत्रीय ग्रामीण कार्यशाला एवं प्रदर्शनी में सक्रिय भागीदारी करते हुए किफायती, टिकाऊ और जलवायु-अनुकूल ग्रामीण आवास से जुड़ी अपनी उन्नत तकनीकों का प्रभावशाली प्रदर्शन किया। प्रदर्शनी का उद्घाटन राजस्थान सरकार की ग्रामीण विकास विभाग की अतिरिक्त मुख्य सचिव श्रेया गुहा एवं जिला कलेक्टर काना राम सिरवी ने किया। उन्होंने सीबीआरआई के स्टॉल का अवलोकन कर ग्रामीण आवास और अवसंरचना क्षेत्र में संस्थान के योगदान की सराहना की।

सीबीआरआई द्वारा लगाए गए संवादात्मक स्टॉल में पीएमएवाई-जी मॉडल हाउस, 3डी भवन निर्माण प्रणाली, मिट्टी की ईंट बनाने की मशीनें, उन्नत ईंट भट्ठा तकनीक, राम मंदिर मॉडल और अन्य कम लागत व पर्यावरण-अनुकूल निर्माण समाधान प्रदर्शित किए गए, जिन्हें अधिकारियों ने व्यावहारिक और विस्तार योग्य बताया। कार्यशाला में सीबीआरआई निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार के नेतृत्व में प्रतिनिधिमंडल ने तकनीकी सत्रों में भाग लिया। मुख्य वैज्ञानिक डॉ. अजय चौरसिया ने 'किफायती और जलवायु-प्रतिरोधी ग्रामीण आवास' विषय पर प्रस्तुति देते हुए प्रकाश डाला।

हिन्दुस्तान

Share Copy url Save Font Size D'load Image Image Text Listen

सीबीआरआई के दो वैज्ञानिकों की खोज, पर्यावरण के लिए भी होगा फायदेमंद

मार्बल की धूल और कचरे से बन सकेंगे ब्लॉक्स, टाइलें और ईंटें

अनुसंधान

■ महेश्वर सिंह

रुड़की। मार्बल उद्योग में दशकों से कचरे (वेस्ट) के निपटान की समस्या बनी हुई थी, लेकिन अब विज्ञान और आधुनिक तकनीक ने इसका एक टिकाऊ समाधान खोज निकाला है। मार्बल खनन और कटाई के दौरान निकलने वाली मार्बल स्लरी (धूल और पानी का मिश्रण) और पत्थरों के टुकड़ों का उपयोग अब उच्च गुणवत्ता वाली ईंटों, ब्लॉक्स और फ्लोरिंग टाइल्स बनाने में किया जा सकेगा।

सीबीआरआई रुड़की के प्रधान वैज्ञानिक राजेश कुमार और डॉ. रजनी लखानी द्वारा इस तकनीक को अपनी टीम के साथ विकसित किया गया है। इसे सीबीआरआई के निदेशक प्रो. प्रदीप कुमार का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। राजेश कुमार ने बताया कि मार्बल पाउडर को सीमेंट और मिट्टी जैसे अन्य पदार्थों के साथ मिलाकर मजबूत, टिकाऊ और पर्यावरण-अनुकूल निर्माण सामग्री (जैसे ईंटें, पेवर ब्लॉक, फर्श और दीवार की टाइलें) तैयार की जाती हैं। इससे कचरा कम होता है और प्राकृतिक संसाधनों की बचत होती है।

रुड़की में सीबीआरआई के वैज्ञानिकों ने मार्बल की धूल और कचरे से ब्लॉक्स, टाइलें और ईंटें बनाईं। • हिन्दुस्तान

उन्होंने बताया कि मार्बल स्लरी पर्यावरण के लिए एक बड़ा खतरा रही है। सूखने के बाद यह धूल बनकर हवा में उड़ती है, जिससे श्वसन संबंधी बीमारियां होती हैं और बारिश में यह जमीन की उपजाऊ परत को ढंक कर उसे बंजर बना देती है। इस कचरे को निर्माण सामग्री में बदलकर न केवल प्रदूषण कम होगा, बल्कि प्राकृतिक संसाधनों जैसे कि मिट्टी और रेत पर निर्भरता भी घटेगी।

उन्होंने बताया कि मार्बल डस्ट में कैल्शियम कार्बोनेट की मात्रा अधिक होती है। जब इसे सीमेंट, फ्लाई ऐश और विशेष बाइंडर्स के साथ एक निश्चित अनुपात में मिलाया जाता है, तो प्राप्त होने वाले ब्लॉक्स पारंपरिक लाल ईंटों की तुलना में अधिक मजबूत और टिकाऊ होते हैं। बताया कि इन ब्लॉक्स की दबाव सहने की क्षमता सामान्य ईंटों से बेहतर पाई गई है। स्थानीय स्तर पर कचरा उपलब्ध होने के कारण इनके उत्पादन की लागत काफी कम आती है।

हाल ही में सीबीआरआई ने इस तकनीक को मेसर्स मार्बल प्लाजा नई दिल्ली को सफलतापूर्वक स्थानांतरित किया है। इस तकनीक के विकास में राजेश कुमार और डॉ. रजनी लखानी के साथ-साथ टीम सदस्य शाहनवाज खान, रोहित कुमार, मोहित कुमार का भी योगदान रहा।

रोजगार के नए अवसर

इस तकनीक के विस्तार से मार्बल बेल्ट वाले क्षेत्रों में लघु उद्योगों को बढ़ावा मिलेगा। सरकार भी वेस्ट टू वेल्थ अभियान के तहत ऐसे स्टार्टअप्स को प्रोत्साहित कर रही है। इससे न केवल डंपिंग यार्ड्स की समस्या खत्म होगी, बल्कि स्थानीय युवाओं के लिए रोजगार के नए द्वार भी खुलेंगे।

CSIR-CBRI in the Limelight | 15.01.2026

https://www.janmudde.com/archives/36675

UNCATEGORIZED

सवाई माधोपुर में आयोजित क्षेत्रीय ग्रामीण कार्यशाला एवं प्रदर्शनी मेंसीएसआईआर-सीबीआरआई ने नवाचारों और विशेषज्ञता का किया प्रदर्शन।

Jan Mudde · 2 weeks ago · 1 min read

Spread the love

आरिफ नियाज़ी।

सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-सीबीआरआई), रुड़की ने 15-16 जनवरी 2026 को राजस्थान के सवाई माधोपुर में आयोजित क्षेत्रीय ग्रामीण कार्यशाला एवं प्रदर्शनी में सक्रिय रूप से भाग लिया और राष्ट्रीय विकास कार्यक्रमों के अंतर्गत किफायती, टिकाऊ और जलवायु परिवर्तन के अनुकूल ग्रामीण आवास को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

प्रदर्शनी का उद्घाटन राजस्थान सरकार के ग्रामीण विकास विभाग की अतिरिक्त मुख्य सचिव श्रीमती श्रेया गुहा, आईएएस और सवाई माधोपुर के जिला कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट काना राम सिरवी, आईएएस ने किया। गणमान्य व्यक्तियों ने सीएसआईआर-सीबीआरआई के स्टॉल का दौरा किया और ग्रामीण आवास विकास एवं अवसंरचना नवाचार में संस्थान के प्रभावशाली योगदान की सराहना की।

प्रदर्शनी के दौरान, सीएसआईआर-सीबीआरआई ने अपने उन्नत ग्रामीण आवास और निर्माण प्रौद्योगिकियों को प्रदर्शित करने के लिए एक सूचनात्मक और संवादात्मक स्टॉल लगाया। प्रमुख प्रदर्शनों में पीएमएवाई-जी मॉडल घर, 3डी भवन निर्माण प्रणालियाँ, मिट्टी की ईंट बनाने की मशीनें, ईंट भट्ठे की तकनीकें, राम मंदिर मॉडल और अन्य नवोन्मेषी, कम लागत वाले और पर्यावरण के अनुकूल भवन निर्माण समाधान शामिल थे। स्टॉल ने वरिष्ठ सरकारी अधिकारियों को आकर्षित किया, जिन्होंने ग्रामीण

JAN MUDDE LIVE

1 of 59 Next

1 of 59 Next

LIVE CRICKET SCORE

RECENT | LIVE | UPCOMING

NZ vs IND
215/7(20.0) 165/10(18.4)
New Zealand win by 50 runs

NZ vs IND
153/9(20.0) 155/2(10.0)
India win by 8 wickets

NZ vs IND
208/6(20.0) 209/3(15.2)
India win by 7 wickets

WEATHER

HARIDWAR WEATHER 21°C broken clouds

Fri Sat Sun Mon Tue Wed Thu

Roorkee: सीएसआईआर-सीबीआरआई में भवन निर्माण सामग्री और निर्माण प्रौद्योगिकियों में प्रगति पर तीन दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन

Manoj kumar · 2 weeks ago

245 · 2 minutes read

Spread the love

0 Shares

रुड़की। सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-सीबीआरआई), रुड़की में 14 से 16 जनवरी, 2026 तक तीन दिवसीय एकीकृत कौशल पहल कार्यक्रम का उद्घाटन किया। इस कार्यक्रम में गलगोटिया विश्वविद्यालय के कुल 30 छात्रों और 3 संकाय सदस्यों ने भाग लिया, जहां उन्हें अत्याधुनिक अनुसंधान, प्रयोगशाला सुविधाओं और आधुनिक निर्माण पद्धतियों की व्यावहारिक जानकारी प्राप्त हुई।

https://www.nazariyanews.com/38860/

नई भवन सामग्री, उन्नत निर्माण तकनीकों पर की गई चर्चा

तीन दिवसीय कार्यक्रम में दी जाएगी व्यावहारिक जानकारी

प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रतिभाग करते प्रतिभागी।

रुड़की, 14 जनवरी (अनिल): सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई), रुड़की में भवन निर्माण सामग्री और आधुनिक निर्माण प्रौद्योगिकियों में प्रगति पर आधारित तीन दिवसीय एकीकृत कौशल पहल कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। इस कार्यक्रम में गलगोटिया विश्वविद्यालय के 30 छात्र और तीन संकाय सदस्य भाग ले रहे हैं।

वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक एवं आउटरीच प्रमुख डॉ. नीरज जैन ने प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए सीबीआरआई की भूमिका और प्रमुख अनुसंधान क्षेत्रों की जानकारी दी। कार्यक्रम समन्वयक डॉ. तबिश आलम ने नई भवन सामग्री और उन्नत निर्माण तकनीकों पर केंद्रित सत्रों की रूपरेखा प्रस्तुत की तथा टिकाऊ अवसंरचना के लिए उनके महत्व पर प्रकाश डाला।

CSIR-CBRI in the Limelight | 14.01.2026

epaper

हिन्दुस्तान

Share | Copy url | Save | Font Size | D'load Image | Image | Text | Listen

बिजली संयंत्रों के कचरे से बनेगा मजबूत और सस्ता प्लास्टर

■ महेश्वर सिंह

रुड़की। केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) रुड़की के वैज्ञानिकों ने औद्योगिक कचरे के निपटान की दिशा में बड़ी सफलता हासिल की है। वैज्ञानिकों ने थर्मल पावर प्लांट से निकलने वाले कचरे (एफजीडी-जिप्सम) का इस्तेमाल कर एक खास किस्म का प्लास्टर तैयार किया है।

यह तकनीक न केवल प्रदूषण कम करेगी, बल्कि घरों के निर्माण को सस्ता और सुरक्षित भी बनाएगी। सीबीआरआई के निदेशक प्रो. प्रदीप कुमार के मार्गदर्शन में डॉ. नीरज जैन और डॉ. सौमित्रा मैती की टीम ने इस तकनीक को विकसित किया है।

■ एफजीडी जिप्सम को 150 डिग्री तापमान तक किया जाता है गर्म

इस बारे में डॉ. नीरज जैन ने बताया कि देश में थर्मल पॉवर प्लांट से निकलने वाले एफजीडी जिप्सम कचरे का समाधान करना चुनौती पूर्ण बना हुआ था। उन्होंने बताया कि थर्मल पॉवर प्लांट से बिजली बनाने के लिए कोयले का इस्तेमाल किया जाता है। जब कोयला जलता है तो धुंए के साथ सल्फर ऑक्साइड गैस भी निकलती है, जो कि पर्यावरण और सेहत दोनों के लिए बेहद हानिकारक है।

ऐसे में प्लांट में चिमनियों से निकलने वाले धुंए को साफ करने के लिए बड़े बड़े एयर प्यूरीफायर का इस्तेमाल किया जाता है। इसमें पानी और चूना पत्थर का गाढ़ा घोल होता है। जब धुंआ इस घोल से गुजरता है तो सारा सल्फर यह तकनीक एब्जॉर्ब कर लेता है। इसके चलते हवा तो साफ हो जाती है लेकिन इस प्रक्रिया से एक नई समस्या पैदा हो जाती है। जब चूना सल्फर को पकड़ता है तो एक नया पदार्थ बनाता है। जिसे जिप्सम या औद्योगिक कचरा कहा जा सकता है।

उन्होंने बताया कि यह पर्यावरण को नुकसान पहुंचाने के साथ साथ धरती पर बोझ होता है। इस समस्या के समाधान के लिए फैक्ट्रियों और बिजली संयंत्रों से निकलने वाले जिप्सम को 150 डिग्री सेल्सियस तापमान पर गर्म किया जाता है। इस प्रक्रिया में अन्य सामग्री और केमिकल का इस्तेमाल भी किया जाता है। इसके बाद यह बेहतरीन प्लास्टर में बदल जाता है।

रुड़की के सीबीआरआई के वैज्ञानिकों द्वारा तैयार किया गया प्लास्टर।

पारंपरिक सीमेंट-रेत प्लास्टर से है बेहतर

सीबीआरआई के वैज्ञानिकों की ओर से तैयार यह नया प्लास्टर कई मायनों में वर्तमान में उपयोग होने वाले सीमेंट-रेत के प्लास्टर से बेहतर पाया गया है। इसका वजन पारंपरिक प्लास्टर की तुलना में आधा है। इससे इमारतों पर बोझ कम पड़ता है। यह प्लास्टर आग से सुरक्षा प्रदान करता है, जिससे घर सुरक्षित रहते हैं। औद्योगिक कचरे से बनने के कारण इसकी कीमत काफी कम है, जिससे घर बनाना किफायती होगा। यह पारंपरिक प्लास्टर से कई गुना अधिक टिकाऊ साबित हुआ है।

5

CSIR-CBRI in the Limelight | 08.01.2026

"भारतीय वास्तुकला शिल्प कौशल"

By Sahara Live News

JAN 7, 2026

सीएसआईआर-सीबीआरआई द्वारा "भारतीय वास्तुकला शिल्प कौशल" पर तीन दिवसीय कार्यशाला-सह-मंथन का आयोजन

सीएसआईआर –केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान, रुड़की ने सीएसआईआर इंटीग्रेटेड स्किल इनिशिएटिव के अंतर्गत 7 से 9 जनवरी 2026 तक "भारतीय वास्तुकला शिल्प कौशल" विषय पर तीन दिवसीय कार्यशाला-सह-मंथन का उद्घाटन किया। कार्यशाला का उद्देश्य प्रतिभागियों विशेष रूप से युवा वास्तुकारों को भारत की पारंपरिक वास्तुकला एवम शिल्प परंपराओं से परिचित कराना तथा उन्हें सतत और कार्बन रहित आधुनिक निर्माण पद्धतियों से जोड़ना है।

उद्घाटन सत्र की शुरुआत अतिथियों के स्वागत एवम दीप प्रज्वलन से हुई। संस्थान के वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक एवं आउटरीच एंड डिसेमिनेशन सर्विसेज प्रमुख, डॉ. नीरज जैन ने सभी का स्वागत करते हुए सीएसआईआर के कौशल विकास कार्यक्रमों के उद्देश्यों तथा आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में इस कार्यक्रम की भूमिका पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में वास्तुकार एस. के. नेगी, पूर्व मुख्य वैज्ञानिक, सीएसआईआर-सीबीआरआई एवं पारंपरिक वास्तुकला विशेषज्ञ एवम प्रो. राम सतीश पसुपुलेटी, वास्तुकला एवं नियोजन विभाग, आईआईटी रुड़की, उपस्थित रहे जिन्होंने भारतीय पारंपरिक आवास उत्थान पुरस्कार 2.0 के विजेताओ के लिए जूरी की भूमिका निभाई थी। सीएसआईआर-सीबीआरआई के निदेशक, प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने पारंपरिक वास्तुकला शिल्प को संरक्षित करने और आधुनिक निर्माण प्रणालियों के साथ इसके समन्वय की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा कि ऐसी कार्यशाला भारत की सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करते हुए सतत एवं टिकाऊ निर्माण को प्रोत्साहित करती है।

उद्घाटन सत्र के दौरान वास्तुकार अनूप कुमार प्रसाद द्वारा लिखित पुस्तक "द लिविंग क्राफ्ट ऑफ इंडियन आर्किटेक्चर" का विमोचन किया गया। इसके साथ ही भारतीय पारंपरिक आवास उत्थान पुरस्कार 2.0 के अंतर्गत पारंपरिक आवास एवं वास्तुकला शिल्प के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान देने वाले वास्तुकारों, वास्तुकला के विभिन्न संस्थानों के छात्रों को सम्मानित किया गया।

कार्यशाला में देशभर के विभिन्न संस्थानों से बड़ी संख्या में युवा वास्तुकारों एवं वास्तुकला के छात्रों ने भाग लिया। कार्यशाला में भाग लेने वाले प्रमुख संस्थानों में पेरियार मनिअम्मई विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, वल्लम, तमिलनाडु, मौलाना आज़ाद राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (MANIT), भोपाल, मध्य प्रदेश, स्कूल ऑफ प्लानिंग एंड आर्किटेक्चर (SPA), विजयवाड़ा, आंध्र प्रदेश, आईईएस कॉलेज ऑफ आर्किटेक्चर, मुंबई, महाराष्ट्र, तथा नेताजी सुभाष प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (NSUT), द्वारका, दिल्ली इत्यादि शामिल रहे। जिससे उन्हें भारत की पारंपरिक निर्माण तकनीकों और शिल्प परंपराओं को समझने का अवसर प्राप्त हुआ।

https://www.saharalivenews.com/archives/10357

CSIR-CBRI in the Limelight | 24.12.2025

हिन्दुस्तान www.livehindustan.com

अपना पड़ोस

बहुमंजिला इमारतों में लगे शीशों की सफाई करेगा रोबोट

एक्सक्लूसिव

■ महेश्वर सिंह

रुड़की। देश में ऊंची, कांच से ढकी इमारतों की तेजी से बढ़ती संख्या के कारण, फैकेड (बाहरी मुखौटा) और कैनोपी (छतरी) का रखरखाव आवश्यक और अत्यंत खतरनाक हो गया है। मैन्युअल (हाथों से) सफाई में कर्मचारियों को असुरक्षित ऊंचाइयों, अप्रत्याशित मौसम, उपकरणों की खराबी और लंबे समय तक थकान का सामना करना पड़ता है। इसके परिणामस्वरूप देश में अक्सर गंभीर चोटें और मौतें होती हैं। सीबीआरआई रुड़की के वैज्ञानिकों ने इसका समाधान निकाला है। उन्होंने

रुड़की ऑटोनॉमस कैनोपी क्लीनिंग रोबोट सीबीआरआई द्वारा तैयार किया गया है।

रोबोट में ये हैं विशेषताएं

- खतरनाक ऊंचाइयों पर मानव की उपस्थिति को समाप्त करता है
- रोबोट एक समान, उच्च-गुणवत्ता वाली सफाई सुनिश्चित करता है
- हल्का, पोर्टेबल (ले जाने में आसान) और संचालित में सरल है
- सफाई दक्षता 500 वर्ग मीटर/घंटा तक (1 मीटर लंबी रोलर ब्रश के लिए)
- बाधा और टक्कर से करता है बचाव
- किनारे की पहचान, मैन्युअल/पीआईडी-आधारित पथ सुधार
- 10 किलोग्राम तक पेलोड ले जा सकता है
- ऑटोनॉमस कैनोपी क्लीनिंग रोबोट का वजन 20 किलोग्राम है, जिससे इसे साइटों पर ले जाना, इंस्टॉल करना और डिप्लॉय करना बहुत आसान है

ऑटोनॉमस कैनोपी क्लीनिंग रोबोट तैयार किया है। जो कि कांच से ढकी बड़ी-बड़ी ऊंची इमारतों की सफाई आसानी से कर सकेगा।

सीबीआरआई के निदेशक प्रो. प्रदीप कुमार के अनुसार इस तकनीक को मेसर्स पाल एन पॉल इनकॉर्पोरेशन अंबाला सिटी, हरियाणा को हस्तांतरित कर दिया गया है। जो उद्योग-अनुसंधान सहयोग में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। जैसे-जैसे शहर लंबवत (ऊंचाई में) बढ़ते जा रहे हैं, इस तरह के नवाचार सुरक्षित, अधिक स्मार्ट और अधिक टिकाऊ भवन रखरखाव को सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। इस तकनीक को विकसित करने के लिए डॉ. रवींद्र बिष्ट, डॉ. एस. के. पाणिग्राही, डॉ. सोजू अलेक्जेंडर, डॉ. सिद्धार्थ सिंह, चंद्रभान पटेल, कांती लाल सोलंकी, वी चक्रधर, दिनेश कुमार, समीर और सीएआर समूह में समय-समय पर योगदान देने वाले परियोजना स्टाफ को निदेशक ने बधाई दी।

CSIR-CBRI in the Limelight | 20.12.2025

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय

राजस्थान से सीएसआईआर 'स्मार्ट गाँव' मिशन का शुभारंभ: पाली जिले का सवाईपुरा बना प्रथम गाँव

प्रविष्टि तिथि: 20 DEC 2025 8:01PM by PIB Jaipur

भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय के अंतर्गत वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (CSIR) द्वारा संचालित "स्मार्ट गाँव" मिशन मोड परियोजना का शुभारंभ आज राजस्थान के पाली जिले के सवाईपुरा गाँव में किया गया। यह पहल प्रधानमंत्री के "विकसित भारत- 2047" के विज़न के अनुरूप ग्रामीण भारत के समग्र एवं सतत विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। इस मिशन का औपचारिक शुभारंभ सांसद, पाली, श्री पी. पी. चौधरी, तथा डॉ. (श्रीमती) एन. कलैसेल्वी, महानिदेशक, सीएसआईआर एवं सचिव, डीएसआईआर, नई दिल्ली द्वारा किया गया। इस अवसर पर श्री भीमराज भाटी, विधायक, पाली विधानसभा क्षेत्र; प्रो. प्रदीप कुमार रमनचरला, निदेशक, सीएसआईआर–केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान; डॉ. पी. सी. पंचारिया, निदेशक, सीएसआईआर–सीरी सहित जिला प्रशासन के वरिष्ठ अधिकारी, ग्राम प्रतिनिधि, गैर-सरकारी संगठनों के प्रतिनिधि तथा विभिन्न सीएसआईआर प्रयोगशालाओं के वैज्ञानिक उपस्थित रहे।

कार्यक्रम के दौरान 14 सीएसआईआर प्रयोगशालाओं के वैज्ञानिकों द्वारा सवाईपुरा गाँव में विस्तृत आवश्यकता आकलन सर्वेक्षण किया गया, जिसके आधार पर "स्मार्ट गाँव" मिशन के अंतर्गत उपयुक्त तकनीकों की पहचान की गई। इस अवसर पर आयोजित तकनीकी प्रदर्शनी में जलवायु-संवेदी एवं आजीविका-आधारित समाधानों का प्रदर्शन किया गया, जिनमें आवास एवं अधोसंरचना (कूल रूफ तकनीक, कम लागत आवास, ग्रामीण सड़कें), नवीकरणीय ऊर्जा एवं जल प्रबंधन (सौर ऊर्जा प्रणाली, अपशिष्ट जल एवं फीकल स्लज उपचार, सुरक्षित पेयजल समाधान), कृषि एवं संबद्ध क्षेत्र (औषधीय एवं सुगंधित फसलें, मधुमक्खी पालन, मिलेट मूल्य संवर्धन, स्मार्ट कृषि यंत्र), ठोस अपशिष्ट प्रबंधन, जैवअपघट्य उत्पाद, बायोगैस एवं कम्पोस्टिंग, डिजिटल एवं एआई-सक्षम प्रणालियाँ (स्मार्ट ऊर्जा प्रबंधन, वन्यजीव–मानव संघर्ष न्यूनीकरण, स्वास्थ्य निगरानी, दुग्ध गुणवत्ता विश्लेषण) तथा भूजल आकलन से संबंधित तकनीकें शामिल रहीं। इन सभी समन्वित तकनीकी नवाचारों का उद्देश्य ग्रामीण जीवन की गुणवत्ता में सुधार, आजीविका सुदृढ़ीकरण, पर्यावरणीय स्थिरता को बढ़ावा देना तथा सवाईपुरा गाँव को एक आदर्श स्मार्ट गाँव के रूप में विकसित करना है, जो राष्ट्रीय मिशनों एवं योजनाओं के अनुरूप हो। डॉ. किशोर एस. कुलकर्णी, प्रधान वैज्ञानिक, सीएसआईआर–सीबीआरआई, रुड़की; सीएसआईआर स्मार्ट गाँव मिशन के नोडल समन्वयक के रूप में कार्यरत हैं। कार्यक्रम के दौरान बाल रक्षा भारत, नई दिल्ली के साथ एक समझौता ज्ञापन (MoU) पर भी हस्ताक्षर किए गए, जो इस परियोजना के क्रियान्वयन भागीदार के रूप में कार्य करेगा।

कार्यक्रम के अंत में सवाईपुरा गाँव के ग्रामीणों ने विभिन्न सीएसआईआर प्रयोगशालाओं के वैज्ञानिकों के साथ संवाद किया और प्रस्तावित तकनीकी समाधानों पर अपने विचार साझा किए। इस आयोजन का समन्वय डॉ. चन्दन स्वरुप मीना, श्री राजेश कुमार शर्मा तथा उनकी टीम द्वारा किया गया। सीएसआईआर–सीबीआरआई से डॉ. अजय चौरसिया, डॉ. ताबिश आलम, डॉ. नवीन, श्री चक्रधर सहित अन्य वैज्ञानिक, तकनीकी अधिकारी एवं परियोजना सहायक भी कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

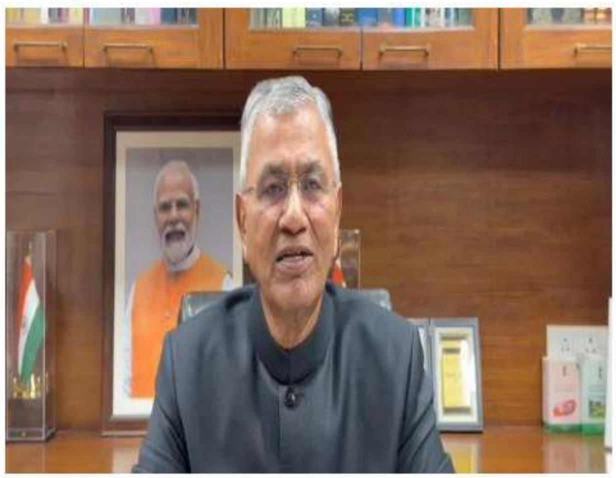

सीएसआईआर स्मार्ट गाँव: एक पहल
CSIR SMART VILLAGE: AN INITIATIVE

(रिलीज़ आईडी: 2207118) आगंतुक पटल : 65
इस विज्ञप्ति को इन भाषाओं में पढ़ें: English

https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2207118&reg=39&lang=33

राजस्थान से सीएसआईआर 'स्मार्ट गाँव' मिशन का शुभारंभ: पाली जिले का सवाईपुरा बना प्रथम गाँव

उजाला भारत न्यूज

रुड़की/पाली। भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय के अंतर्गत वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (CSIR) द्वारा संचालित 'स्मार्ट गाँव' मिशन मोड परियोजना का शुभारंभ आज राजस्थान के पाली जिले के सवाईपुरा गाँव में किया गया। यह पहल प्रधानमंत्री के 'विकसित भारत- 2047' के विज़न के अनुरूप ग्रामीण भारत के समग्र एवं सतत विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। इस मिशन का औपचारिक शुभारंभ सांसद, पाली, पी. पी. चौधरी, तथा डॉ. (श्रीमती) एन. कलैसेल्वी, महानिदेशक, सीएसआईआर एवं सचिव, डीएसआईआर, नई दिल्ली द्वारा किया गया। इस अवसर पर भीमराज भाटी, विधायक, पाली विधानसभा क्षेत्र; प्रो. प्रदीप कुमार रमनचरला, निदेशक, सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान; डॉ. पी. सी. पंचारिया, निदेशक, सीएसआईआर-सीरी सहित जिला प्रशासन के वरिष्ठ अधिकारी, ग्राम प्रतिनिधि, गैर-सरकारी संगठनों के प्रतिनिधि तथा विभिन्न सीएसआईआर प्रयोगशालाओं के वैज्ञानिक उपस्थित रहे।

कार्यक्रम के दौरान 14 सीएसआईआर प्रयोगशालाओं के वैज्ञानिकों द्वारा सवाईपुरा गाँव में विस्तृत आवश्यकता आकलन सर्वेक्षण किया गया, जिसके आधार पर 'स्मार्ट गाँव' मिशन के अंतर्गत उपयुक्त तकनीकों की पहचान की गई। इस अवसर पर आयोजित तकनीकी प्रदर्शनी में जलवायु-संवेदी एवं आजीविका-आधारित समाधानों का प्रदर्शन किया गया, जिनमें आवास एवं अधोसंरचना (कूल रूफ तकनीक, कम लागत आवास, ग्रामीण सड़कें), नवीकरणीय ऊर्जा एवं जल प्रबंधन (सौर ऊर्जा प्रणाली, अपशिष्ट जल एवं फीकल स्लज उपचार, सुरक्षित पेयजल समाधान), कृषि एवं संबद्ध क्षेत्र (औषधीय एवं सुगंधित फसलें, मधुमक्खी पालन, मिलेट मूल्य संवर्धन, स्मार्ट कृषि यंत्र), ठोस अपशिष्ट प्रबंधन, जैवअपघट्य उत्पाद, बायोगैस एवं कम्पोस्टिंग,

डिजिटल एवं एआई-सक्षम प्रणालियाँ (स्मार्ट ऊर्जा प्रबंधन, वन्यजीव-मानव संघर्ष न्यूनीकरण, स्वास्थ्य निगरानी, दुग्ध गुणवत्ता विश्लेषण) तथा भूजल आकलन से संबंधित तकनीकें शामिल रहीं। इन सभी समन्वित तकनीकी नवाचारों का उद्देश्य ग्रामीण जीवन की गुणवत्ता में सुधार, आजीविका सुदृढ़ीकरण, पर्यावरणीय स्थिरता को बढ़ावा देना तथा सवाईपुरा गाँव को एक आदर्श स्मार्ट गाँव के रूप में विकसित करना है, जो राष्ट्रीय मिशनों एवं योजनाओं के अनुरूप हो। डॉ. किशोर एस. कुलकर्णी, प्रधान वैज्ञानिक, सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की; सीएसआईआर स्मार्ट गाँव मिशन के नोडल समन्वयक के रूप में कार्यरत हैं। कार्यक्रम के दौरान बाल रक्षा भारत, नई दिल्ली के साथ एक समझौता ज्ञापन (MoU) पर भी हस्ताक्षर किए गए, जो इस परियोजना के क्रियान्वयन भागीदार के रूप में कार्य करेगा।

कार्यक्रम के अंत में सवाईपुरा गाँव के ग्रामीणों ने विभिन्न सीएसआईआर प्रयोगशालाओं के वैज्ञानिकों के साथ संवाद किया और प्रस्तावित तकनीकी समाधानों पर अपने विचार साझा किए। इस आयोजन का समन्वय डॉ. चन्दन स्वरुप मीना, राजेश कुमार शर्मा तथा उनकी टीम द्वारा किया गया।

सीएसआईआर-सीबीआरआई से डॉ. अजय चौरसिया, डॉ. ताबिश आलम, डॉ. नवीन, चक्रधर सहित अन्य वैज्ञानिक, तकनीकी अधिकारी एवं परियोजना सहायक भी कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

Ministry of Science & Technology

Azadi Ka Amrit Mahotsav

CSIR SMART Village Initiative Launched from Sawaipura

प्रविष्टि तिथि: 20 DEC 2025 8:01PM by PIB Jaipur

The Council of Scientific and Industrial Research (CSIR), Ministry of Science and Technology, Government of India, has launched a Mission Mode Project on "SMART VILLAGE", aligned with the Prime Minister's vision of "Viksit Bharat @ 2047."

This mission mode project inaugurated by Member of Parliament, Pali, Shri. P. P. Chaudhary, and Dr. (Mrs.) N. Kalaiselvi, DG-CSIR, New Delhi, Shri Bhim Raj Bhati, MLA, Pali constituency along with Professor, Pradeep Kumar Ramancharla, Director, CSIR-CBRI, Roorkee, Dr. P C Panchariya, Director CSIR-CEERI, Pillani, Sh. Vishal Sipa, ACEO, Pali, Shri Manmohan Meena, BDO, Rohat, Sh. Sunil Bhandari, District President, sh. Prakesh Patel, Tahasildhar, Rohat, Shri Dilip Singh VDO, and Sh. Santanu Chakraborty, CEO, Bal Raksha Bharat, along with scientists from different CSIR laboratories, who were present at the event.

On this occasion, scientists from 14 CSIR laboratories were present and conducted a detailed need assessment survey, leading to the identification of suitable technologies for deployment under the CSIR SMART Village Mission in Sawaipura Village, Pali District, Rajasthan. During the launch event, the exhibition gallery showcased a range of climate-responsive and livelihood-oriented invention, including solutions for housing and infrastructure (cool roof technologies, low-cost housing, and rural roads), renewable energy and water management (solar assisted systems, wastewater and fecal sludge treatment, and safe drinking water solutions), agriculture and allied sectors (aromatic and medicinal crops, beekeeping, millet value addition, and smart farm machinery), waste management (solid waste management, biodegradable products, biogas, and composting), digital and AI-enabled systems (smart energy management, wildlife conflict mitigation, health monitoring, and milk quality analysis), as well as groundwater assessment.

Together, these integrated inventions aim to improve quality of life, strengthen rural livelihoods, promote sustainability, and support the holistic development of Sawaipura as a model SMART Village aligned with national missions and schemes. Dr. Kishor S. Kulkarni, Principal Scientist, CSIR–CBRI, Roorkee, is serving as the Nodal Coordinator for the CSIR SMART Village Mission. On this occasion, an MoU was signed with Bal Raksha Bharat, New Delhi, which will serve as the implementation partner for the project. The villagers of Sawaipura interacted with scientists from different CSIR laboratories. The event was coordinated by, Dr. Chandan Swaroop Meena, Shri Rajesh Sharma and their team. From CSIR–CBRI, Dr. Ajay Chourasia, Dr. Tabish Alam, Dr. Naveen, Shri Chakradhar, and other officials were present at the event.

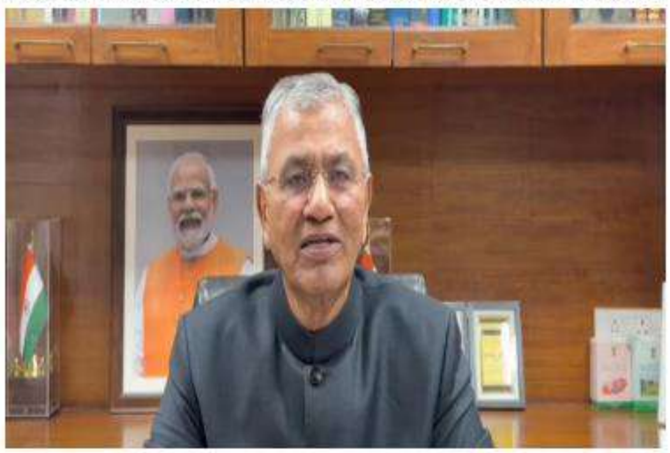

https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2207118&reg=39&lang=33

राजस्थान से सीएसआईआर स्मार्ट गाँव मिशन का शुभारंभ

पाली जिले का सवाईपुरा बना प्रथम गाँव

मरुलहर न्यूज

रुड़की / पाली। भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय के अंतर्गत वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद द्वारा संचालित स्मार्ट गाँव मिशन मोड परियोजना का शुभारंभ आज राजस्थान के पाली जिले के सवाईपुरा गाँव में किया गया। यह पहल प्रधानमंत्री के विकसित भारत-2047 के विजन के अनुरूप ग्रामीण भारत के समग्र एवं सतत विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। इस मिशन का औपचारिक शुभारंभ सांसद, पाली, श्री पी. पी. चौधरी, तथा डॉ. (श्रीमती) एन. कलैसेल्वी, महानिदेशक, सीएसआईआर एवं सचिव, डीएसआईआर, नई दिल्ली द्वारा किया गया। इस अवसर पर श्री भीमराज भाटी, विधायक, पाली विधानसभा क्षेत्र, प्रो. प्रदीप कुमर रामनचरला, निदेशक, सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान, डॉ. पी. सी. पंचारिया, निदेशक, सीएसआईआर-सीरी सहित जिला प्रशासन के वरिष्ठ अधिकारी, ग्राम प्रतिनिधि, गैर-सरकारी संगठनों के प्रतिनिधि तथा विभिन्न सीएसआईआर प्रयोगशालाओं के वैज्ञानिक उपस्थित रहे। कार्यक्रम के दौरान 14 सीएसआईआर प्रयोगशालाओं के वैज्ञानिकों द्वारा सवाईपुरा गाँव में विस्तृत आवश्यकता आकलन सर्वेक्षण किया गया, जिसके आधार पर स्मार्ट गाँव मिशन के अंतर्गत उपयुक्त तकनीकों की पहचान की गई। इस अवसर पर आयोजित तकनीकी प्रदर्शनी में जलवायु-संवेदी एवं आजीविका-आधारित समाधानों का प्रदर्शन किया गया, जिनमें आवास एवं अवसंरचना (कूल रूफ तकनीक, कम लागत आवास, ग्रामीण सड़कें), नवीकरणीय ऊर्जा एवं जल प्रबंधन (सौर ऊर्जा प्रणाली, अपशिष्ट जल एवं फीकल स्लज उपचार, सुरक्षित पेयजल समाधान), कृषि एवं संबद्ध क्षेत्र (औषधीय एवं सुगंधित फसलें, मधुमक्खी पालन, मिलेट मूल्य संवर्धन, स्मार्ट कृषि यंत्र), ठोस अपशिष्ट प्रबंधन, जैवअपघट्य उत्पाद, बायोगैस एवं कम्पोस्टिंग, डिजिटल एवं एआई-सक्षम प्रणालियाँ (स्मार्ट ऊर्जा प्रबंधन, वन्यजीव-मानव संघर्ष न्यूनीकरण, स्वास्थ्य निगरानी, दुग्ध गुणवत्ता विश्लेषण) तथा भूजल आकलन से संबंधित तकनीकें शामिल रहीं। इन सभी समन्वित तकनीकी नवाचारों का उद्देश्य ग्रामीण जीवन की गुणवत्ता में सुधार, आजीविका सुदृढ़ीकरण, पर्यावरणीय स्थिरता को बढ़ावा देना तथा सवाईपुरा गाँव को एक आदर्श स्मार्ट गाँव के रूप में विकसित करना है, जो राष्ट्रीय मिशनों एवं योजनाओं के अनुरूप हो। डॉ. किशोर एस. कुलकर्णी, प्रधान वैज्ञानिक, सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की, सीएसआईआर स्मार्ट गाँव मिशन के नोडल समन्वयक के रूप में कार्यरत हैं। कार्यक्रम के दौरान बाल रक्षा भारत, नई दिल्ली के साथ एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर भी हस्ताक्षर किए गए, जो इस परियोजना के क्रियान्वयन भागीदार के रूप में कार्य करेगा। कार्यक्रम के अंत में सवाईपुरा गाँव के ग्रामीणों ने विभिन्न सीएसआईआर प्रयोगशालाओं के वैज्ञानिकों के साथ संवाद किया और प्रस्तावित तकनीकी समाधानों पर अपने विचार साझा किए। इस आयोजन का समन्वय डॉ. चन्दन स्वरूप मीना, श्री राजेश कुमार शर्मा तथा उनकी टीम द्वारा किया गया। सीएसआईआर-सीबीआरआई से डॉ. अजय चौरसिया, डॉ. ताबिश आलम, डॉ. नवीन, श्री चक्रधर सहित अन्य वैज्ञानिक, तकनीकी अधिकारी एवं परियोजना सहायक भी कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

शिक्षा मंत्रालय

सीएसआईआर–सीबीआरआई रुड़की ने राजस्थान के स्वाइपुरा से 'स्मार्ट विलेज' पहल का शुभारंभ किया

• प्रधानमंत्री के 'विकसित भारत @2047' के विज़न के अनुरूप मिशन-मोड परियोजना

• जलवायु-सहनशील, आजीविका-केंद्रित एवं डिजिटल प्रौद्योगिकियों का एकीकृत कार्यान्वयन

• 14 सीएसआईआर प्रयोगशालाओं के वैज्ञानिकों द्वारा आवश्यकता-आधारित प्रौद्योगिकी आंकलन

प्रविष्टि तिथि: 20 DEC 2025 10:16PM by PIB Dehradun

भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय के अंतर्गत वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (CSIR) द्वारा संचालित "स्मार्ट गाँव" मिशन मोड परियोजना का शुभारंभ आज राजस्थान के पाली जिले के सवाईपुरा गाँव में किया गया। यह पहल प्रधानमंत्री के "विकसित भारत- 2047" के विज़न के अनुरूप ग्रामीण भारत के समग्र एवं सतत विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। इस मिशन का औपचारिक शुभारंभ सांसद, पाली, श्री पी. पी. चौधरी, तथा डॉ. (श्रीमती) एन. कलैसेल्वी, महानिदेशक, सीएसआईआर एवं सचिव, डीएसआईआर, नई दिल्ली द्वारा किया गया। इस अवसर पर श्री भीमराज भाटी, विधायक, पाली विधानसभा क्षेत्र; प्रो. प्रदीप कुमार रमनचरला, निदेशक, सीएसआईआर–केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान; डॉ. पी. सी. पंचारिया, निदेशक, सीएसआईआर–सीरी सहित जिला प्रशासन के वरिष्ठ अधिकारी, ठाकुर श्री महान पराक्रम सिंह, सरपंच, ग्राम पंचायत - चौटिला, ग्राम प्रतिनिधि-गण, गैर-सरकारी संगठनों के प्रतिनिधि तथा विभिन्न सीएसआईआर प्रयोगशालाओं के वैज्ञानिक उपस्थित रहे।

कार्यक्रम के दौरान 14 सीएसआईआर प्रयोगशालाओं के वैज्ञानिकों द्वारा सवाईपुरा गाँव में विस्तृत आवश्यकता आकलन सर्वेक्षण किया गया, जिसके आधार पर "स्मार्ट गाँव" मिशन के अंतर्गत उपयुक्त तकनीकों की पहचान की गई। इस अवसर पर आयोजित तकनीकी प्रदर्शनी में जलवायु-संवेदी एवं आजीविका-आधारित समाधानों का प्रदर्शन किया गया, जिनमें आवास एवं अधोसंरचना (कूल रूफ तकनीक, कम लागत आवास, ग्रामीण सड़कें), नवीकरणीय ऊर्जा एवं जल प्रबंधन (सौर ऊर्जा प्रणाली, अपशिष्ट जल एवं फीकल स्लज उपचार, सुरक्षित पेयजल समाधान), कृषि एवं संबद्ध क्षेत्र (औषधीय एवं सुगंधित फसलें, मधुमक्खी पालन, मिलेट मूल्य संवर्धन, स्मार्ट कृषि यंत्र), ठोस अपशिष्ट प्रबंधन, जैवअपघट्य उत्पाद, बायोगैस एवं कम्पोस्टिंग, डिजिटल एवं एआई-सक्षम प्रणालियाँ (स्मार्ट ऊर्जा प्रबंधन, वन्यजीव–मानव संघर्ष न्यूनीकरण, स्वास्थ्य निगरानी, दुग्ध गुणवत्ता विश्लेषण) तथा भूजल आकलन से संबंधित तकनीकें शामिल रहीं। इन सभी समन्वित तकनीकी नवाचारों का उद्देश्य ग्रामीण जीवन की गुणवत्ता में सुधार, आजीविका सुदृढ़ीकरण, पर्यावरणीय स्थिरता को बढ़ावा देना तथा सवाईपुरा गाँव को एक आदर्श स्मार्ट गाँव के रूप में विकसित करना है, जो राष्ट्रीय मिशनों एवं योजनाओं के अनुरूप हो। डॉ. किशोर एस. कुलकर्णी, प्रधान वैज्ञानिक, सीएसआईआर–सीबीआरआई, रुड़की; सीएसआईआर स्मार्ट गाँव मिशन के नोडल समन्वयक के रूप में कार्यरत हैं। कार्यक्रम के दौरान बाल रक्षा भारत, नई दिल्ली के साथ एक समझौता ज्ञापन (MoU) पर भी हस्ताक्षर किए गए, जो इस परियोजना के क्रियान्वयन भागीदार के रूप में कार्य करेगा।

कार्यक्रम के अंत में सवाईपुरा गाँव के ग्रामीणों ने विभिन्न सीएसआईआर प्रयोगशालाओं के वैज्ञानिकों के साथ संवाद किया और प्रस्तावित तकनीकी समाधानों पर अपने विचार साझा किए। इस आयोजन का समन्वय डॉ. चन्दन स्वरुप मीना, श्री राजेश कुमार शर्मा तथा उनकी टीम द्वारा किया गया। सीएसआईआर–सीबीआरआई से डॉ. अजय चौरसिया, डॉ. ताबिश आलम, डॉ. नवीन, श्री चक्रधर सहित अन्य वैज्ञानिक, तकनीकी अधिकारी एवं परियोजना सहायक भी कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

(रिलीज़ आईडी: 2207121) आगंतुक पटल : 36
इस विज्ञप्ति को इन भाषाओं में पढ़ें: English

https://www.pib.gov.in/PressReleseDetail.aspx?PRID=2207121&reg=46&lang=45

सीएसआईआर स्मार्ट विलेज पहल के तहत राजस्थान पाली के सवाईपुरा में हुआ शुभारंभ

मरू लहर न्यूज

पाली। भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय के अधीन वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) ने प्रधानमंत्री के विकसित भारत / 2047 के विज़न के अनुरूप सीएसआईआर स्मार्ट विलेज नामक मिशन मोड परियोजना का शुभारंभ 20 दिसम्बर को किया गया। इस पहल के अंतर्गत भारत के विभिन्न जलवायु क्षेत्रों में स्थित छह ग्रामों का चयन किया गया है।

इनमें राजस्थान के पाली जिले के सवाईपुरा गांव को गर्म व शुष्क जोन में शामिल किया गया हैं। यह परियोजना स्वदेशी सीएसआईआर प्रौद्योगिकियों के माध्यम से प्रमुख ग्राम विकास संकेतकों में सुधार करते हुए समग्र ग्राम विकास पर केंद्रित है, जो लैब टू लैंड के मार्गदर्शक सिद्धांत का अनुसरण करती है। इस मिशन का नेतृत्व नोडल प्रयोगशाला, सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई), रुड़की द्वारा किया जा रहा है, जिसमें सीएसआईआर की तेरह सहभागी प्रयोगशालाएं सम्मिलित हैं। इनमें सीएसआईआर-आईएचबीटी, सीएसआईआर-सीमैप, सीएसआईआर-नीरी, सीएसआईआर-सीआरआरआई, सीएसआईआर-एएमपीआरआई, सीएसआईआर-एसईआरसी, सीएसआईआर-सीएसआईओ, सीएसआईआर-आईआईसीटी, सीएसआईआर-सीएलआरआई, सीएसआईआर-एनआईआईएसटी, सीएसआईआर-एनजीआरआई, सीएसआईआर-सीएमईआरआई तथा सीएसआईआर-सीईईआरआई शामिल हैं। परियोजना के प्रारंभिक चरण में राजस्थान सरकार तथा बाल रक्षा भारत (सेव द चिल्ड्रन) द्वारा कार्यान्वयन एजेंसी के रूप में सहयोग प्रदान किया जा रहा हैं। सहभागी प्रयोगशालाएं आवास नियोजन एवं विकास, आधारभूत संरचना, ग्राम सड़कों, कृषि एवं सहायक प्रौद्योगिकियों, कृषि-आधारित आजीविका, नवीकरणीय ऊर्जा, इको-किचन, भूजल एवं अपशिष्ट जल प्रबंधन, आपदा जोखिम न्यूनीकरण, पर्यावरण संरक्षण, डिजिटल कनेक्टिविटी, शिक्षा तथा स्वास्थ्य सेवाओं के क्षेत्रों में विभिन्न तकनीकों का परिनियोजन कर रही हैं। इस राष्ट्रीय मिशन का औपचारिक शुभारंभ 20 दिसम्बर को पाली सांसद पी. पी. चौधरी, तथा वन नेशन, वन इलेक्शन पर संयुक्त संसदीय समिति (जेपीसी) के अध्यक्ष, एवं डॉ. (श्रीमती) एन. कलैसेल्वी, सचिव, वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान विभाग (डीएसआईआर) तथा महानिदेशक, सीएसआईआर, नई दिल्ली द्वारा वर्चुअल माध्यम से किया गया। इस अवसर पर प्रो. प्रदीप कुमार रामणचारला, निदेशक, सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की सहित जिला प्रशासन के वरिष्ठ अधिकारी, जनप्रतिनिधि सुनिल भण्डारी, पाली विधायक भीमराज भाटी, विशाल सिपा अतिरिक्त मुख्य कार्यकारी अधिकारी, पंचायती राज, सी. पी. वर्मा कार्यकारी अभियंता, ग्रामीण विकास, हरि सिंह राजपुरोहित कार्यकारी अभियंता पंचायती राज, पुरण कुमार शानी उपखंड अधिकारी, मनमोहन मीणा खंड विकास अधिकारी रोहट तथा दिलीप सिंह ग्राम विकास अधिकारी, चोटिला ग्राम सहित अनेक वैज्ञानिक एवं गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। इस कार्यक्रम का समनव्य (सीएसआईआर) के प्रधान वैज्ञानिक डॉ किशोर ने किया।

CBRI Roorkee Launches SMART Village Initiative from Sawaipura, Pali District, Rajasthan

• Mission Mode Project aligned with Prime Minister's vision of Viksit Bharat @ 2047

• Integrated deployment of climate-resilient, livelihood-oriented and digital technologies

• Scientists from 14 CSIR laboratories conduct need-based technology assessment

Posted On: 20 DEC 2025 10:13PM by PIB Dehradun

The Council of Scientific and Industrial Research (CSIR), Ministry of Science and Technology, Government of India, has launched a Mission Mode Project on "SMART VILLAGE" from Sawaipura Village, Pali District, Rajasthan, aligned with the Hon'ble Prime Minister's vision of "Viksit Bharat @ 2047."

The initiative was inaugurated by Shri P. P. Chaudhary, Hon'ble Member of Parliament, Pali, along with Dr. (Mrs.) N. Kalaiselvi, Director General, CSIR & Secretary, DSIR, Government of India. The launch ceremony was attended by Shri Bhim Raj Bhati, Hon'ble MLA, Pali Consituency; Prof. Pradeep Kumar Ramancharla, Director, CSIR–Central Building Research Institute (CBRI), Roorkee; Dr. P. C. Panchariya, Director, CSIR–Central Electronics Engineering Research Institute (CEERI), Pilani; Shri Vishal Sipa, ACEO, Pali; Shri Manmohan Meena, BDO, Rohat; Shri Sunil Bhandari, District President; Shri Prakesh Patel, Tehsildar, Rohat; Shri thakur Shri Mahan Parakram Singh, Shri Dilip Singh, VDO, and Shri Santanu Chakraborty, CEO, Bal Raksha Bharat, New Delhi, along with scientists from multiple CSIR laboratories.

On this occasion, scientists from 14 CSIR laboratories carried out a comprehensive need assessment survey, leading to the identification of location-specific technologies for deployment under the CSIR SMART Village Mission in Sawaipura. An exhibition gallery showcased a wide range of climate-responsive and livelihood-oriented innovations, including solutions for housing and infrastructure such as cool roof technologies, low-cost housing systems and rural roads; renewable energy and water management solutions including solar-assisted systems, wastewater and faecal sludge treatment, and safe drinking water technologies; agriculture and allied sectors covering aromatic and medicinal crops, beekeeping, millet value addition and smart farm machinery; waste management solutions such as solid waste management, biodegradable products, biogas and composting; and digital and AI-enabled systems for smart energy management, wildlife conflict mitigation, health monitoring, milk quality analysis, along with groundwater assessment tools.

These integrated interventions aim to enhance quality of life, strengthen rural livelihoods, promote sustainability, and support the holistic development of Sawaipura as a model SMART Village aligned with national missions and government schemes.

Dr. Kishor S. Kulkarni, Principal Scientist, CSIR–CBRI, Roorkee, is serving as the Nodal Coordinator for the CSIR SMART Village Mission. On the occasion, an MoU was signed with Bal Raksha Bharat, New Delhi, which will act as the implementation partner for the project. Villagers of Sawaipura actively interacted with scientists from various CSIR laboratories, sharing local challenges and aspirations. The event was coordinated by Dr. Chandan Swaroop Meena, Shri Rajesh Sharma, and their team. From CSIR–CBRI, Dr. Ajay Chourasia, Dr. Tabish Alam, Dr. Naveen, Shri Chakradhar, and other officials were also present.

The CSIR SMART Village initiative reflects CSIR's commitment to science-led rural transformation, leveraging indigenous technologies to create self-reliant, sustainable and resilient villages across India.

https://www.pib.gov.in/PressReleseDetailm.aspx?PRID=2207120&reg=46&lang=1

सीएसआईआर स्मार्ट विलेज पहल के तहत राजस्थान पाली के सवाईपुरा में हुआ शुभारंभ

मरू मंच न्यूज

पाली। भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय के अधीन वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) ने प्रधानमंत्री के विकसित भारत / 2047 के विजन के अनुरूप सीएसआईआर स्मार्ट विलेज नामक मिशन मोड परियोजना का शुभारंभ 20 दिसम्बर को किया गया। इस पहल के अंतर्गत भारत के विभिन्न जलवायु क्षेत्रों में स्थित छह ग्रामों का चयन किया गया है।

इनमें राजस्थान के पाली जिले के सवाईपुरा गांव को गर्म व शुष्क जोन में शामिल किया गया है। यह परियोजना स्वदेशी सीएसआईआर प्रौद्योगिकियों के माध्यम से प्रमुख ग्राम विकास संकेतकों में सुधार करते हुए समग्र ग्राम विकास पर केंद्रित है, जो लैब टू लैंड के मार्गदर्शक सिद्धांत का अनुसरण करती है। इस मिशन का नेतृत्व नोडल प्रयोगशाला, सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई), रुड़की द्वारा किया जा रहा है, जिसमें सीएसआईआर की तेरह सहभागी प्रयोगशालाएं सम्मिलित हैं। इनमें सीएसआईआर-आईएचबीटी, सीएसआईआर-सीमैप, सीएसआईआर-नीरी, सीएसआईआर-सीआरआरआई, सीएसआईआर-एएमपीआरआई, सीएसआईआर-एसईआरसी, सीएसआईआर-सीएसआईओ, सीएसआईआर-आईआईसीटी, सीएसआईआर-सीएलआरआई, सीएसआईआर-एनआईआईएसटी, सीएसआईआर-एनजीआरआई, सीएसआईआर-सीएमईआरआई तथा सीएसआईआर-सीईईआरआई शामिल हैं। परियोजना के प्रारंभिक चरण में राजस्थान सरकार तथा बाल रक्षा भारत (सेव द चिल्ड्रन) द्वारा सहयोग प्रदान किया जा रहा है। सहभागी प्रयोगशालाएं आवास नियोजन एवं विकास, आधारभूत संरचना, ग्राम सड़कों, कृषि एवं सहायक प्रौद्योगिकियों, कृषि-आधारित आजीविका, नवीकरणीय ऊर्जा, इको-किचन, भूजल एवं अपशिष्ट जल प्रबंधन, आपदा जोखिम न्यूनीकरण, पर्यावरण संरक्षण, डिजिटल कनेक्टिविटी, शिक्षा तथा स्वास्थ्य सेवाओं के क्षेत्रों में विभिन्न तकनीकों का परिनियोजन कर रही हैं। इस राष्ट्रीय मिशन का औपचारिक शुभारंभ 20 दिसम्बर को पाली सांसद पी. पी. चौधरी, तथा वन नेशन, वन इलेक्शन पर संयुक्त संसदीय समिति (जेपीसी) के अध्यक्ष, एवं डॉ. (श्रीमती) एन. कलैसेल्वी, सचिव, वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान विभाग (डीएसआईआर) तथा महानिदेशक, सीएसआईआर, नई दिल्ली द्वारा वर्चुअल माध्यम से किया गया। इस अवसर पर प्रो. प्रदीप कुमार रमणचरला, निदेशक, सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की सहित जिला प्रशासन के वरिष्ठ अधिकारी, जनप्रतिनिधि सुनिल भण्डारी, पाली विधायक भीमराज भाटी, विशाल मिणा अतिरिक्त मुख्य कार्यकारी अधिकारी, पंचायती राज, सी. पी. वर्मा कार्यकारी अभियंता, ग्रामीण विकास, हरि सिंह राजपुरोहित कार्यकारी अभियंता पंचायती राज, पुरण कुमार शर्मा उपखंड अधिकारी, मनमोहन मीणा खंड विकास अधिकारी रोहट तथा दिलीप सिंह ग्राम विकास अधिकारी, चोटिला ग्राम सहित अनेक वैज्ञानिक एवं गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। इस कार्यक्रम का समन्वय (सीएसआईआर) के प्रधान वैज्ञानिक डॉ किशोर ने

अब डोर-टू-डोर होगा सर्वे

25 तक नाम नहीं हटाने पर होगी कार्यवाही

...गी वसूली

Search

सर्कल न्यूज

ABOUT US

Homepage देश गुजरात राजस्थान तमिलनाडु

Home › राजस्थान › पाली › 'विकसित भारत' की प्रयोगशाला बनेगा पाली का सवाईपुरा: देश के पहले 'CSIR...

‘विकसित भारत’ की प्रयोगशाला बनेगा पाली का सवाईपुरा: देश के पहले ‘CSIR स्मार्ट गाँव’ मिशन का ऐतिहासिक आगाज

देश राजस्थान पाली

PUBLISHED ON **DECEMBER 20, 2025** | BY राव गुमान सिंह

सर्कल न्यूज़ आपका साथ, हमारा विश्वास 8094-161616

सर्कल न्यूज

सर्कल न्यूज़ आपका साथ, हमारा वि

14 वैज्ञानिक प्रयोगशालाओं की तकनीक से बदलेगी गांव की तस्वीर; खेती, पानी और मकान सब होगा हाईटेक

सर्कल न्यूज़ नेटवर्क पाली/सवाईपुरा। राजस्थान के पाली जिले का एक छोटा सा गाँव 'सवाईपुरा' अब देश के नक्शे पर विज्ञान और तकनीक के मॉडल के रूप में उभरेगा। प्रधानमंत्री के 'विकसित भारत-2047' के सपने को साकार करने की दिशा में शनिवार को यहाँ एक नया इतिहास लिखा गया। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय के तहत सीएसआईआर (CSIR) ने अपने महत्वाकांक्षी **"स्मार्ट गाँव" (Smart Village)** मिशन मोड प्रोजेक्ट का शुभारंभ इसी गाँव से किया है।

इस मिशन का औपचारिक उद्घाटन पाली सांसद पी.पी. चौधरी और सीएसआईआर की महानिदेशक डॉ. एन. कलैसेल्वी ने किया। इस दौरान पाली विधायक भीमराज भाटी, सीएसआईआर-सीबीआरआई निदेशक प्रो. प्रदीप कुमार रमनचरला और सीएसआईआर-सीरी निदेशक डॉ. पी.सी. पंचारिया भी मौजूद रहे।

सर्कल न्यूज़ आपका साथ, हमारा विश्वास 8094-161616

क्या है 'स्मार्ट गाँव' मिशन? यह केवल एक सरकारी योजना नहीं, बल्कि ग्रामीण भारत को विज्ञान से जोड़ने की एक क्रांति है। इस मिशन के तहत सीएसआईआर की **14 प्रमुख प्रयोगशालाओं** के वैज्ञानिकों ने सवाईपुरा गाँव का गहन सर्वेक्षण किया और यहाँ की जरूरतों के हिसाब से 'कस्टमाइज्ड' तकनीकी समाधान तैयार किए हैं। इस प्रोजेक्ट के तहत गाँव में निम्नलिखित हाईटेक बदलाव किए जाएंगे:

- **आवास और बुनियादी ढाँचा:** कूल रूफ तकनीक (गर्मी से बचाने वाली छतें), कम लागत वाले मजबूत मकान और आधुनिक ग्रामीण सड़कें।
- **खेती-किसानी:** औषधीय और सुगंधित फसलों की खेती, मधुमक्खी पालन, स्मार्ट कृषि यंत्र और मिलेट (मोटा अनाज) की प्रोसेसिंग।
- **पानी और ऊर्जा:** सौर ऊर्जा प्रणाली, गंदे पानी का ट्रीटमेंट (Recycling), पीने का साफ पानी और भूजल का

सर्कल न्यूज

सर्कल न्यूज़ आपका साथ, हमारा विश्वास 8094-161616

क्या है 'स्मार्ट गाँव' मिशन? यह केवल एक सरकारी योजना नहीं, बल्कि ग्रामीण भारत को विज्ञान से जोड़ने की एक क्रांति है। इस मिशन के तहत सीएसआईआर की **14 प्रमुख प्रयोगशालाओं** के वैज्ञानिकों ने सवाईपुरा गाँव का गहन सर्वेक्षण किया और यहाँ की जरूरतों के हिसाब से 'कस्टमाइज्ड' तकनीकी समाधान तैयार किए हैं। इस प्रोजेक्ट के तहत गाँव में निम्नलिखित हाईटेक बदलाव किए जाएंगे:

- **आवास और बुनियादी ढाँचा:** कूल रूफ तकनीक (गर्मी से बचाने वाली छतें), कम लागत वाले मजबूत मकान और आधुनिक ग्रामीण सड़कें।
- **खेती-किसानी:** औषधीय और सुगंधित फसलों की खेती, मधुमक्खी पालन, स्मार्ट कृषि यंत्र और मिलेट (मोटा अनाज) की प्रोसेसिंग।
- **पानी और ऊर्जा:** सौर ऊर्जा प्रणाली, गंदे पानी का ट्रीटमेंट (Recycling), पीने का साफ पानी और भूजल का वैज्ञानिक आकलन।
- **डिजिटल और एआई:** वन्यजीव-मानव संघर्ष रोकने के लिए एआई सिस्टम, स्मार्ट बिजली प्रबंधन, डिजिटल हेल्थ मॉनिटरिंग और दूध की गुणवत्ता जांचने वाली मशीनें।

सर्कल न्यूज़ आपका साथ, हमारा विश्वास 8094-161616

तकनीक की प्रदर्शनी ने मोहा मन कार्यक्रम स्थल पर एक विशेष तकनीकी प्रदर्शनी लगाई गई, जिसमें वैज्ञानिकों ने दिखाया कि कैसे बायो-गैस, कम्पोस्टिंग और ठोस कचरा प्रबंधन से गाँव को 'जीरो वेस्ट' बनाया जा सकता है। मिशन के नोडल समन्वयक डॉ. किशोर एस. कुलकर्णी ने बताया कि इन तकनीकों का मकसद ग्रामीणों की आय बढ़ाना और जीवन स्तर सुधारना है।

https://circlenews.in/the-countrys-first-csir-smart-village-mission/

← **Post**

ZEE Rajasthan
@zeerajasthan_

#Pali : पाली जिले के रोहट क्षेत्र के सवाईपुरा से CSIR स्मार्ट विलेज मिशन का शुभारंभ कल

@DcDmPali @Palisandeep_ @BalaramHarawas #LatestNews #RajasthanNews #RajasthanWithZee

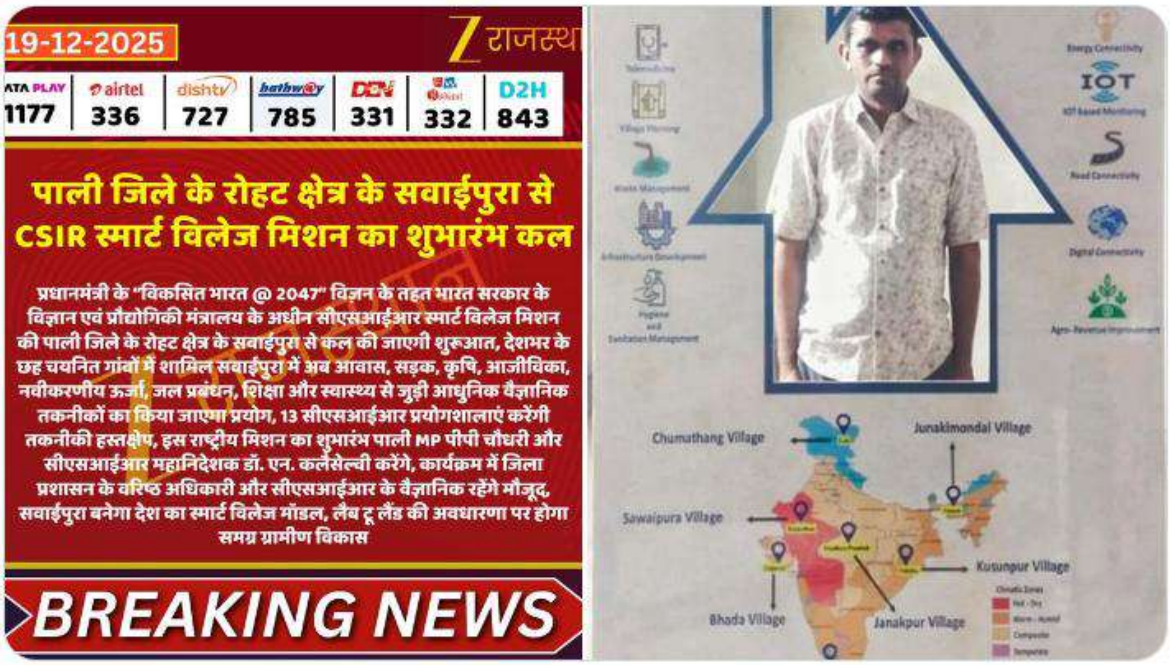

11:30 PM · Dec 19, 2025 · **799** Views

https://share.google/Q5Tbf6v2TLgYFmg9U

स्मार्ट विलेज : विकसित भारत 2047 के विजन के तहत होगा विकास, सूची में राजस्थान से इकलौता गांव

रोहट के सवाईपुरा को देश के 6 मॉडल स्मार्ट गांवों में चुना

भास्कर संवाददाता | पाली

भारत सरकार ने स्मार्ट विलेज मिशन मोड प्रोजेक्ट के तहत जिले में रोहट के सवाईपुरा गांव को स्मार्ट विलेज के रूप में विकसित करने के लिए चुना है। राजस्थान से यह इकलौता गांव है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के विकसित भारत 2047 के विजन को साकार करने की दिशा में वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय ने प्रोजेक्ट की शुरुआत की है। इसमें मध्य प्रदेश से जानपुरा (रायसेन), लद्दाख का चुमाथांग (लेह), असम का जुनाकिमाऑडल (जोरहाट), ओडिशा का कुसुनपुर (केन्दारनाथ) और गुजरात का भाड़ा (कच्छ) शामिल हैं। इसका उद्देश्य आधुनिक तकनीक, पर्यावरण-अनुकूल उपायों और डिजिटल साधनों के उपयोग से ग्रामीण भारत का समग्र विकास करना है। बता दें कि सवाईपुरा में वेस्ट मैनेजमेंट, कृषि राजस्व सुधार (एग्रो रेवेन्यू इंप्रूवमेंट), डिजिटल कनेक्टिविटी, सड़क कनेक्टिविटी, बेहतर बिजली व्यवस्था, टेली मेडिसिन, इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट, विलेज प्लानिंग, और स्वच्छता प्रबंधन (हाइजीन एंड सैनिटेशन) पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। सवाईपुरा की जनसंख्या 1100 है। कुल वोटर 650 हैं। नए नाम 50 जुड़े हैं और 18 से कम के 400 लोग शामिल हैं। स्मार्ट विलेज के कामों की मॉनिटरिंग कलेक्टर करेंगी। अतिरिक्त मुख्य कार्यकारी अधिकारी विशाल सिपा ने बताया कि सीएसआईआर की विभिन्न प्रयोगशालाओं की विशेषज्ञता का उपयोग गांव के विकास में किया जाएगा।

स्मार्ट विलेज में प्रमुख रूप से ये मुख्य काम होंगे

- आवास और निर्माण (CSRI-CBRI): भवन डिजाइन, कम लागत वाले आवास, कूल रूफ तकनीक, मिट्टी के ब्लॉक आदि।
- सड़कें (सीएसआईआर-सीआरआरआई): वार्म मिक्स, कोल्ड मिक्स और वेस्ट प्लास्टिक से।
- एग्रीटेक (सीएमईआरआई, सीईईआरआई): ई-ट्रैक्टर, स्वचालित खेती उपकरण, स्मार्ट खेती मशीनें, और सोलर ग्रीन हाउस।
- ऊर्जा और पर्यावरण (सीएमईआरआई, सीईईआरआई): सोलर-बायोमास हाइब्रिड माइक्रोग्रिड, डीसी माइक्रोग्रिड और एग्रीवोल्टिक्स।
- जल प्रबंधन (आईआईसीटी, एनजीआरआई) भूजल आकलन और उन्नत वाटर एटीएम।
- स्वास्थ्यसेवा (सीईईआरआई, एनपीआरआई): टेली- हेल्थ कनेक्ट और जल शोधन प्रणाली (डी-टोक्स नीर)।

सांसद आदर्श ग्राम योजना से मॉडल गांव में क्या अलग है ?

सांसद अपने संसदीय क्षेत्र में गांव गोद लेकर आदर्श (मॉडल गांव) के रूप में विकसित करना था। इसमें सामाजिक, आर्थिक, बुनियादी ढांचा, शासन, मानव विकास आदि। ये सामुदायिक भागीदारी और जनप्रतिनिधि नेतृत्व पर आधारित है। जबकि स्मार्ट विलेज परियोजना में गांवों को स्मार्ट तकनीक, डिजिटल सुविधाएं, नवाचार, आधुनिक इन्फ्रास्ट्रक्चर से जोड़ना है। मुख्य तौर पर जल प्रबंधन, स्मार्ट सड़कें, सोलर लाइटिंग, डिजिटल सेवाएं, स्मार्ट स्वास्थ्य/कृषि के अलावा ये टेक्नोलॉजी आधारित विकास मॉडल है। सांसद आदर्श ग्राम योजना को केंद्र सरकार की योजना है। जिसे ग्रामीण विकास मंत्रालय चलता है। लेकिन स्मार्ट विलेज परियोजना में अलग-अलग प्रदेशों द्वारा तकनीकी संस्थानों, विश्वविद्यालयों, सीएसआर कंपनियों या वैज्ञानिक संस्थानों के सहयोग से चलाई जाती है।

CBRI रुड़की ने राजस्थान के स्वाइपुरा से 'स्मार्ट विलेज' पहल का शुभारंभ किया

पीआईबी

देहरादून 20 दिसंबर ।भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय के अंतर्गत वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (CSIR) द्वारा संचालित "स्मार्ट गाँव" मिशन मोड परियोजना का शुभारंभ आज राजस्थान के पाली जिले के सवाईपुरा गाँव में किया गया। यह पहल प्रधानमंत्री के "विकसित भारत– 2047" के विज़न के अनुरूप ग्रामीण भारत के समग्र एवं सतत विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। इस मिशन का औपचारिक शुभारंभ सांसद, पाली, श्री पी. पी. चौधरी, तथा डॉ. (श्रीमती) एन कलैसेल्वी महानिदेशक सीएसआईआर

पर "स्मार्ट गाँव" मिशन के अंतर्गत उपयुक्त तकनीकों की पहचान की गई। इस अवसर पर आयोजित तकनीकी प्रदर्शनी में जलवायु–संवेदी एवं आजीविका–आधारित समाधानों का प्रदर्शन किया गया, जिनमें आवास एवं अधोसंरचना (कूल रूफ तकनीक, कम लागत आवास, ग्रामीण सवाईपुरा गाँव को एक आदर्श स्मार्ट गाँव के रूप में विकसित करना है, जो राष्ट्रीय मिशनों एवं योजनाओं के अनुरूप हो। डॉ. किशोर एस. कुलकर्णी, प्रधान वैज्ञानिक, सीएसआईआर–सीबीआरआई, रुड़की; सीएसआईआर स्मार्ट गाँव मिशन के नोडल समन्वयक के रूप में कार्यरत हैं। कार्यक्रम

CSIR–CBRI Roorkee Launches SMART Village Initiative From Sawaipura, Pali District, Rajasthan

- Mission Mode Project aligned with Prime Minister's vision of Viksit Bharat @ 2047
- Integrated deployment of climate-resilient, livelihood-oriented and digital technologies
- Scientists from 14 CSIR laboratories conduct need-based technology assessment

Dehradun (The Hawk): The Council of Scientific and Industrial Research (CSIR), Ministry of Science and Technology, Government of India, has launched a Mission Mode Project on "SMART VILLAGE" from Sawaipura Village, Pali District, Rajasthan, aligned with the Hon'ble Prime Minister's vision of "Viksit Bharat @ 2047."

The initiative was inaugurated by Shri P. P. Chaudhary, Hon'ble Member of Parliament, Pali, along with Dr. (Mrs.) N. Kalaiselvi, Director General, CSIR & Secretary, DSIR, Government of India. The launch ceremony was attended by Shri Bhim Raj Bhati, Hon'ble MLA, Pali Constituency; Prof. Pradeep Kumar Ramancharla, Director, CSIR–Central Building Research Institute (CBRI), Roorkee; Dr. P. C. Panchariya, Director, CSIR–Central Electronics Engineering Research Institute (CEERI), Pilani; Shri Vishal Sipa, ACEO, Pali; Shri Manmohan Meena, BDO, Rohat; Shri Sunil Bhandari, District President; Shri Prakesh Patel, Tehsildar, Rohat; Shri Dilip Singh, VDO; and Shri Santanu Chakraborty, CEO, Bal Raksha Bharat, New Delhi, along with scientists from multiple CSIR laboratories.

On this occasion, scientists from 14 CSIR laboratories carried out a comprehensive need assessment survey, leading to the identification of location-specific technologies for deployment under the CSIR SMART Village Mission in Sawaipura. An exhibition gallery showcased a wide range of climate-responsive and livelihood-oriented innovations, including solutions for housing and infrastructure such as cool roof technologies, low-cost housing systems and rural roads; renewable energy and water management solutions including solar-assisted systems, wastewater and faecal sludge treatment, and safe drinking water technologies; agriculture and allied sectors covering aromatic and medicinal crops, beekeeping, millet value addition and smart farm machinery; waste management solutions such as solid waste management, biodegradable products, biogas and composting; and digital and AI-enabled systems for smart energy management, wildlife conflict mitigation, health monitoring, milk quality analysis, along with groundwater assessment tools.

These integrated interventions aim to enhance quality of life, strengthen rural livelihoods, promote sustainability, and support the holistic development of Sawaipura as a model SMART Village aligned with national missions and government schemes.

Dr. Kishor S. Kulkarni, Principal Scientist, CSIR–CBRI, Roorkee, is serving as the Nodal Coordinator for the CSIR SMART Village Mission. On the occasion, an MoU was signed with Bal Raksha Bharat, New Delhi, which will act as the implementation partner for the project. Villagers of Sawaipura actively interacted with scientists from various CSIR laboratories, sharing local challenges and aspirations. The event was coordinated by Dr. Chandan Swaroop Meena, Shri Rajesh Sharma, and their team. From CSIR–CBRI, Dr. Ajay Chourasia, Dr. Tabish Alam, Dr. Naveen, Shri Chakradhar, and other officials were also present. The CSIR SMART Village Initiative reflects CSIR's commitment to science-led rural transformation, leveraging indigenous technologies to create self-reliant, sustainable and resilient villages across India.

Rs 6 Crore Loan Scam At Nainital Bank Almora, Fir Against Ex-Manager

Swati

Almora (The Hawk): Rs 6 Crore Loan Scam at Nainital Bank, FIR Registered A major loan fraud has been uncovered at the Nainital Bank branch in Almora, where the then branch manager allegedly manipulated 37 loan accounts, causing a loss of

t IIT Roorkee

CSIR-CBRI in the Limelight | 19.12.2025

Ministry of Science & Technology

Azadi Ka Amrit Mahotsav

CSIR–CBRI Unveils Climate-Resilient Building Prototype at Pilani, Advancing India's Low-Carbon Construction Mission

• Prototype demonstrates low-carbon, climate-responsive construction for hot–dry regions

• Building achieves significant water, energy and cost savings using indigenous technologies

Posted On: 19 DEC 2025 3:28PM by PIB Dehradun

In a decisive stride towards low-carbon and climate-responsive infrastructure, the CSIR–Central Building Research Institute (CSIR–CBRI), Roorkee, has successfully developed a Climate Resilient Building (CRB) at the CSIR–Central Electronics Engineering Research Institute (CSIR–CEERI) campus, Pilani. Executed under the Fast Track Mission Mode Project of CSIR, New Delhi, the initiative addresses the urgent need to reduce carbon emissions and dependence on energy-intensive mechanical cooling, particularly in India's hot–dry climatic regions.

The innovative facility was inaugurated virtually by Dr. N. Kalaiselvi, Director General, CSIR and Secretary, DSIR, in the august presence of Prof. R. Pradeep Kumar, Director, CSIR–CBRI; Dr. P. C. Panchariya, Director, CSIR–CEERI; and Dr. Ajay Chourasia, Chief Scientist, CSIR–CBRI and Nodal Scientist of the project. Congratulating the teams, Dr. Kalaiselvi highlighted the critical role of sustainable and climate-responsive construction technologies in reducing electricity demand and fossil-fuel dependence. She emphasized that such innovations are vital for meeting India's climate-change mitigation commitments and called for their accelerated dissemination and large-scale adoption.

Highlighting the national relevance of the initiative, Prof. R. Pradeep Kumar stated that the construction sector must urgently transition towards environmentally responsible solutions. He noted that CSIR–CBRI has been consistently advancing safe, affordable and sustainable building technologies, and emphasized that integrating climate-resilient designs into the Government's rural housing programmes—envisaging over two crore houses—could substantially reduce carbon footprints while improving occupant comfort and resilience.

Expressing appreciation for the collaboration, Dr. P. C. Panchariya thanked CSIR–CBRI for selecting Pilani as the demonstration site, observing that the project would act as a catalyst for promoting cost-effective and climate-adaptive construction practices in the region and beyond.

Sharing the technical outcomes, Dr. Ajay Chourasia highlighted that the building achieves nearly 30% reduction in construction water consumption, maintains indoor temperatures 8–10°C lower than ambient conditions, and conforms to stringent safety and quality benchmarks, while ensuring a low embodied and operational carbon footprint. The two-storey structure, with a built-up area of 225 sq. m., was completed within 90 days, including finishing works, and realized close to 50% cost savings through prefabrication and optimized design.

The building integrates advanced CSIR–CBRI technologies such as concrete-filled cold-formed steel sections and lightweight cellular concrete blocks, combined with climate-appropriate orientation and factory-manufactured components to ensure durability, precision and sustainability. The inauguration was attended by Er. Ashish Pippal, Er. Ashok Singh, Er. Hardev Singh, along with teams from CSIR–CBRI and CSIR–CEERI.

With the commissioning of the Pilani CRB, CSIR–CBRI has now dedicated a series of Climate Resilient Building prototypes across diverse climatic zones—Composite (Roorkee), Warm–Humid (Chennai and Jorhat), Hot–Dry (Pilani), and Cold (Leh). Each prototype is scientifically tailored to regional conditions, incorporating climate-specific strategies such as solar control and thermal mass, enhanced ventilation and moisture management, heat-gain minimization, and high insulation with passive solar heating.

This landmark initiative demonstrates how cutting-edge science, indigenous innovation, and eco-sensitive design can converge to deliver affordable, scalable, and climate-resilient building solutions, reinforcing India's pathway toward a sustainable and low-carbon built environment.

PIB in Uttarakhand
@PIBDehradun · **Follow**

👉CSIR–CBRI Unveils Climate-Resilient Building Prototype at Pilani, Advancing India's Low-Carbon Construction Mission

👉 Prototype demonstrates low-carbon, climate-responsive construction for hot–dry regions

3:33 PM · Dec 19, 2025

❤ 1 Reply Copy link

Read 1 reply

https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2206658&reg=39&lang=33

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय

Azadi Ka Amrit Mahotsav

सीएसआईआर स्मार्ट विलेज पहल का शुभारंभ सवाईपुरा में कल 20 दिसम्बर को

प्रविष्टि तिथि: 19 DEC 2025 5:50PM by PIB Jaipur

भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय के अधीन वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) ने प्रधानमंत्री के "विकसित भारत @ 2047" के विज़न के अनुरूप "सीएसआईआर स्मार्ट विलेज" नामक मिशन मोड परियोजना का शुभारंभ कल 20 दिसम्बर को किया जा रहा है। इस पहल के अंतर्गत भारत के विभिन्न जलवायु क्षेत्रों में स्थित छह ग्रामों का चयन किया गया है। इनमें सवाईपुरा (पाली जिला, राजस्थान), जनकपुर (रायसेन जिला, मध्य प्रदेश), जुनाकीमंडल (जोरहाट जिला, असम), कुसुनपुर (केंद्रपाड़ा जिला, ओडिशा), चुमथांग (लेह जिला, लद्दाख) तथा भाड़ा (कच्छ जिला, गुजरात) शामिल हैं। यह परियोजना स्वदेशी सीएसआईआर प्रौद्योगिकियों के माध्यम से प्रमुख ग्राम विकास संकेतकों में सुधार करते हुए समग्र ग्राम विकास पर केंद्रित है, जो "लैब टू लैंड" के मार्गदर्शक सिद्धांत का अनुसरण करती है।
इस मिशन का नेतृत्व नोडल प्रयोगशाला, सीएसआईआर–केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई), रुड़की द्वारा किया जा रहा है, जिसमें सीएसआईआर की तेरह सहभागी प्रयोगशालाएँ सम्मिलित हैं। इनमें सीएसआईआर–आईएचबीटी, सीएसआईआर–सीमैप, सीएसआईआर–नीरी, सीएसआईआर–सीआरआरआई, सीएसआईआर–एएमपीआरआई, सीएसआईआर–एसईआरसी, सीएसआईआर–सीएसआईओ, सीएसआईआर–आईआईसीटी, सीएसआईआर–सीएलआरआई, सीएसआईआर–एनआईआईएसटी, सीएसआईआर–एनजीआरआई, सीएसआईआर–सीएमईआरआई तथा सीएसआईआर–सीईईआरआई शामिल हैं। परियोजना के प्रारंभिक चरण में राजस्थान सरकार तथा बाल रक्षा भारत (सेव द चिल्ड्रन) द्वारा कार्यान्वयन एजेंसी के रूप में सहयोग प्रदान किया जाएगा।
सहभागी प्रयोगशालाएँ आवास नियोजन एवं विकास, आधारभूत संरचना, ग्राम सड़कों, कृषि एवं सहायक प्रौद्योगिकियों, कृषि-आधारित आजीविका, नवीकरणीय ऊर्जा, इको-किचन, भूजल एवं अपशिष्ट जल प्रबंधन, आपदा जोखिम न्यूनीकरण, पर्यावरण संरक्षण, डिजिटल कनेक्टिविटी, शिक्षा तथा स्वास्थ्य सेवाओं के क्षेत्रों में विभिन्न तकनीकों का परिनियोजन कर रही हैं। मिशन में ग्राम विकास सूचकांक (Village Development Index – VDI) के माध्यम से मूल्यांकन एवं प्रभाव आकलन का भी प्रावधान है।
इस राष्ट्रीय मिशन का औपचारिक शुभारंभ कल 20 दिसम्बर को पाली सांसद श्री पी. पी. चौधरी, तथा "वन नेशन, वन इलेक्शन" पर संयुक्त संसदीय समिति (जेपीसी) के अध्यक्ष, एवं डॉ. (श्रीमती) एन. कलैसेल्वी, सचिव, वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान विभाग (डीएसआईआर) तथा महानिदेशक, सीएसआईआर, नई दिल्ली द्वारा किया जाएगा। इस अवसर पर प्रो. प्रदीप कुमार रामणचारला, निदेशक, सीएसआईआर–सीबीआरआई, रुड़की सहित जिला प्रशासन के वरिष्ठ अधिकारी — जिला कलक्टर पाली श्री लक्ष्मी नारायण मंत्री, श्री मुकेश चौधरी (मुख्य कार्यकारी अधिकारी), डॉ. महेंद्र सिंह मेहता (अपर मुख्य कार्यकारी अधिकारी, ग्रामीण विकास), श्री विशाल सिपा (अपर मुख्य कार्यकारी अधिकारी, पंचायती राज), श्री सी. पी. वर्मा (कार्यकारी अभियंता, ग्रामीण विकास), श्री हरि सिंह राजपुरोहित (कार्यकारी अभियंता, पंचायती राज), श्री पुरण कुमार शानी (उपखंड अधिकारी), श्री मनमोहन मीणा (खंड विकास अधिकारी, रोहट) तथा श्री दिलीप सिंह (ग्राम विकास अधिकारी, चोटिला ग्राम) सहित अनेक वैज्ञानिक एवं गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहेंगे। इस कार्यक्रम का समनव्य (सीएसआईआर) के प्रधान वैज्ञानिक डॉ किशोर कुलकर्णी करेंगे।

000000

(रिलीज़ आईडी: 2206658) आगंतुक पटल : 67

https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2206540&reg=46&lang=1

Ministry of Science & Technology

CSIR Smart Village Initiative to be launched in Sawaipura tomorrow on 20th December

Posted On: 19 DEC 2025 5:31PM by PIB Jaipur

The Council of Scientific and Industrial Research (CSIR), Ministry of Science and Technology, Government of India, has launched a Mission Mode Project on "SMART VILLAGE", aligned with the Prime Minister's vision of "Viksit Bharat @ 2047."

Under this initiative, six villages located in different climatic regions of India have been identified, namely Sawaipura (Pali District, Rajasthan), Janakpur (Raisen District, Madhya Pradesh), Junakimandal (Jorhat District, Assam), Kusunpur (Kendrapara District, Odisha), Chumathang (Leh District, Ladakh), and Bhada (Kachchh District, Gujarat). This pilot project focuses on integrated village development by improving key development indicators through indigenous CSIR technologies, following the guiding principle of 'Lab to Land. This mission has been initiated by the Nodal Laboratory, CSIR–Central Building Research Institute (CBRI), Roorkee, in collaboration with thirteen participating CSIR laboratories. The participating laboratories include CSIR-IHBT, CSIR-CIMAP, CSIR-NEERI, CSIR-CRRI, CSIR-AMPRI, CSIR-SERC, CSIR-CSIO, CSIR-IICT, CSIR-CLRI, CSIR-NIIST, CSIR-NGRI, CSIR-CMERI and CSIR-CEERI. Initial support was given by Rajasthan Government and Bal Raksha Bharat (Save the children) as an implementing agency. These laboratories are deploying a range of technologies in the areas of habitat planning and development, infrastructure, village roads, agriculture and allied technologies, farm based livelihood, renewable energy, eco-kitchens, groundwater management, wastewater management, disaster risk reduction, environmental protection, digital connectivity, education, and healthcare. The mission also includes evaluation and impact assessment through the Village Development Index.

The national launch of the mission was inaugurated by Member of Parliament, Pali Shri. P. P. Chaudhary, and Chairperson of the Joint Parliamentary Committee (JPC) on One Nation, One Election and Dr. (Mrs.) N. Kalaiselvi, Secretary, Department of Scientific and Industrial Research (DSIR) and Director General, Council of Scientific and Industrial Research (CSIR), New Delhi, along with Professor, Pradeep Kumar Ramancharla, Director, CSIR-CBRI, Roorkee, Shri Lakshmi Narain Mantri, District Magistrate (DM), Shri Mukesh Choudhary (Chief Executive Officer), Dr. Mahendra Singh Mehata (Additional Chief Executive Officer, Rural Development, Pali), Shri Vishal Sipa (Additional Chief Executive Officer, Panchayat Raj, Pali), Shri C.P. Verma (Executive Engineer, Rural Development), Shri Hari Singh Rajpurohit (Executive Engineer, Panchayat Raj), Shri Puran Kumar Shani (Sub-Divisional Magistrate), Shri Manmohan Meena (Block Development Officer, Rohat), and Shri Dilip Singh (Village Development Officer, Chotila Gram), along with scientists, who were present at the event. This program will be coordinated by Dr. Kishor Kulkarni, Principal Scientist (CSIR).

000000

(Release ID: 2206656) Visitor Counter : 51

https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2206656&reg=39&lang=1

CSIR–CBRI Roorkee unveils Climate-Resilient Building Prototype at Pilani

Garhwal Post Bureau

ROORKEE, 19 Dec: In a decisive stride towards low-carbon and climate-responsive infrastructure, the CSIR-Central Building Research Institute (CSIR–CBRI), Roorkee, has successfully developed a Climate Resilient Building (CRB) at the CSIR–Central Electronics Engineering Research Institute (CSIR–CEERI) campus, Pilani. Executed under the Fast Track Mission Mode Project of CSIR, New Delhi, the initiative addresses the urgent need to reduce carbon emissions and dependence on energy-intensive mechanical cooling, particularly in India's hot–dry climatic regions.

The innovative facility was inaugurated virtually by Dr N Kalaiselvi, Director General, CSIR and Secretary, DSIR, in the presence of Prof R. Pradeep Kumar, Director, CSIR–CBRI; Dr. P. C. Panchariya, Director, CSIR–CEERI; and Dr. Ajay Chourasia, Chief Scientist, CSIR-CBRI and Nodal Scientist of the project. Congratulating the teams, Dr. Kalaiselvi highlighted the critical role of sustainable and climate-responsive construction technologies in reducing electricity demand and fossil-fuel dependence. She emphasised that such innovations are vital for meeting India's climate-change mitigation commitments and called for their accelerated dissemination and large-scale adoption.

Highlighting the national relevance of the initiative, Prof R Pradeep Kumar stated that the construction sector must urgently transition towards environmentally responsible solutions. He noted that CSIR–CBRI has been consistently advancing safe, affordable and sustainable building technologies, and emphasized that integrating climate-resilient designs into the Government's rural housing programmes—envisaging over two crore houses—could substantially reduce carbon footprints while improving occupant comfort and resilience.

Expressing appreciation for the collaboration, Dr. P. C. Panchariya thanked CSIR-CBRI for selecting Pilani as the demonstration site, observing that the project would act as a catalyst for promoting cost-effective and climate-adaptive construction practices in the region and beyond.

Sharing the technical outcomes, Dr. Ajay Chourasia highlighted that the building achieves nearly 30% reduction in construction water consumption, maintains indoor temperatures 8–10°C lower than ambient conditions, and conforms to stringent safety and quality benchmarks, while ensuring a low embodied and operational carbon footprint. The two-storey structure, with a built-up area of 225 sq. m., was completed within 90 days, including finishing works, and realized close to 50% cost savings through prefabrication and optimized design.

The building integrates advanced CSIR–CBRI technologies such as concrete-filled cold-formed steel sections and lightweight cellular concrete blocks, combined with climate-appropriate orientation and factory-manufactured components to ensure durability, precision and sustainability. The inauguration was attended by Er. Ashish Pippal, Er. Ashok Singh, Er. Hardev Singh, along with teams from CSIR–CBRI and CSIR-CEERI.

With the commissioning of the Pilani CRB, CSIR-CBRI has now dedicated a series of Climate Resilient Building prototypes across diverse climatic zones—Composite (Roorkee), Warm–Humid (Chennai and Jorhat), Hot–Dry (Pilani), and Cold (Leh). Each prototype is scientifically tailored to regional conditions, incorporating climate-specific strategies such as solar control and thermal mass, enhanced ventilation and moisture management, heat-gain minimization, and high insulation with passive solar heating.

This landmark initiative demonstrates how cutting-edge science, indigenous innovation, and eco-sensitive design can converge to deliver affordable, scalable, and climate-resilient building solutions, reinforcing India's pathway toward a sustainable and low-carbon built environment.

CSIR-CBRI in the Limelight | 09.12.2025

दैनिक भास्कर

पाली भास्कर 11-12-2025

पाली

पाली, गुरुवार, 11 दिसंबर, 2025 | 16

स्मॉर्ट विलेज : विकसित भारत 2047 के विजन के तहत होगा विकास, सूची में राजस्थान से इकलौता गांव

रोहट के सवाईपुरा को देश के 6 मॉडल स्मार्ट गांवों में चुना

भास्कर संवाददाता | पाली

भारत सरकार ने स्मार्ट विलेज मिशन मोड प्रोजेक्ट के तहत जिले में रोहट के सवाईपुरा गांव को स्मार्ट विलेज के रूप में विकसित करने के लिए चुना है। राजस्थान से यह इकलौता गांव है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के विकसित भारत 2047 के विजन को साकार करने की दिशा में वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय ने प्रोजेक्ट की शुरुआत की है। इसमें मध्य प्रदेश से जानसुरा (रायसेन), लद्दाख का चुमाथांग (लेह), असम का जुनाकिमाओंडल (जोरहाट), ओडिशा का कुसुनपुर (केदारनाथ) और गुजरात का भाड़ा (कच्छ) शामिल हैं। इसका उद्देश्य आधुनिक तकनीक, पर्यावरण-अनुकूल उपायों और डिजिटल साधनों के उपयोग से ग्रामीण भारत का समग्र विकास करना है। बता दें कि सवाईपुरा में वेस्ट मैनेजमेंट, कृषि राजस्व सुधार (एग्रो रेवेन्यू इंप्रूवमेंट), डिजिटल कनेक्टिविटी, सड़क कनेक्टिविटी, बेहतर बिजली व्यवस्था, टेली मेडिसिन, इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट, विलेज प्लानिंग, और स्वच्छता प्रबंधन (हाइजीन एंड सैनिटेशन) पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। सवाईपुरा की जनसंख्या 1100 है। कुल वोटर 650 हैं। नए नाम 50 जुड़े हैं और 18 से कम के 400 लोग शामिल हैं। स्मार्ट विलेज के कामों की मॉनिटरिंग कलेक्टर करेंगे। अतिरिक्त मुख्य कार्यकारी अधिकारी विशाल सिपा ने बताया कि सीएसआईआर की विभिन्न प्रयोगशालाओं की विशेषज्ञता का उपयोग गांव के विकास में किया जाएगा।

स्मार्ट विलेज में प्रमुख रूप से ये मुख्य काम होंगे

- **आवास और निर्माण (CSRI-CBRI):** भवन डिजाइन, कम लागत वाले आवास, कूल रूफ तकनीक, मिट्टी के ब्लॉक आदि।
- **सड़कें (सीएसआईआर-सीआरआरआई):** वार्म मिक्स, कोल्ड मिक्स और वेस्ट प्लास्टिक से।
- **एग्रीटेक (सीएमईआरआई, सीईईआरआई):** ई-ट्रैक्टर, स्वचालित खेती उपकरण, स्मार्ट खेती मशीनें, और सोलर ग्रीन हाउस।
- **ऊर्जा और पर्यावरण (सीएमईआरआई, सीईईआरआई):** सोलर-बायोमास हाइब्रिड माइक्रोग्रिड, डीसी माइक्रोग्रिड और एग्रीवोल्टिक्स।
- **जल प्रबंधन (आईआईसीटी, एनजीआरआई)** भूजल आकलन और उन्नत वाटर एटीएम।
- **स्वास्थ्य सेवा (सीईईआरआई, एनएमपीआरआई):** टेली- हेल्थ कनेक्ट और जल शोधन प्रणाली (डी-टॉक्स नीर)।

सांसद आदर्श ग्राम योजना से मॉडल गांव में क्या अलग है?

सांसद अपने संसदीय क्षेत्र में गांव गोद लेकर आदर्श (मॉडल गांव) के रूप में विकसित करना था। इसमें सामाजिक, आर्थिक, बुनियादी ढांचा, शासन, मानव विकास आदि। ये सामुदायिक भागीदारी और जनप्रतिनिधि नेतृत्व पर आधारित है। जबकि स्मार्ट विलेज परियोजना में गांवों को स्मार्ट तकनीक, डिजिटल सुविधाएं, नवाचार, आधुनिक इन्फ्रास्ट्रक्चर से जोड़ना है। मुख्य तौर पर जल प्रबंधन, स्मार्ट सड़कें, सोलर लाइटिंग, डिजिटल सेवाएं, स्मार्ट स्वास्थ्य/कृषि के अलावा ये टेक्नोलॉजी आधारित विकास मॉडल है। सांसद आदर्श ग्राम योजना को केंद्र सरकार की योजना है। जिसे ग्रामीण विकास मंत्रालय चलता है। लेकिन स्मार्ट विलेज परियोजना में अलग-अलग प्रदेशों द्वारा तकनीकी संस्थानों, विश्वविद्यालयों, सीएसआर कंपनियों या वैज्ञानिक संस्थानों के सहयोग से चलाई जाती है।

Presented in Dainik Bhaskar Newspaper

अनुसंधान

केवी देहरादून के छात्रों ने किया सीएसआईआर-सीबीआरआई रुड़की का शैक्षिक भ्रमण

'समस्याओं के समाधान को विज्ञान की खोज जारी रखें स्टूडेंट्स'

■ वैज्ञानिक जिज्ञासा और जागरूकता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से किया गया आयोजन

Presented in Dainik Jagran Newspaper

CSIR-CBRI in the Limelight | 27.11.2025 & 28.11.2025

केवी देहरादून के छात्रों ने किया सीएसआईआर-सीबीआरआई का दौरा

जिज्ञासा-2.0 छात्र वैज्ञानिक संपर्क कार्यक्रम के तहत ली तकनीकी जानकारी

सीबीआरआई का दौरा करने वाले छात्र व अधिकारी।

रुड़की, 27 नवम्बर (अनिल): पीएमश्री केंद्रीय विद्यालय, आईएमए, देहरादून के 101 छात्रों और 6 शिक्षकों ने मंगलवार को सीएसआईआर-सीबीआरआई रुड़की का शैक्षणिक दौरा किया। यह भ्रमण सीएसआईआर 'जिज्ञासा 2.0' छात्र-वैज्ञानिक संपर्क कार्यक्रम के तहत आयोजित किया गया था।

कार्यक्रम की शुरुआत डॉ. बिलिंग की प्रदर्शनी गैलरी के भ्रमण से हुई, जहां छात्रों ने सीबीआरआई द्वारा विकसित विभिन्न वैज्ञानिक मॉडलों, नवीन तकनीकों और शोध कार्यों को नजदीक से देखा। इस दौरान वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. ताबिश आलम ने राम मंदिर मॉडल समेत कई प्रदर्शनियों की जानकारी दी। वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक डॉ. नीरज जैन ने छात्रों को जिगजैग ईंट भट्ठा मॉडल और अन्य नवाचारों के बारे में विस्तार से बताया। तकनीकी भ्रमण का दूसरा चरण आरएनटी सभागार में आयोजित हुआ, जहां डॉ. ताबिश आलम ने कार्यक्रम का संचालन किया। डॉ. नीरज जैन ने जिज्ञासा 2.0 कार्यक्रम के उद्देश्यों और इसकी संरचना के बारे में अवगत कराया।

सीएसआईआर-सीबीआरआई के निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने कहा कि यह कार्यक्रम युवाओं को वास्तविक वैज्ञानिक अवधारणाओं से जोड़ने और कक्षा से बाहर सीखने का अनूठा अवसर प्रदान करता है। छात्रों ने ग्रामीण प्रौद्योगिकी पार्क, अग्निसुरक्षा अभियांत्रिकी प्रयोगशाला सहित शोध प्रक्रियाओं और वैज्ञानिक गतिविधियों की जानकारी प्राप्त की।

Presented in Garhwal Post Newspaper

पीएम श्री केवि आइएमए के छात्रों ने सीबीआरआइ का किया भ्रमण

जागरण संवाददाता, रुड़की : केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआइ) रुड़की का पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय आइएमए देहरादून के छात्रों ने 'जिज्ञासा 2.0' कार्यक्रम के तहत भ्रमण किया। छात्र-छात्राओं ने विज्ञानियों से संवाद करने के साथ ही प्रयोगशालाओं का भ्रमण किया। भ्रमण करने वालों में विद्यालय के 101 छात्र और छह शिक्षक शामिल रहे।

सीबीआरआइ में गुरुवार को छात्रों के भ्रमण कार्यक्रम की शुरुआत डा. बिलिंग प्रदर्शनी गैलरी से हुई। जहां छात्रों ने संस्थान के विज्ञानियों द्वारा निर्मित विविध वैज्ञानिक प्रदर्शनियों, नवीन तकनीकों और चल रहे शोध विकास का अवलोकन किया। वरिष्ठ विज्ञानी डा. ताबिश आलम ने राम मंदिर माडल और कई अन्य अनुसंधान के बारे में जानकारी दी। वरिष्ठ प्रधान विज्ञानी डा. नीरज जैन ने जिगजैग ईंट भट्ठा माडल और अन्य नवाचारों के बारे में अवगत कराया। अगला सत्र आरएनटी सभागार में आयोजित हुआ। इस मौके पर सीबीआरआइ के निदेशक प्रो. आर प्रदीप कुमार ने कहा कि यह कार्यक्रम युवा शिक्षार्थियों को वास्तविक समय की वैज्ञानिक अवधारणाओं से जुड़ने और कक्षा-आधारित शिक्षा से परे अपनी समझ को व्यापक बनाने के लिए एक उत्कृष्ट मंच प्रदान करता है। डा. नीरज जैन ने जिज्ञासा 2.0 कार्यक्रम के उद्देश्यों, संरचना और इसके द्वारा प्रदान किए जाने वाले अनुभवात्मक शिक्षण अवसरों की रूपरेखा प्रस्तुत की। प्रधान विज्ञानी डा. सौमित्र मैती ने अपशिष्ट से धन विषय पर व्याख्यान दिया। जिसमें उन्होंने अपशिष्ट को उपयोगी संसाधनों में बदलने की आधुनिक तकनीकों और स्थायित्व के लिए उनकी प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला। इसके बाद छात्रों ने ग्रामीण प्रौद्योगिकी पार्क, अग्नि सुरक्षा अभियांत्रिकी प्रयोगशाला आदि का भ्रमण किया। इस दौरान वहां चल रही शोध गतिविधियों और वैज्ञानिक प्रक्रियाओं के बारे में जानकारी एकत्रित की।

'जिज्ञासा 2.0' कार्यक्रम के तहत सीबीआरआइ रुड़की में भ्रमण के दौरान जानकारी हासिल करते पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय आइएमए देहरादून के विद्यार्थी • जागरण

Presented in Dainik Jagran Newspaper

अनुसंधान

केवी देहरादून के छात्रों ने किया सीएसआईआर-सीबीआरआई रुड़की का शैक्षिक भ्रमण

‘समस्याओं के समाधान को विज्ञान की खोज जारी रखें स्टूडेंट्स’

■ वैज्ञानिक जिज्ञासा और जागरूकता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से किया गया आयोजन

Presented in Dainik Jagran Newspaper

CSIR-CBRI in the Limelight | 21.11.2025

दैनिक जागरण

शहरी सुरक्षा, बुनियादी ढांचा प्रबंधन और आपदा न्यूनीकरण पर विचार किए साझा

सीबीआरआइ की ओर से "एक स्वास्थ्य, एक विश्व" विषय पर वैश्विक सम्मेलन

प्रतिभागियों ने किया सीबीआरआइ परिसर का दौरा

रुड़की: विभिन्न सत्रों के बाद राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय प्रतिनिधियों ने सीबीआरआइ परिसर का दौरा किया। जहां प्रमुख अनुसंधान और परीक्षण सुविधाओं का भ्रमण आयोजित किया गया। प्रतिभागियों ने सीबीआरआइ प्रदर्शनी गैलरी, राष्ट्रीय भूकंप इंजीनियरिंग परीक्षण सुविधा, भू-तकनीकी परीक्षण सुविधा, 3डी कंक्रीट प्रिंटिंग लैब, अग्नि अनुसंधान प्रयोगशाला, ग्रामीण प्रौद्योगिकी पार्क, उन्नत कंक्रीट और स्टील कम्पोजिट लैब और निर्माण प्रौद्योगिकी प्रदर्शन पार्क का अवलोकन किया। इसके माध्यम से उन्होंने सीबीआरआइ के निरंतर वैज्ञानिक योगदान के बारे में जानकारी हासिल की।

Presented in Dainik jagran Newspaper

10 Garhwal Post www.garhwalpost.in Dehradun, 21 Nov, 2025 Dehradun

CBRI Roorkee hosts Global OHOW 2025 Meet

Garhwal Post Bureau

ROORKEE, 20 Nov: The One Health One World (OHOW) 2025 programme, organised by CSIR-Central Building Research Institute (CBRI) Roorkee, began its main event today at Hotel Clarks Safari, Roorkee–Haridwar. The international gathering saw participation from 13 countries, with 350+ participants and 50+ delegates from different nations.

The programme opened with ceremonial lamp lighting performed by the distinguished guests.

Dr Ajay Chourasia, (Organising Secretary) welcomed all guests and participants and delivered an overview of the event. He highlighted key themes including infrastructure, infrastructure management, public health research in Asia, climate change, sustainable development, and disaster mitigation.

The Director of CSIR-CBRI then addressed the gathering, welcoming all international and national delegates. He spoke about India's growing economy, the importance of disaster resilience, ongoing retrofitting activities, and the nation's commitment toward building a safer and sustainable future.

A professor from the University of Tokyo, (Conference, Co-Chair) Dr Wataru Takeuchi, Institute of Industrial Science, extended warm greetings to everyone present. He spoke on the OHOW vision, touching on One Health One World, infrastructure development, disaster mitigation, and disaster resilience, while also appreciating CSIR-CBRI for successfully hosting the global programme.

Professor CVR Murty welcomed all guests and shared his insights on disaster-related issues and research developments.

Dr Krishna S Vatsa, Member of the National Disaster Management Authority (NDMA), addressed the audience next. He spoke about modern engineering and infrastructure in Roorkee, the historic water canal system, and India–Japan collaboration in disaster management. He also acknowledged Japan's leadership and commitment to global disaster resilience.

The Chief Guest, Professor Kimiro Meguro, Co-Founder of the World Seismic Safety Institute, expressed gratitude for the invitation. He delivered an impactful address on climate change, industrial disasters, and the importance of scientific and sustainable approaches. He also appreciated Professor Pradeep for his vision and dedication and wished CSIR-CBRI great success for the programme.

The programme concluded with a formal Vote of Thanks delivered by Dr Ajay Chourasia.

After this, different lectures were delivered by various Professors.

A lecture was given by Professor Kimiro Meguro on the topic, "Comprehensive Disaster Management System for Minimising Negative Impact".

After this lecture was given by Dr Krishna S Vatsa and Dr Juin Fu Chai.

After this, lectures were given on Urban Safety and Disaster Mitigation, Infrastructure Management and Sustainable Built Environment, International Public Health Research in Asia, Climate Change and Green Recovery by Professors and Scientists.

Presented in Garhwal Post Newspaper

CSIR-CBRI in the Limelight | 19.11.2025

Ministry of Science & Technology

Azadi Ka Amrit Mahotsav

CBRI Hosts Pre-Conference Event for the 4th International Symposium on "One Health, One World"

• Pre-conference workshop titled "One World, Many Hazards" organised at CSIR–CBRI

• Participants from University of Tokyo (Japan), COER University and AcSIR India presented posters and oral talks

प्रविष्टि तिथि: 18 NOV 2025 6:38PM by PIB Dehradun

CSIR–Central Building Research Institute (CSIR-CBRI), Roorkee, organised a pre-conference event titled "One World, Many Hazards" today as part of the upcoming 4th International Symposium on One Health, One World (OHOW-2025).

Participants from the University of Tokyo, Japan, COER University and AcSIR India actively took part in the programme, showcasing their ideas and research through hand-drawn chart-based art forms. Their posters highlighted various global hazards including earthquakes, landslides, pollution, heart-health concerns and pandemic situations. They also presented combined issues along with possible solutions, which were discussed in detail during the session. The poster display was followed by oral presentations, reflecting the participants' creativity, scientific temperament and interdisciplinary approach.

The pre-conference workshop sessions were chaired and the presentations evaluated by Dr. D. P. Kanungo and Organizing Secretary Dr. Ajay Chourasia. The programme was coordinated by Dr. Debdutta Ghosh and Dr. R. Siva Chidambaram.

The event served as a dynamic platform for knowledge exchange and strengthened international collaboration toward addressing global hazards under the overarching theme of "One Health, One World."

(रिलीज आईडी: 2191330) आगंतुक पटल : 162

Presented on : https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2191330

'एक स्वास्थ्य-एक विश्व' पर सम्मेलन पर चर्चा

रुड़की, 18 नवम्बर (अनिल): केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) में 'एक स्वास्थ्य, एक विश्व' विषय पर आगामी चौथी अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी के तहत सम्मेलन-पूर्व कार्यशाला का आयोजन किया गया। 'एकविश्व-अनेक संकट' शीर्षक से हुए इस कार्यक्रम में टोक्यो विश्वविद्यालय (जापान), सीओईआर विश्वविद्यालय तथा एसीएसआईआर इंडिया के प्रतिभागियों ने सक्रिय भागीदारी दर्ज की।

सम्मेलन में प्रतिभाग करते प्रतिनिधिगण।

प्रतिभागियों ने चार्ट पर हस्तनिर्मित कलाकृतियों के माध्यम से भूकंप, भूस्खलन, प्रदूषण, हृदय-स्वास्थ्य समस्याओं और महामारी जैसे विविध आपदाओं सेजुड़े मुद्दों को प्रस्तुत किया। उन्होंने इन चुनौतियों से निपटने के संभावित समाधान भी साझा किए, जिन पर सत्र के दौरान विस्तार से चर्चा की गई। पोस्टर प्रदर्शन के बाद हुई मौखिक प्रस्तुतियों ने प्रतिभागियों की रचनात्मकता और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को उजागर किया। कार्यशाला के सत्रों की अध्यक्षता तथा मूल्यांकन डॉ. डीपी कानूनगो और डॉ. अजय चौरसिया ने किया।

कार्यक्रम का समन्वयन डॉ. देवव्रत घोष और डॉ. आर. शिव चिदंबरम द्वारा किया गया।

यह सम्मेलन-पूर्व कार्यशाला ज्ञान-विनिमय का प्रभावी मंच सिद्ध हुई और 'एक स्वास्थ्य, एक विश्व' के व्यापकविषय के अंतर्गत वैश्विकखतरों से निपटने के लिए अंतरराष्ट्रीय सहयोग को सुदृढ किया।

Presented in Garhwal Post Newspaper

सीएसआईआर-सीबीआरआई में "एक स्वास्थ्य, एक विश्व" अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी से पहले सम्मेलन-पूर्व कार्यशाला हुई आयोजित।

सीएसआईआर-सीबीआरआई में "एक स्वास्थ्य, एक विश्व" अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी से पहले सम्मेलन-पूर्व कार्यशाला हुई आयोजित।

जापान व भारत के शोधार्थियों ने आपदाओं और स्वास्थ्य चुनौतियों पर रखे विचार

रुड़की। सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान सीएसआईआर-सीबीआरआई में आगामी चौथी अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी "एक स्वास्थ्य, एक विश्व" की तैयारियों के तहत आज सम्मेलन-पूर्व कार्यशाला का सफल आयोजन किया गया। "एक विश्व, अनेक संकट" विषय पर आधारित इस विशेष सत्र में भारत, जापान और अन्य देशों के शोधार्थियों ने अपनी सहभागिता दर्ज कराते हुए वैश्विक खतरों और समाधान पर गहन विचार-विमर्श किया।

रुड़की। सीएसआईआर–केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान सीएसआईआर-सीबीआरआई में आगामी चौथी अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी "एक स्वास्थ्य, एक विश्व" की तैयारियों के तहत आज सम्मेलन-पूर्व कार्यशाला का सफल आयोजन किया गया। "एक विश्व, अनेक संकट" विषय पर आधारित इस विशेष सत्र में भारत, जापान और अन्य देशों के शोधार्थियों ने अपनी सहभागिता दर्ज कराते हुए वैश्विक खतरों और समाधान पर गहन विचार-विमर्श किया।

पोस्टर प्रदर्शन के बाद हुए मौखिक प्रस्तुतिकरण प्रतिभागियों की वैज्ञानिक सोच, रचनात्मकता और शोध दृष्टिकोण का उत्कृष्ट उदाहरण रहे।

कार्यशाला के सत्रों की अध्यक्षता और मूल्यांकन डॉ. डी. पी. कानूनगो और डॉ. अजय चौरसिया द्वारा किया गया, जबकि कार्यक्रम का सफल समन्वयन डॉ. देबदत्त घोष और डॉ. आर. शिव चिदंबरम ने किया।

Presented on: https://www.shrisangamnews.in/Home/NewsDetails/513

"एक स्वास्थ्य, एक विश्व" पर आयोजित होने वाली चौथी अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के लिए सीबीआरआइ रुड़की की ओर से आयोजित सम्मेलन पूर्व कार्यक्रम में उपस्थित विज्ञानी और प्रतिभागी • साभार-संस्थान

आपदाओं से जुड़ी समस्याओं और संभावित समाधानों को किया प्रस्तुत

जागरण संवाददाता, रुड़की: केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआइ) रुड़की ने "एक स्वास्थ्य, एक विश्व" पर चौथी अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के लिए मंगलवार को सम्मेलन पूर्व कार्यक्रम का आयोजन किया। जिसका शीर्षक "एक विश्व, अनेक संकट" रहा। 20 नवंबर को तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का शुभारंभ होगा।

सीबीआरआइ रुड़की परिसर में सम्मेलन पूर्व कार्यक्रम में टोक्यो विश्वविद्यालय, जापान, सीओईआर विश्वविद्यालय तथा एसीएसआइआर इंडिया के प्रतिभागियों ने प्रतिभाग किया। इस दौरान चार्ट पर बनाई गई कलाकृतियों के माध्यम से विचारों और शोध को प्रदर्शित किया गया। जिसमें भूकंप, भूस्खलन, प्रदूषण, हृदय-स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं और विभिन्न आपदाओं से जुड़ी समस्याओं पर प्रकाश डाला गया। सम्मेलन पूर्व कार्यशाला सत्रों की अध्यक्षता एवं प्रस्तुतियों का मूल्यांकन डा. डीपी कानूनगो और डा. अजय चौरसिया व समन्वयन डा. देबदत्त घोष और डा. आर शिव चिदंबरम ने किया। अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के संयोजन सचिव एवं संस्थान के मुख्य विज्ञानी डा. अजय चौरसिया ने बताया कि कार्यक्रम ने ज्ञान के आदान-प्रदान को एक मंच के रूप में कार्य किया।

Presented in Sabhar Sansthan Newspaper

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय

सीएसआईआर-सीबीआरआई रुड़की में “एक स्वास्थ्य, एक विश्व” 2025 के दूसरे दिन प्री-कॉन्फ्रेंस छात्र कार्यशाला का आयोजन

- भारत और जापान के छात्रों और प्रोफेसरों ने एक व्यावहारिक संरचनात्मक इंजीनियरिंग कार्यशाला में भाग लिया।
- सात टीमों ने "भवन और पुल" विषय पर काम किया, जिसका मार्गदर्शन सीएसआईआर-सीबीआरआई के वरिष्ठ विशेषज्ञों ने किया।

प्रविष्टि तिथि: 19 NOV 2025 7:32PM by PIB Dehradun

"एक स्वास्थ्य, एक विश्व" 2025 कार्यक्रम के दूसरे दिन सीएसआईआर-सीबीआरआई रुड़की में एक उत्साहपूर्ण प्री-कॉन्फ्रेंस कार्यशाला आयोजित की गई, जिसमें भारत और जापान के युवा प्रतिभागियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया। इस कार्यक्रम में कुल 23 छात्रों और टोक्यो विश्वविद्यालय, टोक्यो टेक (जापान), टीआईईटी पंजाब, एनआईटी उत्तराखंड, सीओईआर विश्वविद्यालय तथा अकादमी ऑफ साइंटिफिक एंड इनोवेटिव रिसर्च (एसीएसआईआर) सहित विभिन्न संस्थानों के चार प्रोफेसरों ने हिस्सा लिया।

कार्यशाला के लिए छात्रों को सात टीमों में विभाजित किया गया, जिन्हें "बिल्डिंग्स एंड ब्रिजेस" की थीम पर कार्य करना था। प्रतिभागियों का उत्साह और ऊर्जा पूरे सत्र को बेहद रोचक और सहयोगात्मक बनाते रहे।

सीएसआईआर-सीबीआरआई के वरिष्ठ विशेषज्ञों—डॉ. डी. पी. कानूंगो, डॉ. अजय चौरसिया (आयोजन सचिव), डॉ. देबदत्ता घोष और डॉ. आर. शिवा चिदंबरम (प्री-कॉन्फ्रेंस कार्यशाला समन्वयक)—ने छात्रों से संवाद किया और भवन डिज़ाइन, पुल संरचनाओं तथा आधुनिक अवसंरचना से जुड़े महत्वपूर्ण विचार साझा किए।
डॉ. अजय चौरसिया ने सभी छात्रों और प्रोफेसरों का स्वागत करते हुए कार्यक्रम की रूपरेखा और स्ट्रक्चरल कॉन्सेप्ट समझने के महत्व पर विस्तार से प्रकाश डाला।

डॉ. डी. पी. कानूंगो ने भी छात्रों को संबोधित किया और आज के समय में अवसंरचना विकास के महत्व पर जोर दिया। सौहार्दपूर्ण माहौल बनाने के लिए डॉ. अजय चौरसिया ने सभी प्रतिभागियों को गुलाब भेंट किए। इसके बाद डॉ. आर. शिवा चिदंबरम और डॉ. देबदत्ता घोष ने इमारतों और पुलों के विषय पर तकनीकी मार्गदर्शन प्रदान किया, जिसमें उन्होंने संरचनात्मक डिज़ाइन से संबंधित व्यावहारिक पहलुओं पर चर्चा की।

डॉ. डी. पी. कानूंगो ने भी छात्रों को संबोधित किया और आज के समय में अवसंरचना विकास के महत्व पर जोर दिया। सौहार्दपूर्ण माहौल बनाने के लिए डॉ. अजय चौरसिया ने सभी प्रतिभागियों को गुलाब भेंट किए। इसके बाद डॉ. आर. शिवा चिदंबरम और डॉ. देबदत्ता घोष ने इमारतों और पुलों के विषय पर तकनीकी मार्गदर्शन प्रदान किया, जिसमें उन्होंने संरचनात्मक डिज़ाइन से संबंधित व्यावहारिक पहलुओं पर चर्चा की।

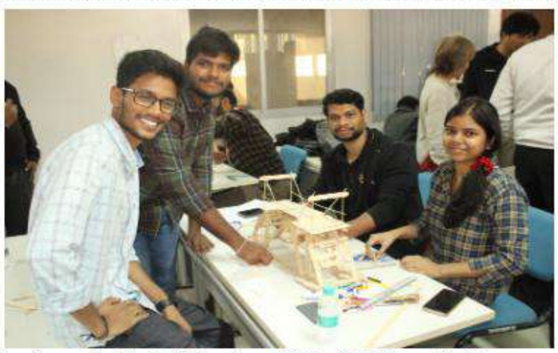

इन विचार-विमर्शों के बाद छात्रों की टीमों ने अपने-अपने स्ट्रक्चरल मॉडल तैयार किए, जिन्हें बाद में महत्वपूर्ण लोडिंग परिस्थितियों के तहत परीक्षण किया गया।
यह कार्यशाला अंतरराष्ट्रीय शैक्षणिक आदान-प्रदान का एक सशक्त मंच साबित हुई और छात्रों को स्ट्रक्चरल इंजीनियरिंग में नवाचारपूर्ण विचारों को खोजने के लिए प्रेरित किया।

(रिलीज़ आईडी: 2191825) आगंतुक पटल : 17
इस विज्ञप्ति को इन भाषाओं में पढ़ें: English

Presented on: https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2191825

Azadi Ka Amrit Mahotsav

CSIR-CBRI Roorkee Hosts Second Day of "One Health, One World 2025"

• Students and professors from India and Japan participated in a hands-on structural engineering workshop.

• Seven student teams worked on the theme "Buildings and Bridges," guided by senior CSIR-CBRI experts.

प्रविष्टि तिथि: 19 NOV 2025 7:19PM by PIB Dehradun

The second day of the OHOW 2025 program at CSIR-CBRI Roorkee was marked by an engaging pre-conference workshop that brought together young minds from India and Japan. A total of 23 students and four professors from University of Tokyo, Tokyo Denki from Japan, TIET Punjab, NIT Uttarakhand, COER University, AcSIR from India participated in the event.

For the workshop, the students were divided into seven teams, working on the theme "Buildings and Bridges." The energy and excitement among the participants made the session lively and collaborative.

Senior experts from CSIR-CBRI interacted with the students, including Dr. D.P. Kanungo, and Dr. Ajay Chourasia (Organising Secretary), Dr. Debdutta Ghosh and Dr. R. Siva Chidambaram (Co-ordinators of Pre-Conference Workshop). They discussed various ideas related to building design, bridge structures, and modern infrastructure.

Dr. Ajay Chourasia welcomed all the students and professors, sharing insights about the program and the importance of understanding structural concepts. Dr. D.P. Kanungo also addressed the students. He highlighted the significance of infrastructure development in today's world.

As a warm gesture, Dr. Ajay Chourasia presented roses to all the participants. Later, Dr. R. Siva Chidambaram and Dr. Debdutta Ghosh provided technical guidance on buildings and bridges, explaining practical aspects such as design approach used in building and bridge structures.

Presented on: https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2191817

CSIR-CBRI in the Limelight | 18.11.2025

दैनिक जागरण

सीबीआरआइ में जुटेंगे विश्वभर के विज्ञानी

संवाद सहयोगी, जागरण • रुड़की : सेंट्रल बिल्डिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट (सीबीआरआइ), रुड़की 20 से 22 नवंबर तक 'वन हेल्थ, वन वर्ल्ड' 2025 अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी की मेजबानी करेगा। इसमें विश्वभर के विज्ञानी, शोधकर्ता और नीति–निर्माता जलवायु परिवर्तन एवं आपदा प्रबंधन पर विचार साझा करेंगे। इस आयोजन की अध्यक्षता सीएसआइआर–सीबीआरआइ में निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार और टोक्यो विश्वविद्यालय के प्रो. तातरु ताकेउची करेंगे।

टोक्यो विवि जापान के सहयोग से आयोजित इस संगोष्ठी का संयोजन सेक्रेटरी डा. अजय चौरसिया, मुख्य वैज्ञानिक सीएसआइआर सीबीआरआइ करेंगे। यह वैश्विक स्तर का सम्मेलन जलवायु परिवर्तन, आपदा जोखिम न्यूनीकरण, सतत अवसंरचना और सामुदायिक सुरक्षा जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर केंद्रित होगा। संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में टोक्यो विवि के प्रो. किमीरो मेगुरो मुख्य अतिथि होंगे, जो 'जापान में आदर्श आपदा प्रबंधन उपायों' पर विशेष व्याख्यान देंगे। वहीं, एनडीएमए के सदस्य डा. कृष्ण एस वत्स 'पोस्ट–डिजास्टर नीड्स असेसमेंट और भारत की आपदा तैयारी' पर विचार प्रस्तुत करेंगे। तीन दिवसीय सम्मेलन में 70 से अधिक अंतरराष्ट्रीय विशेषज्ञों सहित 350 से अधिक प्रतिभागियों के जुटने की उम्मीद है।

Presented in Dainik Jagran Newspaper

10 Garhwal Post www.garhwalpost.in Dehradun, 18 Nov, 2025 Dehradun

CSIR-CBRI, Roorkee hosts curtain raiser for India International Science Festival 2025

Garhwal Post Bureau

ROORKEE, 17 Nov: CSIR-Central Building Research Institute (CSIR-CBRI), Roorkee organised the Curtain Raiser Programme of the 11th India International Science Festival (IISF) 2025 on 17 November at the RNT Auditorium, here. This year the festival is being coordinated by the Ministry of Earth Sciences (MoES), Government of India, and the Indian Institute of Tropical Meteorology (IITM), Pune, is the Nodal Institute. IISF 2025 will be held from 6 to 9 December 2025 at Punjab University, Chandigarh.

The event began with lighting of the lamp followed by the National Song. The programme was inaugurated by Dr Neeraj Jain, Head, ODS, by welcoming all the guests, Director, faculty members, scientists, and students. He gave the details of IISF along with today's curtain raiser programme and informed them that this year, the IISF theme is "Vigyan Se Samruddhi – for Aatmanirbhar Bharat". He said that IISF 2025 aims to bring together scientists, innovators, educators, students, industry leaders, science communicators, and policymakers on one platform to promote collaboration, creativity, and knowledge exchange for Aatmanirbhar Bharat.

Present were Dr DP Kanungo, Senior-most Scientist, CSIR-CBRI, and Dr Aasheesh Raturi (Chief Guest), Professor, Department of Physics, Dolphin Institute of Biomedical and Natural Sciences, Dehradun, & Member, Vijnana Bharati. Students from Mount Litera Zee School, PM SHRI Kendriya Vidyalaya No. 1, and Bal Vidya Mandir enthusiastically participated in the event along with faculty members. Dr DP Kanungo inspired the students on the importance of science and technology in all aspects of life. He stated that science is not limited to laboratories, but is the foundation of national prosperity, innovation and sustainable development.

He emphasised nurturing scientific temperament in young minds and enabling them to become contributors to India's self-reliance. He added that this festival is a celebration of science, technology and the limitless spirit of innovation that defines our nation. IISF encapsulates a vision where science is not just for labs and researchers but a foundation for national prosperity, self-reliance and sustainable development. Dr R Pradeep Kumar, Director, CSIR-CBRI, also conveyed his best wishes for the IISF 2025 Curtain Raiser, noting its importance in promoting scientific awareness and collaboration.

Chief Guest Dr Aasheesh Raturi delivered an insightful and fascinating lecture on astronomy for the students to encourage their interest in science. He discussed why physics holds a primary place in scientific learning, the importance of astronomy, the evolution of lenses and telescopes, science safari, space technology and the use of astronomy as a tool to navigate the night sky. He also spoke about the mission of Vijnana Bharati and IISF. He said, "As we stand at the crossroads of rapid technological changes, India needs innovators who can solve real problems from climate challenges to healthcare, agriculture and digital transformation. IISF encourages us to think boldly, experiment fearlessly and contribute meaningfully."

Following his lecture, Dr Raturi was felicitated with a memento by Dr DP Kanungo.

Another scientific lecture was delivered by Dr Soumitra Maiti, Principal Scientist, CSIR-CBRI, on Waste Utilisation for Development of Building Materials to save natural resources and reduce pollution and carbon footprint. The event proceeded with the Vote of Thanks by Dr Hemlata, Senior Scientist, followed by the national anthem. Students then visited the Rural Technology Park of CSIR-CBRI. In addition, 50 students from the Central University of Haryana visited different major facilities developed by CBRI in the laboratories along with the exhibition gallery. Present at this event were Dr PC Thapliyal, Vineet Saini, Dr Tabish Aalam, Dr Chanchal, Dr Anindya Pain, Rajender, Rajnish, Atul, Rajat, Igra, Rashi, Sanskriti, etc.

Presented in Garhwal Post Newspaper

सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की में भारत अंतरराष्ट्रीय विज्ञान महोत्सव (आईआईएसएफ) 2025 का कर्टेन रेज़र कार्यक्रम आयोजित

○ इंडिया इंटरनेशनल साइंस फेस्टिवल के कर्टेन रेज़र कार्यक्रम के इस वर्ष की थीम विज्ञान से समृद्धि: आत्मनिर्भर भारत है ○आईआईएसएफ 2025 का उद्देश्य वैज्ञानिकों, नवोन्मेषकों, शिक्षकों, छात्रों, उद्योग विशेषज्ञों, विज्ञान संचारकों और नीति-निर्माताओं को एक मंच पर लाना है ○ 11वें इंडिया इंटरनेशनल साइंस फेस्टिवल का कर्टेन रेज़र कार्यक्रम 17 नवंबर 2025 को आरएनटी ऑडिटोरियम में आयोजित हुआ

Presented in local Newspaper

देहरादून, मंगलवार 18 नवंबर 2025 दैनिक **कलम का दायित्व** पृष्ठ 7

CBRI , रुड़की में भारत अंतरराष्ट्रीय विज्ञान महोत्सव 2025 का कर्टेन रेजर कार्यक्रम आयोजित

Presented in Dainik Jagran Newspaper

Science is not only for laboratories but also the foundation of national development, self-reliance and sustainable development: CBR Roorkee hosted the curtain raiser program for India International Science Festival 2025

Vo.No.22 Issue No. 48 Date:. 18-11-2025 RNI No. UTTURD/2004/14529

روزنامہ صحافت دہرہ دون

SAHAFAT URDU DAILY,DEHRADUN

Published From DEHRADUN,Lucknow,Delhi & Mumbai

سائنس صرف تجربہ گاہوں کیلئے نہیں بلکہ قومی ترقی، خود انحصاری اور پائیدار ترقی کی بنیاد ہے

سی بی آر آئی روڑکی نے انڈیا انٹرنیشنل سائنس فیسٹیول 2025 کیلئے پردہ اٹھانے والے پروگرام کی میزبانی کی

Presented in Sahafat urdu daily Newspaper

नवाचार सोच को बढ़ावा देने पर जोर

● सीबीआरआई में साइंस फेस्टिवल का कर्टेन रेजर

इंडिया इंटरनेशनल साइंस फेस्टिवल के कर्टेन रेजर कार्यक्रम शुभारंभ करते अतिथि।

रुड़की, लोकसत्य।

सीबीआरआई, रुड़की में सोमवार को इंडिया इंटरनेशनल साइंस फेस्टिवल (आईआईएसएफ) 2025 के कर्टेन रेजर कार्यक्रम का आयोजन हुआ, जिसमें नवाचारों और वैज्ञानिक सोच को बढ़ावा देने पर विशेष फोकस रहा। इस वर्ष महोत्सव की थीम "विज्ञान से समृद्धि : आत्मनिर्भर भारत" तय की गई है। कार्यक्रम का उद्देश्य वैज्ञानिकों, नवोन्मेषकों, शिक्षकों, छात्रों और उद्योग विशेषज्ञों को एक मंच पर लाना है। आईआईएसएफ का मुख्य आयोजन 6 से 9 दिसंबर तक पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ में होगा।

कार्यक्रम की शुरुआत दीप प्रज्वलन और वंदे मातरम से हुई। ओडीएस प्रमुख डॉ. नीरज जैन ने स्वागत भाषण में कहा कि विज्ञान राष्ट्र की प्रगति और आत्मनिर्भरता का मजबूत आधार है। उन्होंने बताया कि आईआईएसएफ आपसी सहयोग और ज्ञान-साझाकरण को बढ़ावा देने का महत्वपूर्ण माध्यम है। सीबीआरआई के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. डी.पी. कानूनगो और मुख्य अतिथि डॉ. आशिष रतूड़ी की उपस्थिति कार्यक्रम की मुख्य आकर्षण रही। डॉ. कानूनगो ने छात्रों को विज्ञान और तकनीक अपनाने तथा देश के विकास में योगदान देने के लिए प्रेरित किया। मुख्य अतिथि डॉ. रतूड़ी ने खगोल विज्ञान पर सरल और रोचक व्याख्यान दिया।

Presented in local Newspaper

कार्यक्रम | इंडिया इंटरनेशनल साइंस फेस्टिवल के कर्टेन रेजर कार्यक्रम के इस वर्ष की थीम "विज्ञान से समृद्धि: आत्मनिर्भर भारत है

सीबीआरआई, रुड़की में भारत अंतरराष्ट्रीय विज्ञान महोत्सव आयोजित

आईआईएसएफ 2025 का उद्देश्य वैज्ञानिकों, नवोन्मेषकों, शिक्षकों, छात्रों, उद्योग विशेषज्ञों, विज्ञान संचारकों और नीति-निर्माताओं को एक मंच पर लाना है

अमर हिन्दुस्तान

रुड़की। सीएसआईआर–केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की द्वारा 11वें इंडिया इंटरनेशनल साइंस फेस्टिवल आईआईएसएफ 2025 का कर्टेन रेजर कार्यक्रम आउटरीच ऑडिटोरियम में आयोजित किया गया। इस वर्ष इस उत्सव का समन्वयन पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय एमओईएस, भारत सरकार द्वारा किया जा रहा है तथा इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ ट्रॉपिकल मीटियोरोलॉजी आईआईटीएम, पुणे नोडल संस्थान है।

आईआईएसएफ बीते 6–9 दिसंबर तक पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ में आयोजित किया जाएगा। कार्यक्रम की शुरुआत दीप प्रज्वलन से हुई तथा उसके उपरांत राष्ट्रीय गीत (वंदे मातरम) प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ ओडीएस प्रमुख डॉ. नीरज जैन ने किया, जिन्होंने सभी अतिथियों, निदेशक, संकाय सदस्यों, वैज्ञानिकों तथा छात्रों का स्वागत किया।

उन्होंने आईआईएसएफ तथा आज के कर्टेन रेजर कार्यक्रम के बारे में विस्तार से जानकारी देते हुए बताया कि इस वर्ष का थीम विज्ञान से समृद्धि आत्मनिर्भर भारत है। उन्होंने कहा कि आईआईएसएफ 2025 का उद्देश्य वैज्ञानिकों, नवोन्मेषकों, शिक्षकों, छात्रों, उद्योग विशेषज्ञों, विज्ञान संचारकों और नीति-निर्माताओं को एक मंच पर लाना है ताकि सहयोग, सृजनशीलता और ज्ञान के आदान-प्रदान के माध्यम से आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में योगदान दिया जा सके।

कार्यक्रम में सीएसआईआर–सीबीआरआई के वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक डॉ. डी. पी. कानूनगो तथा मुख्य अतिथि डॉ. आशीष रतूड़ी, प्रोफेसर, भौतिकी विभाग, डॉलफिन इंस्टीट्यूट ऑफ बायोमेडिकल एंड नेचुरल साइंसेज, देहरादून एवं सदस्य, विज्ञान भारती की गरिमामयी उपस्थिति रही।

मॉडल स्टेट्स जी स्कूल, पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय नं. 1 तथा बाल विद्या मंदिर के विद्यार्थियों ने संकाय सदस्यों के साथ उत्साहपूर्वक भाग लिया। डॉ. डी. पी. कानूनगो ने विद्यार्थियों को जीवन के सभी क्षेत्रों में विज्ञान और प्रौद्योगिकी के महत्व के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि विज्ञान आईआईएसएफ उस दृष्टिकोण को दर्शाता है जिसमें विज्ञान केवल प्रयोगशालाओं के लिए नहीं, बल्कि राष्ट्र की प्रगति, आत्मनिर्भरता और सतत विकास की नींव है।

सीएसआईआर–सीबीआरआई के निदेशक डॉ. आर. प्रदीप कुमार ने भी आईआईएसएफ 2025 कर्टेन रेजर के लिए अपनी शुभकामनाएं व्यक्त कीं और इसे वैज्ञानिक जागरूकता एवं सहयोग को बढ़ावा देने वाला महत्वपूर्ण आयोजन बताया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. आशिष रतूड़ी ने विद्यार्थियों के लिए खगोल विज्ञान पर रोचक और प्रेरणादायी व्याख्यान दिया।

उन्होंने वैज्ञानिक शिक्षा में भौतिकी के महत्व, खगोल विज्ञान की आवश्यकता, लेंस एवं दूरबीनों के विकास, स्पेस साइंस, अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी तथा आकाश को समझने में खगोल विज्ञान की उपयोगिता पर प्रकाश डाला। उन्होंने विज्ञान भारती और IISF के मिशन के बारे में भी जानकारी दी। व्याख्यान के उपरांत डॉ. रतूड़ी का सम्मान डॉ. डी. पी. कानूनगो द्वारा मोमेंटो भेंट कर किया गया। इसके अतिरिक्त सीएसआईआर-सीबीआरआई के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. सौमित्र मैती द्वारा "बिल्डिंग मटेरियल्स के विकास हेतु अपशिष्ट उपयोगिता विषय पर व्याख्यान दिया गया प्रदूषण एवं कार्बन फुटप्रिंट में कमी के महत्व पर चर्चा की गई।

कार्यक्रम में डॉ. पी.सी. थपलियाल, विनीत सैनी, डॉ. तबिश आलम, डॉ. चंचल, डॉ. अनिंद्य पाल, राकेश, रजनीश [illegible], अनुज, कु. इकरा, कु. [illegible], कु. संस्कृति आदि उपस्थित रहे।

Presented in Hindustan Newspaper

Ministry of Science & Technology

CSIR-CBRI, Roorkee host curtain raiser event for the India International Science Festival (IISF) 2025

- This year IISF theme is "Vigyan Se Samruddhi – for Aatmanirbhar Bharat."

- IISF 2025 aims to bring together scientists, innovators, educators, students, industry experts, science communicators, and policymakers.

- The curtain raiser event of the 11th India International Science Festival was held on November 17, 2025, at the RNT Auditorium.

प्रविष्टि तिथि: 17 NOV 2025 5:41PM by PIB Dehradun

Curtain Raiser Program of India International Science Festival (IISF) 2025 held at CSIR-CBRI Roorkee. CSIR–Central Building Research Institute (CSIR-CBRI), Roorkee organized the Curtain Raiser Program of the 11th India International Science Festival (IISF) 2025 on 17 November 2025 at the RNT Auditorium. This year the festival is coordinated by the Ministry of Earth Sciences (MoES), Government of India and the Indian Institute of Tropical Meteorology (IITM), Pune is the Nodal Institute. IISF 2025 will be held from 6–9 December 2025 at Punjab University, Chandigarh.

The event began with Lighting of the Lamp followed by the National Song (Vande Mataram). The program was inaugurated by Dr. Neeraj Jain, Head, ODS, by welcoming all the guests, Director, faculty members, scientists, and students. He gave the details of IISF along with today's curtain raiser program and informed that this year IISF theme is "Vigyan Se Samruddhi – for Aatmanirbhar Bharat." He said that IISF 2025 aims to bring together scientists, innovators, educators, students, industry leaders, science communicators, and policymakers on one platform to promote collaboration, creativity, and knowledge exchange for Aatmanirbhar Bharat.

The program was graced by Dr. D. P. Kanungo, Senior most Scientist, CSIR-CBRI, and Dr. Aasheesh Raturi (Chief Guest), Professor, Department of Physics, Dolphin Institute of Biomedical and Natural Sciences, Dehradun & Member, Vijnana Bharati. Students from Mount Litera Zee School, PM SHRI Kendriya Vidyalaya No. 1, and Bal Vidya Mandir enthusiastically participated in the event along with faculty members.Dr. D. P. Kanungo inspired the students on the importance of science and technology in all aspects of life. He stated that science is not limited to laboratories, but is the foundation of national prosperity, innovation and sustainable development.

He emphasized nurturing scientific temperament in young minds and enabling them to become contributors to India's self-reliance. He added that this festival is a celebration of science, technology and the limitless spirit of innovation that defines our nation. IISF encapsulates a vision where science is not just for labs and researchers but a foundation for national prosperity, self-reliance and sustainable development. Dr. R. Pradeep Kumar, The Director, CSIR-CBRI, also conveyed his best wishes for the IISF 2025 Curtain Raiser,

Chief Guest of the function, Dr. Aasheesh Raturi, delivered an insightful and fascinating lecture on astronomy for the students to encourage their interest in science. He discussed why physics holds a primary place in scientific learning, the importance of astronomy, the evolution of lenses and telescopes, science safari, space technology and the use of astronomy as a tool to navigate the night sky. He also informed about the mission of Vijnana Bharati and IISF. He said that as we stand at the crossroads of rapid technological changes, India needs innovators who can solve real problems from climate challenges to healthcare, agriculture and digital transformation. IISF encourages us to think boldly, experiment fearlessly and contribute meaningfully.

Today's curtain raiser is not just the launch of an event. It marks the beginning of a collective journey that reflects India's growing role as a global leader in science and technology, and our commitment to building a future that is inclusive, sustainable and driven by knowledge. Following his lecture, Dr. Raturi was felicitated with a memento by Dr. D. P. Kanungo.

Another scientific lecture was delivered by Dr. Soumitra Maiti, Principal Scientist, CSIR-CBRI, on Waste Utilization for Development of Building Materials to save natural resources and reduce pollution and carbon footprint. The event proceeded with the Vote of Thanks by Dr. Hemlata, Senior Scientist, followed by Rashtryagaan. Students then visited the Rural Technology Park of CSIR-CBRI. In addition, 50 students from the Central University of Haryana visited different major facilities developed by CBRI in the laboratories along with the exhibition gallery. Present at this event were Dr. P. C. Thapliyal, Shri Vineet Saini, Dr. Tabish Aalam, Dr. Chanchal, Dr. Anindiya Pine, Shri Rajender, Shri Rajnish, Shri Ajuj, Shri Rajat, Kumari Iqra, Kumari Rashi, Kumari Sanskriti etc.

Published:https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2190888&reg=46&lang=45

Uttarakhand : CBRI Roorkee Hosts Curtain Raiser of India International Science Festival 2025

YUGVARTA NEWS
Lucknow, 17 Nov, 2025 08:00 PM

Roorkee : Curtain Raiser Program of India International Science Festival (IISF) 2025 was held at CSIR-CBRI, Roorkee on 17 November 2025 at the RNT Auditorium. This year, the festival is coordinated by the Ministry of Earth Sciences (MoES), Government of India, and the Indian Institute of Tropical Meteorology (IITM), Pune is the Nodal Institute. IISF 2025 will be held from 6–9 December 2025 at Punjab University, Chandigarh.

The event began with Lighting of the Lamp followed by the National Song (Vande Mataram). The program was inaugurated by Dr. Neeraj Jain, Head, ODS, by welcoming all the guests, Director, faculty members, scientists, and students. He gave details of IISF along with today's curtain raiser program and informed that this year's theme is "Vigyan Se Samruddhi – for Aatmanirbhar Bharat." He said that IISF 2025 aims to bring together scientists, innovators, educators, students, industry leaders, science communicators, and policymakers on one platform to promote collaboration, creativity, and knowledge exchange for Aatmanirbhar Bharat.

The program was graced by Dr. D. P. Kanungo, Senior-most Scientist, CSIR-CBRI, and Dr. Aasheesh Raturi (Chief Guest), Professor, Department of Physics, Dolphin Institute of Biomedical and Natural Sciences, Dehradun & Member, Vijnana Bharati. Students from Mount Litera Zee School, PM SHRI Kendriya Vidyalaya No. 1, and Bal Vidya Mandir enthusiastically participated along with faculty members.

Dr. D. P. Kanungo inspired the students on the importance of science and technology in all aspects of life. He stated that science is not limited to laboratories but is the foundation of national prosperity, innovation, and sustainable development. He emphasized nurturing scientific temperament in young minds and enabling them to become contributors to India's self-reliance. He added that this festival is a celebration of science, technology, and the limitless spirit of innovation that defines our nation.

Dr. R. Pradeep Kumar, Director, CSIR-CBRI, also conveyed his best wishes for the IISF 2025 Curtain Raiser, noting its importance in promoting scientific awareness and collaboration.

Chief Guest Dr. Aasheesh Raturi delivered an insightful and fascinating lecture on astronomy to encourage scientific interest among students. He discussed the primary importance of physics, the relevance of astronomy, evolution of lenses and telescopes, science safari, space technology, and the use of astronomy to navigate the night sky. He also informed attendees about the mission of Vijnana Bharati and IISF. He said that as India stands at the crossroads of rapid technological transformations, the nation needs innovators who can solve real-world challenges—from climate issues to healthcare, agriculture, and digital transformation.

Published in : https://yugvartanews.com/state/uttrakhand/post/uttarakhand-CBRI-Roorkee-Hosts-Curtain-Raiser-of-India-International-Science-Festival-2025-3754

Ministry of Science & Technology

CSIR-CBRI, Roorkee host curtain raiser event for the India International Science Festival (IISF) 2025

- This year IISF theme is "Vigyan Se Samruddhi – for Aatmanirbhar Bharat."

- IISF 2025 aims to bring together scientists, innovators, educators, students, industry experts, science communicators, and policymakers.

- The curtain raiser event of the 11th India International Science Festival was held on November 17, 2025, at the RNT Auditorium.

प्रविष्टि तिथि: 17 NOV 2025 5:41PM by PIB Dehradun

Curtain Raiser Program of India International Science Festival (IISF) 2025 held at CSIR-CBRI Roorkee. CSIR–Central Building Research Institute (CSIR-CBRI), Roorkee organized the Curtain Raiser Program of the 11th India International Science Festival (IISF) 2025 on 17 November 2025 at the RNT Auditorium. This year the festival is coordinated by the Ministry of Earth Sciences (MoES), Government of India and the Indian Institute of Tropical Meteorology (IITM), Pune is the Nodal Institute. IISF 2025 will be held from 6–9 December 2025 at Punjab University, Chandigarh.

The event began with Lighting of the Lamp followed by the National Song (Vande Mataram). The program was inaugurated by Dr. Neeraj Jain, Head, ODS, by welcoming all the guests, Director, faculty members, scientists, and students. He gave the details of IISF along with today's curtain raiser program and informed that this year IISF theme is "Vigyan Se Samruddhi – for Aatmanirbhar Bharat." He said that IISF 2025 aims to bring together scientists, innovators, educators, students, industry leaders, science communicators, and policymakers on one platform to promote collaboration, creativity, and knowledge exchange for Aatmanirbhar Bharat.

The program was graced by Dr. D. P. Kanungo, Senior most Scientist, CSIR-CBRI, and Dr. Aasheesh Raturi (Chief Guest), Professor, Department of Physics, Dolphin Institute of Biomedical and Natural Sciences, Dehradun & Member, Vijnana Bharati. Students from Mount Litera Zee School, PM SHRI Kendriya Vidyalaya No. 1, and Bal Vidya Mandir enthusiastically participated in the event along with faculty members.Dr. D. P. Kanungo inspired the students on the importance of science and technology in all aspects of life. He stated that science is not limited to laboratories, but is the foundation of national prosperity, innovation and sustainable development.

He emphasized nurturing scientific temperament in young minds and enabling them to become contributors to India's self-reliance. He added that this festival is a celebration of science, technology and the limitless spirit of innovation that defines our nation. IISF encapsulates a vision where science is not just for labs and researchers but a foundation for national prosperity, self-reliance and sustainable development. Dr. R. Pradeep Kumar, The Director, CSIR-CBRI, also conveyed his best wishes for the IISF 2025 Curtain Raiser, noting its importance in promoting scientific awareness and collaboration.

Chief Guest of the function, Dr. Aasheesh Raturi, delivered an insightful and fascinating lecture on astronomy for the students to encourage their interest in science. He discussed why physics holds a primary place in scientific learning, the importance of astronomy, the evolution of lenses and telescopes, science safari, space technology and the use of astronomy as a tool to navigate the night sky. He also informed about the mission of Vijnana Bharati and IISF. He said that as we stand at the crossroads of rapid technological changes, India needs innovators who can solve real problems from climate challenges to healthcare, agriculture and digital transformation. IISF encourages us to think boldly, experiment fearlessly and contribute meaningfully.

Today's curtain raiser is not just the launch of an event. It marks the beginning of a collective journey that reflects India's growing role as a global leader in science and technology, and our commitment to building a future that is inclusive, sustainable and driven by knowledge. Following his lecture, Dr. Raturi was felicitated with a memento by Dr. D. P. Kanungo.

Another scientific lecture was delivered by Dr. Soumitra Maiti, Principal Scientist, CSIR-CBRI, on Waste Utilization for Development of Building Materials to save natural resources and reduce pollution and carbon footprint. The event proceeded with the Vote of Thanks by Dr. Hemlata, Senior Scientist, followed by Rashtryagaan. Students then visited the Rural Technology Park of CSIR-CBRI. In addition, 50 students from the Central University of Haryana visited different major facilities developed by CBRI in the laboratories along with the exhibition gallery. Present at this event were Dr. P. C. Thapliyal, Shri Vineet Saini, Dr. Tabish Aalam, Dr. Chanchal, Dr. Anindiya Pine, Shri Rajender, Shri Rajnish, Shri Ajuj, Shri Rajat, Kumari Iqra, Kumari Rashi, Kumari Sanskriti etc.

(रिलीज़ आईडी: 2190888) आगंतुक पटल : 18
इस विज्ञप्ति को इन भाषाओं में पढ़ें: Hindi_Ddn

Published in: https://www.pib.gov.in/PressReleseDetail.aspx?PRID=2190888&reg=46&lang=45

कार्यक्रम | इंडिया इंटरनेशनल साइंस फेस्टिवल के कर्टेन रेजर कार्यक्रम के इस वर्ष की थीम "विज्ञान से समृद्धि: आत्मनिर्भर भारत है

सीबीआरआई, रुड़की में भारत अंतरराष्ट्रीय विज्ञान महोत्सव आयोजित

Presented in Dainik Jagran Newspaper

अन्तर्राष्ट्रीय | शिक्षा

विज्ञान से समृद्धि' थीम के साथ आईआईएसएफ 2025 का आगाज़

by cradmin November 17, 2025 0 43

देहरादून/रुड़की। सीएसआईआर–केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-सीबीआरआई), रुड़की में 11वें इंडिया इंटरनेशनल साइंस फेस्टिवल (आईआईएसएफ) 2025 का कर्टेन रेज़र कार्यक्रम धूमधाम से आयोजित किया गया। कार्यक्रम आरएनटी ऑडिटोरियम में संपन्न हुआ। इस वर्ष महोत्सव की थीम "विज्ञान से समृद्धि: आत्मनिर्भर भारत" निर्धारित की गई है। आईआईएसएफ 2025 का मुख्य आयोजन 6 से 9 दिसंबर 2025 तक पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ में होगा।

इस वर्ष विज्ञान महोत्सव का समन्वयन पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय (एमओईएस), भारत सरकार द्वारा किया जा रहा है तथा इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ ट्रॉपिकल मीटिरियोलॉजी (आईआईटीएम), पुणे नोडल संस्थान है। कार्यक्रम की शुरुआत दीप प्रज्वलन एवं वंदे मातरम के साथ हुई। ओडीएस प्रमुख डॉ. नीरज जैन ने सभी अतिथियों, वैज्ञानिकों, संकाय सदस्यों एवं विद्यार्थियों का स्वागत करते हुए आईआईएसएफ की थीम और कार्यक्रम के उद्देश्यों पर विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने कहा कि महोत्सव का उद्देश्य वैज्ञानिकों, नवोन्मेषकों, शिक्षकों, छात्रों, उद्योग विशेषज्ञों और नीति-निर्माताओं को एक साझा मंच प्रदान कर भारत की वैज्ञानिक प्रगति और आत्मनिर्भरता को नई दिशा देना है।

कार्यक्रम में सीएसआईआर–सीबीआरआई के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. डी. पी. कानूनगो और मुख्य अतिथि डॉ. आशीष रतुड़ी (प्रोफेसर, भौतिकी विभाग, डॉल्फिन इंस्टीट्यूट, देहरादून एवं सदस्य, विज्ञान भारती) की गरिमामयी उपस्थिति रही। माउंट लिटेरा ज़ी स्कूल, पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय नं. 1 एवं बाल विद्या मंदिर के विद्यार्थी भी बड़ी संख्या में कार्यक्रम में शामिल हुए।

डॉ. कानूनगो ने विद्यार्थियों को विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के महत्व पर प्रेरक संदेश देते हुए कहा कि विज्ञान केवल प्रयोगशालाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि राष्ट्र की समृद्धि और सतत विकास की आधारशिला है। उन्होंने युवाओं में वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करने की आवश्यकता पर जोर दिया। सीएसआईआर–सीबीआरआई के निदेशक डॉ. आर. प्रदीप कुमार ने भी आयोजन के लिए शुभकामनाएं दीं और इसे वैज्ञानिक जागरूकता एवं सहयोग को बढ़ावा देने वाला महत्वपूर्ण कदम बताया।

मुख्य अतिथि डॉ. रतुड़ी ने विद्यार्थियों के लिए खगोल विज्ञान पर रोचक व्याख्यान दिया। उन्होंने भौतिकी की भूमिका, दूरबीनों के विकास, अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी, साइंस सफारी तथा आकाश को समझने में खगोल विज्ञान की भूमिका पर विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने कहा कि बदलते तकनीकी युग में भारत को ऐसे नवोन्मेषकों की आवश्यकता है, जो जलवायु, स्वास्थ्य, कृषि एवं डिजिटल परिवर्तन जैसे क्षेत्रों में समाधान प्रस्तुत कर सकें।

कार्यक्रम में सीबीआरआई के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. सौमित्रा मैती ने "बिल्डिंग मटेरियल्स के विकास हेतु अपशिष्ट उपयोगिता" विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। उन्होंने प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण, प्रदूषण कम करने तथा कार्बन फुटप्रिंट घटाने पर महत्वपूर्ण विचार साझा किया।

कार्यक्रम के अंत में डॉ. हेमलता ने आभार व्यक्त किया और राष्ट्रगान के साथ समारोह का समापन हुआ। कार्यक्रम उपरांत विद्यार्थियों ने ग्रामीण प्रौद्योगिकी पार्क का भ्रमण किया। साथ ही हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय के 50 विद्यार्थियों ने सीबीआरआई की प्रयोगशालाओं एवं प्रदर्शनी गैलरी का अवलोकन किया।

कार्यक्रम में डॉ. पी. सी. थपलियाल, विनीत सैनी, डॉ. तबिश आलम, डॉ. चंचल, डॉ. अनिंद्य पाइन, राजेंद्र, रजनीश, रजत, अनुज, कु. इक़रा, कु. राशी एवं कु. संस्कृति सहित कई अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

Published in : https://prabhatchingari.com/iisf-2025-begins-with-the-theme-science-to-prosperity/

Home /
सीबीआरआई, रुड़की में भारत अंतरराष्ट्रीय विज्ञान महोत्सव 2025 का कर्टेन रेज़र कार्यक्रम आयोजित

Uttarakhand News

सीबीआरआई, रुड़की में भारत अंतरराष्ट्रीय विज्ञान महोत्सव 2025 का कर्टेन रेज़र कार्यक्रम आयोजित

Admin - Er. Kapil Garg (B.E. Electronics)
November 17, 2025

कार्यक्रम में सीएसआईआर–सीबीआरआई के वरिष्ठतम वैज्ञानिक डॉ. डी. पी. कानूनगो तथा मुख्य अतिथि डॉ. आशीष रतुड़ी, प्रोफेसर, भौतिकी विभाग, डॉल्फिन इंस्टिट्यूट ऑफ बायोमेडिकल एंड नेचुरल साइंसेज़, देहरादून एवं सदस्य, विज्ञान भारती की गरिमामयी उपस्थिति रही। माउंट लिटेरा ज़ी स्कूल, पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय नं. 1 तथा बाल विद्या मंदिर के विद्यार्थियों ने संकाय सदस्यों के साथ उत्साहपूर्वक भाग लिया। डॉ. डी. पी. कानूनगो ने विद्यार्थियों को जीवन के सभी क्षेत्रों में विज्ञान और प्रौद्योगिकी के महत्व के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि विज्ञान केवल प्रयोगशालाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि यह राष्ट्रीय समृद्धि, नवाचार और सतत विकास की आधारशिला है। उन्होंने युवा मस्तिष्कों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करने और उन्हें भारत की आत्मनिर्भरता में योगदानकर्ता बनने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने कहा कि यह उत्सव विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार की असीम भावना का उत्सव है। आईआईएसएफ उस दृष्टिकोण को दर्शाता है जिसमें विज्ञान केवल प्रयोगशालाओं के लिए नहीं, बल्कि राष्ट्र की प्रगति, आत्मनिर्भरता और सतत विकास की नींव है। सीएसआईआर–सीबीआरआई के निदेशक डॉ. आर. प्रदीप कुमार ने भी आईआईएसएफ 2025 कर्टन रेज़र के लिए अपनी शुभकामनाएँ व्यक्त कीं और इसे वैज्ञानिक जागरूकता एवं सहयोग को बढ़ावा देने वाला महत्वपूर्ण आयोजन बताया।

PIB DDN-सीएसआईआर–केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-सीबीआरआई), रुड़की द्वारा 11वें इंडिया इंटरनेशनल साइंस फेस्टिवल (आईआईएसएफ) 2025 का कर्टेन रेज़र कार्यक्रम 17 नवंबर 2025 को आरएनटी ऑडिटोरियम में आयोजित किया गया। इस वर्ष इस उत्सव का समन्वयन पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय (एमओईएस), भारत सरकार द्वारा किया जा रहा है तथा इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ ट्रॉपिकल मीटिरियोलॉजी (आईआईटीएम), पुणे नोडल संस्थान है। आईआईएसएफ 2025 दिनांक 6–9 दिसंबर 2025 तक पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ में आयोजित किया जाएगा।

कार्यक्रम की शुरुआत दीप प्रज्वलन से हुई तथा उसके उपरांत राष्ट्रीय गीत (वंदे मातरम) प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ ओडीएस प्रमुख डॉ. नीरज जैन ने किया, जिन्होंने सभी अतिथियों, निदेशक, संकाय सदस्यों, वैज्ञानिकों तथा छात्रों का स्वागत किया। उन्होंने आईआईएसएफ तथा आज के कर्टेन रेज़र कार्यक्रम के बारे में विस्तार से जानकारी देते हुए बताया कि इस वर्ष का थीम "विज्ञान से समृद्धि : आत्मनिर्भर भारत है"। उन्होंने कहा कि आईआईएसएफ 2025 का उद्देश्य वैज्ञानिकों, नवोन्मेषकों, शिक्षकों, छात्रों, उद्योग विशेषज्ञों, विज्ञान संचारकों और नीति-निर्माताओं एक मंच पर लाना है ताकि सहयोग, सृजनशीलता ज्ञान के आदान-प्रदान के माध्यम से आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में योगदान दिया जा सके।

Published in : https://galaxyinformer.com/archives/34373

CSIR-CBRI in the Limelight | 08.11.2025

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय

Azadi Ka Amrit Mahotsav

जिज्ञासा 2.0 के अंतर्गत सीएसआईआर–सीबीआरआई में बाल दिवस पर उद्यमिता जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया।

- कार्यक्रम का उद्देश्य छात्रों में उद्यमिता और नवाचार को बढ़ावा देना, भारत के स्टार्टअप इकोसिस्टम से परिचित कराना तथा उपलब्ध संसाधनों, सहायता प्रणालियों और फंडिंग अवसरों की जानकारी देना था।

- विद्यार्थियों ने ग्रामीण प्रौद्योगिकी पार्क का भ्रमण किया जहाँ उन्होंने सीबीआरआई की सतत, कम-लागत तथा सामुदायिक आवश्यकताओं पर आधारित तकनीकों को देखा।

Posted On: 14 NOV 2025 10:25PM by PIB Dehradun

सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई), रुड़की ने एमएसएमई द्वारा समर्थित जिज्ञासा 2.0 कार्यक्रम के अंतर्गत उद्यमिता जागरूकता कार्यक्रम (ईएपी) आयोजित कर बाल दिवस मनाया। यह कार्यक्रम राजकीय इंटर कॉलेज, पुरकाजी, मुज़फ्फरनगर की प्रिंसिपल प्रीति चौधरी के नेतृत्व में आए 126 विद्यार्थियों के लिए आयोजित किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य छात्रों में उद्यमिता और नवाचार की अवधारणा को बढ़ावा देना, भारत के स्टार्ट-अप इकोसिस्टम से परिचित कराना, तथा उपलब्ध संसाधनों, सहायता प्रणालियों और फंडिंग अवसरों की जानकारी देना था, जिनका उपयोग युवा नवाचारकर्ता अपने विचारों को आगे बढ़ाने के लिए कर सकते हैं।

कार्यक्रम की शुरुआत वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक एवं जिज्ञासा 2.0 के नोडल अधिकारी डॉ. नीरज जैन के स्वागत वक्तव्य से हुई, जिसके बाद प्रधान वैज्ञानिक एवं सह नोडल अधिकारी डॉ. चंदन स्वरूप मीना ने छात्रों को सीएसआईआर-सीबीआरआई की शोध दृष्टि और समाजोपयोगी योगदानों से अवगत कराया। इस अवसर पर निदेशक, सीएसआईआर-सीबीआरआई प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने बढ़ती बेरोज़गारी और सीमित रोजगार अवसरों के संदर्भ में उद्यमिता जागरूकता के महत्व पर प्रकाश डालते हुए छात्रों को वास्तविक जीवन की समस्याओं की पहचान करने, नवाचारपूर्ण विचार विकसित करने तथा "मेक इन इंडिया" जैसी राष्ट्रीय पहलों के अनुरूप उन्हें व्यावहारिक उद्यमों में बदलने के लिए प्रेरित किया।

उन्होंने बताया कि उद्यमिता रचनात्मक सोच, जोखिम उठाने की क्षमता, नेतृत्व गुण, समस्या समाधान कौशल और समग्र व्यक्तित्व विकास को बढ़ावा देती है, जिससे युवा आत्मनिर्भर और भविष्य-तैयार बनते हैं। व्याख्यान सत्रों से पहले विद्यार्थियों ने ग्रामीण प्रौद्योगिकी पार्क का भ्रमण किया, जहाँ उन्होंने सीबीआरआई की सतत, कम-लागत तथा सामुदायिक आवश्यकताओं पर आधारित तकनीकों को देखा और यह समझा कि वैज्ञानिक अनुसंधान समाज के विकास में कैसे योगदान देता है। तकनीकी सत्रों में "भारत के उद्यमिता एवं स्टार्ट-अप इकोसिस्टम का परिचय—इनोवेशन, उद्यमिता एवं स्टार्ट-अप की समझ" तथा "समस्या पहचान, समाधान निर्माण, स्टार्ट-अप कैसे शुरू करें और सफलता की कहानियाँ" शामिल थीं।

व्याख्यान श्री सिद्धांत कुमार नायक (प्रोग्राम मैनेजर, टीआईडीईएस, आईआईटी रुड़की), श्री गौरव दीक्षित (सीईओ एवं संस्थापक, गोहेम्प) और डॉ. शिवानी शर्मा (मैनेजर, टीआईडीईएस, आईआईटी रुड़की) द्वारा प्रदान किए गए, जिन्होंने नवाचार समर्थन प्रणालियों, इनक्यूबेशन अवसरों और स्टार्ट-अप यात्रा के व्यावहारिक पहलुओं पर विस्तृत जानकारी साझा की। कार्यक्रम का समापन प्रधान वैज्ञानिक ई. आशीष पिप्पल और वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. ताबिश आलम के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ। संपूर्ण आयोजन ने वैज्ञानिक सीख, नवाचार जागरूकता और व्यावहारिक अनुभव का उत्कृष्ट समन्वय प्रस्तुत किया, जिसने विद्यार्थियों को रचनात्मक सोच और समाजोपयोगी समाधान विकसित करने के लिए प्रेरित किया। इस अवसर पर रजनीश कुमार, मोहित नयाल, संस्कृति शर्मा, इकरा, अनुज कुमार, मंजीत कुमार, अमजद, अजय कुमार, रजत कुमार, विकास कुमार और राकेश कुमार भी उपस्थित रहे।

Published in : https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2190247

CSIR-CBRI in the Limelight | 07.11.2025

क्विक रीड

छात्रों को दिया एडवांस सॉफ्टवेयर प्रशिक्षण

प्रशिक्षण लेने वाले छात्र-छात्राएं।

रुड़की, 6 नवम्बर (अनिल): सेंट्रल बिल्डिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट (सीबीआरआई) रुड़की में सीएसआईआर इंटीग्रेटेड स्किल इनिशिएटिव कार्यक्रम के तहत कॉम्सोल मल्टीफिजिक्स सॉफ्टवेयर पर प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यशाला का उद्देश्य मल्टीफिजिक्स मॉडलिंग और सिमुलेशन तकनीकों की गहन जानकारी देना था। प्रशिक्षण में विभिन्न विश्वविद्यालयों के लगभग 40 छात्रों ने भाग लिया और सॉफ्टवेयर के माध्यम से व्यावहारिक सिमुलेशन सीखा। तकनीकी सत्रों का संचालन कॉम्सोल मल्टीफिजिक्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड की विशेषज्ञ टीम कृतिका राजे, शारजेद और हिमांशु अग्रवाल ने किया।

Presented in Dainik Jagran Newspaper

हिन्दुस्तान

Share | Copy url | Save | Font Size | D'load Image | Image | Text | Listen

छात्रों को सॉफ्टवेयर प्रशिक्षण दिया

रुड़की, कार्यालय संवाददाता। सेंट्रल बिल्डिंग रिसर्च इंस्टिट्यूट (सीबीआरआई) ने गुरुवार को सीएसआईआर इंटीग्रेटेड स्किल इनिशिएटिव के तहत कॉम्सोल मल्टीफिजिक्स सॉफ्टवेयर पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजित की।

सीबीआरआई के प्रशिक्षण में 40 छात्रों ने किया प्रतिभाग

इसमें लगभग 40 छात्रों ने भाग लिया और सॉफ्टवेयर के माध्यम से व्यावहारिक सिमुलेशन प्रशिक्षण प्राप्त किया।कार्यक्रम का उद्देश्य प्रतिभागियों में मल्टीफिजिक्स मॉडलिंग और सिमुलेशन तकनीकों की समझ को सुदृढ़ करना और वैज्ञानिक सिद्धांतों व व्यावहारिक प्रयोगों के बीच संबंध स्थापित करना था। उद्घाटन सत्र में सीबीआरआई के हेड डॉ. नीरज जैन ने कहा कि ऐसे प्रशिक्षण कार्यक्रम तकनीकी कौशल को निखारने का उत्कृष्ट अवसर प्रदान करते हैं।

कॉम्सोल इंडिया की विशेषज्ञ टीम ने तकनीकी सत्रों का संचालन किया और प्रतिभागियों को प्रायोगिक अभ्यासों के जरिए मार्गदर्शन दिया। कार्यक्रम का समन्वयन डॉ. ताबिश आलम ने किया।

सीबीआरआई के निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने कहा कि आधुनिक सिमुलेशन टूल्स अपनाकर युवा शोधकर्ता नवाचार, डिजाइन अनुकूलन और अनुसंधान-आधारित अधिगम को बढ़ावा दे सकते हैं। प्रशिक्षण कार्यक्रम की सफलता में सीबीआरआई और कॉम्सोल टीम के कर्मचारियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

Presented in Hindustan Newspaper

सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की द्वारा सीएसआईआर इंटीग्रेटेड स्किल इनिशिएटिव के अंतर्गत कॉम्सोल मल्टीफिजिक्स सॉफ्टवेयर पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

रुड़की (आफताब खान वरिष्ठ विशेष संवाददाता)। सीएसआईआर-सेंट्रल बिल्डिंग रिसर्च इंस्टिट्यूट (सीबीआरआई), रुड़की द्वारा सीएसआईआर इंटीग्रेटेड स्किल इनिशिएटिव कार्यक्रम के अंतर्गत कॉम्सोल मल्टीफिजिक्स सॉफ्टवेयर पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन 6 अक्टूबर 2025 को किया गया। इस प्रशिक्षण का उद्देश्य प्रतिभागियों की मल्टीफिजिक्स मॉडलिंग एवं सिमुलेशन तकनीक की समझ को सुदृढ़ करना तथा वैज्ञानिक सिद्धांतों और व्यावहारिक प्रयोगों के बीच सेतु बनाना था।

कॉम्सोल मल्टीफिजिक्स एक जनरल-पर्पज़ सिमुलेशन सॉफ्टवेयर है, जिसका उपयोग इंजीनियरिंग, वैज्ञानिक अनुसंधान, शिक्षा एवं औद्योगिक क्षेत्रों में डिजाइन, मॉडलिंग और विश्लेषण के लिए व्यापक रूप से किया जाता है। इस कार्यक्रम में विभिन्न विश्वविद्यालयों के लगभग 40 छात्रों ने भाग लिया और कॉम्सोल सॉफ्टवेयर पर व्यावहारिक प्रशिक्षण प्राप्त किया।

तकनीकी सत्रों का संचालन कॉम्सोल मल्टीफिजिक्स इंडिया प्रा. लि. की टीम — सुश्री कृतिका राजे (एप्लिकेशन इंजीनियर), श्री शारजेद (सीनियर एप्लिकेशन इंजीनियर) एवं श्री हिमांशु अग्रवाल (टेक्निकल सेल्स इंजीनियर) द्वारा किया गया। उन्होंने सॉफ्टवेयर की प्रमुख विशेषताओं का प्रदर्शन किया और प्रतिभागियों को प्रायोगिक सिमुलेशन अभ्यासों के माध्यम से मार्गदर्शन प्रदान किया।

इस कार्यक्रम का समन्वयन डॉ. ताबिश आलम, वरिष्ठ वैज्ञानिक, सीएसआईआरङ्कसीबीआरआई द्वारा किया गया। उद्घाटन सत्र के दौरान डॉ. नीरज जैन, हेड, ओडीएस, ने सीएसआईआर इंटीग्रेटेड स्किल इनिशिएटिव के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि इस प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रम तकनीकी कौशल को व्यावहारिक रूप में निखारने का एक उत्कृष्ट माध्यम हैं। सीएसआईआरङ्कसीबीआरआई के निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने प्रतिभागियों को कॉम्सोल जैसे आधुनिक सिमुलेशन टूल्स को अपनाने हेतु प्रेरित किया, जिससे वे नवाचार, डिजाइन अनुकूलन और अनुसंधान-आधारित अधिगम को प्रोत्साहित कर सकें। कार्यक्रम का समापन एक संवादात्मक सत्र एवं प्रतिभागियों की सकारात्मक प्रतिक्रियाओं के साथ हुआ, जिसने सीएसआईआरङ्क सीबीआरआई की तकनीकी उत्कृष्टता, क्षमता निर्माण और उन्नत कौशल विकास के प्रति निरंतर प्रतिबद्धता को पुनः स्थापित किया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम का सफल संचालन कॉम्सोल टीम के सहयोग एवं सीबीआरआई के कर्मचारियों — राशी, इकरा, रजत, अमजद, संस्कृति, महेश, अनुज, विकास एवं अजय — के समर्पित योगदान से संभव हो पाया, जिनके प्रयासों से कार्यक्रम का प्रभावी एवं सुचारु आयोजन सुनिश्चित हुआ।

Presented in Dainik Jagran Newspaper

उत्तराखंड

रुड़की द्वारा “सीएसआईआर इंटीग्रेटेड स्किल इनिशिएटिव”

By Sahara Live News
NOV 6, 2025

CSIR–CBRI, Roorkee Organizes Training Program on COMSOL Multiphysics Software under CSIR Integrated Skill Initiative
Roorkee, November 6, 2025:

The CSIR–Central Building Research Institute (CBRI), Roorkee, organized a one-day training program on COMSOL Multiphysics software on 6th October 2025 under the CSIR Integrated Skill Initiative Program. The workshop aimed to strengthen the participants' understanding of multiphysics modeling and computational simulation, bridging scientific theory with practical applications.

COMSOL Multiphysics is a general-purpose simulation software widely used for modelling, design, and analysis in engineering, scientific research, education, and industry. Around 40 students from various universities participated in the program and received hands-on training in computational modeling using the COMSOL environment.

The technical sessions were conducted by the COMSOL Multiphysics India Pvt. Ltd. team — Ms. Kritika Raje (Applications Engineer), Mr. Sharjed (Senior Applications Engineer), and Mr. Himanshu Agrawal (Technical Sales Engineer) — who demonstrated the software's key features and guided the participants through interactive simulation exercises.

The program was coordinated by Dr. Tabish Alam, Senior Scientist, CSIR–CBRI. During the inaugural session, Dr. Neeraj Jain, Head, ODS, outlined the objectives of the CSIR Integrated Skill Initiative, emphasizing the importance of enhancing technical capabilities through hands-on learning. Prof. R. Pradeep Kumar, Director, CSIR–CBRI, encouraged participants to adopt modern simulation tools like COMSOL to support innovation, design optimization, and research-oriented learning.

The program concluded with an interactive discussion and highly positive feedback from the participants, reflecting CSIR–CBRI's ongoing commitment to promoting technical excellence, capacity building, and advanced skill development through the CSIR Integrated Skill Initiative Program.

The training was effectively coordinated with the cooperation of the COMSOL Team, and dedicated support from CBRI staff members — Rashi, Iqra, Rajat, Amzad, Sanskriti, Mahesh, Anuj, Vikas, and Ajay, whose efforts ensured the successful execution of the event.

सीएसआईआर–सीबीआरआई, रुड़की द्वारा "सीएसआईआर इंटीग्रेटेड स्किल इनिशिएटिव" के अंतर्गत कॉम्सोल मल्टीफिजिक्स सॉफ्टवेयर पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन
रुड़की, 6 नवंबर 2025:

सीएसआईआर–सेंट्रल बिल्डिंग रिसर्च इंस्टिट्यूट (सीबीआरआई), रुड़की द्वारा सीएसआईआर इंटीग्रेटेड स्किल इनिशिएटिव कार्यक्रम के अंतर्गत कॉम्सोल मल्टीफिजिक्स सॉफ्टवेयर पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन 6 अक्टूबर 2025 को किया गया। इस प्रशिक्षण का उद्देश्य प्रतिभागियों की मल्टीफिजिक्स मॉडलिंग एवं सिमुलेशन तकनीक की समझ को सुदृढ़ करना तथा वैज्ञानिक सिद्धांतों और व्यावहारिक प्रयोगों के बीच सेतु बनाना था।

कॉम्सोल मल्टीफिजिक्स एक सामान्य-उद्देश्य सिमुलेशन सॉफ्टवेयर है, जिसका उपयोग इंजीनियरिंग, वैज्ञानिक अनुसंधान, शिक्षा एवं औद्योगिक क्षेत्रों में डिजाइन, मॉडलिंग और विश्लेषण के लिए व्यापक रूप से किया जाता है। इस कार्यक्रम में विभिन्न विश्वविद्यालयों के लगभग 40 छात्रों ने भाग लिया और कॉम्सोल सॉफ्टवेयर पर व्यावहारिक प्रशिक्षण प्राप्त किया।

तकनीकी सत्रों का संचालन कॉम्सोल मल्टीफिजिक्स इंडिया प्रा. लि. की टीम — सुश्री कृतिका राजे (एप्लिकेशन इंजीनियर), श्री शारजेद (सीनियर एप्लिकेशन इंजीनियर) एवं श्री हिमांशु अग्रवाल (टेक्निकल सेल्स इंजीनियर) द्वारा किया गया। उन्होंने सॉफ्टवेयर की प्रमुख विशेषताओं का प्रदर्शन किया और प्रतिभागियों को प्रायोगिक सिमुलेशन अभ्यासों के माध्यम से मार्गदर्शन प्रदान किया।

इस कार्यक्रम का समन्वयन डॉ. ताबिश आलम, वरिष्ठ वैज्ञानिक, सीएसआईआर–सीबीआरआई द्वारा किया गया। उद्घाटन सत्र के दौरान डॉ. नीरज जैन, हेड, ओडीएस, ने सीएसआईआर इंटीग्रेटेड स्किल इनिशिएटिव के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि इस प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रम तकनीकी कौशल को व्यावहारिक रूप में निखारने का एक उत्कृष्ट माध्यम हैं। सीएसआईआर–सीबीआरआई के निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने प्रतिभागियों को कॉम्सोल जैसे आधुनिक सिमुलेशन टूल्स को अपनाने हेतु प्रेरित किया, जिससे वे नवाचार, डिजाइन अनुकूलन और अनुसंधान-आधारित अधिगम को प्रोत्साहित कर सकें।

कार्यक्रम का समापन एक संवादात्मक सत्र एवं प्रतिभागियों की सकारात्मक प्रतिक्रियाओं के साथ हुआ, जिसने सीएसआईआर–सीबीआरआई की तकनीकी उत्कृष्टता, क्षमता निर्माण और उन्नत कौशल विकास के प्रति निरंतर प्रतिबद्धता को पुनः स्थापित किया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम का सफल संचालन कॉम्सोल टीम के सहयोग एवं सीबीआरआई के कर्मचारियों — राशी, इक़रा, रजत, अमज़द, संस्कृति, महेश, अनुज, विकास एवं अजय — के समर्पित योगदान से संभव हो पाया, जिनके प्रयासों से कार्यक्रम का प्रभावी एवं सुचारु आयोजन सुनिश्चित हुआ।

Published in : https://www.saharalivenews.com/archives/10022

CSIR-CBRI in the Limelight | 27.10.2025

सहारा लाइव NEWS
हर खबर पर पैनी नजर

अंतरराष्ट्रीय | राज्य | टेक्नोलॉजी | ट्रैवल | राष्ट्रीय | लोकल न्यूज़ | स्वास्थ्य | LIVE TV | CONTACT

उत्तराखंड

School students of PM Shri Kendriya Vidyalaya Visited CBRI Roorkee

By Sahara Live News
OCT 27, 2025

Roorkee, October 2025:

CSIR–Central Building Research Institute (CBRI), Roorkee successfully organized a Jigyasa 2.0 Program for 120 students and 6 faculty members from PM Shri Kendriya Vidyalaya, ITBP, Dehradun, aimed at nurturing scientific curiosity and promoting experiential learning among young minds.

The program began with a visit to Dr. Billing's Exhibition Gallery, where students witnessed several live demonstrations of CBRI's cutting-edge technologies — including the Shri Ram Mandir model with the Surya Tilak mechanism, High Draught Zig-Zag Brick Kiln Technology for energy-efficient brick production, and disaster-resilient building systems promoting safe and sustainable construction.

An interactive session held at the RNT Auditorium commenced with a welcome address by Dr. Neeraj Jain, Senior Principal Scientist & Nodal Officer (Jigyasa 2.0), followed by Dr. S.K. Panigrahi, Chief Scientist, who highlighted the importance of developing scientific temperament among students through practical exposure and learning.

Insightful lectures were delivered by Dr. Tabish Alam, Senior Scientist, on "Utilisation of Solar Energy in Houses", emphasizing the role of solar architecture and renewable technologies in sustainable living, and Dr. Hemlata, Senior Scientist, on "Waste Plastic Composites as Building Components", introducing innovative ways of recycling plastic waste into eco-friendly construction materials.

Students also visited the Rural Technology Park, Fire Safety Engineering Laboratory, and Structural Engineering Division (3D Printing Facility), where they experienced firsthand the applications of scientific research in real-life construction and safety scenarios.

The program concluded with an engaging interaction between students and scientists, encouraging them to pursue science and innovation for a sustainable future. The initiative reflected CSIR–CBRI's continuous efforts under the Jigyasa 2.0 initiative to connect laboratory research with classroom learning and inspire the next generation of innovators.

The visit was coordinated with active participation and support from Shri V.K. Nautiyal, Principal and teachers, PM Shri Kendriya Vidyalaya, ITBP, Dehradun, along with CBRI staff members Rashi, Rajat, Amzad, Sanskriti, Mahesh, Anuj, Vikas, and Ajay, who ensured the smooth execution and coordination of the program activities.

*Director CBRI emphasises that JIGYASA is one of the most significant initiatives that the CSIR undertook at the national level during its Platinum Jubilee Celebration Year, as an inspired vision of a new India and Scientific Social Responsibility (SSR) of the Institution. He also wishes bright future for all the student participants.

Published in : https://www.saharalivenews.com/archives/9967

CSIR-CBRI in the Limelight | 07.10.2025

उन्नत आवासीय समाधानों के लिए शोध नवाचार और प्रशिक्षण को प्राथमिकता

केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान रुड़की में विश्व आवास दिवस पर आयोजित कार्यक्रम मे उपस्थिति प्रतिभागी • साभार-संस्थान

जागरण संवाददाता, रुड़की : विश्व आवास दिवस पर केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआइ) रुड़की में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसका उद्देश्य टिकाऊ, किफायती एवं सुरक्षित आवास निर्माण के महत्व के प्रति जागरूकता बढ़ाना और आधुनिक तकनीकों एवं नवाचारों को बढ़ावा देना था।

संस्थान में सोमवार को आयोजित कार्यक्रम में निदेशक प्रो. आर प्रदीप कुमार ने कहा कि सीबीआरआइ सतत, किफायती और तकनीकी दृष्टि से उन्नत आवासीय समाधानों के विकास के लिए निरंतर प्रयासरत है। इस दिशा में शोध, नवाचार और प्रशिक्षण को प्राथमिकता दी जा रही है। मुख्य वैज्ञानिक डा. नीरज जैन ने टिकाऊ आवास के माध्यम से जीवन की गुणवत्ता सुधारने की आवश्यकता पर जोर दिया। वहीं अतिथि वक्ता के रूप में उपस्थित एईओएन इंटीग्रेटेड बिल्डिंग डिजाइन कंसल्टेंट्स एलएलपी के मैनेजिंग पार्टनर आशीष रस्तोगी, डा. पीके दास, प्रो. भूपिंदर सिंह, प्रो. राजशेखर, डा. केएस कुलकर्णी और इंजीनियर अस्वथी ने व्याख्यान के माध्यम से आवासीय विकास में अनुसंधान, नई एवं टिकाऊ तकनीकों, स्मार्ट सिटी अवधारणाओं, पर्यावरण अनुकूल निर्माण और समाज में आवास की गुणवत्ता बढ़ाने के उपायों पर जानकारी दी। साथ ही आधुनिक आवासीय निर्माण के नवीनतम रुझानों, चुनौतियों और संभावित समाधानों के बारे में जागरूक किया। इस दौरान आवास पर केंद्रित एक वीडियो प्रदर्शित किया गया। जिसमें शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में आवास निर्माण की चुनौतियों, ऊर्जा कुशल तकनीकों और पर्यावरणीय अनुकूल समाधानों को दर्शाया गया। वहीं पैनल चर्चा में विशेषज्ञों ने शहरी और ग्रामीण आवास, टिकाऊ निर्माण, ऊर्जा कुशल तकनीक, स्मार्ट सिटी और समाज में आवास की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए अपनाए जाने वाले उपायों पर विचार साझा किए। पैनल चर्चा में उपस्थित सभी वक्ताओं ने तकनीकी दृष्टिकोण, प्रशासनिक पहल और नीति निर्माण में सहयोग के महत्व पर जोर दिया। कार्यक्रम में प्रमुख विज्ञानी डा. मिक्की दलबेहरा, डा. ताबिश आलम, डा. नवीन निशांत, आर्किटेक्ट अनूप, डा. चंदन स्वरूप मीणा, डा. हेमलता आदि उपस्थित रहे।

Presented in Dainik Jagran Newspaper

टिकाऊ आवास से जीवन की गुणवत्ता सुधारने पर जोर

विश्व आवास दिवस पर सीबीआरआई में विशेष कार्यक्रम का आयोजन

कार्यक्रम में प्रतिभाग करते अतिथि।

रुड़की, 6 अक्तूबर (अनिल): विश्व आवास दिवस के अवसर पर सीएसआईआर-सेंट्रल बिल्डिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट (सीबीआरआई) में एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसका उद्देश्य टिकाऊ, किफायती और सुरक्षित आवास निर्माण के महत्व के प्रति जागरूकता बढ़ाना और आधुनिक तकनीकों व नवाचारों को बढ़ावा देना था।

कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य वैज्ञानिक डॉ. नीरज जैन ने इस अवसर की प्रासंगिकता बताते हुए टिकाऊ आवास के माध्यम से जीवन की गुणवत्ता सुधारने की आवश्यकता पर जोर दिया। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने उद्घाटन भाषण दिया और संस्थान की आवास निर्माण तथा शहरी और ग्रामीण विकास में अपनी प्रतिबद्धताओं की जानकारी साझा की।

डॉ. केएस कुलकर्णी, डॉ. ताबिश आलम और डॉ. नवीन निशांत द्वारा आवास पर केंद्रित एक विशेष वीडियो प्रदर्शित किया गया, जिसमें शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में आवास निर्माण की चुनौतियों, ऊर्जा कुशल तकनीकों और पर्यावरणीय अनुकूल समाधानों को दर्शाया गया। डॉ. नीरज जैन, डॉ. चंदन स्वरूप मीणा, डॉ. हेमलता, डॉ. ताबिश आलम, इंजीनियर अस्वथी और अन्य शामिल थे। कार्यक्रम का समापन डॉ. नीरज जैन द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ।

Presented in Dainik Jagran Newspaper

CSIR-CBRI in the Limelight | 06.10.2025

सुरक्षित आवास निर्माण की जानकारी दी

रुड़की, संवाददाता। विश्व आवास दिवस के अवसर पर सोमवार को सीबीआरआई में एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसका उद्देश्य टिकाऊ, किफायती और सुरक्षित आवास निर्माण के महत्व के प्रति जागरूकता बढ़ाना और आधुनिक तकनीकों व नवाचारों को बढ़ावा देना था। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य वैज्ञानिक डॉ. नीरज जैन ने किया। संस्थान के निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने संस्थान की आवास निर्माण, शहरी और ग्रामीण विकास में अपनी प्रतिबद्धताओं की जानकारी साझा की। उन्होंने कहा कि सीबीआरआई सतत, किफायती दृष्टि से आवासीय समाधानों के विकास के लिए निरंतर प्रयासरत है।

Presented in Swatantra Chetna Newspaper

CSIR-CBRI in the Limelight | 01.10.2025

CCM N/A

सीबीआरआई ने दिखाई ग्रामीण भारत के लिए सस्ते घरों की राहः डॉ. पेम्मासानी

सीबीआरआई ने दिखाई ग्रामीण भारत के लिए सस्ते घरों की राहः डॉ. पेम्मासानी

- देश के पहले 3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन
- पीएमएवाई–(ग्रामीण) के तहत 3.85 करोड़ मकान हुए स्वीकृत

भास्कर समाचार सेवा

देश के पहले 3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन करते डॉ. पेम्मासानी।

रुड़की। ग्रामीण विकास राज्य मंत्री डॉ. पेम्मासानी चंद्रशेखर ने केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर–सीबीआरआई), रुड़की में देश के पहले 3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन किया। यह ऐतिहासिक नवाचार भारत की ग्रामीण आवास यात्रा का एक निर्णायक क्षण है, जो पारंपरिक ज्ञान को आधुनिकतम तकनीक से जोड़ता है।

वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं और हितधारकों को संबोधित करते हुए डॉ. पेम्मासानी चंद्रशेखर ने कहा कि कच्ची दीवारों से 3डी प्रिंटिंग तक भारत ने सभी के लिए सुरक्षित, मजबूत और टिकाऊ घर उपलब्ध कराने की अटूट प्रतिबद्धता प्रदर्शित की है। ये 3डी प्रिंटेड घर केवल तकनीक नहीं हैं, बल्कि एक ऐसे भविष्य का प्रतीक हैं, जहां आवास सस्ता, अनुकूलनशील और पर्यावरण-अनुकूल होगा।

प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में प्रधानमंत्री आवास योजना–ग्रामीण (पीएमएवाई–जी) की उपलब्धियों का उल्लेख करते हुए उन्होंने बताया कि योजना के अंतर्गत अब तक 3.85 करोड़ मकान स्वीकृत हुए हैं और 2.87 करोड़ पूरे हो चुके हैं। स्वतंत्र आकलनों से यह भी सामने आया है कि ग्रामीण परिवारों की आय में 17 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। अस्पताल जाने के मामलों में 14 प्रतिशत की कमी आई है। 72 प्रतिशत घर महिलाओं के नाम पर हैं, जिससे महिला सशक्तिकरण और पारिवारिक कल्याण को मजबूती मिली है।

सीबीआरआई के योगदान की सराहना करते हुए उन्होंने कहा कि संस्थान ने 250 क्षेत्र-विशिष्ट आपदा-रोधी आवासीय डिजाइन तैयार किए हैं। इसके अतिरिक्त, गैर-क्षरणशील मिट्टी का पलस्तर, कम लागत वाली मजबूती तकनीकें और दो-गड्ढा शौचालय प्रणाली जैसे नवाचारों ने पांच करोड़ से अधिक ग्रामीण परिवारों को स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत गरिमापूर्ण जीवन जीने में सक्षम बनाया है।

इस अवसर पर उन्होंने 'रुद्राक्ष – उत्तराखंड में ग्रामीण आवास' नामक पुस्तक का विमोचन भी किया, जिसमें उत्तराखंड राज्य की सांस्कृतिक रूप से जुड़ी, टिकाऊ और जलवायु-संवेदनशील आवासीय परंपराओं का संकलन है। उन्होंने सीबीआरआई से आग्रह

एसबीआई सेलाकुई ने लगाया शिविर

देहरादून। भारत सरकार के वित्तीय समावेशन अभियान को जन-जन तक पहुंचाने के उद्देश्य से भारतीय स्टेट बैंक, सेलाकुई द्वारा आज एक वित्तीय समावेशन शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में बड़ी संख्या में ग्रामीणों ने भागीदारी की। शिविर में रोशन चंद ठाकुर, निदेशक (डीएफएस), नीता, महाप्रबंधक (आरबीआई), शशि कुमार, महाप्रबंधक (नाबार्ड), दीपेश राज, महाप्रबंधक (एसबीआई) तथा विनोद कुमार, उप महाप्रबंधक (एसबीआई) उपस्थित रहे। इन अधिकारियों ने ग्रामीणों को विभिन्न बैंकिंग सेवाओं और सरकारी योजनाओं की विस्तृत जानकारी प्रदान की। शिविर के दौरान ग्रामीणों को प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना, प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना और री-केवाईसी प्रक्रिया के महत्व के बारे में बताया गया।

Published in Dainik Bhaskar

देश के प्रथम श्रीडी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का किया उद्घाटन

देश के प्रथम थ्रीडी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का किया उद्घाटन

केंद्रीय राज्य मंत्री डा पेम्मासानी ने सीबीआरआइ का किया दौरा

- डा. पेम्मासानी ने कहा, नवाचार से ग्रामीण आवास को सपने से हकीकत में बदल रहे
- भारत की ग्रामीण आवास यात्रा में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है: केंद्रीय राज्यमंत्री

सीबीआरआइ रुड़की के टेक्नोलाजी पार्क में बनाया गया 3डी प्रिंटेड घर का मॉडल • सहारा-समाचार

जागरण संवाददाता, रुड़की: केंद्रीय ग्रामीण विकास एवं संचार राज्य मंत्री डा. चंद्रशेखर पेम्मासानी ने केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआइ) रुड़की में प्रधानमंत्री आवास योजना-ग्रामीण (पीएमएवाई-जी) के तहत देश के प्रथम थ्रीडी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन किया। उन्होंने कहा कि पीएमएवाई-जी के तहत थ्रीडी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण घर सरकार के "विकसित भारत @ 2047" के दृष्टिकोण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

बुधवार को केंद्रीय ग्रामीण विकास एवं संचार राज्य मंत्री डा. चंद्रशेखर पेम्मासानी ने सीबीआरआइ रुड़की का दौरा किया। उन्होंने थ्रीडी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन करते हुए कहा कि नवाचार और प्रतिबद्धता के साथ हम ग्रामीण आवास को सपने से हकीकत में बदल रहे हैं। आज का थ्रीडी प्रिंटेड घर विकसित भारत का प्रतीक है। साथ ही, भारत की ग्रामीण आवास यात्रा में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। जो प्रत्येक ग्रामीण परिवार के लिए सुरक्षित, किफायती और लचीले घर उपलब्ध कराने की सरकार की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। डा. पेम्मासानी ने ग्रामीण आवास और स्वच्छता के लिए नवाचारी, किफायती व आपदा-प्रतिरोधी समाधान विकसित करने में सीएसआइआर-सीबीआरआइ की भूमिका को रेखांकित किया। उन्होंने संस्थान के योगदानों को उजागर किया। जैसे कि ग्रामीण आवास प्रकारों का पहला संकलन, जो अब 250 से अधिक आपदा-प्रतिरोधी आवास प्रकारों का डिजिटल भंडार बन गया है। दो-पिट पोर-फ्लश शौचालय तकनीक को स्वच्छ भारत मिशन के तहत पांच करोड़ से अधिक ग्रामीण परिवारों में लागू किया गया है। उन्होंने नान-इरोडिबल मड प्लास्टर और अन्य कम-लागत उपायों का भी उल्लेख किया। उन्होंने सीबीआरआइ में पूर्ण-स्तरीय भूकंप और अग्नि परीक्षण सुविधाओं की सराहना की। इसके बाद उन्होंने डा. बिल्डिंग्स प्रदर्शनी गैलरी का दौरा किया। जहां उन्होंने प्रधान विज्ञानी डा. चंदन स्वरूप मीणा द्वारा विकसित सौर एयर कंडीशनर और जल हीटर प्रौद्योगिकी का निरीक्षण किया। यह नवाचार ऊर्जा-कुशल हीटिंग और स्पेस कंडीशनिंग समाधान देती है। जो स्वच्छ ऊर्जा को बढ़ावा देने के साथ-साथ कार्बन उत्सर्जन को कम करता है। इसके अलावा उन्होंने राष्ट्रीय भूकंप अभियांत्रिकी परीक्षण सुविधा, फायर रिसर्च टेस्ट सुविधा, कंस्ट्रक्शन टेक्नोलाजी डेमोंस्ट्रेशन पार्क का भी दौरा किया। उन्होंने संस्थान के लान में "सिंदूर" का पौधा रोपित किया। इसके अलावा ग्रामीण आवास संकलन "रुद्राक्ष" का विमोचन किया। सीबीआरआइ रुड़की के निदेशक प्रो. आर प्रदीप कुमार ने संस्थान के ग्रामीण विकास और भवन विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में नवाचारों में महत्वपूर्ण योगदान के बारे में बताया। कार्यक्रम का संचालन मुख्य विज्ञानी डी. एसके सिंह ने किया।

Published in Rashtriya Sahara

देश की पहली 3 डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास योजना शुरू

देश की पहली 3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास योजना शुरू

- ग्रामीण विकास राज्य मंत्री डा.पेम्मासानी चन्द्र शेखर ने किया उद्घाटन
- पीएमएवाई(ग्रामीण) के तहत 3.85 करोड़ मकान स्वीकृत 2.87 करोड़ पूर्ण
- केंद्रीय मंत्री ने रुद्राक्ष उत्तराखंड में ग्रामीण आवास पुस्तक का भी किया विमोचन

देहरादून/रुड़की(एसएनबी)। ग्रामीण विकास राज्य मंत्री डा.पेम्मासानी चन्द्र शेखर ने केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआरसीबीआरआई), रुड़की में देश का पहला 3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन किया। यह ऐतिहासिक नवाचार भारत की ग्रामीण आवास यात्रा का एक निर्णायक क्षण है, जो पारंपरिक ज्ञान को आधुनिकतम तकनीक से जोड़ता है।

वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं और हितधारकों को संबोधित करते हुए डा.पेम्मासानी चन्द्र शेखर ने कहा कि कच्ची दीवारों से 3डी प्रिंटिंग तक, भारत ने सभी के लिए सुरक्षित, मजबूत और टिकाऊघर उपलब्ध कराने की अटूट प्रतिबद्धता प्रदर्शित की है। यह 3डी प्रिंटेड घर केवल

3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन करते ग्रामीण विकास राज्य मंत्री डा.पेम्मासानी चन्द्र शेखर।

तकनीक नहीं हैं, बल्कि एक ऐसे भविष्य का प्रतीक हैं, जहाँ आवास सस्ता, अनुकूलनशील और पर्यावरण-अनुकूल होगा। डा. शेखर ने बताया कि योजना के अंतर्गत अब तक 3.85 करोड़ मकान स्वीकृत हुए हैं और 2.87 करोड़ पूरे हो चुके हैं।

स्वतंत्र आकलनों से यह भी सामने आया है कि ग्रामीण परिवारों की आय में 17 की वृद्धि हुई है, अस्पताल जाने के मामलों में 14 की कमी आई है और 72 घर महिलाओं के नाम पर हैं, जिससे महिला सशक्तिकरण और पारिवारिक कल्याण को मजबूती मिली है।

उद्घाटन समारोह में सीएसआईआरसीबीआर आई के वरिष्ठ वैज्ञानिक, आईआईटी रुड़की के संकाय सदस्य, ग्रामीण विकास मंत्रालय के प्रतिनिधि, सामाजिक संगठनों और विद्यार्थियों ने भाग लिया।

Published in Rashtriya Sahara

Union MoS inaugurates country's first 3D concrete printed rural house at CBRI

Union MoS inaugurates country's first 3D concrete printed rural house at CBRI

PIONEER NEWS SERVICE ■ Roorkee

The union Minister of State for Rural Development, Pemmasani Chandra Sekhar, inaugurated the country's first 3D concrete printed rural house at the Central Building Research Institute (CSIR–CBRI) here on Wednesday.

Speaking on the occasion, Sekhar observed, "From mud walls to 3D printing, India has demonstrated its unwavering commitment to providing safe, strong, and sustainable homes for all. These 3D printed houses are not merely about technology but they represent a future where housing is affordable, adaptable, and environmentally responsible."

Highlighting the achievements of Pradhan Mantri Awaas Yojana–Gramin (PMAY–G) the union minister said that 3.85 crore houses have been sanctioned and 2.87 crore completed. He informed that independent assessments show a 17 per cent rise in household incomes, 14 per cent decline in hospital visits and 72 per cent houses in the names of women, strengthening women's empowerment and family well-being.

Applauding CBRI's contributions, Sekhar noted the institute's 250 region-specific, disaster-resilient housing designs and innovations such as non-erodible mud plaster, low-cost strengthening technologies, and the two-pit pour-flush system that has enabled over five crore rural households to live with dignity under Swachh Bharat Mission.

On this occasion, the Minister also released a book titled 'Rudraksh – Rural Housing in Uttarakhand', which documents culturally rooted, sustainable, and climate-resilient housing practices of the State.

The union minister urged CBRI to pilot 100 cost-effective 3D printed houses to demonstrate scalability for rural India. He also urged the institute to focus on thermal comfort, renewable energy integration, climate resilience, and mason training to ensure scientific innovations directly empower rural families.

"Development is not just about building houses, but about creating homes filled with light, dignity, and self-reliance. With CBRI's scientific excellence aligned with the vision of Viksit Bharat 2047, we are laying the foundation for a stronger, healthier, and more sustainable rural India," he said.

Senior scientists of CSIR–CBRI, faculty of IIT Roorkee, representatives of the ministry of Rural Development, social organisations and students attended the programme.

Published in Pioneer

कच्ची दीवारों से 3डी प्रिंटिंग तक : सीबीआरआई ने ग्रामीण भारत के लिए सस्ते घरों की राह दिखाई : डॉ. पेम्मासानी चन्द्र शेखर

कच्ची दीवारों से 3डी प्रिंटिंग तक : सीबीआरआई ने ग्रामीण भारत के लिए सस्ते घरों की राह दिखाई : डॉ. पेम्मासानी चन्द्र शेखर

- डॉ. पेम्मासानी चन्द्र शेखर ने सीएसआईआर–सीबीआरआई, रुड़की में देश का पहला 3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का किया उद्घाटन
- पीएमएवाई–(ग्रामीण) के तहत 3.85 करोड़ मकान हुए स्वीकृत और 2.87 करोड़ हुए पूरे, करोड़ों ग्रामीण परिवारों को मिला सम्मान और सुरक्षा
- केंद्रीय मंत्री द्वारा "रुद्राक्ष – उत्तराखंड में ग्रामीण आवास" पुस्तक का भी किया गया विमोचन
- पीएमएवाई–ग्रामीण के तहत 100 किफायती 3डी प्रिंटेड घरों के पायलट प्रोजेक्ट का किया आह्वान

न्यूज वायरस नेटवर्क

रुड़की 02 अक्टूबर : ग्रामीण विकास राज्य मंत्री डॉ. पेम्मासानी चन्द्रशेखर ने केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर–सीबीआरआई), रुड़की में देश का पहला 3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन किया। यह ऐतिहासिक नवाचार भारत की ग्रामीण आवास यात्रा का एक निर्णायक क्षण है, जो पारंपरिक ज्ञान को आधुनिकतम तकनीक से जोड़ता है।

वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं और हितधारकों को संबोधित करते हुए डॉ. पेम्मासानी चंद्रशेखर ने कहा, "कच्ची दीवारों से 3डी प्रिंटिंग तक, भारत ने सभी के लिए सुरक्षित, मजबूत और टिकाऊ घर उपलब्ध कराने की अटूट प्रतिबद्धता प्रदर्शित की है। ये 3डी प्रिंटेड घर केवल तकनीक नहीं हैं, बल्कि एक ऐसे भविष्य का प्रतीक हैं, जहाँ आवास सस्ता, अनुकूलनशील और पर्यावरण-अनुकूल होगा।"

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में प्रधानमंत्री आवास योजना–ग्रामीण (पीएमएवाई–जी) की उपलब्धियों का उल्लेख करते हुए डॉ. शेखर ने बताया कि योजना के अंतर्गत अब तक 3.85 करोड़ मकान स्वीकृत हुए हैं और 2.87 करोड़ पूरे हो चुके हैं। स्वतंत्र आकलनों से यह भी सामने आया है कि ग्रामीण परिवारों की आय में 17% की वृद्धि हुई है, अस्पताल जाने के मामलों में 14% की कमी आई है और 72% घर महिलाओं के नाम पर हैं, जिससे महिला सशक्तिकरण और पारिवारिक कल्याण को मजबूती मिली है।

सीबीआरआई के योगदान की सराहना करते हुए उन्होंने कहा कि संस्थान ने 250 क्षेत्र-विशिष्ट आपदा-रोधी आवासीय डिजाइन तैयार किए हैं। इसके अतिरिक्त, गैर-क्षरणशील मिट्टी का पलस्तर, कम लागत वाली मजबूती तकनीकें और दो-गड्ढा शौचालय प्रणाली जैसे नवाचारों ने पाँच करोड़ से अधिक ग्रामीण परिवारों को स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत गरिमापूर्ण जीवन जीने में सक्षम बनाया है।

इस अवसर पर केंद्रीय राज्य मंत्री डॉ पेम्मासानी ने "रुद्राक्ष – उत्तराखंड में ग्रामीण आवास" नामक पुस्तक का विमोचन भी किया, जिसमें उत्तराखंड राज्य की सांस्कृतिक रूप से जुड़ी, टिकाऊ और जलवायु-संवेदनशील आवासीय परंपराओं का संकलन है।

भविष्य की दिशा पर बल देते हुए डॉ. शेखर ने सीबीआरआई से आग्रह किया कि वह 100 किफायती 3डी प्रिंटेड घरों का पायलट प्रोजेक्ट संचालित करे, जिससे ग्रामीण भारत के लिए इस तकनीक की व्यवहार्यता सिद्ध हो सके। उन्होंने संस्थान को तापीय आराम, नवीकरणीय ऊर्जा एकीकरण, जलवायु-रोधी डिजाइन और मिस्त्री प्रशिक्षण पर विशेष ध्यान देने को कहा ताकि वैज्ञानिक नवाचार सीधे ग्रामीण परिवारों को लाभान्वित कर सकें।

अपने संबोधन के अंत में उन्होंने कहा – "विकास केवल मकान बनाने तक सीमित नहीं है, बल्कि ऐसे घर बनाने के बारे में है जो रोशनी, गरिमा और आत्मनिर्भरता से भरे हों। सीबीआरआई की वैज्ञानिक उत्कृष्टता को विकसित भारत 2047 की दृष्टि से जोड़ते हुए हम एक मजबूत, स्वस्थ और टिकाऊ ग्रामीण भारत की नींव रख रहे हैं।"

उद्घाटन समारोह में सीएसआईआर–सीबीआरआई के वरिष्ठ वैज्ञानिक, आईआईटी रुड़की के संकाय सदस्य, ग्रामीण विकास मंत्रालय के प्रतिनिधि, सामाजिक संगठनों और विद्यार्थियों ने भाग लिया।

Published in News Virus

डॉ. पेम्मासानी चन्द्र शेखर ने सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की में देश का पहला उडी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का किया उद्धघाटन

डॉ. पेम्मासानी चन्द्र शेखर ने सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की में देश का पहला 3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का किया उद्धघाटन

सुमित तिवारी / उत्तराखंड प्रहरी ब्यूरो

रुड़की। ग्रामीण विकास राज्य मंत्री डॉ. पेम्मासानी चन्द्र शेखर ने आज केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर–सीबीआरआई), रुड़की में देश का पहला 3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्धघाटन किया। यह ऐतिहासिक नवाचार भारत की ग्रामीण आवास यात्रा का एक निर्णायक क्षण है, जो पारंपरिक ज्ञान को आधुनिकतम तकनीक से जोड़ता है।

वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं और हितधारकों को संबोधित करते हुए डॉ. पेम्मासानी चन्द्र शेखर ने कहा, "कच्ची दीवारों से 3डी प्रिंटिंग तक, भारत ने सभी के लिए सुरक्षित, मजबूत और टिकाऊ घर उपलब्ध कराने की अटूट प्रतिबद्धता प्रदर्शित की है। ये 3डी प्रिंटेड घर केवल तकनीक नहीं हैं, बल्कि एक ऐसे भविष्य का प्रतीक हैं, जहाँ आवास सस्ता, अनुकूलनशील और पर्यावरण-अनुकूल होगा।"

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में प्रधानमंत्री आवास योजना–ग्रामीण (पीएमएवाई–जी) की उपलब्धियों का उल्लेख करते हुए डॉ. शेखर ने बताया कि योजना के अंतर्गत अब तक 3.85 करोड़ मकान स्वीकृत हुए हैं और 2.87 करोड़ पूरे हो चुके हैं। स्वतंत्र आकलनों से यह भी सामने आया है कि ग्रामीण परिवारों की आय में 17% की वृद्धि हुई है, अस्पताल जाने के मामलों में 14% की कमी आई है और 72% घर महिलाओं के नाम पर हैं, जिससे महिला सशक्तिकरण और पारिवारिक कल्याण को मजबूती मिली है। सीबीआरआई के योगदान की सराहना करते हुए उन्होंने कहा कि संस्थान ने 250 क्षेत्र-विशिष्ट आपदा-रोधी आवासीय डिज़ाइन तैयार किए हैं। इसके अतिरिक्त, गैर-क्षरणशील मिट्टी का पलस्तर, कम लागत वाली मजबूती तकनीकें और दो-गड्ढा शौचालय प्रणाली जैसे नवाचारों ने पाँच करोड़ से अधिक ग्रामीण परिवारों को स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत गरिमापूर्ण जीवन जीने में सक्षम बनाया है। इस अवसर पर केंद्रीय राज्य मंत्री डॉ पेम्मासानी ने "रुद्राक्ष – उत्तराखंड में ग्रामीण आवास" नामक पुस्तक का विमोचन भी किया, जिसमें उत्तराखंड राज्य की सांस्कृतिक रूप से जुड़ी, टिकाऊ और जलवायु-संवेदनशील आवासीय परंपराओं का संकलन है।

भविष्य की दिशा पर बल देते हुए डॉ. शेखर ने सीबीआरआई से आग्रह किया कि वह 100 किफायती 3डी प्रिंटेड घरों का पायलट प्रोजेक्ट संचालित करें, जिससे ग्रामीण भारत के लिए इस तकनीक की व्यवहार्यता सिद्ध हो सके। उन्होंने संस्थान को तापीय आराम, नवीकरणीय ऊर्जा एकीकरण, जलवायु-रोधी डिज़ाइन और मिस्त्री प्रशिक्षण पर विशेष ताकि वैज्ञानिक नवाचार सीधे ग्रामीण परिवारों को लाभान्वित कर सकें। अपने संबोधन के अंत में उन्होंने कहा – "विकास केवल मकान बनाने तक सीमित नहीं है, बल्कि ऐसे घर बनाने के बारे में है जो रोशनी, गरिमा और आत्मनिर्भरता से भरे हों। सीबीआरआई की वैज्ञानिक उत्कृष्टता को विकसित भारत 2047 की दृष्टि से जोड़ते हुए हम एक मजबूत, स्वस्थ और टिकाऊ ग्रामीण भारत की नींव रख रहे हैं।" उद्धघाटन समारोह में सीएसआईआर–सीबीआरआई के वरिष्ठ वैज्ञानिक, आईआईटी रुड़की के संकाय सदस्य, ग्रामीण विकास मंत्रालय के प्रतिनिधि, सामाजिक संगठनों और विद्यार्थियों ने भाग लिया।

Published in Uttrakhand Prahari

रुड़की में देश का पहला 3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन

रुड़की में देश का पहला 3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन

अमर हिन्दुस्तान

रुड़की। ग्रामीण विकास राज्य मंत्री डॉ. पेम्मासानी चन्द्र शेखर ने केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान सीएसआईआर सीबीआरआई रुड़की में देश का पहला 3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन किया। यह ऐतिहासिक नवाचार भारत की ग्रामीण आवास यात्रा का एक निर्णायक क्षण है, जो पारंपरिक ज्ञान को आधुनिकतम तकनीक से जोड़ता है। वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं और हितधारकों को संबोधित करते हुए डॉ. पेम्मासानी चन्द्र शेखर ने कहा, "कच्ची दीवारों से 3डी प्रिंटिंग तक, भारत ने सभी के लिए सुरक्षित, मजबूत और टिकाऊ घर उपलब्ध कराने की अटूट प्रतिबद्धता प्रदर्शित की है। ये 3डी प्रिंटेड घर केवल

तकनीक नहीं हैं, बल्कि एक ऐसे भविष्य का प्रतीक हैं, जहां आवास सस्ता, अनुकूलनशील और पर्यावरण-अनुकूल होगा। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में प्रधानमंत्री आवास योजना–ग्रामीण पीएमएवाई की उपलब्धियों का उल्लेख करते हुए डॉ. शेखर ने बताया कि योजना के अंतर्गत अब तक 3.85 करोड़ मकान स्वीकृत हुए हैं और 2.87 करोड़ पूरे हो चुके हैं। स्वतंत्र आकलनों से यह भी सामने आया है कि ग्रामीण परिवारों की आय में 17 प्रतिशत की वृद्धि हुई है, अस्पताल जाने के मामलों में 14 प्रतिशत की कमी आई है और 72प्रतिशत घर महिलाओं के नाम पर हैं, जिससे महिला सशक्तिकरण और पारिवारिक कल्याण को मजबूती मिली है।

सीबीआरआई के योगदान की सराहना करते हुए उन्होंने कहा कि संस्थान ने 250 क्षेत्र-विशिष्ट आपदा-रोधी आवासीय डिजाइन तैयार किए हैं। इस अवसर पर केंद्रीय राज्य मंत्री डॉ पेम्मासानी ने रुद्राक्ष उत्तराखंड में ग्रामीण आवास नामक पुस्तक का विमोचन भी किया जिसमें उत्तराखंड राज्य की सांस्कृतिक रूप से जुड़ी, टिकाऊ और जलवायु-संवेदनशील आवासीय परंपराओं का संकलन है।भविष्य की दिशा पर बल देते हुए डॉ. शेखर ने सीबीआरआई से आग्रह किया कि वह 100 किफायती 3डी प्रिंटेड घरों का पायलट प्रोजेक्ट संचालित करें, जिससे ग्रामीण भारत के लिए इस तकनीक की व्यवहार्यता सिद्ध हो सके।

उन्होंने संस्थान को तापीय आराम, नवीकरणीय ऊर्जा एकीकरण, जलवायु-रोधी डिजाइन और मिस्त्री प्रशिक्षण पर विशेष ध्यान देने को कहा ताकि वैज्ञानिक नवाचार सीधे ग्रामीण परिवारों को लाभान्वित कर सकें।अपने संबोधन के अंत में उन्होंने कहा विकास केवल मकान बनाने तक सीमित नहीं है।

बल्कि ऐसे घर बनाने के बारे में है जो रोशनी, गरिमा और आत्मनिर्भरता से भरे हों। सीबीआरआई की वैज्ञानिक उत्कृष्टता को विकसित भारत 2047 की दृष्टि से जोड़ते हुए हम एक मजबूत, स्वस्थ और टिकाऊ ग्रामीण भारत की नींव रख रहे हैं।

Published in Amar Hindustan

Dr Pemmasani Chandra Sekhar inaugurates Nation's First 3D Concrete Printed Rural House At CSIR–CBRI, Roorkee

Dr Pemmasani Chandra Sekhar inaugurates Nation's First 3D Concrete Printed Rural House At CSIR–CBRI, Roorkee

- **From Mud Walls to 3D Printing: CBRI Pioneers Affordable Homes for Rural India : Dr. Pemmasani**
- **Over 3.85 crore houses sanctioned and 2.87 crore completed under PMAY–G, bringing dignity and security to crores of rural families**
- **CBRI develops 250 region-specific, disaster-resilient housing designs; innovates non-erodible mud plaster, low-cost strengthening techniques, and two-pit pour-flush toilets under Swachh Bharat Mission**
- **Book "Rudraksh – Rural Housing in Uttarakhand" released by Union Minister**
- **Call for piloting 100 cost-effective 3D printed houses under PMAY–G**

Roorkee (The Hawk): Union Minister of State for Rural Development, Dr. Pemmasani Chandra Sekhar, inaugurated the country's first 3D concrete printed rural house at the Central Building Research Institute (CSIR–CBRI), Roorkee today. The landmark innovation marks a defining moment in India's rural housing journey, bridging traditional knowledge with cutting-edge technology.

Addressing scientists, researchers, and stakeholders, Dr. Sekhar observed, "From mud walls to 3D printing, India has demonstrated its unwavering commitment to providing safe, strong, and sustainable homes for all. These 3D printed houses are not merely about technology—they represent a future where housing is affordable, adaptable, and environmentally responsible."

Highlighting the achievements of Pradhan Mantri Awaas Yojana–Gramin (PMAY–G) under the leadership of Prime Minister Shri Narendra Modi, Dr. Sekhar stated that 3.85 crore houses have been sanctioned and 2.87 crore completed. He shared that independent assessments show a 17% rise in household incomes, 14% decline in hospital visits, and 72% houses in the names of women, strengthening women's empowerment and family well-being.

Applauding CBRI's contributions, Dr. Sekhar noted the institute's 250 region-specific, disaster-resilient housing designs and innovations such as non-erodible mud plaster, low-cost strengthening technologies, and the two-pit pour-flush system that has enabled over 5 crore rural households to live with dignity under Swachh Bharat Mission.

On this occasion, the Minister also released a book titled "Rudraksh – Rural Housing in Uttarakhand", which documents culturally rooted, sustainable, and climate-resilient housing practices of the hill state.

Looking ahead, Dr. Sekhar urged CBRI to pilot 100 cost-effective 3D printed houses to demonstrate scalability for rural India. He also urged the institute to focus on thermal comfort, renewable energy integration, climate resilience, and mason training to ensure scientific innovations directly empower rural families.

Concluding his address, the Minister said, "Development is not just about building houses, but about creating homes filled with light, dignity, and self-reliance. With CBRI's scientific excellence aligned with the vision of Viksit Bharat 2047, we are laying the foundation for a stronger, healthier, and more sustainable rural India."

The inauguration ceremony was attended by senior scientists of CSIR–CBRI, faculty of IIT Roorkee, representatives of the Ministry of Rural Development, social organisations, and students.

Published in The Hawk

डॉ. पेम्मासानी चन्द्र शेखर ने सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की में देश का पहला 3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का किया उद्घाटन

डॉ. पेम्मासानी चन्द्र शेखर ने सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की में देश का पहला 3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का किया उद्घाटन

कच्ची दीवारों से 3डी प्रिंटिंग तक : सीबीआरआई ने ग्रामीण भारत के लिए सस्ते घरों की राह दिखाई : डॉ. पेम्मासानी

इंडिया वार्ता ब्यूरो

रुड़की : ग्रामीण विकास राज्य मंत्री डॉ. पेम्मासानी चन्द्र शेखर ने आज केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-सीबीआरआई), रुड़की में देश का पहला 3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन किया। यह ऐतिहासिक नवाचार भारत की ग्रामीण आवास यात्रा का एक निर्णायक क्षण है, जो पारंपरिक ज्ञान को आधुनिकतम तकनीक से जोड़ता है।

वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं और हितधारकों को संबोधित करते हुए डॉ. पेम्मासानी चन्द्र शेखर ने कहा, कच्ची दीवारों से 3डी प्रिंटिंग तक, भारत ने सभी के लिए सुरक्षित, मजबूत और टिकाऊ घर उपलब्ध कराने की अटूट प्रतिबद्धता प्रदर्शित की है। ये 3डी प्रिंटेड घर केवल तकनीक नहीं हैं, बल्कि एक ऐसे भविष्य का प्रतीक हैं, जहाँ आवास सस्ता, अनुकूलनशील और पर्यावरण-अनुकूल होगा।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में प्रधानमंत्री आवास योजना-ग्रामीण (पीएमएवाई-जी) की उपलब्धियों का उल्लेख करते हुए डॉ. शेखर ने बताया कि योजना के अंतर्गत अब तक 3.85 करोड़ मकान स्वीकृत हुए हैं और 2.87 करोड़ पूरे हो चुके हैं। स्वतंत्र आकलनों से यह भी सामने आया है कि ग्रामीण परिवारों की आय में 17% की वृद्धि हुई है, अस्पताल जाने के मामलों में 14% की कमी आई है और 72% घर महिलाओं के नाम पर हैं, जिससे महिला सशक्तिकरण और पारिवारिक कल्याण को मजबूती मिली है।

सीबीआरआई के योगदान की सराहना करते हुए उन्होंने कहा कि संस्थान ने 250 क्षेत्र-विशिष्ट आपदा-रोधी आवासीय डिज़ाइन तैयार किए हैं। इसके अतिरिक्त, गैर-क्षरणशील मिट्टी का पलस्तर, कम लागत वाली मजबूती तकनीकें और दो-गड्ढा शौचालय प्रणाली जैसे नवाचारों ने पाँच करोड़ से अधिक ग्रामीण परिवारों को स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत गरिमापूर्ण जीवन जीने में सक्षम बनाया है।

इस अवसर पर केंद्रीय राज्य मंत्री डॉ पेम्मासानी ने रुद्राक्ष - उत्तराखंड में ग्रामीण आवास नामक पुस्तक का विमोचन भी किया, जिसमें उत्तराखंड राज्य की सांस्कृतिक रूप से जुड़ी, टिकाऊ और जलवायु-संवेदनशील आवासीय परंपराओं का संकलन है।

भविष्य की दिशा पर बल देते हुए डॉ. शेखर ने सीबीआरआई से आग्रह किया कि वह 100 किफायती 3डी प्रिंटेड घरों का पायलट प्रोजेक्ट संचालित करें, जिससे ग्रामीण भारत के लिए इस तकनीक की व्यवहार्यता सिद्ध हो सके। उन्होंने संस्थान को तापीय आराम, नवीकरणीय ऊर्जा एकीकरण, जलवायु-रोधी डिज़ाइन और मिस्त्री प्रशिक्षण पर विशेष ध्यान देने को कहा ताकि वैज्ञानिक नवाचार सीधे ग्रामीण परिवारों को लाभान्वित कर सकें। अपने संबोधन के अंत में उन्होंने कहा - विकास केवल मकान बनाने तक सीमित नहीं है, बल्कि ऐसे घर बनाने के बारे में है जो रोशनी, गरिमा और आत्मनिर्भरता से भरे हों। सीबीआरआई की वैज्ञानिक उत्कृष्टता को विकसित भारत 2047 की दृष्टि से जोड़ते हुए हम एक मजबूत, स्वस्थ और टिकाऊ ग्रामीण भारत की नींव रख रहे हैं।

उद्घाटन समारोह में सीएसआईआर-सीबीआरआई के वरिष्ठ वैज्ञानिक, आईआईटी रुड़की के संकाय सदस्य, ग्रामीण विकास मंत्रालय के प्रतिनिधि, सामाजिक संगठनों और विद्यार्थियों ने भाग लिया।

"ग्रीन दून - क्लीन दून" विषय पर विशाल दौड़ एवं स्लोगन प्रतियोगिता का आयोजन

Published in India Warta

اجراءرسم کا کتاب رہائش، دیہی میں اتراکھنڈ درکش رو

’رودرکش-اتراکھنڈ میں دیہی رہائش‘ کتاب کا رسم اجراء

ڈاکٹر پیمسانی چندر شیکھر نے CBRI-CSIR، روڑکی میں ملک کے پہلے 3D کنکریٹ پرنٹ شدہ دیہی گھر کا افتتاح کیا

روڑکی: دیہی ترقی کے وزیر مملکت ڈاکٹر پیمسانی چندر شیکھر نے آج روڑکی کے سنٹرل بلڈنگ ریسرچ انسٹی ٹیوٹ (CBRI-CSIR) میں ملک کے پہلے 3D کنکریٹ پرنٹ شدہ دیہی گھر کا افتتاح کیا۔ یہ تاریخی اختراع ہندوستان کے دیہی رہائشی سفر میں ایک اہم لمحے کی نشاندہی کرتی ہے، جو روایتی علم کو جدید ٹیکنالوجی کے ساتھ مربوط کرتی ہے۔ سائنسدانوں، محققین، اور اسٹیک ہولڈرز سے خطاب کرتے ہوئے، ڈاکٹر پیمسانی چندر شیکھر نے کہا، ”مٹی کی دیواروں سے لے کر 3D پرنٹنگ تک، ہندوستان نے سب کے لیے محفوظ، مضبوط اور پائیدار مکانات فراہم کرنے کے لیے ایک غیر متزلزل عزم کا مظاہرہ کیا ہے۔ یہ 3D پرنٹ شدہ گھر صرف ٹیکنالوجی نہیں ہیں، بلکہ مستقبل کی ایک علامت ہیں، جہاں ایک قابل اعتماد اور قابل اعتماد مستقبل ہے۔“ وزیر اعظم جناب نریندر مودی کی قیادت میں پردھان منتری آواس یوجنا گرامین (G-PMAY) کی کامیابیوں پر روشنی ڈالتے ہوئے، ڈاکٹر شیکھر نے کہا کہ اس اسکیم کے تحت اب تک 38.5 ملین مکانات کو منظوری دی گئی ہے، اور 28.7 ملین مکمل ہو چکے ہیں۔ آزادانہ جائزوں سے دیہی گھریلو آمدنی میں 17 فیصد اضافہ، ہسپتالوں میں داخل ہونے میں 14 فیصد کمی اور 72 فیصد گھروں کی ملکیت خواتین کی ہے، جس سے خواتین کی بااختیاریت اور خاندانی بہبود کو تقویت ملی ہے۔ سی بی آر آئی کے تعاون کی تعریف کرتے ہوئے، انہوں نے کہا کہ انسٹی ٹیوٹ نے 250 علاقائی مخصوص تباہی سے بچنے والے مکانات کے ڈیزائن تیار کیے ہیں۔ مزید برآں، اختراعات جیسے نان ریزیوئڈ پلاسٹرنگ، کم لاگت کنک بنانے کی تکنیک، اور ٹوپٹ ٹوائلٹ سسٹم نے 50 ملین سے زیادہ دیہی خاندانوں کو سوچھ بھارت مشن کے تحت باوقار زندگی گزارنے کے قابل بنایا ہے۔

اس موقع پر مرکزی وزیر مملکت ڈاکٹر پیمسانی نے کتاب ”رودرکش - اتراکھنڈ میں دیہی رہائش“ کا بھی اجراء کیا جو ریاست اتراکھنڈ کی ثقافتی طور پر جڑی ہوئی، پائیدار، اور آب و ہوا سے متعلق حساس ہاؤسنگ روایات کو مرتب کرتی ہے۔ مستقبل کی سمت پر زور دیتے ہوئے، ڈاکٹر شیکھر نے CBRI پر زور دیا کہ وہ 100 سستی 3D پرنٹ شدہ مکانات کا پائلٹ پروجیکٹ کرے تاکہ دیہی ہندوستان کے لیے اس ٹیکنالوجی کی فزیبلٹی کا مظاہرہ کیا جا سکے۔ انہوں نے انسٹی ٹیوٹ پر زور دیا کہ وہ تھرمل سکون، قابل تجدید توانائی کے انضمام، آب و ہوا کے لیے لچکدار ڈیزائن، اور میسن کی تربیت پر توجہ مرکوز کرے تاکہ سائنسی ایجادات سے دیہی خاندانوں کو براہ راست فائدہ پہنچ سکے۔ اپنے خطاب کو ختم کرتے ہوئے، انہوں نے کہا، ”ترقی صرف مکانات بنانے کے بارے میں نہیں ہے، بلکہ ایسے گھروں کی تعمیر کے بارے میں ہے جو روشنی، وقار اور خود انحصاری سے بھرے ہوں۔ CBRI-CSIR کے سینئر سائنسدان، IIT روڑکی کے فیکلٹی ممبران، دیہی ترقی کی وزارت کے نمائندے، سماجی تنظیموں اور طلباء نے افتتاحی تقریب میں شرکت کی۔

Published in Sahafat

देश के पहले 3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन

डॉ. पेम्मासानी चन्द्र शेखर ने सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की में किया

देश के पहले 3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन

नागरिक ब्यूरो

रुड़की। ग्रामीण विकास राज्य मंत्री डॉ. पेम्मासानी चन्द्र शेखर ने आज केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-सीबीआरआई), रुड़की में देश का पहला 3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन किया। यह ऐतिहासिक नवाचार भारत की ग्रामीण आवास यात्रा का एक निर्णायक क्षण है, जो पारंपरिक ज्ञान को आधुनिकतम तकनीक से जोड़ता है।

वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं और हितधारकों को संबोधित करते हुए डॉ. पेम्मासानी चन्द्र शेखर ने कहा, "कच्ची दीवारों से 3डी प्रिंटिंग तक, भारत ने सभी के लिए सुरक्षित, मजबूत और टिकाऊ घर उपलब्ध कराने की अटूट प्रतिबद्धता प्रदर्शित की है। ये 3डी प्रिंटेड घर केवल तकनीक नहीं हैं, बल्कि एक ऐसे भविष्य का प्रतीक हैं, जहाँ आवास सस्ता, अनुकूलनशील और पर्यावरण-अनुकूल होगा।"

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में प्रधानमंत्री आवास योजनाग्रामीण (पीएमएवाईग्र जी) की उपलब्धियों का उल्लेख करते हुए डॉ. शेखर ने बताया कि योजना के अंतर्गत अब तक 3.85 करोड़ मकान स्वीकृत हुए हैं और 2.87 करोड़ पूरे हो चुके हैं। स्वतंत्र आकलनों से यह भी सामने आया है कि ग्रामीण परिवारों की आय में 17% की वृद्धि हुई है, अस्पताल जाने के मामलों में 14% की कमी आई है और 72% घर महिलाओं के नाम पर हैं, जिससे महिला सशक्तिकरण और पारिवारिक कल्याण को मजबूती मिली है।

सीबीआरआई के योगदान की सराहना करते हुए उन्होंने कहा कि संस्थान ने 250 क्षेत्र-विशिष्ट आपदा-रोधी आवासीय डिजाइन तैयार किए हैं। इसके अतिरिक्त, गैर-क्षरणशील मिट्टी का पलस्तर, कम लागत वाली मजबूती तकनीकें और दो-गड्ढा शौचालय प्रणाली जैसे नवाचारों ने पाँच करोड़ से अधिक ग्रामीण परिवारों को स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत गरिमापूर्ण जीवन जीने में सक्षम बनाया है।

इस अवसर पर केंद्रीय राज्य मंत्री डॉ पेम्मासानी ने "रुद्राक्ष ख उत्तराखंड में ग्रामीण आवास" नामक पुस्तक का विमोचन भी किया, जिसमें उत्तराखंड राज्य की सांस्कृतिक रूप से जुड़ी, टिकाऊ और जलवायु-संवेदनशील आवासीय परंपराओं का संकलन है। भविष्य की दिशा पर बल देते हुए डॉ. शेखर ने सीबीआरआई से आग्रह किया कि वह 100 किफायती 3डी प्रिंटेड घरों का पायलट प्रोजेक्ट संचालित करें, जिससे ग्रामीण भारत के लिए इस तकनीक की व्यवहार्यता सिद्ध हो सके। उन्होंने संस्थान को तापीय आराम, नवीकरणीय ऊर्जा एकीकरण, जलवायु-रोध ी डिजाइन और मिस्त्री प्रशिक्षण पर विशेष ध्यान देने को कहा ताकि वैज्ञानिक नवाचार सीधे ग्रामीण परिवारों को लाभान्वित कर सकें। अपने संबोधन के अंत में उन्होंने कहा ख "विकास केवल मकान बनाने तक सीमित नहीं है, बल्कि ऐसे घर बनाने के बारे में है जो रोशनी, गरिमा और आत्मनिर्भरता से भरे हों। सीबीआरआई की वैज्ञानिक उत्कृष्टता को विकसित भारत 2047 की दृष्टि से जोड़ते हुए हम एक मजबूत, स्वस्थ और टिकाऊ ग्रामीण भारत की नींव रख रहे हैं। उद्घाटन समारोह में सीएसआई आरख सीबीआरआई के वरिष्ठ वैज्ञानिक, आईआईटी रुड़की के संकाय सदस्य, ग्रामीण विकास मंत्रालय के प्रतिनिधि, सामाजिक संगठनों और विद्यार्थियों ने भाग लिया।

Published in Param Nagrik

ऐतिहासिक कदमः रुड़की में देश के पहले 3डी प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन

ऐतिहासिक कदम: रुड़की में देश के पहले 3डी प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन

रुड़की। ग्रामीण विकास राज्य मंत्री, डॉ. पेम्मासानी चन्द्र शेखर ने आज केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-सीबीआरआई), रुड़की में देश के पहले 3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन किया। यह ऐतिहासिक नवाचार भारत की ग्रामीण आवास यात्रा में एक महत्वपूर्ण मोड़ है, जो पारंपरिक ज्ञान को आधुनिकतम तकनीक से जोड़कर सस्ते, मजबूत और टिकाऊ घर उपलब्ध कराने की दिशा में नई राह दिखाएगा।

वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं और हितधारकों को संबोधित करते हुए डॉ. पेम्मासानी चन्द्र शेखर ने इस उपलब्धि को सराहा। उन्होंने कहा, कच्ची दीवारों से 3डी प्रिंटिंग तक, भारत ने सभी के लिए सुरक्षित, मजबूत और टिकाऊ घर उपलब्ध कराने की अटूट प्रतिबद्धता प्रदर्शित की है। उन्होंने जोर देकर कहा कि ये 3डी प्रिंटेड घर केवल तकनीक नहीं हैं, बल्कि एक ऐसे भविष्य का प्रतीक हैं, जहाँ आवास सस्ता, अनुकूलनशील और पर्यावरण-अनुकूल होगा। केंद्रीय मंत्री ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में चल रही प्रधानमंत्री आवास योजना-ग्रामीण (पीएमएवाई-जी) की सफलताओं का उल्लेख किया। उन्होंने बताया कि इस योजना के अंतर्गत अब तक 3.85 करोड़ मकान स्वीकृत हुए हैं और 2.87 करोड़ पूरे हो चुके हैं। उन्होंने स्वतंत्र आकलनों का हवाला देते हुए बताया कि इस योजना से ग्रामीण परिवारों की आय में 17 प्रतिशत की वृद्धि हुई है, जबकि 72 प्रतिशत घर महिलाओं के नाम पर हैं, जिससे महिला सशक्तिकरण को मजबूती मिली है। डॉ. शेखर ने ग्रामीण आवास में सीएसआईआर-सीबीआरआई के महत्वपूर्ण योगदान की सराहना की। उन्होंने बताया कि संस्थान ने अब तक 250 क्षेत्र-विशिष्ट आपदा-रोधी आवासीय डिजाइन तैयार किए हैं। इसके अलावा, गैर-क्षरणशील मिट्टी का पलस्तर, कम लागत वाली मजबूती तकनीकें और स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत दो-गड्ढा शौचालय प्रणाली जैसे नवाचारों से पाँच करोड़ से अधिक ग्रामीण परिवारों को लाभ मिला है।

इस अवसर पर, केंद्रीय राज्य मंत्री ने रुद्राक्ष-उत्तराखंड में ग्रामीण आवास नामक पुस्तक का विमोचन भी किया।

इस पुस्तक में उत्तराखंड राज्य की सांस्कृतिक रूप से जुड़ी, टिकाऊ और जलवायु-संवेदनशील आवासीय परंपराओं का विस्तृत संकलन है। भविष्य की योजनाओं पर बल देते हुए डॉ. पेम्मासानी ने सीबीआरआई से आग्रह किया कि वह 100 किफायती 3डी प्रिंटेड घरों का पायलट प्रोजेक्ट संचालित करें, ताकि ग्रामीण भारत के लिए इस अत्याधुनिक तकनीक की व्यावहारिकता सिद्ध हो सके। उन्होंने संस्थान को तापीय आराम, नवीकरणीय ऊर्जा एकीकरण, जलवायु-रोधी डिज़ाइन और मिस्त्री प्रशिक्षण पर विशेष ध्यान देने को कहा, जिससे वैज्ञानिक नवाचार सीधे ग्रामीण परिवारों को लाभान्वित कर सकें। अपने संबोधन के अंत में उन्होंने कहा कि, विकास केवल मकान बनाने तक सीमित नहीं है, बल्कि ऐसे घर बनाने के बारे में है जो रोशनी, गरिमा और आत्मनिर्भरता से भरे हों। उद्घाटन समारोह में सीएसआईआर-सीबीआरआई के वरिष्ठ वैज्ञानिक, आईआईटी रुड़की के संकाय सदस्य, ग्रामीण विकास मंत्रालय के प्रतिनिधि, सामाजिक संगठनों और विद्यार्थियों ने बड़ी संख्या में भाग लिया।

Published in Vichar Suchak

Dr PC Sekhar inaugurates nation's 1st 3D Concrete Printed Rural House at CSIR-CBRI

Dehradun | Dehradun, 2 Oct, 2025 | www.garhwalpost.in | Garhwal Post 11

Dr PC Sekhar inaugurates nation's 1st 3D Concrete Printed Rural House at CSIR–CBRI

Garhwal Post Bureau

ROORKEE, 1 Oct: Union Minister of State for Rural Development, Dr Pemmasani Chandra Sekhar, inaugurated the country's first 3D concrete printed rural house at the Central Building Research Institute (CSIR–CBRI), Roorkee, today. The landmark innovation marks a defining moment in India's rural housing journey, bridging traditional knowledge with cutting-edge technology.

Addressing scientists, researchers, and stakeholders, Dr Sekhar observed, "From mud walls to 3D printing, India has demonstrated its unwavering commitment to providing safe, strong, and sustainable homes for all. These 3D printed houses are not merely about technology—they represent a future where housing is affordable, adaptable, and environmentally responsible."

Highlighting the achievements of Pradhan Mantri Awaas Yojana–Gramin (PMAY–G) under the leadership of Prime Minister Shri Narendra Modi, Dr Sekhar stated that 3.85 crore houses have been sanctioned, and 2.87 crore completed. He shared that independent assessments show a 17% rise in household incomes, 14% decline in hospital visits, and 72% houses in the names of women, strengthening women's empowerment and family well-being.

Applauding CBRI's contributions, Dr Sekhar noted the institute's 250 region-specific, disaster-resilient housing designs and innovations such as non-erodible mud plaster, low-cost strengthening technologies, and the two-pit pour-flush system that has enabled over 5 crore rural households to live with dignity under Swachh Bharat Mission.

On this occasion, the Minister also released a book titled "Rudraksh – Rural Housing in Uttarakhand", which documents culturally rooted, sustainable, and climate-resilient housing practices of the hill state.

Looking ahead, Dr Sekhar urged CBRI to pilot 100 cost-effective 3D printed houses to demonstrate scalability for rural India. He also urged the institute to focus on thermal comfort, renewable energy integration, climate resilience, and mason training to ensure scientific innovations directly empower rural families.

Concluding his address, the Minister said, "Development is not just about building houses, but about creating homes filled with light, dignity, and self-reliance. With CBRI's scientific excellence aligned with the vision of Viksit Bharat 2047, we are laying the foundation for a stronger, healthier, and more sustainable rural India."

The inauguration ceremony was attended by senior scientists of CSIR–CBRI, faculty of IIT Roorkee, representatives of the Ministry of Rural Development, social organisations, and students.

Published in Garhwal Post

सस्ते और पर्यावरण अनुकूल होंगे 3डी कंक्रीट प्रिंटेड घर

सस्ते और पर्यावरण अनुकूल होंगे 3डी कंक्रीट प्रिंटेड घर

केन्द्रीय राज्य मंत्री डॉ. पेम्मासानी ने किया देश के पहले ग्रामीण आवास का उद्घाटन

रुड़की। केन्द्रीय ग्रामीण विकास राज्य मंत्री डॉ. पेम्मासानी चन्द्रशेखर ने आज केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान रुड़की में देश के पहले 3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन किया।

वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं और हितधारकों को संबोधित करते हुए डॉ. चन्द्रशेखर ने कहा, कच्ची दीवारों से 3डी प्रिंटिंग तक भारत ने सभी के लिए सुरक्षित, मजबूत और टिकाऊ घर उपलब्ध कराने की प्रतिबद्धता प्रदर्शित की है। ये 3डी प्रिंटेड घर केवल तकनीक नहीं हैं, बल्कि एक ऐसे भविष्य का प्रतीक हैं, जहां आवास सस्ते और पर्यावरण अनुकूल होंगे। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में प्रधानमंत्री आवास योजना-ग्रामीण की उपलब्धियों का उल्लेख करते हुए उन्होंने बताया कि योजना के अंतर्गत अब तक 3.85 करोड़ मकान स्वीकृत हुए हैं और 2.87 करोड़ पूरे हो चुके हैं। स्वतंत्र आकलनों में यह भी सामने आया है कि ग्रामीण परिवारों की आय में 17 प्रतिशत की वृद्धि हुई है, अस्पताल जाने के मामलों में 14 प्रतिशत की कमी आई है और 72 प्रतिशत घर महिलाओं के नाम पर हैं, जिससे महिला सशक्तिकरण और पारिवारिक कल्याण को मजबूती मिली है। सीबीआरआई के योगदान की सराहना करते हुए उन्होंने कहा कि संस्थान ने 250 क्षेत्र-विशिष्ट आपदा-रोधी आवासीय डिज़ाइन तैयार किए हैं। इसके अतिरिक्त गैर-क्षरणशील मिट्टी का प्लस्तर, कम लागत वाली मजबूती तकनीकें और दो-गड्ढा शौचालय प्रणाली जैसे नवाचारों ने पांच करोड़ से अधिक ग्रामीण परिवारों को स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत गरिमापूर्ण जीवन जीने में सक्षम बनाया है।

डॉ. पेम्मासानी ने रुद्राक्ष-उत्तराखंड में ग्रामीण आवास नामक पुस्तक का विमोचन भी किया, जिसमें उत्तराखंड की सांस्कृतिक रूप से जुड़ी, टिकाऊ और जलवायु-संवेदनशील आवासीय परंपराओं का संकलन है। भविष्य की दिशा पर बल देते हुए उन्होंने सीबीआरआई से आग्रह किया कि वह 100 किफायती 3डी प्रिंटेड घरों का पायलट प्रोजेक्ट संचालित करें, जिससे ग्रामीण भारत के लिए इस तकनीक की व्यवहार्यता सिद्ध हो सके। उन्होंने संस्थान को तापीय आराम, नवीकरणीय ऊर्जा एकीकरण, जलवायु-रोधी डिजाइन और मिस्त्री प्रशिक्षण पर विशेष ध्यान देने को कहा, ताकि वैज्ञानिक नवाचार सीधे ग्रामीण परिवारों को लाभान्वित कर सकें।

उन्होंने कहा कि विकास केवल मकान बनाने तक सीमित नहीं है, बल्कि ऐसे घर बनाने के बारे में है जो रोशनी, गरिमा और आत्मनिर्भरता से भरे हों। सीबीआरआई की वैज्ञानिक उत्कृष्टता को विकसित भारत 2047 की दृष्टि से जोड़ते हुए हम एक मजबूत, स्वस्थ और टिकाऊ ग्रामीण भारत की नींव रख रहे हैं। समारोह में सीएसआईआर-सीबीआरआई के वरिष्ठ वैज्ञानिक, आईआईटी रुड़की के संकाय सदस्य, ग्रामीण विकास मंत्रालय के प्रतिनिधि, सामाजिक संगठनों और विद्यार्थियों ने भाग लिया।

Published in Uttar Ujala

डॉ. पेम्मासानी ने सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की में देश का पहला 3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का किया उद्धघाटन

डॉ. पेम्मासानी ने सीएसआईआर–सीबीआरआई, रुड़की में देश का पहला 3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का किया उद्धघाटन

पीआईबी

देहरादून/रुड़की १ अक्टूबर । ग्रामीण विकास राज्य मंत्री डॉ. पेम्मासानी चन्द्र शेखर ने आज केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआरख्रसीबीआरआई), रुड़की में देश का पहला ३डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्धघाटन किया। यह ऐतिहासिक नवाचार भारत की ग्रामीण आवास यात्रा का एक निर्णायक क्षण है, जो पारंपरिक ज्ञान को आधुनिकतम तकनीक से जोड़ता है।

वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं और हितधारकों को संबोधित करते हुए डॉ. पेम्मासानी चन्द्र शेखर ने कहा, "कच्ची दीवारों से ३डी प्रिंटिंग तक, भारत ने सभी के लिए सुरक्षित, मजबूत और टिकाऊ घर उपलब्ध कराने की अटूट प्रतिबद्धता प्रदर्शित की है। ये ३डी प्रिंटेड घर केवल तकनीक नहीं हैं, बल्कि एक ऐसे भविष्य का प्रतीक हैं, जहाँ आवास सस्ता, अनुकूलनशील और पर्यावरण-अनुकूल होगा।"प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में प्रधानमंत्री आवास योजनाख्रग्रामीण (पीएमएवाईख्रजी) की उपलब्धियों का उल्लेख करते हुए डॉ. शेखर ने बताया कि योजना के अंतर्गत अब तक ३.८५ करोड़ मकान स्वीकृत हुए हैं और २.८७ करोड़ पूरे हो चुके हैं। स्वतंत्र आकलनों

पीएमएवाई-(ग्रामीण) के तहत 3.85 करोड़ मकान हुए स्वीकृत और 2.87 करोड़ हुए पूरे, करोड़ों ग्रामीण परिवारों को मिला सम्मान और सुरक्षा ।
सीबीआरआई ने विकसित किए 250 क्षेत्र-विशिष्ट आपदा-रोधी आवासीय डिजाइन; नवाचार में गैर-क्षरणशील मिट्टी की पलस्तर, कम लागत वाली मजबूती तकनीकें और स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत दो-गड्ढा शौचालय प्रणाली ।
केंद्रीय मंत्री द्वारा "रुद्राक्ष ख्र उत्तराखंड में ग्रामीण आवास" पुस्तक का भी किया गया विमोचन ।
पीएमएवाई-ग्रामीण के तहत 100 किफायती 3डी प्रिंटेड घरों के पायलट प्रोजेक्ट का किया आह्वान ।

से यह भी सामने आया है कि ग्रामीण परिवारों की आय में १७% की वृद्धि हुई है, अस्पताल जाने के मामलों में १४% की कमी आई है और ७२% घर महिलाओं के नाम पर हैं, जिससे महिला सशक्तिकरण और पारिवारिक कल्याण को मजबूती मिली है।

सीबीआरआई के योगदान की सराहना करते हुए उन्होंने कहा कि संस्थान ने २५० क्षेत्र-विशिष्ट आपदा-रोधी आवासीय डिजाइन तैयार किए हैं। इसके अतिरिक्त, गैर-क्षरणशील मिट्टी का पलस्तर, कम लागत वाली मजबूती तकनीकें और दो-गड्ढा शौचालय प्रणाली जैसे नवाचारों ने पाँच करोड़ से अधिक ग्रामीण परिवारों को स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत गरिमापूर्ण जीवन जीने में सक्षम बनाया है।

इस अवसर पर केंद्रीय राज्य मंत्री डॉ पेम्मासानी ने "रुद्राक्ष ख्र उत्तराखंड में ग्रामीण आवास" नामक पुस्तक का विमोचन भी किया, जिसमें उत्तराखंड राज्य की सांस्कृतिक रूप से जुड़ी, टिकाऊ और जलवायु-संवेदनशील आवासीय परंपराओं का संकलन है। भविष्य की दिशा पर बल देते हुए डॉ. शेखर ने सीबीआरआई से आग्रह किया कि वह १०० किफायती ३डी प्रिंटेड घरों का पायलट प्रोजेक्ट संचालित करें, जिससे ग्रामीण भारत के लिए इस तकनीक की व्यवहार्यता सिद्ध हो सके। उन्होंने संस्थान को तापीय आराम, नवीकरणीय ऊर्जा एकीकरण, जलवायु-रोधी डिजाइन और मिस्त्री प्रशिक्षण पर विशेष ध्यान देने को कहा ताकि वैज्ञानिक नवाचार सीध ग्रामीण परिवारों को लाभान्वित कर सकें। अपने संबोधन के अंत में उन्होंने कहा ख्र "विकास केवल मकान बनाने तक सीमित नहीं है, बल्कि ऐसे घर बनाने के बारे में है जो रोशनी, गरिमा और आत्मनिर्भरता से भरे हों। सीबीआरआई की वैज्ञानिक उत्कृष्टता को विकसित भारत २०४७ की दृष्टि से जोड़ते हुए हम एक मजबूत, स्वस्थ और टिकाऊ ग्रामीण भारत की नींव रख रहे हैं।" उद्धघाटन समारोह में सीएसआईआर-सीबीआरआई के वरिष्ठ वैज्ञानिक, आईआईटी रुड़की के संकाय सदस्य, ग्रामीण विकास मंत्रालय के प्रतिनिधि, सामाजिक संगठनों और विद्यार्थियों ने भाग लिया।

Published in Kalam Ka Daitwa

India's Ist 3D-printed rural home comes up in Roorkee

India's Ist 3D-printed rural home comes up in Roorkee

Tapan Susheel | TNN

The 3D printed rural house was inaugurated at the Central Building Research Institute

Roorkee: India's first 3D concrete-printed rural house was inaugurated at the Central Building Research Institute (CBRI) in Roorkee on Wednesday. The prototype, built under the Pradhan Mantri Awaas Yojana–Gramin (PMAY-G), was developed to offer a fast, affordable and sustainable housing solution in village settings using advanced construction technology and eco-friendly materials.

Union minister of state for rural development Chandra Sekhar Pemmasani, who inaugurated the structure, said it marked a significant milestone in India's rural housing journey. He said the house blends traditional wisdom with cutting-edge science and represents a scalable model that can be replicated in rural India.

▶Continued on P 7

Published in Times of India

Agro-industrial waste used in Roorkee's 3D house

▸Continued from P 1

These 3D-printed houses are not merely about technology — they represent a future where housing is affordable, adaptable, and environmentally responsible," Pemmasani said.

In April 2021, finance minister Nirmala Sitharaman unveiled India's first 3D-printed house at IIT-Madras. Developed by the startup Tvasta Manufacturing Solutions, the 600sqft urban prototype was designed to offer affordable housing for low-income families in cities and was completed in just five days using a proprietary concrete mix. However, that house was not part of any rural housing scheme.

The Roorkee house, by contrast, is the first rural version designed under PMAY-G by scientists at CSIR-CBRI. Unlike the IIT-Madras model, it uses sustainable cement mixes incorporating agro-industrial waste such as fly ash and bagasse ash. It is also aligned with PMAY-G norms for rural homes, which include essential amenities.

Researchers said the prototype demonstrates significant time and cost efficiency. A rural house measuring 25 square metres can be printed in under a week at an estimated cost of Rs 1.8 lakh, compared to four to five months needed for traditional rural construction. The CBRI model is designed to last over 70 years. "This is the first time 3D printing has been directly applied to rural housing delivery, combining speed, affordability, and green materials for scalable village use," said Dr Ajay Chourasia, chief scientist at CBRI. He led the project along with scientist Ashish Kapoor.

Pemmasani also cited achievements under PMAY-G during PM Narendra Modi's tenure, noting that 3.85 crore houses have been sanctioned so far, with 2.87 crore already completed. He said independent studies have reported a 17% increase in household incomes and a 14% reduction in hospital visits due to better housing. Additionally, 72% of the houses were registered in the names of women, contributing to women's empowerment and family well-being.

He acknowledged CBRI's past innovations, highlighting its development of over 250 region-specific, disaster-resilient housing designs, and rural technologies like non-erodible mud plaster, simple strengthening methods, and the two-pit pour-flush toilet system that benefitted over 5 crore households under Swachh Bharat Mission. "Today's inauguration marks the beginning of its journey into the villages of India," said institute director R Pradeep Kumar.

Published in Times of India

देश के पहले उडी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन

देश के पहले 3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन

■ कच्ची दीवारों से 3डी प्रिंटिंग तक : सीबीआरआई ने ग्रामीण भारत के लिए सस्ते घरों की राह दिखाई

पुस्तक का विमोचन करते केंद्रीय मंत्री व अन्य।

रुड़की, 1 अक्तूबर (अनिल) : ग्रामीण विकास राज्यमंत्री डॉ. पेम्मासानी चन्द्र शेखर ने आज केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर–सीबीआरआई), रुड़की में देश का पहला 3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन किया। यह ऐतिहासिक नवाचार भारत की ग्रामीण आवास यात्रा का एक निर्णायक क्षण है, जो पारंपरिक ज्ञान को आधुनिकतम तकनीक से जोड़ता है।

वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं और हितधारकों को संबोधित करते हुए डॉ. पेम्मासानी चन्द्र शेखर ने कहा कि कच्ची दीवारों से 3डी प्रिंटिंग तक, भारत ने सभी के लिए सुरक्षित, मजबूत और टिकाऊ घर उपलब्ध कराने की अटूट प्रतिबद्धता प्रदर्शित की है। ये 3डी प्रिंटेड घर केवल तकनीक नहीं हैं, बल्कि एक ऐसे भविष्य का प्रतीक हैं, जहां आवास सस्ता, अनुकूलनशील और पर्यावरण अनुकूल होगा।

प्रधानमंत्री आवास योजना–ग्रामीण (पीएमएवाई–जी) की उपलब्धियों का उल्लेख करते हुए डॉ. शेखर ने बताया कि योजना के अंतर्गत अब तक 3.85 करोड़ मकान स्वीकृत हुए हैं और 2.87 करोड़ पूरे हो चुके हैं।

स्वतंत्र आकलनों से यह भी सामने आया है कि ग्रामीण परिवारों की आय में 17% की वृद्धि हुई है, अस्पताल जाने के मामलों में 14% की कमी आई है और 72% घर महिलाओं के नाम पर हैं, जिससे महिला सशक्तीकरण और पारिवारिक कल्याण को मजबूती मिली है। सीबीआरआई के योगदान की सराहना करते हुए उन्होंने कहा कि संस्थान ने 250 क्षेत्र-विशिष्ट आपदा-रोधी आवासीय डिजाइन तैयार किए हैं। उद्घाटन समारोह में सीएसआईआर–सीबीआरआई के वरिष्ठ वैज्ञानिक, आईआईटी रुड़की के संकाय सदस्य, ग्रामीण विकास मंत्रालय के प्रतिनिधि, सामाजिक संगठनों और विद्यार्थियों ने भाग लिया।

****

Published in Navodaya Times

CSIR-CBRI in the Limelight | 30.09.2025

Roorkee: सीबीआरआई-सीएसआईआर ने मनाया सीएसआईआर का 84वां स्थापना दिवस

Published in : https://www.nazariyanews.com/33986/

सीबीआरआई ने 84वां स्थापना दिवस मनाया

बनारस हिंदू विवि के पूर्व कुलसचिव ने किया कार्यक्रम का शुभारंभ

सोलह सौ मीटर दौड़ के शिवम रहे प्रथम

गैस कनेक्शन

Published in: Swatantra Chetna Newspaper

सीबीआरआई ने मनाया सीएसआईआर का 84वां स्थापना दिवस

स्वतंत्र चेतना

रुडकी। सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई), रुड़की ने रवींद्रनाथ टैगोर अडिटोरियम में एक भव्य कार्यक्रम के साथ सीएसआईआर का 84वां स्थापना दिवस बड़ी धूमधाम से मनाया। इस अवसर पर, भवन विज्ञान और अनुसंधान में संस्थान के उल्लेखनीय योगदानों को स्मरण किया गया। इस कार्यक्रम में कर्मचारियों, छात्रों और गणमान्य व्यक्तियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। पद्मश्री प्रो. सुधीर कुमार जैन, पूर्व कुलपति, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय एवम् संस्थापक निदेशक, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, गांधीनगर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। समारोह की शुरुआत दीप प्रज्वलन के साथ हुई, इसके बाद सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की के निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने स्वागत भाषण दिया। अपने भाषण में उन्होंने संस्थान के योगदान पर प्रकाश डाला। उन्होंने विभिन्न अनुसंधान एवं विकास सुविधाओं को भी रेखांकित किया। इसके पश्चात एक वर्ष के अंतराल में सीएसआईआर-सीबीआरआई की सेवा से अधिवर्षिता पर सेवानिवृत्त हुए कार्मिकों को मुख्य अतिथि द्वारा सम्मान पत्र, शल और कलाई घड़ी भेट कर सम्मानित किया गया। साथ ही 25 वर्ष की निरंतर सेवा पूर्ण कर चुके कार्मिकों को भी कलाई घड़ी भेट की गई, इसके उपरान्त मुख्य अतिथि की उपस्थिति में संस्थान के प्रधान वैज्ञानिक ड. चन्दन स्वरूप मीना द्वारा विकसित सोलर एयर कन्डिशनर और वाटर हीटर की तकनीक का प्रौद्योगिकी हस्तांतरण [illegible] पुणे, महाराष्ट्र को किया गया। यह अभिनव तकनीक, ऊर्जा दक्ष हीटिंग और स्पेस कंडीशनिंग समाधान प्रदान करती है तथा स्वच्छ ऊर्जा एवं कार्बन उत्सर्जन में कमी की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है।

इसके पश्चात ड. डीपीक कानूनगो, मुख्य वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष, स्थापना दिवस आयोजन समिति ने मुख्य अतिथि पद्मश्री प्रो. सुधीर कुमार जैन का परिचय प्रस्तुत किया। मुख्य अतिथि ने अपने संबोधन में सीएसआईआर-सीबीआरआई को उनकी उपलब्धियों पर बधाई दी और कहा कि नई तकनीक भवन विज्ञान को नई दिशा देने के साथ-साथ भारत की ऊर्जा सुरक्षा एवं सतत विकास लक्ष्यों को पूरा करने में सहायक सिद्ध होगी। साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि वैज्ञानिक अनुसंधान के लिए परस्पर सहयोग एवं सकारात्मक सोच तथा प्रेरक वातावरण आवश्यक है। प्रदीप कुमार वरिष्ठ प्रशासन नियंत्रक ने सभी का धन्यवाद किया। इस आयोजन समिति के अध्यक्ष ड.डीपीक कानूनगो, मुख्य वैज्ञानिक रहे। प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने समारोह के मुख्य अतिथि को स्मृति चिह्न और शल भेंट की। कार्यक्रम का संचालन प्रो. एसक के. सिंह, मुख्य वैज्ञानिक द्वारा किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि ने गृह एवं यांत्रिक अनुप्रयोगों के लिए स्वचालन एवं विश्लेषण (आज्ञा) आईओटी प्रयोगशाला का उद्घाटन किया। यह प्रयोगशाला चंद्रभान पटेल, वैज्ञानिकय कांती सोलंकी, वैज्ञानिकय तथा ड.एसके पाणिग्राही, मुख्य वैज्ञानिक द्वारा विकसित की गई है। इसके अतिरिक्त, निर्माण प्रौद्योगिकी प्रदर्शन पार्क, राष्ट्रीय भूकंप अभियांत्रिकी परीक्षण सुविधा (छम्म्ज्ट) और 3डी कंक्रीट प्रिंटेड प्रयोगशाला के भ्रमण का संचालन ड.अजय चौरसिया, मुख्य वैज्ञानिक, आशीष पिप्पल, प्रधान वैज्ञानिक, ड. किशोर कुलकर्णी, प्रधान वैज्ञानिक, ड.चंचल सोनकर, प्रधान वैज्ञानिक और आशीष कपूर वैज्ञानिक द्वारा किया गया, इसके साथ ही, मुख्य अतिथि ने प्रदर्शनी गैलरी का भी भ्रमण किया। कार्यक्रम का समापन राष्ट्र गान के साथ हुआ। इस अवसर पर एक सांसतिक संध्या का आयोजन भी किया गया।

Published in: Swatantra Chetna Newspaper

अपने क्षेत्रों में उल्लेखनीय योगदान के लिए सम्मानित करते अतिथि। संवाद

सीएसआईआर-सीबीआरआई ने 84वां स्थापना दिवस मनाया

रुड़की। सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) रुड़की ने रवींद्रनाथ टैगोर ऑडिटोरियम में भव्य कार्यक्रम के साथ सीएसआईआर का 84वां स्थापना दिवस मनाया।

मुख्य अतिथि पूर्व कुलपति बनारस हिंदू विश्वविद्यालय और संस्थापक निदेशक आईआईटी गांधीनगर पद्मश्री प्रो. सुधीर कुमार जैन ने दीप जलाकर कार्यक्रम का उद्घाटन किया। निदेशक प्रो. आर प्रदीप कुमार ने स्वागत भाषण दिया और संस्थान के योगदानों पर प्रकाश डाला।

समारोह में सेवानिवृत और 25 वर्ष की सेवा पूरी कर चुके कर्मचारियों का सम्मान किया गया। मुख्य अतिथि ने स्वचालन एवं विश्लेषण प्रयोगशाला का उद्घाटन किया निर्माण प्रौद्योगिकी प्रदर्शन पार्क, राष्ट्रीय भूकंप अभियांत्रिकी परीक्षण सुविधा एवं 3डी कंकरीट प्रिंटेड प्रयोगशाला का अवलोकन किया। संवाद

Published in: Dainik jagran Newspaper

CSIR-CBRI in the Limelight | 29.09.2025

राष्ट्रीय सहारा

देहरादून

सोमवार • 29 सितम्बर • 2025

सीबीआरआई की टीम ने किया आपदा क्षतिग्रस्त क्षेत्रों का सर्वेक्षण

हरिद्वार। मानसून काल के दौरान जनपद में आई बाढ़ एवं आपदाओं से हुई वास्तविक क्षति के आंकलन के लिए राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण द्वारा पोस्ट डिजास्टर नीड्स असेसमेंट प्रक्रिया के तहत गठित सर्वेक्षण टीम ने सीबीआरआई के चीफ साईंटिस्ट डा.अजय चौरसिया के नेतृत्व में रविवार को जिला आपदा कार्यालय सभागार परिसर में बैठक ली तथा आपदा प्रभावित एवं भूस्खलन क्षेत्रों का भ्रमण एवं सर्वेक्षण किया गया। सचिव एचआरडीए मनीष कुमार सिंह ने बैठक का संचालन करते हुए जनपद की सामाजिक, आर्थिक, प्रशासनिक व भौगोलिक स्थिति के बारे में जानकारी देते हुए मानसून काल में हुए नुकसान के बारे में पावर पाइन्ट प्रजेन्टेशन के माध्यम से विस्तार से जानकारी दी।

बैठक में सीबीआरआई के चीफ साइंटिस्ट डा.अजय चौरसिया ने निर्देशित करते हुए कहा कि सभी अधिकारी आपसी समन्वय से बरसात के दौरान विभिन्न क्षेत्रों में आने वाली बाढ़ तथा होने वाले नुकसान को रोकने के लिए प्रभावी कार्य योजना बनाकर भारत सरकार में भेजी जाये। उन्होंने सिंचाई विभाग के अभियन्ताओं को निर्देशित करते हुए कहा कि बाढ़ एवं भू-कटाव को रोकने के लिए लॉग टर्म स्थायी समाधान किया जाये ताकि संभावित बाढ़ एवं उसके नुकसान से बचा जा सके। उन्होंने निर्देशित करते हुए कहा कि हमारे एसेस्ट इस प्रकार के होने चाहिए कि भविष्य में आपदा की स्थिति उत्पन्न न हो। उन्होंने निर्देशित करते हुए कहा कि नदियों के तटबन्ध से सम्बन्धित प्रस्ताव भी प्रस्तावित की जाये। उन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में वश आउट हुई सड़कों के लिए भी स्थायी समाधान हेतु प्रस्ताव तैयार करने के निर्देश दिये ताकि भविष्य में मार्ग बाधित न हो। उन्होंने निर्देशित करते हुए कहा कि आंकलन प्रापर किया जाये तथा जिस श्रेणी का कार्य है, उसे उसी श्रेणी में प्रस्तावित किया जाये तथा डेटा देने में विशेष सावधानी बरती जाये। उन्होंने कम्यूनिकेशन हेतु प्लान बी के तहत भी कार्य योजना बनाने के निर्देश दिये। उन्होंने सीवर, ड्रेनेज तथा एसटीपी निर्माण से सम्बन्धित कार्यों हेतु भी कार्य योजना के बारे महत्वपूर्ण निर्देश सम्बन्धित अधिकारियों को दिये। बैठक में पोस्ट डिजास्टर नीड असेसमेंट (पकद) टीम ने राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण से हरिद्वार जनपद में हुई भारी बारिश-भूस्खलन के कारण हुए जनहानि, पशुहानि एवं क्षतिग्रस्त भवनों का विवरण लिया साथ मानसून सत्र 2025 में हुए क्षति का विभागवार विवरण की जानकारी ली गई।

उन्होंने विद्युत, पिटकुल, सिंचाई, लोनिवि, शिक्षा, चिकित्सा, बाल विकास, सिंचाई सहित अन्य सम्बन्धित विभागों के अधिकारों को महत्वपूर्ण दिशा-निर्देश दिये। उन्होंने पीडीएमए से सम्बन्धित विभिन्न पहलुओं पर विस्तार से जानकारी दी। भीमगोड़ा पुल के पास बार-बार रैलवे ट्रेक पर गिर रहे मलवा स्थल तथा मनसा देवी क्षेत्र में भू-स्खलन सम्भावित क्षेत्रों का भी स्थलीय निरीक्षण किया गया। उन्होंने निरीक्षण के दौरान इन समस्याओं के स्थायी समाधान हेतु महत्वपूर्ण -निर्देश सम्बन्धित अधिकारियों को दिये।

इस दौरान अपर जिलाधिकारी दीपेंद्र सिंह नेगी, एनडीएम प्रोफेसर डा.गगनदीप, असि.प्रोफेसर एचपी यूनिवर्सिटी डा.एम शर्मा, स्टेट नोडल अफिसर डा.मोहित कुमार पूनिया, एचआरडीए सचिव मनीष सिंह, उप जिलाधिकारी जितेंद्र कुमार, जिला विकास अधिकारी वेदप्रकाश, आपदा प्रबंधन अधिकारी मीरा रावत, जिला अर्थ संख्या अधिकारी नलिनी ध्यानी, जिला परियोजना प्रबंधक संजय सक्सेना, रेंज अफिसर राजाजी टाइगर रिजर्व बृजेंद्र दत्त तिवारी, जिला पर्यटन अधिकारी सुशील नौटियाल सहित अन्य संबंधित अधिकारी एवं कर्मचारी मौजूद रहे।

Published in: Rashtriye Sahara Newspaper

CSIR-CBRI in the Limelight | 26.09.2025

my city

अमर उजाला

सूर्योदय सुबह 6:11
सूर्यास्त शाम 6:08

देहरादून | सोमवार

04

बाढ़ और भू-कटाव को रोकने के लिए करें स्थायी समाधान

सीबीआरआई के मुख्य वैज्ञानिक ने दिए अधिकारियों को बैठक में निर्देश | मानसून के दौरान आपदाओं से हुए नुकसान का एनडीएमए की टीम ने किया सर्वेक्षण

संवाद न्यूज एजेंसी

हरिद्वार। विभागों के अधिकारी आपसी समन्वय से एक प्रभावी कार्ययोजना बनाकर केंद्र सरकार को भेजें ताकि भविष्य में बाढ़ से होने वाले नुकसान को रोका जा सके। सिंचाई विभाग बाढ़ और भू-कटाव को रोकने के लिए दीर्घकालिक और स्थायी समाधान करे।

यह बात सेंट्रल बिल्डिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट (सीबीआरआई) के चीफ साइंटिस्ट डॉ. अजय चौरसिया ने रविवार को राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (एनडीएमए) द्वारा गठित सर्वेक्षण टीम की ओर से आयोजित बैठक में कही।

मानसून के दौरान जिले में आई बाढ़ और आपदाओं से हुए नुकसान का आकलन करने के लिए टीम ने हरिद्वार के जिला आपदा कार्यालय सभागार में यह बैठक आयोजित की। बैठक के बाद टीम ने आपदा प्रभावित और भूस्खलन संभावित क्षेत्रों का दौरा भी किया। बैठक में हरिद्वार-रुड़की विकास प्राधिकरण (एचआरडीए) के अधिकारी मनीष कुमार सिंह ने जिले की सामाजिक, आर्थिक, प्रशासनिक और भौगोलिक स्थिति के बारे में विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने पावरपॉइंट प्रेजेंटेशन के माध्यम से मानसून काल में हुए नुकसान का ब्योरा भी प्रस्तुत किया।

इस मौके पर अपर जिलाधिकारी दीपेंद्र सिंह नेगी, प्रो. डा.गगनदीप, असि.प्रोफेसर एचपी यूनिवर्सिटी डा.एम.शर्मा, स्टेट नोडल ऑफिसर डा.मोहित कुमार पूनिया, उप जिलाधिकारी जितेंद्र कुमार, जिला विकास अधिकारी वेदप्रकाश, आपदा प्रबंधन अधिकारी मीरा रावत, जिला अर्थ संख्या आधिकारी नलिनी ध्यानी, जिला परियोजना प्रबंधक संजय सक्सेना, रेंजर बृजेंद्र दत्त, जिला पर्यटन अधिकारी सुशील नौटियाल आदि मौजूद रहे।

पहाड़ी का निरीक्षण करते सीबीआरआई के चीफ साइंटिस्ट डॉ. अजय चौरसिया। संवाद

भूस्खलन संभावित इलाकों का किया निरीक्षण

टीम ने भीमगोड़ा पुल के पास बार-बार रेलवे ट्रैक पर गिरने वाले मलबे वाले स्थल और मनसा देवी क्षेत्र में भूस्खलन संभावित इलाकों का भी निरीक्षण किया और इन समस्याओं के स्थायी समाधान के लिए महत्वपूर्ण दिशा-निर्देश दिए।

क्षतिग्रस्त हुई सड़कों के लिए भी बनाएं प्रस्ताव

- डॉ. चौरसिया ने जोर दिया कि हमारी संपत्तियां ऐसी होनी चाहिए कि भविष्य में आपदा की स्थिति उत्पन्न न हो। उन्होंने नदियों के तटबंधों से संबंधित प्रस्ताव तैयार करने के भी निर्देश दिए। साथ ही क्षतिग्रस्त हुई सड़कों के लिए भी प्रस्ताव बनाने को कहा ताकि भविष्य में मार्ग बाधित न हों। उन्होंने अधिकारियों को डेटा देने में विशेष सावधानी बरतने और आकलन को उचित श्रेणी में प्रस्तावित करने का निर्देश दिया। संचार व्यवस्था के लिए उन्होंने प्लान बी के तहत भी कार्ययोजना बनाने को कहा। इसके अलावा सीवर, ड्रेनेज और एसटीपी निर्माण से संबंधित कार्यों के लिए भी योजना बनाने के निर्देश दिए गए।

Published in: Amar Ujala Newspaper

CSIR-CBRI in the Limelight | 26.09.2025

सहारा लाइव NEWS
हर खबर पर पैनी नजर

अंतरराष्ट्रीय राज्य टेक्नोलॉजी ट्रेवल राष्ट्रीय लोकल न्यूज़ स्वास्थ्य LIVE TV CONTACT

उत्तराखंड

राष्ट्र-निर्माण के प्रति सीएसआईआर-सीबीआरआई की प्रतिबद्धता

By Sahara Live News

SEP 26, 2025

इस कार्यक्रम में मेथोडिस्ट गर्ल्स डिग्री कॉलेज, रुड़की तथा पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय संख्या 1, रुड़की के छात्र-छात्राओं एवं शिक्षकों सहित विभिन्न स्कूलों से आए प्रतिभागियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इसके अतिरिक्त, ट्रेनिंग एवं एकेडमी ऑफ साइंटिफिक एंड इनोवेटिव रिसर्च (AcSIR) के छात्र-छात्राओं ने भी सक्रिय रूप से सहभागिता की। खास बात यह रही कि बिहार सरकार के 50 नव नियुक्त सहायक वास्तुविदों का एक विशिष्ट दल शैक्षणिक-सह-तकनीकी भ्रमण हेतु संस्थान पहुँचा।

ओपन डे के दौरान प्रतिभागियों के लिए संस्थान के विभिन्न प्रमुख अनुसंधान स्थलों जैसे डॉ. बिलिंग प्रदर्शनी दीर्घा, राष्ट्रीय भूकंप परीक्षण सुविधा, अग्नि सुरक्षा अभियांत्रिकी प्रयोगशाला एवं ग्रामीण प्रौद्योगिकी पार्क का सुव्यवस्थित भ्रमण कराया गया। यहाँ उन्हें भूकंप अभियांत्रिकी, अग्नि सुरक्षा, टिकाऊ ग्रामीण प्रौद्योगिकी एवं संरचनात्मक नवाचारों के क्षेत्र में किए जा रहे शोध कार्यों की जानकारी दी गई। यह जानकारी डॉ. नवीन, डॉ हेमलता , श्री नदीम, डॉ नीरज एवं ओर भी संस्थान के वैज्ञानिकों कि उपस्थिति म हुआ ।

विशेष प्रदर्शनों में श्रीराम मंदिर के सूर्य तिलक तंत्र का मॉडल, नवोदय विद्यालयों के लिए विकसित वास्तु नवाचार तथा खारे क्षेत्रों में कार्यरत श्रमिकों के लिए अग्निरोधक घरों की तकनीक शामिल थीं। इन प्रदर्शनों ने आधुनिक विज्ञान के साथ परंपरा के समन्वय और देश की बुनियादी संरचना एवं पर्यावरणीय चुनौतियों के समाधान हेतु संस्थान के प्रयासों को उजागर किया।

कार्यक्रम के दौरान प्रतिभागियों को अग्रणी वैज्ञानिकों से सीधे संवाद करने, उन्नत यंत्रों एवं अनुसंधान सुविधाओं को देखने तथा वैज्ञानिक अनुसंधान के व्यावहारिक पहलुओं को समझने का अवसर प्राप्त हुआ। इस अवसर पर यह भी उल्लेख किया गया कि नई दिल्ली स्थित वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (CSIR) अपनी 37 राष्ट्रीय प्रयोगशालाओं के नेटवर्क के साथ विश्व की सबसे बड़ी सार्वजनिक रूप से वित्तपोषित अनुसंधान संस्थाओं में से एक है। भवन विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में समर्पित एक प्रमुख संस्थान के रूप में सीएसआईआर-सीबीआरआई देश की आधारभूत संरचना के लिए सतत, लचीले एवं अभिनव समाधान विकसित करने में अग्रणी भूमिका निभा रहा है।

यह ओपन डे कार्यक्रम विशेष रूप से अगली पीढ़ी के वैज्ञानिकों, अभियंताओं एवं वास्तुविदों को प्रेरित करने और उन्हें कक्षा में प्राप्त ज्ञान को वास्तविक तकनीकी प्रगति से जोड़ने हेतु तैयार किया गया था। यह आयोजन जिज्ञासा, नवाचार और वैज्ञानिक सोच को प्रोत्साहित करने में सफल रहा तथा अनुसंधान एवं नवाचार के माध्यम से राष्ट्र-निर्माण के प्रति सीएसआईआर-सीबीआरआई की प्रतिबद्धता को एक बार फिर सशक्त रूप से प्रदर्शित किया।

Presented in: https://www.saharalivenews.com/archives/9838

CSIR-CBRI in the Limelight | 25.09.2025

www.livehindustan.com

हिन्दुस्तान

देहरादून, गुरुवार, 25 सितंबर 2025

सीएसआईआर को शोध के लिए 2277 करोड़ रुपये

केंद्र सरकार ने उच्चस्तरीय शोध को बढ़ावा देने के लिए सीएसआईआर की योजना को मंजूरी दी है। इसके तहत देश भर के शोध संस्थानों में रिसर्च फैलोशिप की शुरुआत की जाएगी। इसके लिए 2277 करोड़ रुपये मंजूर किए गए हैं। अश्विनी वैष्णव ने बताया कि योजना का क्रियान्वयन वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) द्वारा किया जाएगा। इसके दायरे में सभी केंद्रीय प्रयोगशालाएं एवं संस्थान आएंगे। योजना के तहत योग्य नौजवानों को रिसर्च फैलोशिप और पीएचडी के लिए अवसर प्रदान किए जाएंगे।

Published in: Hindustan newspaper

उत्तराखंड–हिमाचल के छह शहरों में एक तिहाई इमारतें खतरनाक

जागरण विशेष

- उच्च जोखिम वाले इन भवनों के भूकंप के दौरान ढहने या भारी क्षति की आशंका
- केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान रुड़की के अध्ययन में सामने आई है यह बात

रीना डंडरियाल • जागरण

रुड़की: उत्तराखंड के कर्णप्रयाग, नैनीताल, मसूरी और हिमाचल प्रदेश के कंडाघाट, टुटू, पांवटा साहिब में एक तिहाई से अधिक इमारतें संरचनात्मक अभियांत्रिकी (स्ट्रक्चरल इंजीनियरिंग) के मानकों पर खरी नहीं हैं। इनको भौगोलिक परिस्थितियों के अनुरूप डिजाइन नहीं किया गया है। इस कारण ये इमारतें उच्च जोखिम वाली श्रेणी में हैं, जिनके भूकंपीय घटनाओं के दौरान ढहने या भारी क्षति की आशंका रहती है। इन संरचनाओं में अस्पताल, स्कूल और प्रशासनिक कार्यालय भी चल रहे हैं। यह बात केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआइ) रुड़की के अध्ययन में सामने आई है। अध्ययन की रिपोर्ट गृह मंत्रालय के अधीन राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण को भेजी गई है।

सीबीआरआइ रुड़की के संरचना अभियांत्रिकी प्रभाग के मुख्य विज्ञानी व इस परियोजना के प्रोजेक्ट लीडर डा. अजय चौरसिया ने बताया कि जुलाई 2024 से मार्च 2025 के मध्य यह अध्ययन किया गया। इसका मुख्य उद्देश्य भूकंपीय खतरों का मूल्यांकन, इमारतों की भेद्यता का आकलन, संभावित मानवीय व आर्थिक नुकसान का अनुमान, भविष्य के जोखिम न्यूनीकरण और शहरी नियोजन रणनीतियों के लिए मजबूत आधार प्रदान करना था। उनके अनुसार चिह्नित क्षेत्रों का जोखिम मूल्यांकन मानचित्र तैयार करने के लिए एक व्यापक पद्धति विकसित की गई है। संस्थान के छह-सात विज्ञानी व 40 प्रोजेक्ट असिस्टेंट ने प्रत्येक शहर में 1,000 इमारतों पर अध्ययन किया।

पहाड़ों की रानी मसूरी • जागरण आर्काइव

1,000

इमारतों पर प्रत्येक शहर में यह अध्ययन किया गया संस्थान के छह–सात विज्ञानी व 40 प्रोजेक्ट असिस्टेंट की टीम की ओर से

सीबीआरआइ के मुख्य विज्ञानी डा. अजय चौरसिया • स्वयं

4,978 इमारतों में से अधिकांश में रहना जोखिम भरा, तत्काल पुनर्निर्माण की आवश्यकता

डा. अजय चौरसिया ने बताया कि अध्ययन में शामिल शहर भूकंपीय क्षेत्र चार व पांच में आते हैं। ये शहर तीव्र भू–गति के प्रति संवेदनशील हैं। ये खड़ी ढलानों, अनियमित विकास और संरचनात्मक अभियांत्रिकी की अनदेखी के कारण अधिक जोखिम भरे हैं। इन छह शहरों में 4,978 इमारतें चिह्नित की गई हैं, जिनमें अप्रबलित चिनाई (यूआरएम) है। इन्हें तत्काल पुनर्निर्माण की आवश्यकता है। इन इमारतों में 37,822 लोग रहते हैं।

रिपोर्ट में दिए गए सुझाव

- सभी प्रभावित शहरों में प्राथमिकता के आधार पर संरचनात्मक रेट्रोफिटिंग कार्यक्रम बने।
- आपातकालीन निकासी और प्रतिक्रिया प्रोटोकाल।
- वास्तविक समय भूकंपीय निगरानी प्रणालियां।
- संवेदनशील संरचनाओं विशेष रूप से सार्वजनिक और संस्थागत भवनों के रेट्रोफिटिंग को मिले प्राथमिकता, ताकि वहां जोखिम कम हो।
- सभी नए निर्माणों के लिए अनिवार्य भवन कोड के अनुपालन को लागू करना और पालन कराना।
- नगर पालिका नियोजन और जोनिंग विनियमों में जोखिम संवेदनशीलता मानचित्रों को एकीकृत करना, ताकि जरूरी कदम उठाए जा सकें।
- आपदा प्रतिरोधी केंद्रों में बुनियादी ढांचे का उन्नयन किया जाए। साथ ही पहुंच, क्षमता और संरचनात्मक मजबूती जरूरी।
- लचीली निर्माण प्रथाओं और आपदा तैयारियों पर सामुदायिक जागरूकता और प्रशिक्षण।

Published in: Dainik Jagran newspaper

CBRI Roorkee study found that out of 4,978 buildings surveyed in six cities of Uttarakhand and Himachal, about 40% are unsafe and 1,000 highly dangerous. Many schools, hospitals, and offices lack proper structural design, posing serious risks in earthquake-prone zones. The report calls for urgent reconstruction, strict building code compliance, and earthquake-resistant measures.

CSIR-CBRI in the Limelight | 16.09.2025

राष्ट्रीय सहारा

हिन्दी पुस्तक प्रदर्शनी के साथ हुआ हिन्दी पखवाड़े का शुभारम्भ

रुड़की। सीएसआईआर-केन्द्रीय भवन अनुसंधान संस्थान में सोमवार से हिन्दी पखवाड़े का शुभारंभ हो गया। 6 अक्तूबर तक पखवाड़े का आयोजन होगा। संस्थान में हिन्दी पखवाड़े का शुभारम्भ हिन्दी पुस्तक प्रदर्शनी के साथ किया गया। प्रदर्शनी का उद्घाटन संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. डीपी कानूनगो ने किया। इस अवसर पर हिन्दी पुस्तक पर चर्चा कार्यक्रम भी आयोजित किया गया। कार्यक्रम में संस्थान के प्रधान तकनीकी अधिकारी राजीव कुमार शर्मा ने हरिवंश राय बच्चन की पुस्तक 'मधुशाला' पर चर्चा प्रस्तुत की। हिन्दी पुस्तक प्रदर्शनी का संयोजन दीप्ति कर्माकर ने किया। हिन्दी पखवाड़ा समापन पर 6 अक्तूबर को पुरस्कार वितरण होगा। इस अवसर पर आयोजन समिति के अध्यक्ष डॉ. पीसी थपलियाल, डा. नीरज जैन, डॉ. राजेश वर्मा, डॉ. नवल किशोर बंजारा, अवनीश कुमार, हुमैरा अतहर, अर्पण महेश्वरी, दिनेश, अमित, भारती आदि उपस्थित रहे।

Published in: Rashtriye sahara newspaper

देहरादून, मंगलवार
16 सितंबर, 2025
हरिद्वार संस्करण
मूल्य ₹ 7.00
पृष्ठ 20
www.jagran.com

दैनिक जागरण

सात करोड़ से अधिक आइटीआर दाखिल 15 | पहलगाम पीड़ितों के साथ दिखाना चाहते थे एकजुटता 16

रुड़की जागरण

हिंदी में कामकाज की प्रवृत्ति को अपनाने पर दिया जोर

सीबीआरआइ रुड़की में हिंदी पखवाड़ा शुरू, विभिन्न प्रतियोगिताएं होंगी, हिंदी पुस्तक पर किया गया चर्चा

जागरण संवाददाता, रुड़की : केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआइ) रुड़की में हिंदी पखवाड़े का शुभारंभ हिंदी पुस्तक प्रदर्शनी के साथ किया गया। इस मौके पर हिंदी में कामकाज करने की प्रवृत्ति को गंभीरता के साथ अपनाने पर जोर दिया गया। वहीं 'हिंदी पुस्तक पर चर्चा' कार्यक्रम भी आयोजित किया गया।

संस्थान में सोमवार को हिंदी पुस्तक प्रदर्शनी का उद्घाटन वरिष्ठ विज्ञानी डा. डीपी कानूनगो ने किया। इस मौके पर उन्होंने कहा कि दुनिया में वही देश आगे बढ़ रहे हैं, जिन्होंने अपनी मातृभाषा को अपनाया है। उन्होंने कहा कि कार्मिकों के बच्चों को महीने में एक बार संस्थान के पुस्तकालय में जरूर लाना चाहिए। ताकि बच्चों में पुस्तकों को पढ़ने की रुचि बढ़े। साथ ही उन्होंने सभी से मातृभाषा की पुस्तकें पढ़ने की आदत विकसित करने का अनुरोध किया। इस दौरान हिंदी पुस्तक पर चर्चा कार्यक्रम में संस्थान के प्रधान तकनीकी अधिकारी राजीव कुमार शर्मा ने हरिवंश राय बच्चन की पुस्तक 'मधुशाला' पर चर्चा प्रस्तुत की। संस्थान की हिंदी अधिकारी अर्चना चौधरी ने बताया कि हिंदी पखवाड़े के दौरान हिंदी टिप्पण आलेखन प्रतियोगिता, आशु भाषण प्रतियोगिता, हिंदी प्रश्नोत्तरी, हिंदीतर भाषी कार्मिकों के लिए हिंदी लेखन प्रतियोगिता आयोजित की जाएगी। साथ ही कार्मिकों के बच्चों के लिए भी हिंदी कविता पाठ और भाषण प्रतियोगिता भी आयोजित होंगी। हिंदी पखवाड़े का समापन एवं पुरस्कार वितरण छह अक्टूबर को होगा। हिंदी पुस्तक प्रदर्शनी का संयोजन दीप्ति कर्मोकर ने किया। इस मौके पर आयोजन समिति के अध्यक्ष डा. पीसी थपलियाल, डा. नीरज जैन, डा. राजेश वर्मा, डा. नवल किशोर बंजारा, अवनीश कुमार, हुमैरा अतहर, अर्पण महेश्वरी, मेहर सिंह, धर्म सिंह नेगी, अमन कुमार, विनीत सैनी, डा. चंदन स्वरूप मीना, मोहित, दिनेश, भारती आदि उपस्थित रहे।

केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान रुड़की में हिंदी पखवाड़े के शुभारंभ के मौके पर हिंदी पुस्तक प्रदर्शनी का अवलोकन करते विज्ञानी और अन्य • सौजन्य संस्थान

Published in: Dainik Jagran newspaper

At CSIR-CBRI Roorkee, Hindi Pakhwada was inaugurated with emphasis on adopting Hindi in official work. Various competitions will be organized during the program, and discussions were held on Hindi books to promote the use of Hindi in daily functioning.

CSIR-CBRI in the Limelight | 14.09.2025

Mon. Sep 15th, 2025

सहारा लाइव NEWS

हर खबर पर पैनी नजर

अंतरराष्ट्रीय राज्य टेक्नोलॉजी ट्रेवल राष्ट्रीय लोकल न्यूज़ स्वास्थ्य LIVE TV CONTACT

खेल हमारे जीवन का हिस्सा, निदेशक, Dr. Ramancharla Predeep Kumar,

By Sahara Live News

SEP 14, 2025

SAHARA LIVE NEWS

सीएसआईआर-सेंट्रल बिल्डिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट (सीबीआरआई), रूड़की में संस्थान परिवार के बीच कबड्डी लीग का आयोजन किया गया।

इस आयोजन का शुभारंभ माननीय निदेशक, Dr. Ramancharla Predeep Kumar, सीबीआरआई द्वारा किया गया।

प्रतियोगिता में दो टीमों ने भाग लिया

टीम–A
हिमांशु शर्मा, शिवम सोलंकी, सूरज कुमार, सोनू, शुभम, मोहद अज़ीम, रजनीश, ए. अरविंद, शुभम, रजनीश

टीम–B
दिनेश, मनीष, मोहित, हिमांशु, हरजीत, अमित यादव, सौरभ कुमार राय, एन.के. बंजारा, पियूष, विजेंद्र

मैच का संचालन रेफरी मेहर सिंह द्वारा किया गया।

यह खेल प्रतिस्पर्धा न केवल कर्मचारियों के बीच आपसी सहयोग और खेल भावना को बढ़ावा देती है बल्कि स्वास्थ्य एवं फिटनेस के प्रति जागरूकता का भी संदेश देती है।

सीबीआरआई परिवार ने उत्साहपूर्वक इस खेल का आनंद लिया और खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन किया।
इस कार्यक्रम में श्री अमन, श्री अर्पण एवं Dr. Chandan Swaroop Meena भी उपस्थित थे
सोनू शर्मा + शुभम बेस्ट डिफेंडर, बेस्ट कैचर मोहित,मनीष कुमार, टीम A कप्तान श्री हिमांशु शर्मा, टीम B श्री दिनेश विजेता रही . निदेशक महोदय के उद्बोधन में भारत के पारंपरिक खेलों से युवाओं को जोड़ने और स्वास्थ व्यायाम के साथ टीम भावना से आगे बढ़ने के साथ आह्लादित रहने के लिए संदेश दिए

सोनू शर्मा एवं शुभम को बेस्ट डिफेंडर, और बेस्ट कैचर मोहित,मनीष कुमार, रहे
इन टीमों का नेतृत्व
हिमांशु शर्मा और दिनेश ने किया, निदेशक महोदय के उद्बोधन में भारत के पारंपरिक खेलो से युवाओं को जोड़ने और स्वास्थ्य व्यायाम के साथ टीम भावना से आगे बढ़ने के साथ आह्लादित रहने के लिए संदेश दिए
आयोजन में डॉ चंदन स्वरूप मीणा एवं रोचक कमेंट्री अमन कुमार ने की , अंत में विजेताओं को पुरस्कृत किया गया
ईश्वर चंद संवाददाता सहारा टीवी

Published in :- https://www.saharalivenews.com/archives/9761

CSIR–CBRI, Roorkee organized a Kabaddi match to promote team spirit, fitness, and traditional sports. Team A's Himanshu Sharma and Team B's Vinesh were winners, while Sobha, Shubham, and Mohit received Best Player awards. The event was graced by Director Dr. Ramancharla Pradeep Kumar and Dr. Chandan Swaroop Meena.

CSIR-CBRI in the Limelight | 01.09.2025

राष्ट्रीय सहारा

सीबीआरआई टीम ने पूरा किया तुंगनाथ के जीर्णोद्धार का सर्वे

रुद्रप्रयाग (एसएनबी)। समुद्र तल से 12 हजार फीट की ऊंचाई पर स्थित तृतीय केदार के नाम से विख्यात तुंगनाथ मंदिर के संरक्षण एवं जीर्णोद्धार को लेकर बद्रीनाथ-केदारनाथ मंदिर समिति ने प्रयास तेज कर दिये है। इसको लेकर केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) के तकनीकी विशेषज्ञों की टीम ने मंदिर की भू-तकनीकी सर्वे का कार्य पूरा कर लिया है। सर्वे रिपोर्ट के विश्लेषण के बाद डीपीआर बनायी जायेगी और रिपोर्ट के आधार पर डीपीआर के अनुरूप रख-रखाव संरक्षण का कार्य शुरू होगा।

बीकेटीसी अध्यक्ष हेमंत द्विवेदी ने बताया कि केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) रुड़की तृतीय केदार तुंगनाथ मंदिर के निर्माण और विकासात्मक गतिविधियों के लिए बदरीनाथ केदारनाथ मंदिर समिति (बीकेटीसी) के अनुरोध पर विस्तृत परियोजना रिपोर्ट (डीपीआर) तैयार कर रही है। इससे पहले भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई), भारतीय भू वैज्ञानिक सर्वेक्षण (जीएसआई) और सीबीआरआई द्वारा भी तुंगनाथ मंदिर क्षेत्र का दौरा किया जा चुका है। उन्होंने बताया कि मंदिर के संरक्षण को लेकर बीकेटीसी हरसंभव प्रयास में जुटी हुई है। साल-दर-साल तुंगनाथ धाम आने वाले श्रद्धालुओं की संख्या में इजाफा हो रहा है। साथ ही इस साल अब तक एक लाख से ज्यादा श्रद्धालु तुंगनाथ धाम पहुंचकर भगवान शिव का आशीर्वाद ले चुके है।

Published in: Rashtriye sahara newspaper

CSIR-CBRI team completed the structural survey of Tungnath temple to assess its stability. Using advanced techniques, they studied construction, materials, and condition of the temple. The data will help in its preservation and restoration.

CSIR-CBRI in the Limelight | 31.08.2025

सहारा लाइव NEWS

हर खबर पर पैनी नजर

अंतरराष्ट्रीय | राज्य | टेक्नोलॉजी | ट्रेवल | राष्ट्रीय | लोकल न्यूज़ | स्वास्थ्य | LIVE TV | CONTACT

उत्तराखंड

खेल हमारे जीवन का अंग, डॉ आर प्रदीप कुमार निदेशक CBRI

By Sahara Live News

AUG 31, 2025

राष्ट्रीय खेल दिवस के उपलक्ष्य में सीएसआईआर–सेंट्रल बिल्डिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट (सीबीआरआई), रूड़की में 29 अगस्त से 31 अगस्त 2025 तक विभिन्न स्वास्थ्य एवं फिटनेस गतिविधियों का आयोजन किया गया।

29 अगस्त को भारत माँ के वीर सपूत एवं हॉकी जादूगर मेजर ध्यानचंद जी की जयंती के अवसर पर संस्थान परिवार ने सामूहिक प्रतिज्ञा ली कि वे स्वयं को स्वस्थ एवं फिटनेस वॉक के साथ-साथ अपने मित्रों और परिवारजनों को भी स्वस्थ जीवनशैली अपनाने हेतु प्रेरित करेंगे।

इसके उपरांत, 30 अगस्त की प्रातः 7:30 बजे कॉलोनी वासियों एवं संस्थान के अनेक कार्मिकों ने cycling में भाग लिया।

31 अगस्त की सुबह 7:30 बजे वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. कानूनगो एवं वरिष्ठ प्रशासन नियंत्रक के द्वारा हरी झंडी दिखाकर साइकिल यात्रा का शुभारंभ किया गया। यह यात्रा उत्साहपूर्ण वातावरण में संपन्न हुई और समापन फलाहार एवं भारत माँ के वीर सपूत मेजर ध्यानचंद जी के जयघोष के साथ हुआ।

इस अवसर पर संस्थान के निदेशक डॉ आर प्रदीप कुमार ने संदेश दिया कि खेल, पैदल चलना, साइकिलिंग और स्वस्थ आहार न केवल शारीरिक स्वास्थ्य के लिए आवश्यक हैं बल्कि सामूहिक एकता और सामाजिक सौहार्द को भी मजबूत करते हैं।
ईश्वर चंद संवाददाता सहारा टीवी

Published in :- https://www.saharalivenews.com/archives/9715

CSIR–CBRI, Roorkee celebrated National Sports Day (29–31 Aug 2025) with fitness pledge, cycling events, and a bicycle rally. Director Dr. Pradeep Kumar highlighted the importance of sports, walking, cycling, and a healthy lifestyle.

CSIR-CBRI in the Limelight | 30.08.2025

4 हरिद्वार: दैनिक हाक, शनिवार, 30 अगस्त 2025 — रुड़की

सीएसआईआर-सीबीआरआई ने विकसित किया अग्नि अवरोधित दरवाजा

एस.के. इंजीनियर्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, खुर्दा औद्योगिक एस्टेट, ओडिशा को तकनीक हस्तांतरित

रुड़की (दैनिक हाक): सीएसआईआर, केन्द्रीय भवन अनुसंधान संस्थान, सीबीआरआई ने शुक्रवार को इमारतों में आग की आपदा को नियंत्रित करने के लिए एक महत्वपूर्ण उपलब्धि दर्ज की, जब संस्थान द्वारा विकसित प्रौद्योगिकी "120 मिनट के लिए आंशिक रूप से अग्नि रोधित एकल पल्ले वाला एक तरफ खुलने वाला धातु का संमिश्रित दरवाजा'' का सफलतापूर्वक हस्तांतरण एस.के. इंजीनियर्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, खुर्दा औद्योगिक एस्टेट, ओडिशा को किया गया। ये प्रौद्योगिकी डॉ. नवल किशोर बंजारा (प्रधान वैज्ञानिक) एवं टीम के अभिनव शोध और प्रयासों से सफलतापूर्वक विकसित हुई है।

इस अवसर पर कंपनी के प्रतिनिधि तापस दास प्रबंध निदेशक, मानस दास निदेशक, श्रीमती बानीश्री नायक, श्रीमती सुशीला वर्मा उपस्थित रहे और उन्होंने सीबीआरआई से ये प्रौद्योगिकी औपचारिक रूप से ग्रहण की, जिनका हस्तांतरण सीएसआईआर-सीबीआरआई के निदेशक प्रोफेसर आर. प्रदीप कुमार के कर-कमलों द्वारा किया गया। अग्नि अवरोधित दरवाजे आग लगने के दौरान लपटों, धुएं और गर्मी की गति को सीमित करने में मदद करते हैं। अस्पतालों, कार्यालय भवनों, शॉपिंग मॉल, स्कूलों, विश्वविद्यालयों और अन्य बड़े मानव-आवासीय स्थायी ढाँचों जैसी महत्वपूर्ण इमारतों में अग्नि अवरोधित दरवाजों का उपयोग होता है। विकसित आंशिक रूप से अग्नि अवरोधित दरवाजे का परीक्षण आई.एस.ओ. 834 मानक ताप वक्र का पालन करते हुए, आई.एस. 3614:2021 के अनुसार 120 मिनट तक किया गया। दरवाजे ने 30 मिनट तक आंशिक अग्नि रोधित के मानदंडों को पूरा किया और पूरे 120 मिनट तक अपनी अखंडता और स्थिरता बनाए रखी। प्रौद्योगिकी हस्तांतरण कार्यक्रम में सीएसआईआर-सीबीआरआई के निदेशक प्रोफेसर आर. प्रदीप कुमार की गरिमामयी उपस्थिति रही, तथा वैज्ञानिक समुदाय से डॉ. डी. पी. कानूनगो, डॉ. एस. के. पाणिग्राही, डॉ. सौरव जैन, डॉ. नदीम अहमद, डॉ. राजकुमार, श्रीमति गायत्री देवी, एवम समस्त तकनीकी व परियोजना स्टाफ इत्यादि उपस्थित रहे।

Presented in Newspaper: Dainik Hak

epaper हिन्दुस्तान

Share | Copy url | Save | Font Size | D'load Image | Image | Text | Listen

रुड़की में सीबीआरआई ने बनाया अग्नि अवरोधित विशेष दरवाजा

रुड़की, संवाददाता। सीबीआरआई रुड़की ने इमारतों में आग की आपदा को नियंत्रित करने के लिए एक विशेष प्रकार के दरवाजा विकसित किया है। जो किसी इमारत या मकान के कमरे में आग लगने के 2 घंटे तक आग को दरवाजे से बाहर फैलने से रोक सकता है। कमरे में एक हजार डिग्री तापमान होने के बावजूद भी यह दरवाजा कारगर साबित होगा। संस्थान द्वारा शुक्रवार को एसके इंजीनियर्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड खुर्दा औद्योगिक एस्टेट ओडिशा को

02 घंटे तक कमरे से बाहर नहीं फैलेगी आग

यह तकनीक हस्तानांतरित किया गया। ये प्रौद्योगिकी डॉ. नवल किशोर बंजारा (प्रधान वैज्ञानिक) एवं टीम के अभिनव शोध और प्रयासों से सफलतापूर्वक विकसित हुई है। मौके पर कंपनी के प्रबंध निदेशक मानस दास, सुशीला वर्मा उपस्थित रहे। जिन्होंने सीबीआरआई से ये प्रौद्योगिकी औपचारिक रूप से ग्रहण की। जिनका हस्तांतरण सीबीआरआई के निदेशक प्रोफेसर आर. प्रदीप कुमार के द्वारा किया गया। अग्नि अवरोधित दरवाजे आग लगने के दौरान लपटों, धुएं और गर्मी की गति को सीमित करने में मदद करते हैं। अस्पतालों, कार्यालय भवनों, शॉपिंग मॉल अन्य बड़े मानव- आवासीय स्थायी ढांचों जैसी महत्वपूर्ण इमारतों में अग्नि अवरोधित दरवाजों का उपयोग होता है। इस दौरान वैज्ञानिक समुदाय से डॉ. डीपी कानूनगो, डॉ. एसके पाणिग्राही, डॉ. सौरव जैन आदि मौजूद रहे।

रुड़की सीबीआरआई में शुक्रवार को अग्निरोधित एकल पल्ले वाला एक तरफ खुलने वाला धातु का संमिश्रित दरवाजा का सफलतापूर्वक हस्तांतरण एस.के. इंजीनियर्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, खुर्दा औद्योगिक एस्टेट, ओडिशा को किया गया। • हिन्दुस्तान

यह होगा फायदा

सीबीआरआई के वैज्ञानिकों ने बताया कि अगर किसी मकान के कमरे में आग लग जाती है तो आग की लपटें सबसे पहले दरवाजे या खिड़की से होकर ही बाहर की ओर फैलती है। जिससे की कई बार बड़ी जनहानि हो जाती है। उन्होंने बताया कि अगर इस दरवाजे को लगा दिया जाए तो करीब 2 घंटे तक उस कमरे से आग बाहर को नही फैलेगी। जिससे आसानी से उस मकान या इमारत में मौजूद लोग बाहर निकल सकेंगे।

Presented in Newspaper: Hindustan

CSIR-CBRI in the Limelight | 29.08.2025

Uk Bharat

सत्य की खोज

Home / Uncategorized / सीएसआईआर–सीबीआरआई ने विकसित किया अग्नि अवरोधित दरवाजा, तकनीक हस्तांतरित......

Dehradun | Haridwar | Roorkee | Uncategorized

सीएसआईआर–सीबीआरआई ने विकसित किया अग्नि अवरोधित दरवाजा, तकनीक हस्तांतरित......

Uk Bharat · August 29, 2025

सीएसआईआर–केन्द्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई), रुड़की ने भवन निर्माण क्षेत्र में एक बड़ी उपलब्धि दर्ज की है। संस्थान ने "120 मिनट के लिए आंशिक रूप से अग्नि रोधित, एकल पल्ले वाला, एक तरफ खुलने वाला धातु का संमिश्रित दरवाजा" विकसित कर उसकी प्रोद्योगिकी का सफलतापूर्वक हस्तांतरण एस.के. इंजीनियर्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, खुर्दा औद्योगिक एस्टेट, ओडिशा को किया।

इस अभिनव तकनीक का विकास डॉ. नवल किशोर बंजारा (प्रधान वैज्ञानिक) एवं उनकी शोध टीम द्वारा किया गया। कार्यक्रम में कंपनी की ओर से प्रबंध निदेशक श्री तापस दास, निदेशक श्री मानस दास, श्रीमती बानीश्री नायक और श्रीमती सुशीला वर्मा उपस्थित रहे। प्रोद्योगिकी का औपचारिक हस्तांतरण सीएसआईआर–सीबीआरआई के निदेशक प्रोफेसर आर. प्रदीप कुमार के कर-कमलों से संपन्न हुआ।

विशेषज्ञों के अनुसार, अग्नि अवरोधित दरवाजे आग लगने की स्थिति में लपटों, धुएँ और गर्मी के प्रसार को सीमित करने में मदद करते हैं। इनका उपयोग अस्पतालों, कार्यालयों, शॉपिंग मॉल, स्कूलों, विश्वविद्यालयों और अन्य बड़े सार्वजनिक भवनों में सुरक्षा हेतु किया जाता है।

संस्थान द्वारा विकसित दरवाजे का परीक्षण आईएसओ 834 मानक ताप वक्र का पालन करते हुए आईएस 3614:2021 के अंतर्गत किया गया। दरवाजे ने 30 मिनट तक आंशिक अग्नि-रोधित मानदंडों को पूरा किया और पूरे 120 मिनट तक अपनी अखंडता व स्थिरता बनाए रखी।

प्रोद्योगिकी हस्तांतरण कार्यक्रम में वैज्ञानिक समुदाय से डॉ. डी. पी. कानूनगो, डॉ. एस. के. पाणिग्राही, डॉ. सोरभ जेन, डॉ. नदीम अहमद, डॉ. राजकुमार, श्रीमती गायत्री देवी सहित तकनीकी और परियोजना स्टाफ मौजूद रहा।

Published in :- https://ukbharat.com/csir-cbri-work-for-fair/

CSIR–CBRI, Roorkee developed a fire-resistant composite metal door (120-minute rating) and successfully transferred the technology to S.K. Engineers India Pvt. Ltd., Odisha.

CSIR-CBRI in the Limelight | 21.08.2025

सहारा लाइव NEWS

हर खबर पर पैनी नजर

अंतरराष्ट्रीय | राज्य | टेक्नोलॉजी | ट्रेवल | राष्ट्रीय | लोकल न्यूज़ | स्वास्थ्य | LIVE TV | CONTACT

उत्तराखंड

शोध और प्रयास से सीबीआरआई रुड़की को बड़ी सफलता

By Sahara Live News

AUG 21, 2025

सीएसआईआर-सीबीआरआई द्वारा पिडिलाइट उद्योग को द्वि-प्रौद्योगिकी हस्तांतरण

दिनांक : 21 अगस्त 2025

रुड़की स्थित सीएसआईआर–केन्द्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) ने 21 अगस्त 2025 को भवन निर्माण क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि दर्ज की, जब संस्थान द्वारा विकसित दो अभिनव प्रौद्योगिकियों का सफलतापूर्वक हस्तांतरण पिडिलाइट इंडस्ट्रीज़ लिमिटेड, मुंबई को किया गया। दोनों प्रौद्योगिकियां श्री राजेश कुमार शर्मा (प्रधान वैज्ञानिक) एवं टीम के शोध और प्रयासों से विकसित हुईं हैं । इस अवसर पर कंपनी के प्रतिनिधि डॉ. अनिल बांडेले (वरिष्ठ उपाध्यक्ष, पिडिलाइट उद्योग) उपस्थित रहे और उन्होंने सीबीआरआई से ये प्रौद्योगिकियाँ औपचारिक रूप से ग्रहण कीं, जिनका हस्तांतरण सीएसआईआर-सीबीआरआई के निदेशक प्रोफेसर आर. प्रदीप कुमार ने की प्रौद्योगिकियों की प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं—संरचनात्मक ग्रेड/भार-वहन करने वाला हल्का कंक्रीट, ढलाई के समय किसी यांत्रिक कंपन की आवश्यकता नहीं होने वाली स्वसंपीड्य प्रकृति, नव पीढ़ी का सीमेंट अर्थात् एलसी3 (LC3) प्रौद्योगिकी के कारण क्लोराइड प्रवेश और सल्फेट आक्रमण के विरुद्ध बेहतर ये नवाचार संयुक्त राष्ट्र (UN) के सतत विकास लक्ष्य- 9, 11 और 12 के अनुरूप हैं। द्वि-प्रौद्योगिकी हस्तांतरण कार्यक्रम में सीएसआईआर-सीबीआरआई के निदेशक प्रोफेसर आर. प्रदीप कुमार की गरिमामयी उपस्थिति रही, तथा वैज्ञानिक समुदाय से डॉ. एस. के. पाणिग्राही, एवं समस्त तकनीकी व परियोजना स्टाफ इत्यादि उपस्थित रहे।

Published in :- https://www.saharalivenews.com/archives/9680

On 21st August 2025, CSIR-CBRI Roorkee transferred two innovative construction technologies to Pidilite Industries, including a self-compacting lightweight concrete and advanced LC3 cement. These sustainable technologies support UN SDGs and were developed under the leadership of Chief Scientist Rajesh Kumar Sharma.

CSIR-CBRI in the Limelight | 21.08.2025

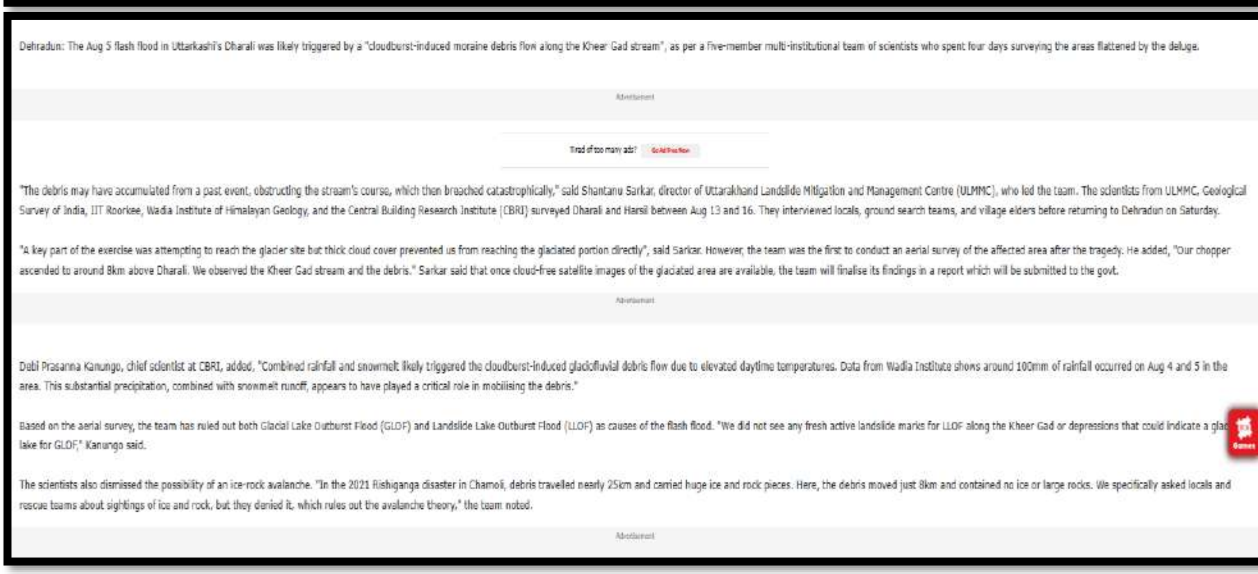

Dehradun: The Aug 5 flash flood in Uttarkashi's Dharali was likely triggered by a "cloudburst-induced moraine debris flow along the Kheer Gad stream", as per a five-member multi-institutional team of scientists who spent four days surveying the areas flattened by the deluge.

Advertisement

Tired of too many ads?

"The debris may have accumulated from a past event, obstructing the stream's course, which then breached catastrophically," said Shantanu Sarkar, director of Uttarakhand Landslide Mitigation and Management Centre (ULMMC), who led the team. The scientists from ULMMC, Geological Survey of India, IIT Roorkee, Wadia Institute of Himalayan Geology, and the Central Building Research Institute (CBRI) surveyed Dharali and Harsil between Aug 13 and 16. They interviewed locals, ground search teams, and village elders before returning to Dehradun on Saturday.

"A key part of the exercise was attempting to reach the glacier site but thick cloud cover prevented us from reaching the glaciated portion directly", said Sarkar. However, the team was the first to conduct an aerial survey of the affected area after the tragedy. He added, "Our chopper ascended to around 8km above Dharali. We observed the Kheer Gad stream and the debris." Sarkar said that once cloud-free satellite images of the glaciated area are available, the team will finalise its findings in a report which will be submitted to the govt.

Advertisement

Debi Prasanna Kanungo, chief scientist at CBRI, added, "Combined rainfall and snowmelt likely triggered the cloudburst-induced glaciofluvial debris flow due to elevated daytime temperatures. Data from Wadia Institute shows around 100mm of rainfall occurred on Aug 4 and 5 in the area. This substantial precipitation, combined with snowmelt runoff, appears to have played a critical role in mobilising the debris."

Based on the aerial survey, the team has ruled out both Glacial Lake Outburst Flood (GLOF) and Landslide Lake Outburst Flood (LLOF) as causes of the flash flood. "We did not see any fresh active landslide marks for LLOF along the Kheer Gad or depressions that could indicate a glac[ial] lake for GLOF," Kanungo said.

The scientists also dismissed the possibility of an ice-rock avalanche. "In the 2021 Rishiganga disaster in Chamoli, debris travelled nearly 25km and carried huge ice and rock pieces. Here, the debris moved just 8km and contained no ice or large rocks. We specifically asked locals and rescue teams about sightings of ice and rock, but they denied it, which rules out the avalanche theory," the team noted.

Advertisement

Published in :- https://timesofindia.indiatimes.com/city/dehradun/1st-aerial-survey-by-scientists-identifies-cloudburst-induced-debris-flow-as-likely-trigger-of-dharali-flood/amp_articleshow/123349265.cms

The August 4, 2025 flash flood in Uttarakhand's Chaurali area was likely caused by a cloudburst-triggered landslide that deposited moraine debris into the Kheer Ganga stream, blocking it and leading to a glacial lake outburst. A team of scientists from various institutes found no signs of a major avalanche but confirmed rainfall and temperature shifts played key roles in triggering the disaster.

CSIR-CBRI in the Limelight | 08.08.2025

कुदरत का कहर

2000 से अधिक फूड पैकेट देहरादून से हेलीकाप्टर से भेजे गए हैं आपदा प्रभावित क्षेत्र धराली में

2023 में अगस्त के ही सिलक्यारा में निर्माणाधीन सुरंग ढहने से फंसे थे 41 श्रमिक

दैनिक जागरण
www.jagran.com

आपदाओं का जोखिम कम करने को मजबूत प्रबंधन की जरूरत

आपदा से पहले रोकथाम, न्यूनीकरण व तैयारी और बाद में प्रतिक्रिया, पुनर्वास और पुनर्निर्माण महत्वपूर्ण

2013 की आपदा उत्तराखंड को छह से आठ हजार करोड़ का नुकसान

सीबीआरआइ रुड़की के मुख्य विज्ञानी डा. अजय चौरसिया।

Presented in Newspaper: Dainik Jagran

प्राथमिक कक्षा से ही पढ़ाया जाए आपदा प्रबंधन

नीना डंडरियाल • जागरण

- जापान, ताइवान और नेपाल जैसे देशों ने इसे स्कूली पाठ्यक्रम में किया है शामिल
- पूर्वजों से सीख लेते हुए भवन निर्माण में भूकंपरोधी तकनीक के प्रयोग की जरूरत

रुड़की: भारतीय हिमालय क्षेत्र भूकंप, भूस्खलन, ग्लेशियर टूटना, ग्लेशियर झील, बादल फटना, बाढ़ की दृष्टि से हमेशा चुनौतीपूर्ण रहा है। आपदा से निपटने के लिए होमवर्क जरूरी है। यही वजह है कि आपदाओं के लिहाज से संवेदनशील राज्य उत्तराखंड, हिमाचल, जम्मू-कश्मीर आदि में प्राचीन काल में परंपरागत तरीके से निर्माण कार्य किया जाता था, जो आपदारोधी भी होता था और किफायती भी। जापान, ताइवान और नेपाल जैसे देशों ने आपदा प्रबंधन को प्राथमिक विद्यालयों के पाठ्यक्रम में भी शामिल किया है। वहां बच्चों को आपदाओं से सबक लेते हुए तैयारियों में जुटने का पाठ पढ़ाया जाता है।

केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआइ) रुड़की के संरचना अभियांत्रिकी प्रभाग के मुख्य विज्ञानी डा. अजय चौरसिया बताते हैं कि आपदाओं से होने वाले जान-माल के नुकसान को कम करने के लिए इन तीन देशों से सीख लेने की आवश्यकता है। इन देशों ने आपदाओं से सबक लेते हुए तैयारियों पर जोर दिया। यही वजह है कि ताइवान में वर्ष 2024 में 7.2 तीव्रता का भूकंप आने पर 10 से भी कम लोगों की जान गई। जबकि, वर्ष 1999 में इसी देश में 7.6 तीव्रता के भूकंप में लगभग 2500 लोगों की जान गई थी और हजारों इमारतें तबाह हो गई थीं।

डा. अजय चौरसिया के अनुसार, पूर्व में जम्मू-कश्मीर, उत्तराखंड व हिमाचल में पारंपरिक तकनीक काठकुनी से भवनों का निर्माण किया जाता था। जिस तरह पूर्वजों ने अपने अनुभवों से सीख लेकर आपदारोधी भवनों का निर्माण किया, उसी तरह वर्तमान में पर्वतीय क्षेत्रों से लेकर मैदानी इलाकों तक आपदारोधी इमारतों का निर्माण करना जरूरी है।

कन्फाइंड मेसनरी तकनीक का करें उपयोग

डा. अजय चौरसिया बताते हैं कि भवन निर्माण में कन्फाइंड मेसनरी तकनीक का उपयोग करना चाहिए। इस तकनीक से भवन भूकंपरोधी व अन्य आपदारोधी बनाए जा सकते हैं। इसमें स्थानी निर्माण सामग्री का इस्तेमाल होता है। इस तकनीक में दीवार के दोनों कोनों के पास कंक्रीट व हल्के सरिये का इस्तेमाल किया जाता है, जो चारों तरफ से भवन को जकड़ लेते हैं। ऐसे में भूकंप आने पर भवन में दरारें तो आ सकती हैं, वो धराशायी नहीं होगा। इसमें आरसीसी तकनीक की तुलना में 40 प्रतिशत कम लागत आती है।

350 प्रतिशत अधिक भार सहने की क्षमता

डा. चौरसिया के अनुसार, सीबीआरआइ ने कन्फाइंड तकनीक की सफलतापूर्वक टेस्टिंग की है। प्रयोगशाला में जांच के दौरान पाया गया कि कन्फाइंड मेसनरी से निर्मित निर्माण में सामान्य चिनाई के मुकाबले 350 प्रतिशत अधिक भार सहने की क्षमता है।

सीबीआरआइ रुड़की के मुख्य विज्ञानी डा. अजय चौरसिया।

पहाड़ों में ढलान पर न हो निर्माण

डा. चौरसिया बताते हैं कि पहाड़ों में ढलान पर निर्माण नहीं होना चाहिए। इससे जब तीव्र गति से वर्षा का पानी आएगा तो इमारत को साथ लेकर चला जाएगा या नींव को कमजोर कर देगा। साथ ही पहाड़ों पर अधिक बहुमंजिला भवन न बनाया जाए।

Presented in Newspaper: Jagran

जोखिम कम करने को चाहिए मजबूत प्रबंधन

रीना डंडरियाल • जागरण

रुड़की: भारतीय हिमालय आपदाओं जैसे बाढ़, भूकंप, भूस्खलन, ग्लेशियर टूटना, ग्लेशियर झील, बादल फटना आदि की दृष्टि से संवेदनशील है। क्योंकि, यह नया एवं कमजोर पर्वत है। वहीं, उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश जैसे पहाड़ी राज्यों में धराली जैसी प्राकृतिक आपदाओं का जोखिम हमेशा बना रहता है। इसलिए इन राज्यों में मजबूत आपदा प्रबंधन योजना बेहद जरूरी है। इससे [illegible] ही प्राकृतिक आपदाओं को रोका न जा सके, लेकिन जान-माल के खतरे को काफी कम किया जा सकता है। यह कहना है केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआइ) रुड़की के संरचना अभियांत्रिकी प्रभाग के मुख्य विज्ञानी डा. अजय चौरसिया का।

डा. चौरसिया बताते हैं कि आपदा प्रबंधन योजना के छह कंपोनेंट (अवयव) होते हैं। जिसमें किसी भी प्रकार की आपदा से पहले रोकथाम, न्यूनीकरण (मिटिगेशन) और तैयारी शामिल हैं। जबकि, आपदा के बाद प्रतिक्रिया, पुनर्वास और पुनर्निर्माण महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि प्राकृतिक आपदाओं को रोका नहीं जा सकता। ऐसे में बाकी पांच कंपोनेंट पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है। साथ ही पहाड़ी क्षेत्रों में निर्माण को लेकर नियम-कायदे तय करने और उनके पालन की सख्त जरूरत है। चिंता की बात है कि पर्वतीय क्षेत्रों में करीब 85 प्रतिशत गैर इंजीनियर्ड इमारतें हैं। यानी इन्हें किसी पेशेवर इंजीनियर की ओर से डिजाइन एवं प्रमाणित नहीं किया गया है। नियमानुसार नदियों के 50 मीटर के दायरे में मकान आदि का निर्माण नहीं किया जा सकता। बावजूद इसके पहाड़ी क्षेत्रों में नदियों के आसपास निर्माण हो रहा है। उनके अनुसार 2023 में जोशीमठ भूधंसाव की वजह नियमों का पालन नहीं होना था। जोशीमठ में लूज मलबे में लोगों ने मकान बना रखे हैं। ड्रेनेज की कोई व्यवस्था नहीं है।

डा. अजय चौरसिया • जागरण

- आपदा से पहले रोकथाम, न्यूनीकरण व तैयारी और बाद में प्रतिक्रिया पुनर्वास और पुनर्निर्माण महत्वपूर्ण
- पहाड़ी क्षेत्रों में निर्माण को लेकर नियम-कायदे तय करने और उनका सख्ती से पालन कराने की जरूरत

राहत की पहले से हो तैयारी

विज्ञानी डा. चौरसिया कहते हैं कि आपदा के बाद राहत एवं बचाव कार्य में काफी दिक्कतें आती हैं। ऐसे में धराली जैसी आपदा के पीड़ितों को तुरंत राहत पहुंचाने के लिए पहले से व्यवस्था होनी चाहिए। सर्वे करके कुछ सुरक्षित स्थानों पर स्कूल, अस्पताल आदि में कमरों की व्यवस्था करनी चाहिए। ताकि किसी भी प्रकार की आपदा आने पर पीड़ितों को तत्काल राहत पहुंचाई जा सके।

उत्तराखंड को छह से आठ हजार करोड़ का नुकसान

डा. चौरसिया के अनुसार हिमाचल में 2023 की आपदा के कारण वहां के पर्यटन को करीब 10 हजार करोड़ रुपये का सालाना और उत्तराखंड को 2013 की आपदा के बाद छह से आठ हजार करोड़ रुपये का सालाना नुकसान हुआ था। आपदा का प्रभाव लंबे समय तक रहता है, इसलिए जोखिम को कम करने की दिशा में ठोस कदम उठाने चाहिए।

विशेषज्ञों ने आपदाग्रस्त क्षेत्र में की पड़ताल

उत्तरकाशी। धराली में आपदा से प्रभावित क्षेत्र का स्थलीय निरीक्षण करने और इस घटना के संभावित कारणों को जानने के लिए शासन की ओर से गठित विशेषज्ञों की टीम बुधवार को धराली पहुंची।

टीम ने प्रभावित क्षेत्र में आपदा से हुए नुकसान, उसकी प्रवृत्ति और कारणों की मौके पर पड़ताल की। पांच सदस्यीय विशेषज्ञों की यह टीम पूरे आपदाग्रस्त क्षेत्र का सर्वे करने के बाद अपनी रिपोर्ट शासन को सौंपेगी।

विशेषज्ञों की इस टीम में उत्तराखंड भूस्खलन शमन एवं प्रबंधन केंद्र के निदेशक शांतनु सरकार, केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान रुड़की के मुख्य वैज्ञानिक डॉ. डीपी कानूनगो, भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण के निदेशक रवि नेगी, वाडिया हिमालय भूविज्ञान संस्थान के वैज्ञानिक डॉ. अमित कुमार, उत्तराखंड भूस्खलन न्यूनीकरण और प्रबंधन केंद्र के प्रधान सलाहकार मोहित कुमार शामिल हैं। बुधवार को विशेषज्ञों ने धराली में फैले मलबे के नमूनों को भी परखा। खीरगंगा के प्रवाह क्षेत्र और मलबे के प्रसार का भी जायजा लिया।

स्थानीय लोगों से घटना के बारे में जानकारी प्राप्त की। बृहस्पतिवार को भी विशेषज्ञों की टीम धराली में अलग-अलग स्थानों पर जाकर बीते पांच अगस्त को खीर गंगा में आई तबाही के कारणों को तलाशने का काम करेंगी। ज्ञात हो कि यह टीम दो दिन से मौसम खराब होने के कारण प्रभावित क्षेत्र में नहीं पहुंच सकी थी। ब्यूरो

Presented in Newspaper: Jagran

Dr. Ajay Chourasia, senior scientist at CSIR-CBRI, emphasizes the need for strong disaster management through risk assessment, early warnings, and preparedness. Citing the 2013 Kedarnath and 2023 Uttarakhand disasters, he highlights the importance of coordinated response and long-term recovery to reduce future risks.

CSIR-CBRI in the Limelight | 02.08.2025

पब्लिक न्यूज राष्ट्रीय 5

Visit us at: www.facebook.com/publicnewsindia/ www.publicnews.live

सीबीआरआई रुड़की और एचपीएसडीएमए का संयुक्त प्रयास आपदा प्रबंधन में नई दिशा

SHUBHAM PROPERTIES
AND BUILDERS

Published in Public News Newspaper

CSIR-CBRI in the Limelight | 30.07.2025

Low cost construction technologies book published by cbri researcher.

• The Voice Of Nation

Dr Rakesh Vashishtha

News Room Roorki –CSIR CBRI Roorkee published a book titled "Low-Cost Construction Technologies (1947 -2025) by CSIR-CBRI Researchers" on 30th July 2025. This Book is a humble tribute to the visionary scientists whose groundbreaking contributions have redefined the construction technology landscape in India. Their relentless pursuit of excellence has transformed scientific research into real-world solutions, directly impacting the lives of millions, from vulnerable rural communities to large-scale urban developments. Their contributions have significantly enhanced buildings' safety, durability, and efficiency, particularly benefiting those in economically weaker sections and disaster-prone areas.

Ar. S.K.Negi, who has conceptualized and authored the book, has been working on the book for the last few months. The book he has lived on, worked on, and seen being developed for more than 35 years of his service in CBRI Roorkee.

The book will be helpful for building practitioners looking for the time-tested low-cost construction technologies and students visiting the Rural Technology Park, curious about the technical building details behind the time-tested technologies demonstrated there.

The occasion was graced by CBRI Director Prof. R Pradeep Kumar and the editorial team of the book, Ar. S.K.Negi, Ar. Anup Kumar Prasad, Dr. Naveen Nishant, Er. Nikhil Singh, Ar. Shivangi Pal, Ar. Nitin Singh Negi and Er. Harsh Gautam and other eminent scientists of CSIR CBRI Roorkee.

Published in the Newspaper "The Voice of Nation"

Low cost construction technologies book published by cbri researcher.

• The Times Of Suncity
(Dr Rakesh Vashishtha) N.O. Roorki

CSIR CBRI Roorkee published a book titled "Low-Cost Construction Technologies (1947 -2025) by CSIR-CBRI Researchers" on 30th July 2025. This Book is a humble tribute to the visionary scientists whose groundbreaking contributions have redefined the construction technology landscape in India. Their relentless pursuit of excellence has transformed scientific research into real-world solutions, directly impacting the lives of millions, from vulnerable rural communities to large-scale urban developments. Their contributions have significantly enhanced buildings' safety, durability, and efficiency, particularly benefiting those in economically weaker sections and disaster-prone areas.

Ar. S.K.Negi, who has conceptualized and authored the book, has been working on the book for the last few months. The book he has lived on, worked on, and seen being developed for more than 35 years of his service in CBRI Roorkee.

The book will be helpful for building practitioners looking for the time-tested low-cost construction technologies and students visiting the Rural Technology Park, curious about the technical building details behind the time-tested technologies demonstrated there.

The occasion was graced by CBRI Director Prof. R Pradeep Kumar and the editorial team of the book, Ar. S.K.Negi, Ar. Anup Kumar Prasad, Dr. Naveen Nishant, Er. Nikhil Singh, Ar. Shivangi Pal, Ar. Nitin Singh Negi and Er. Harsh Gautam and other eminent scientists of CSIR CBRI Roorkee.

Published in the Newspaper "The Times of Suncity"

CSIR-CBRI Roorkee released a book titled *"Low-Cost Construction Technologies (1947–2025)"* by Ar. S.K. Negi on 30th July 2025, showcasing affordable, sustainable, and disaster-resilient building solutions. The launch was led by CBRI Director Prof. R. Pradeep Kumar and senior scientists.

CSIR-CBRI in the Limelight | 29.07.2025

उत्तराखंड

Skill Initiative Program.

By Sahara Live News

JUL 28, 2025

A five-day Training Program on Seismic Retrofitting and DPR Preparation commenced today at CSIR–Central Building Research Institute (CBRI), Roorkee, under the CSIR Integrated Skill Initiative Program. Scheduled from July 28 to August 1 2025, the workshop is sponsored by the Himachal Pradesh State Disaster Management Authority (HPSDMA) and coordinated by Er. Ashish Pippal, Senior Scientist, CSIR-CBRI. The inaugural session was graced by the Chief Guest, Prof. R. Pradeep Kumar, Director, CSIR-CBRI, along with Ar. S.K. Negi, Chief Scientist, and other eminent dignitaries including Dr. Ajay Chaurasiya, Sh. Nadeem Ahmad, Dr. Leena Chaurasiya, Dr. Chandan Swaroop Meena, and Dr. Naveen Nishant. Along with that, Sh. Rajnish Kumar, Technical Assistant, Ms. Sanskriti Sharma, Sh. Amzad, Sh. Mahesh, and other staff members from the ODS Division also extended their valuable support and presence. Dr. Ajay Chaurasia briefed the participants about the objectives and structure of the training program. He motivated the participants by highlighting the importance of such technical workshops in enhancing practical knowledge and skills. Thereafter, Ar. S.K. Negi expressed heartfelt appreciation for the unwavering support and trust shown by the Himachal Pradesh Government towards CSIR-CBRI. He remarked that such collaborations not only strengthen institutional ties but also play a pivotal role in advancing safer and more resilient infrastructure across vulnerable regions. Director Prof. R. Pradeep Kumar, in his inaugural address underlined the importance of hands-on training and real-world experience in the field of structural engineering. He remarked, "It is through practice that knowledge becomes wisdom. In hilly regions, the risk of structural failures is significantly higher, and hence, engineers must meticulously examine every aspect on the ground." He also introduced the participants to CSIR-CBRI's vision, capabilities, and ongoing research in earthquake-resistant construction and retrofitting technologies. The vote of thanks was proposed by Sh. Nadeem Ahmad, Chief Scientist, who extended a warm welcome to all participants and conveyed his best wishes for a productive and enriching training experience. He acknowledged the collective efforts of the organizing team and emphasized the value of collaborative learning in strengthening disaster resilience. The training program comprises expert lectures, technical sessions, and hands-on demonstrations designed to enhance the practical skills and awareness of engineers and professionals engaged in structural safety and disaster risk mitigation.

Ishwar chand reporter sahara tv uttrakhand

Published in :- https://www.saharalivenews.com/archives/9548

www.livehindustan.com
हिन्दुस्तान
देहरादून, मंगलवार, 29 जुलाई 2025 04

'इंजीनियरों को हर पहलू का निरीक्षण करना चाहिए'

■ सीबीआरआई में भूकंपीय रेट्रोफिटिंग तैयारी पर प्रशिक्षण शुरू

रुड़की, संवाददाता। सीबीआरआई के निदेशक प्रो. आर प्रदीक कुमार ने कहा कि संरचनात्मक इंजीनियरिंग के क्षेत्र में व्यावहारिक प्रशिक्षण और कार्यस्थल अनुभव का विशेष महत्व है। अभ्यास से ही ज्ञान में परिपक्वता आती है। पहाड़ी क्षेत्रों में संरचनात्मक असफलताओं की संभावना अधिक होती है। इसलिए इंजीनियरों को प्रत्येक पहलू का गहन निरीक्षण करना चाहिए। सोमवार को आयोजित कार्यक्रम में उन्होंने प्रतिभागियों को सीबीआरआई की गतिविधियों, क्षमताओं और भूकंपरोधी निर्माण तथा रेट्रोफिटिंग तकनीकों पर किए जा रहे अनुसंधान से भी अवगत कराया।

सीबीआरआई में भूकंपीय रेट्रोफिटिंग और डीपीआर तैयारी पर आधारित पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ सोमवार को किया गया। जिसका प्रयोजन हिमाचल प्रदेश राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (एचपीएसडीएमए) द्वारा किया गया है। सीबीआरआई के मुख्य वैज्ञानिक एसके नेगी ने सीबीआरआई के प्रति हिमाचल प्रदेश सरकार द्वारा प्रदर्शित सहयोग और विश्वास के लिए आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि इस प्रकार का सहयोग संस्थागत साझेदारी को आगे बढ़ाता है।

इस दौरान डॉ. अजय, नदीम, डॉ. लीना, डॉ. सीएस मीना, डॉ. नवीन निशांत आदि मौजूद रहे। पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम विशेषज्ञ व्याख्यान, तकनीकी सत्रों और व्यावहारिक प्रदर्शन के माध्यम से प्रतिभागियों की संरचनात्मक सुरक्षा और आपदा जोखिम न्यूनीकरण से संबंधित व्यावहारिक दक्षताओं को बढ़ाने के उद्देश्य से आयोजित किया जा रहा है।

रुड़की सीबीआरआई में सोमवार को आयोजित कार्यशाला में उपस्थित लोग। • हिन्दुस्तान

Published in Hindustan Newspaper

सीबीआरआइ में स्वास्थ्य शिविर का शुभारंभ करते संस्थान के निदेशक • संस्थान

सीबीआरआइ में स्वास्थ्य परीक्षण शिविर शुरू

जागरण संवाददाता, रुड़की : केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआइ) में सोमवार को स्वास्थ्य परीक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इसका शुभारंभ संस्थान के निदेशक प्रो. प्रदीप कुमार ने किया। उन्होंने कहा कि समय-समय पर स्वास्थ्य परीक्षण जरूरी है। जिस तरह की लाइफ स्टाइल हो चली है उसमें तमाम विकार शरीर में उत्पन्न हो रहे हैं। इनको शुरुआत में अनदेखा करने से बाद में यह बड़ी बीमारी बन जाते हैं। आज डायबिटीज, ब्लड शुगर, कोलेस्ट्राल का बढ़ना, हाई बीपी आदि की समस्या बढ़ती जा रही है। यह शिविर 30 जुलाई तक चलेगा। सोमवार को संस्थान के 55 प्रतिभागियों ने स्वास्थ्य जांच कराई। इस मौके पर समन्वयक सीबीआरआइ के डा. राजेश कुमार वर्मा, सह समन्वयक डा. नीरज जैन आदि मौजूद रहे।

Published in Dainik Jagran

CSIR–CBRI, Roorkee started a five-day training on Seismic Retrofitting and DPR Preparation on 28 July 2025, supported by HPSDMA. Inaugurated by Prof. R. Pradeep Kumar, the program focuses on practical training for disaster resilience and structural safety.

Shah directs formation of team to address Himachal natural disasters

Jayashree Nandi
letters@hindustantimes.com

NEW DELHI: Union home minister Amit Shah has directed the formation of a multi-sectoral central team to study and address increasing frequency and intensity of natural disasters in Himachal Pradesh, the ministry of home affairs (MHA) said in a statement.

In a recent meeting chaired by Shah, it was observed that the Himalayan state has witnessed an increase in the frequency and intensity of cloudbursts, flash floods, landslides and torrential rainfall, causing widespread loss of life, damage to infrastructure, livelihoods and environmental degradation.

To address these concerns, the MHA constituted a multi-sectoral central team, comprising experts from National Disaster Management Authority (NDMA), Central Building Research Institute (CBRI) Roorkee, Indian Institute of Tropical Meteorology (IITM) Pune, Geologist, and Indian Institute of Technology (IIT) Indore, the statement said.

At least 85 lives have been lost, and 34 people are still missing in rain-related incidents in the hill state in the ongoing monsoon so far.

→P8

Published in Hindustan Times Newspaper

Set up multi-sectoral team for natural disasters, says Shah

TIMES NEWS NETWORK

New Delhi: In view of the increasing frequency and intensity of natural disasters and the need to mitigate losses, Union home minister Amit Shah on Sunday directed the formation of a multi-sectoral central team.

Shah recently held a review meeting on the natural disasters in Himachal Pradesh, where massive loss of lives and livelihoods have been reported due to an increase in the frequency and intensity of cloudbursts, flash floods, landslides and torrential rainfall, causing widespread damage to infrastructure and environmental degradation in the state.

The multi-sectoral central team would comprise experts from National Disaster Management Authority (NDMA), Central Building Research Institute (CBRI) Roorkee, Indian Institute of Tropical Meteorology (IITM) Pune, and Indian Institute of Technology (IIT) Indore.

To provide immediate relief to affected people in Himachal Pradesh, the Union govt has already deputed an Inter-Ministerial Central Team (IMCT) for a first-hand assessment of the damages. IMCT is visiting the affected areas of the state from July 18-21.

A high-level committee chaired by Shah has already approved an outlay of over Rs 2,006 crore to Himachal Pradesh for recovery and reconstruction in areas affected by disasters like floods, landslides and cloudbursts in 2023, releasing the first instalment of this package (Rs 451 crore) on July 7.

Earlier on June 18, Centre released an instalment of Rs 198 crore for relief measures in Himachal Pradesh under State Disaster Response Fund.

Shah recently held a review meeting on the natural disasters in Himachal Pradesh, where massive loss of lives and livelihoods have been reported

Published in Times New Network Newspaper

हिमाचल प्रदेश में आपदाओं पर केंद्र गंभीर, बनाएगा विशेष टीम

गृह मंत्री शाह का निर्देश-पता लगाएं, क्यों बढ़ीं आपदाएं

अमर उजाला ब्यूरो

नई दिल्ली। हिमाचल प्रदेश में बादल फटने, अचानक बाढ़ आने और भूस्खलन की बढ़ती घटनाओं पर केंद्र सरकार गंभीरता से ध्यान दे रही है। केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री ने प्राकृतिक आपदाओं की बढ़ती आवृत्ति के कारणों का पता लगाने के लिए एक बहु-क्षेत्रीय समिति के गठन का निर्देश दिया है। इसमें कई प्रमुख संस्थानों के विशेषज्ञ शामिल होंगे।

गृह मंत्री शाह की अध्यक्षता में हुई एक बैठक में इस बात पर मंथन किया गया कि हिमाचल प्रदेश में बादल फटने, भूस्खलन और मूसलाधार बारिश की आवृत्ति और तीव्रता में वृद्धि हुई है। इससे राज्य में व्यापक जनहानि, बुनियादी ढांचे और आजीविका को नुकसान और पर्यावरण क्षरण भी हुआ है। शाह ने तुरंत राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (एनडीएमए), केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) रुड़की, भारतीय उष्णदेशीय मौसम विज्ञान संस्थान (आईआईटीएम) पुणे, भूविज्ञानी और भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर के विशेषज्ञों की एक बहु-क्षेत्रीय केंद्रीय टीम गठित करने का निर्देश दिया।

बैठक में कहा गया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में, केंद्र सरकार आपदाओं के समय बिना किसी भेदभाव के राज्यों के साथ मजबूती से खड़ी है। अमित शाह की अध्यक्षता में एक उच्चस्तरीय समिति वर्ष

अंतर-मंत्रालयी दल ले रहा हालात का जायजा...हिमाचल प्रदेश के विभिन्न हिस्सों में दक्षिण-पश्चिम मानसून 2025 के दौरान बाढ़, अचानक आई बाढ़ और भूस्खलन के मद्देनजर केंद्र सरकार राज्य के ज्ञापन का इंतजार किए बिना ही नुकसान के प्रत्यक्ष आकलन के लिए एक अंतर-मंत्रालयी केंद्रीय दल को 18 जुलाई को ही भेज चुका है। यह केंद्रीय दल 21 जुलाई तक राज्य के प्रभावित क्षेत्रों का दौरा करेगा।

अन्य राज्यों की भी लगातार की जा रही है मदद...हिमाचल प्रदेश के आपदा प्रभावित लोगों की सहायता के लिए केंद्र सरकार 18 जून को राज्य आपदा मोचन निधि से 198.80 करोड़ रुपये की केंद्रीय हिस्सेदारी की पहली किस्त भी दे चुकी है। केंद्र ने हिमाचल समेत सभी राज्यों को आवश्यक राष्ट्रीय आपदा मोचन बल (एनडीआरएफ) टीमें, सेना टीमें और वायु सेना की तैनाती सहित सभी प्रकार की रसद सहायता भी प्रदान की है।

2023 के लिए आपदाओं से प्रभावित क्षेत्रों में पुनर्वास और पुनर्निर्माण के लिए हिमाचल प्रदेश को 2006.40 करोड़ के परिव्यय को पहले ही मंजूरी दे चुकी है। 7 जुलाई 2025 को 451.44 करोड़ रुपये की पहली किस्त भी जारी कर दी गई थी।

Published in Amar Ujaala Newspaper

Union Home Minister Amit Shah has called for the formation of a multi-sectoral central team to tackle natural disasters, following increased incidents in Himachal Pradesh. The proposed team will include experts from various institutions like CSIR-CBRI and focus on damage assessment, infrastructure restoration, and long-term disaster management planning.

सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की में तीन दिवसीय राष्ट्रीय प्रशिक्षण का भव्य समापन — युवाओं को मिली ऊर्जा दक्ष और सतत भवन निर्माण तकनीकों की गहन जानकारी

bahadrabadnews July 19, 2025 11:21 am

(शहजाद अली हरिद्वार)रुड़की, 18 जुलाई 2025: सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई), रुड़की द्वारा आयोजित तीन दिवसीय राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम "भवन निर्माण प्रौद्योगिकियों में नवीनतम प्रवृत्तियाँ" का समापन शुक्रवार को संस्थान परिसर में उत्साहपूर्वक संपन्न हुआ।

यह प्रशिक्षण 16 से 18 जुलाई तक आयोजित किया गया, जिसमें देश के विभिन्न तकनीकी संस्थानों से आए प्रतिभागी छात्रों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।

बल्कि उन्हें सतत और ऊर्जा दक्ष निर्माण तकनीकों से भी अवगत कराते हैं। उन्होंने भवन निर्माण क्षेत्र में तकनीकी विकास और पर्यावरणीय स्थायित्व को एक साथ जोड़ने की आवश्यकता पर बल दिया।

ओडीएस प्रमुख श्री नदीम अहमद ने युवाओं में व्यावहारिक कौशल विकसित करने के महत्व को रेखांकित करते हुए कहा कि आज का निर्माण उद्योग उन्नत तकनीकों और स्मार्ट समाधानों की ओर बढ़ रहा है, ऐसे में प्रशिक्षण कार्यक्रमों की उपयोगिता और भी अधिक बढ़ जाती है।

इस कार्यक्रम का संयोजन वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. ताबिश आलम द्वारा किया गया, जिनके नेतृत्व में श्री रजनीश सहित आउटरीच एवं प्रचार-प्रसार सेवा प्रभाग (ओडीएस) की टीम ने उत्कृष्ट समन्वय किया। प्रतिभागियों को ऊर्जा दक्ष भवन निर्माण, स्मार्ट निर्माण प्रणालियाँ और टिकाऊ तकनीकों पर व्यावहारिक जानकारी प्रदान की गई।

अंत में सभी प्रतिभागियों को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। यह कार्यक्रम प्रतिभागियों के लिए ज्ञानवर्धक और प्रेरणादायी अनुभव रहा।

Published in :- https://bahadrabadnews.com/csir-cbri-grand-closing-of-three-day-national-training-in-roorkee-energy-of-energy-and-sustainable-building-construction-techniques-received-by-the-youth/

CSIR-CBRI in the Limelight | 16.07.2025

उत्तराखंड

“Latest Trends in Building Construction

By Sahara Live News

JUL 16, 2025

Three-Day Training Program on "Latest Trends in Building Construction Technologies" Begins at CSIR-CBRI, Roorkee

Roorkee, July 16, 2025 — A three-day national-level training program on "Latest Trends in Building Construction Technologies" commenced today at the CSIR-Central Building Research Institute (CBRI), Roorkee. Scheduled from July 16 to 18, the program is specially designed for trainee students from various technical institutes across India, aiming to expose them to cutting-edge innovations and sustainable practices in the field of building construction.

The training program was inaugurated by Prof. R. Pradeep Kumar, Director of CSIR-CBRI. In his inaugural address, Prof. Kumar highlighted the importance of staying abreast of technological advancements in the construction sector. He stated, "Innovations are continuously reshaping the building construction landscape. It is crucial for today's youth to be aware of sustainable, advanced, and environmentally friendly technologies. This program will not only impart practical knowledge but also instill confidence in young professionals to face future challenges." He also underlined the significance of both academic education and value-based learning for holistic development.

The inauguration began with a warm welcome to all participants by Shri Nadeem Ahmad, Chief Scientist. The training is being coordinated by Dr. Tabish Alam, Senior Scientist, and includes a series of expert sessions on vital topics such as precast construction systems, prefabricated construction technology, energy-efficient building design, and smart construction methods.

To provide experiential learning, the program also features guided tours of CSIR-CBRI's state-of-the-art labs at CSIR-CBRI, Roorkee, allowing participants to witness firsthand the practical application of the technologies discussed.

Present during the inauguration were Er. Ashish Pippal, Dr. Chandan Swaroop Meena, Mr. Rajnish Kumar (Technical Assistant), and other members of the Outreach and Dissemination Services (ODS) team. The inaugural session concluded with a vote of thanks by Er. Ashish Pippal, who urged participants to make the most of this learning opportunity and channel their knowledge towards meaningful societal and academic contributions.

Certificates will be distributed to all participants during the closing ceremony on July 18, marking the successful culmination of this impactful training initiative.

Published in :- https://www.saharalivenews.com/archives/9509

CSIR-CBRI Roorkee held a three-day training program on "Latest Trends in Building Construction Technologies" from July 16–18, 2025, for technical students across India. The program featured expert sessions, lab visits, and hands-on demonstrations on modern, sustainable construction practices.

CSIR-CBRI in the Limelight | 03.07.2025

UNCATEGORIZED

सीबीआरआई रुड़की ने धर्मशाला में आयोजित डेस्टिनेशन हिमाचल 2025 प्रदर्शनी में भाग लिया

JanMudde · 2 weeks ago · 1 min read

JAN MUDDE LIVE

1 of 59 Next

LIVE CRICKET SCORE

RECENT | LIVE | UPCOMING

ENG vs IND

387/10(112.3) & 192/10(62.1) — 387/10(119.2) & 170/10(74.5)

England win by 22 runs

Spread the love

आरिफ नियाजी।

सीएसआईआर-सेंट्रल बिल्डिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट (सीबीआरआई), रुड़की ने धर्मशाला में आयोजित डेस्टिनेशन हिमाचल 2025 प्रदर्शनी में भाग लिया। इस कार्यक्रम का उद्घाटन हिमाचल प्रदेश के माननीय राज्यपाल श्री शिव प्रताप शुक्ला और कांगड़ा से संसद सदस्य (लोकसभा) डॉ. राजीव भारद्वाज ने किया। दोनों ने सीबीआरआई स्टॉल का दौरा किया और हिमाचल जैसे पहाड़ी क्षेत्रों के लिए डिज़ाइन की गई तकनीकों में बहुत रुचि दिखाई।

धर्मशाला के विधायक श्री सुधीर शर्मा ने भी स्टाल का दौरा किया और देश के भवन और आवास की जरूरतों के लिए सीबीआरआई द्वारा किए जा रहे महत्वपूर्ण कार्यों की सराहना की।

इस स्टाल में कई दिलचस्प प्रदर्शन थे, जिनमें राम मंदिर के मॉडल, ऊर्जा की बचत करने वाले ईंट भट्टे, मिट्टी बनाने वाली ईंट बनाने की मशीनें, सोलर water heater for high altitude region और बहुत कुछ शामिल थे। 1000 से अधिक स्कूली छात्रों ने इस स्टॉल का दौरा किया और इन नवाचारों को देखने और जानने के लिए उत्साहित थे।

इसके अलावा, सीएसआईआर-सीबीआरआई स्टाल ने गणमान्य व्यक्तियों, अधिकारियों और युवाओं की व्यापक रुचि को आकर्षित किया-जो टिकाऊ और लचीले निर्माण समाधानों के प्रति सीबीआरआई की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

Published in :- https://www.janmudde.com/archives/33804

उत्तराखंड

डेस्टिनेशन हिमाचल 2025

By Sahara Live News

JUL 3, 2025

सीएसआईआर-सेंट्रल बिल्डिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट (सीबीआरआई), रुड़की ने धर्मशाला में आयोजित डेस्टिनेशन हिमाचल 2025 प्रदर्शनी में भाग लिया। इस कार्यक्रम का उद्घाटन हिमाचल प्रदेश के माननीय राज्यपाल श्री शिव प्रताप शुक्ला और कांगड़ा से संसद सदस्य (लोकसभा) डॉ. राजीव भारद्वाज ने किया। दोनों ने सीबीआरआई स्टॉल का दौरा किया और हिमाचल जैसे पहाड़ी क्षेत्रों के लिए डिज़ाइन की गई तकनीकों में बहुत रुचि दिखाई।

धर्मशाला के विधायक श्री सुधीर शर्मा ने भी स्टाल का दौरा किया और देश के भवन और आवास की जरूरतों के लिए सीबीआरआई द्वारा किए जा रहे महत्वपूर्ण कार्यों की सराहना की।

इस स्टाल में कई दिलचस्प प्रदर्शन थे, जिनमें राम मंदिर के मॉडल, ऊर्जा की बचत करने वाले ईंट भट्टे, मिट्टी बनाने वाली ईंट बनाने की मशीनें, सोलर water heater for high altitude region और बहुत कुछ शामिल थे। 1000 से अधिक स्कूली छात्रों ने इस स्टॉल का दौरा किया और इन नवाचारों को देखने और जानने के लिए उत्साहित थे।

इसके अलावा, सीएसआईआर-सीबीआरआई स्टाल ने गणमान्य व्यक्तियों, अधिकारियों और युवाओं की व्यापक रुचि को आकर्षित किया-जो टिकाऊ और लचीले निर्माण समाधानों के प्रति सीबीआरआई की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

ईश्वर चंद्र संवाददाता सहारा टीवी

Published in :- https://www.saharalivenews.com/archives/9454

From 2nd-4th July 2025, CSIR-CBRI Roorkee participated in "Destination Himachal 2025" in Dharamshala, showcasing innovative building technologies for disaster-prone, high-altitude regions. Its exhibits like prefab shelters and solar water heaters drew attention from dignitaries and visitors.

CSIR-CBRI in the Limelight | 28.06.2025

राष्ट्रीय | अंतरराष्ट्रीय | खास खबर | राजनीति | लोकल न्यूज़ | स्वास्थ्य | राज्य | शिक्षा | एक्सक्लूसिव | बॉलीवुड | Live

UNCATEGORIZED

सीएसआईआर – सेंट्रल बिल्डिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट रुड़की में महानिदेशक एवं डीएसआईआर, भारत सरकार की सचिव पहुंची रूड़की,हुआ स्वागत

सीएसआईआर - सेंट्रल बिल्डिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट (सीबीआरआई), रुड़की में सीएसआईआर की महानिदेशक एवं डीएसआईआर, भारत सरकार की सचिव डॉ. (श्रीमती) एन. Kalaiselvi तथा पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय, भारत सरकार के सचिव डॉ. एम. रविचंद्रन संस्थान के दौरे पर पहुंचे।

इस अवसर पर सीबीआरआई निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार के साथ वरिष्ठ वैज्ञानिक एस. के. नेगी, डॉ. अजय चौरसिया, डॉ. डी. पी. कनुंगो, डॉ. पी. सी. थपलियाल, एस. के. सिंह, डॉ. चंदन स्वरूप मीणा, आशीष पिप्पल, डॉ. हेमलता, डॉ. हीना गुप्ता, ashwathi और डॉ. लीना चौरेशिया उपस्थित रहे। आगंतुक विशिष्ट अतिथियों ने संस्थान की अत्याधुनिक अनुसंधान प्रयोगशालाओं और सुविधाओं का भ्रमण किया, जिनमें विरासत दीर्घा (Virasat Dirgha), राष्ट्रीय भूकंप अभियंत्रण परीक्षण सुविधा (NEETF), डेब्रिस फ्लो सुविधा, लिक्विफेक्शन प्रयोगशाला, 3डी प्रिंटिंग लैब, अग्नि अभियंत्रण परीक्षण सुविधा एवं ऑयल वेल पावर मिटिगेशन सुविधा प्रमुख रहीं।

भ्रमण के पश्चात आयोजित कार्यक्रम की शुरुआत निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार के स्वागत भाषण से हुई, जिसमें उन्होंने संस्थान की उपलब्धियों और विकास यात्रा को साझा करते हुए प्रेरक नारा प्रस्तुत किया: "हर घर में CBRI, हर दिल में CSIR"।

डॉ. कलाईसेल्वी ने अपने संबोधन में सीबीआरआई की तकनीकी क्षमताओं, सामूहिक कार्यसंस्कृति और नवाचारों की सराहना करते हुए विशेष रूप से जलवायु-प्रतिकारक भवनों, 12000 फीट की ऊँचाई or uske upper उपयोग योग्य solar water heater सौर तापीय प्रणाली, अग्नि सुरक्षा अभियांत्रिकी, 3डी प्रिंटिंग तकनीक, और HARI Project के अंतर्गत लेह-लद्दाख जैसे उच्च हिमालयी क्षेत्रों के लिए विकसित आवासीय समाधानों की सराहना की। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिकों का उद्देश्य होना .

पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के सचिव डॉ. एम. रविचंद्रन ने संस्थान के ऊर्जा-सम्पन्न और नवाचार केंद्रित वातावरण की सराहना करते हुए कहा कि सीबीआरआई भारत@2047 के लक्ष्य को प्राप्त करने में एक महत्वपूर्ण भागीदार बन सकता है। उन्होंने और आपदा-रोधी भवन डिज़ाइन परियोजनाओं में सीबीआरआई की भूमिका को रेखांकित किया और संस्थान द्वारा विकसित तकनीकों को देश-विदेश में प्रचारित करने की आवश्यकता पर बल दिया ताकि उनका लाभ सुदूरवर्ती और आपदा-प्रभावित क्षेत्रों तक पहुँच सके।

कार्यक्रम का समापन संस्थान निदेशक द्वारा अतिथियों को स्मृति चिन्ह भेंट करने और प्रो. एस. के. सिंह द्वारा प्रस्तुत धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

Published in :- https://www.janmudde.com/archives/33794

उत्तराखंड

हर घर में CBRI, हर दिल में CSIR"।

By Sahara Live News
JUN 28, 2025

सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की में डीजी, सीएसआईआर और सचिव, डीएसआईआर, भारत सरकार एवं सचिव, पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय, भारत सरकार का आगमन
रुड़की, 28/06/2025:

सीएसआईआर – सेंट्रल बिल्डिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट (सीबीआरआई), रुड़की में आज सीएसआईआर की महानिदेशक एवं डीएसआईआर, भारत सरकार की सचिव डॉ. (श्रीमती) एन. कलाईसेल्वी तथा पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय, भारत सरकार के सचिव डॉ. एम. रविचंद्रन संस्थान के दौरे पर पहुंचे।

इस अवसर पर सीबीआरआई निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार के साथ वरिष्ठ वैज्ञानिक एस. के. नेगी, डॉ. अजय चौरसिया, डॉ. डी. पी. कानूनगो, डॉ. पी. सी. थपलियाल, एस. के. सिंह, डॉ. चंदन स्वरूप मीणा, आशीष पिप्पल, डॉ. हेमलता, डॉ. हीना गुप्ता, ashwathi और डॉ. लीना चौरसिया उपस्थित रहे। आगंतुक विशिष्ट अतिथियों ने संस्थान की अत्याधुनिक अनुसंधान प्रयोगशालाओं और सुविधाओं का भ्रमण किया, जिनमें विरासत दीर्घा (Virasat Dirgha), राष्ट्रीय भूकंप अभियांत्रिकी परीक्षण सुविधा (NEETF), डेब्रिस फ्लो सुविधा, जियोसिंथेटिक्स प्रयोगशाला, 3डी प्रिंटिंग लैब, अग्नि अभियांत्रिकी परीक्षण सुविधा एवं ऑयल वेल फायर मिटिगेशन सुविधा प्रमुख रहीं।

भ्रमण के पश्चात आयोजित कार्यक्रम की शुरुआत निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार के स्वागत भाषण से हुई, जिसमें उन्होंने संस्थान की उपलब्धियों और विकास यात्रा को साझा करते हुए प्रेरक नारा प्रस्तुत किया: "हर घर में CBRI, हर दिल में CSIR"।

डॉ. कलाईसेल्वी ने अपने संबोधन में सीबीआरआई की तकनीकी क्षमताओं, सामूहिक कार्यसंस्कृति और नवाचारों की सराहना करते हुए विशेष रूप से जलवायु-प्रतिरोधक भवनों, 12000 फीट की ऊँचाई on lake upper उपयोग योग्य solar water heater सौर तापीय प्रणाली, अग्नि सुरक्षा अभियांत्रिकी, 3डी प्रिंटिंग तकनीक, और HARI Project के अंतर्गत लेह-लद्दाख जैसे उच्च हिमालयी क्षेत्रों के लिए विकसित आवासीय समाधानों की सराहना की। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिकों का उद्देश्य होना चाहिए: "To touch the untouched, to reach the unreached"।

पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के सचिव डॉ. एम. रविचंद्रन ने संस्थान के ऊर्जा-सम्पन्न और नवाचार केंद्रित वातावरण की सराहना करते हुए कहा कि सीबीआरआई भारत@2047 के लक्ष्य को प्राप्त करने में एक महत्वपूर्ण भागीदार बन सकता है। उन्होंने Polar Mission Centers, Coastal Marine Spatial Planning, और आपदा-रोधी भवन डिज़ाइन परियोजनाओं में सीबीआरआई की भूमिका को रेखांकित किया और संस्थान द्वारा विकसित तकनीकों को देश-विदेश में प्रसारित करने की आवश्यकता पर बल दिया ताकि उनका लाभ सुदूरवर्ती और आपदा-प्रभावित क्षेत्रों तक पहुँच सके।

कार्यक्रम का समापन संस्थान निदेशक द्वारा अतिथियों को स्मृति चिह्न भेंट करने और प्रो. एस. के. सिंह द्वारा प्रस्तुत धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

Ishwar chand reporter sahara tv

Published in :- https://www.saharalivenews.com/archives/9416

On 28 June 2025, Dr. N. Kalaiselvi (DG, CSIR & Secretary, DSIR) and Dr. M. Ravichandran (Secretary, MoES) visited CSIR-CBRI, Roorkee. They reviewed CBRI's advanced facilities and praised its innovations in disaster-resilient housing, green technologies, and its role in achieving the CSIR@2047 vision, especially for remote and high-altitude areas.

CSIR-CBRI in the Limelight | 27.06.2025

सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की में 'कम लागत वाली निर्माण तकनीकों' पर कार्यशाला का समापन

सीएसआईआर-सेंट्रल बिल्डिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट (सीबीआरआई), रुड़की द्वारा आयोजित 'उत्तर-पश्चिमी हिमालयी क्षेत्र की कम लागत वाली निर्माण तकनीकों' पर केंद्रित पांच दिवसीय कार्यशाला का समापन शुक्रवार को ग्रामीण प्रौद्योगिकी पार्क, सीएसआईआर-सीबीआरआई परिसर में हुआ। यह कार्यशाला 23 जून से प्रारंभ हुई थी, जिसमें विभिन्न अभियंता, वास्तुविद, शोधकर्ता और तकनीकी पेशेवर शामिल हुए। इसमें ऐसे निर्माण तरीकों पर चर्चा की गई जो स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार, किफायती और पर्यावरण के अनुकूल हों। प्रस्तुतियों और प्रायोगिक सत्रों के माध्यम से पारंपरिक हिमालयी तकनीकों को आधुनिक निर्माण विधियों के साथ जोड़ने पर विशेष ध्यान दिया गया। समापन सत्र में कार्यशाला के प्रमुख बिंदुओं की संक्षिप्त समीक्षा की गई। वक्ताओं ने ऐसे निर्माण समाधान अपनाने की आवश्यकता पर ज़ोर दिया जो स्थानीय आवश्यकताओं के अनुकूल हों और प्राकृतिक आपदाओं का सामना कर सके, विशेषकर ग्रामीण और पर्वतीय क्षेत्रों में। इस अवसर पर सीबीआरआई के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. कानूंगो ने प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए कहा कि वैज्ञानिक शोध और पारंपरिक ज्ञान को मिलाकर निर्माण क्षेत्र की कई समस्याओं का हल निकाला जा सकता है। उन्होंने बताया कि संस्थान ग्रामीण क्षेत्रों में उपयोगी तकनीकों के विकास के लिए कार्य करता रहेगा। इसके पूर्व प्रमाण पत्र वितरित किए गए। प्रतिभागियों को डॉ.कानूंगो , डॉ.ताबिश आलम, आर्किटेक्ट अनुप कुमार प्रसाद, और डॉ.नवीन निशांत द्वारा सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का समापन डॉ.ताबिश आलम द्वारा प्रस्तुत धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ, जिसमें उन्होंने सभी वक्ताओं, आयोजकों और उपस्थितजनों का सहयोग के लिए आभार प्रकट किया। यह कार्यशाला निर्माण तकनीकों की समझ और अनुभव साझा करने का अवसर बनी, जिससे क्षेत्र विशेष की आवश्यकताओं के अनुरूप समाधान तैयार करने में सहयोग मिल सकता है।

Published in :- https://www.janmudde.com/archives/33769

CSIR-CBRI, Roorkee held a five-day workshop from 23–27 June 2025 on low-cost, eco-friendly construction for the Himalayan region, focusing on local challenges and sustainable solutions.

CSIR-CBRI in the Limelight | 23.06.2025

उत्तराखंड

उत्तर-पश्चिमी हिमालय क्षेत्र से प्राप्त कम लागत वाली निर्माण तकनीकों"

By **Sahara Live News**

JUN 23, 2025

सीएसआईआर-सेंट्रल बिल्डिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट, रुड़की द्वारा आयोजित "उत्तर-पश्चिमी हिमालय क्षेत्र से प्राप्त कम लागत वाली निर्माण तकनीकों" पर पांच दिवसीय कार्यशाला का उद्घाटन सत्र 23 जून 2025 को शुरू हुआ और यह 27 जून 2025 तक जारी रहेगा, जिसमें विशेषज्ञों, शोधकर्ताओं और पेशेवरों को क्षेत्रीय रूप से टिकाऊ और लागत प्रभावी निर्माण विधियों पर विचार-विमर्श करने के लिए एक साथ लाया जाएगा। उद्घाटन सत्र की शुरुआत कार्यशाला के उद्देश्यों के विस्तृत अवलोकन के साथ हुई। अनूप कुमार प्रसाद ने पुष्प के साथ निदेशकों महोदय का स्वागत किया। संस्थान के मुख्य वैज्ञानिक सुरेंद्र कुमार नेगी भी कार्यक्रम में उपस्थित थे। इस कार्यक्रम में सीएसआईआर-सीबीआरआई के निदेशक प्रोफेसर आर प्रदीप कुमार, रुड़की ने कम लागत वाले समाधानों के माध्यम से हिमालय क्षेत्र में निर्माण चुनौतियों से निपटने के उद्देश्य से विशेषज्ञों की भागीदारी पर प्रकाश डालते हुए उद्घाटन भाषण दिया।

Published in:- https://www.saharalivenews.com/archives/9387

CSIR-CBRI, Roorkee organized a five-day workshop from 23–27 June 2025 on low-cost construction in the Himalayan region, focusing on local challenges and sustainable solutions.

CSIR-CBRI in the Limelight | 06.06.2025

उत्तराखंड

प्रधानमंत्री आवास योजना- ग्रामीण, उदय भारत की तस्वीर

By Sahara Live News

JUN 6, 2025

सीबीआरआई रुड़की अपने कार्यों के लिए भारत के साथ-साथ विदेश में भी अपनी पहचान बनाए हुए हैं भारत सरकार की लोक कल्याणकारी नीतियों को धरातल पर उतरने के लिए रोजाना नए आयाम स्थापित और प्रयास करती रहती है प्रधानमंत्री आवास योजना ग्रामीण उदय भारत की एक साथ तस्वीर है सी बी आर आई विभिन्न क्षेत्रों में शोध करके कार्यों को जमीन से जुड़े हुए कार्यों को आम आदमी तक पहुंचाने के कार्य करती हे यहां के वैज्ञानिक और रोजाना नए शोध कर करके भारत को एक नई पहचान देते हैं

सीएसआईआर-सीबीआरआई ने पीएमएवाई-जी, एमओआरडी के तहत क्षेत्रीय ग्रामीण कार्यशाला में भाग लिया।

हमें यह बताते हुए बेहद खुशी हो रही है कि सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) ने ग्रामीण विकास मंत्रालय (एमओआरडी) द्वारा प्रधानमंत्री आवास योजना-ग्रामीण (पीएमएवाई-जी) के तहत आयोजित क्षेत्रीय ग्रामीण कार्यशाला में भाग लिया।

इस कार्यक्रम में गोवा के माननीय मुख्यमंत्री श्री प्रमोद सावंत ने मुख्य अतिथि के रूप में और मानव संसाधन विकास राज्य मंत्री श्री पेम्मासानी चंद्रशेखर ने सम्मानित अतिथि के रूप में भाग लिया।

कार्यशाला में प्रमुख चुनौतियों का समाधान करने, नवीन समाधानों की खोज करने और पीएमएवाई-जी योजना के लिए आगे का रास्ता तय करने पर ध्यान केंद्रित किया गया।
कार्यशाला के दौरान ग्रामीण आवास महानिदेशक और रक्षा मंत्रालय के अन्य वरिष्ठ अधिकारियों ने पीएमएवाई-जी मिशन की सफलता में सीएसआईआर-सीबीआरआई के अपार योगदान को स्वीकार किया और उसकी सराहना की। 2016 में कार्यक्रम की स्थापना के बाद से, सीएसआईआर-सीबीआरआई ने निम्नलिखित में महत्वपूर्ण योगदान दिया हैः

Published in:- https://www.saharalivenews.com/archives/9345

CSIR-CBRI, Roorkee participated in World Environment Day by contributing to rural development under Unnat Bharat Abhiyan, showcasing its efforts toward sustainable village growth.

CSIR-CBRI in the Limelight | 05.06.2025

पर्यावरण संरक्षण हम सब की जिम्मेदारी, नरेंद्र पन्त डीएसपी

रुड़की सी बी आर आई परिसर में विश्व पर्यावरण दिवस पर वृक्षारोपण का आयोजन किया गया कार्यक्रम में पहुंचे श्री नरेंद्र पंत , डीएसपी रुड़की और विश्व पर्यावरण दिवस के मुख्य अतिथि, डॉ डी पी कानूनगो जी, आज के कार्यवाहक निदेशक सीबीआरआई, डॉ आर के वर्मा, समिति के अध्यक्ष, सभी वरिष्ठ वक्ताओं और छात्रों ने पर्यावरण को संरक्षित करने के लिए व्याख्यान दिए

कार्यक्रम का उद्देश्य पर्यावरण के प्रति जागरूकता फैलाना और हरित भारत के संकल्प को साकार करना था। इस अवसर पर फलदार, छायादार और औषधीय पौधों का रोपण किया गया, जिनमें पीपल, नीम, आम, बेल, अशोक और तुलसी प्रमुख रहे।

पर्यावरण संतुलन बनाए रखने के लिए वृक्षारोपण अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने कहा कि आधुनिक जीवनशैली में बढ़ते प्रदूषण के बीच हमें प्रकृति के संरक्षण की ओर गंभीरता से ध्यान देना होगा। उन्होंने युवाओं से विशेष रूप से अपील की कि वे अधिक से अधिक पेड़ लगाएं और उनकी देखभाल भी करें, ताकि आने वाली पीढ़ियों को स्वच्छ और सुरक्षित पर्यावरण मिल सके।

उन्होंने कहा कि विश्व पर्यावरण दिवस हमें इस बात की याद दिलाता है कि प्रकृति हमारी ज़िम्मेदारी है। वृक्षारोपण केवल एक कार्यक्रम नहीं, बल्कि यह आने वाली पीढ़ियों के लिए जीवन देने वाला प्रयास है।

कार्यक्रम का समापन देश के पर्यावरण की रक्षा हेतु सामूहिक प्रयासों की आवश्यकता पर बल देते हुए किया गया

Published in :- https://www.saharalivenews.com/archives/9334

A tree plantation drive was organized at CSIR-CBRI, Roorkee on World Environment Day to promote environmental awareness. Director Dr. Naresh Batra emphasized the importance of connecting with and protecting nature.

CSIR-CBRI in the Limelight | 15.05.2025

स्वच्छता सबका दायित्व"प्रो. आर. प्रदीप कुमार , निदेशक सी बी आर आई

By Sahara Live News

MAY 15, 2025

'स्वच्छता सबका दायित्व' थीम के तहत भारत सरकार की पहल स्वच्छता पखवाड़ा 2025 मना रहे उत्सव के हिस्से के रूप में, सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-सीबीआरआई), रुड़की ने अपने दो सप्ताह के स्वच्छता अभियान (1-15 मई, 2025) का समापन 15 मई, 2025 को आरएनटी ऑडिटोरियम में आयोजित एक समापन समारोह के साथ किया। कार्यक्रम का समन्वयन डॉ. हीना चोरसिया और डॉ. नीरज जैन ने किया। डॉ. हीना चोरसिया ने सम्मानित सभा का स्वागत किया और पखवाड़े के दौरान आयोजित गतिविधियों का विस्तृत अवलोकन प्रस्तुत किया, जिसमें वृक्षारोपण अभियान, सीएसआईआर-सीबीआरआई सदस्यों के लिए एक नारा प्रतियोगिता, सीएसआईआर-सीबीआरआई कर्मचारियों और बाल विद्या मंदिर स्कूल के छात्रों के बच्चों के लिए चित्रकला प्रतियोगिता, बिजली के उपकरणों की सफाई और पूरे संस्थान में व्यापक सफाई अभियान आदि शामिल थे। सीएसआईआर-सीबीआरआई के निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने उपस्थित लोगों को संबोधित किया और सभी समन्वयकों, प्रतिभागियों और सहयोगी कर्मचारियों के सामूहिक प्रयासों की सराहना की। उन्होंने सतत विकास के महत्व पर जोर दिया, युवाओं को अपशिष्ट प्रबंधन के लिए अभिनव समाधान खोजने के लिए प्रोत्साहित किया और बाहरी सफाई के साथ-साथ मानसिक शांति बनाए रखने की आवश्यकता पर प्रकाश डाला, उन्होंने कहा, "स्वच्छता पूजा के बाद दूसरे स्थान पर है।"

डॉ. नीरज जैन ने चित्रकला प्रतियोगिता में उल्लेखनीय उत्साह और प्रतिभा के साथ प्रतियोगिताओं के विजेताओं और उपविजेताओं के नामों की घोषणा की। प्रशंसा और प्रेरणा के रूप में, प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने स्लोगन और चित्रकला प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए, बच्चों और प्रतिभागियों के प्रयासों और रचनात्मकता की सराहना की।

एक विशेष सम्मान के रूप में, ए.आर. एस.के. नेगी, वरिष्ठ मुख्य वैज्ञानिक ने संस्थान के सफाई कर्मचारियों को स्वच्छता बनाए रखने के उनके निरंतर प्रयासों के लिए प्रशंसा का प्रतीक देकर सम्मानित किया।

समारोह का समापन डॉ. एस. मैती द्वारा दिए गए हार्दिक धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ, जिसमें उन्होंने निदेशक महोदय, बाल विद्या मंदिर के शिक्षकों और छात्रों, आयोजन टीम और सीएसआईआर-सीबीआरआई में स्वच्छता पखवाड़ा 2025 के सफल आयोजन में योगदान देने वाले सभी लोगों के प्रति आभार व्यक्त किया।

Published in Sahara news :- https://www.janmudde.com/archives/33392

The valedictory ceremony of Swachhta Pakhwada 2025 was organized at CSIR-CBRI, Roorkee on 15th May 2025. Director Prof. R. Pradeep Kumar distributed prizes to children and appreciated their active participation in promoting cleanliness.
The event also saw enthusiastic involvement from scientists, staff, and officials of the institute.

CSIR-CBRI in the Limelight | 13.05.2025

सीएसआईआर-सीबीआरआई ने "खंडहर से पुनर्निर्माण: 2015 नेपाल भूकंप से सीखे गए सबक" पैनल पर की चर्चा

Jan Mudde · 3 days ago · 1 min read

आरिफ़ नियाज़ी।

रुड़की सीएसआईआर-सीबीआरआई ने "खंडहर से पुनर्निर्माण: 2015 नेपाल भूकंप से सीखे गए सबक" पैनल पर चर्चा की गई जिसमें पूरे देश और विदेश के वैज्ञानिक और प्रोफेसर बड़ी संख्या में पहुंचे हैं।

Published in Jan Mudde E-newspaper

आधुनिक उपकरणों का प्रयोग जरूरी

चर्चा

रुड़की, कार्यालय संवाददाता। 2015 में नेपाल में आए विनाशकारी भूकंप के दस साल पूरे होने के उपलक्ष्य में सीबीआरआई में एक पैनल चर्चा का आयोजन किया गया। खंडहर से लचीलापन सार्वजनिक बुनियादी ढांचे के पुनर्निर्माण के लिए 2015 नेपाल भूकंप से सबक शीर्षक पर वैज्ञानिकों ने अपनी-अपनी राय दी। वैज्ञानिकों का मानना है कि भूकंप और भूस्खलन के जनहानि से बचने के लिए आधुनिक उपकरणों का प्रयोग करना होगा। हेल्थ और एजूकेशन सेंटर को और मजबूत करना होगा।

कार्यक्रम की शुरुआत सीबीआरआई के निदेशक प्रो. प्रदीप कुमार ने की। इसके बाद पैनल चर्चा हुई। चर्चा का मुख्य निष्कर्ष यह

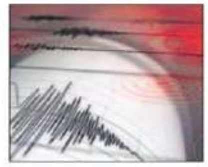

निकला कि स्थानीय इंजीनियरों, राजमिस्त्रियों और अधिकारियों के बीच क्षमता निर्माण को मजबूत करने की तत्काल आवश्यकता है। भूकंप सुरक्षा पर अधिक ध्यान केंद्रित करने के लिए इंजीनियरिंग पाठ्यक्रम को संसोधित करना है। विशेषज्ञों ने कमजोर इमारतों, विशेष रूप से स्कूलों, अस्पतालों और विरासत संरचनाओं को फिर से तैयार करने के महत्व पर प्रकाश डाला। पैनल ने भूकंप, भूस्खलन और बाढ़ के जोखिमों को नियोजन में सम्मिलित करते हुए बहु-खतरे जोखिम क्षेत्रीकरण की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने भारतीय मानकों (आईएस कोड) को नियमित रूप से अपडेट करने और गैर-संरचनात्मक तत्वों जैसे कि इनफिल दीवारों और फिक्स्चर पर अधिक ध्यान देने का भी आह्वान किया। जीआईएस, ड्रोन और त्वरित आँकलन जैसे आधुनिक उपकरणों के उपयोग को भविष्य की तैयारियों के लिए आवश्यक माना गया।

कार्यक्रम का समापन सीबीआरआई के वैज्ञानिक एसके नेगी के धन्यवाद ज्ञापन के साथ किया। इस दौरान आशीष पिप्पल, मिकी दलबेहरा, डॉ. चन्दन स्वरूप मीना, आशीष कपूर, समीर यादव, अमित कुश, प्रो. सीवी आर मूर्ति, प्रो. डी श्रीनागेश, प्रो. योगेंद्र सिंह, अनूप कारंत, डॉ. अरुण कुमार, जितेंद्र सिंह, डॉ. हरि कुमार, प्रो. रूपेन गोस्वामी आदि शामिल रहे।

Published in Hindustan Times

खंडहर से पुनर्निर्माण: 2015 के नेपाल भूकंप से सीखे गए सबक

सीएसआईआर-सीबीआरआई में हुई परीचर्चा

गोल्डन टाइम्स

रुड़की (आरिफ नियाजी) रुड़की सीएसआईआर –सीबीआरआई ने खंडहर से पुनर्निर्माण: 2015 नेपाल भूकंप से सीखे गए सबक पैनल पर चर्चा की गई जिसमें पूरे देश और विदेश के वैज्ञानिक और प्रोफेसर बड़ी संख्या में पहुंचे हैं। दरअसल 2015 में नेपाल में आए विनाशकारी भूकंप के दस साल पूरे होने के उपलक्ष्य में, सीएसआईआर–केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई), रुड़की ने 13 मई, 2025 को "खंडहर से लचीलापनरू सार्वजनिक बुनियादी ढांचे के पुनर्निर्माण के लिए 2015 नेपाल भूकंप से सबक" शीर्षक पर एक पैनल चर्चा का आयोजन किया। कार्यक्रम की शुरुआत सीएसआईआर

सीबीआरआई के निदेशक प्रोफेसर प्रदीप कुमार के अध्यक्षीय सम्बोधन से हुई, जिसके बाद डॉ. अजय चौरसिया ने भारत सरकार के विदेश मंत्रालय के तहत नेपाल में स्कूलों और अस्पतालों के पुनर्निर्माण में सीबीआरआई के योगदान पर प्रस्तुति दी। इन प्रयासों को प्रदर्शित करने वाली एक विशेष वृत्तचित्र फिल्म, "खंडहर से लचीलापन" भी जारी की गई। इस कार्यक्रम में भारत और नेपाल के प्रमुख विशेषज्ञ, इंजीनियर, आर्किटेक्ट और नीति निर्माता पुनर्निर्माण प्रयासों पर विचार करने और सुरक्षित बुनियादी ढांचे के निर्माण के लिए महत्वपूर्ण सबक साझा करने के लिए एक साथ आए। पैनल में प्रो. सी.वी. आर. मूर्ति, प्रो. डी. श्रीनागेश, प्रो. योगेंद्र सिंह, श्री अनूप कारंत, डॉ. अरुण कुमार, श्री जितेंद्र सिंह, डॉ. हरि कुमार, प्रो. रूपेन गोस्वामी, डॉ. अजय चौरसिया, श्री एसके नेगी और डॉ. डीपी कानूनगो जैसे प्रसिद्ध विशेषज्ञ शामिल थे।

शेष पृष्ठ 2 पर......

Published in Golden Times E-newspaper

❖ E-News Clips:-

उत्तराखंड

समाज पर तकनीकी का बड़ा प्रभाव, निदेशक प्रोफेसर आर. प्रदीप कुमार सीबीआरआई

By Sahara Live News

MAY 13, 2025

सीएसआईआर-सीबीआरआई ने राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस 2025 का तकनीकी हस्तांतरण एवं नवाचार प्रदर्शनी के साथ किया उत्सव

रुड़की, 13 मई 2025

Published in E-Sahara News:- https://www.saharalivenews.com/archives/9252

❖ Television News :-

Telecasted in News Uttar Pradesh Channel

Telecasted in Nai Aawaz Channel

Media Clips of a Technical Panel-discussion on "Lessons Learned from the 2015 Nepal Earthquake" held at CSIR-CBRI, Roorkee. Experts highlighted how post-earthquake reconstruction in Nepal guided the development of disaster-resilient building technologies. The event was chaired by Director Prof. R. Pradeep Kumar and included valuable insights from national and international scientists.

CSIR-CBRI in the Limelight | 30.04.2025

ई-ट्रैक्टर कृषि प्रौद्योगिकी क्रांतिकारी कदम:पंत

कृषि प्रौद्योगिकी

- सीबीआरआई में ई-ट्रैक्टर और ई-टिलर का किया गया अनावरण
- किसानों ने ई-ट्रैक्टर चलाकर देखा इसकी मजबूती

रुड़की, कार्यालय संवाददाता। आईआईटी रुड़की के निदेशक प्रो. केके पंत ने कहा है कि इलेक्ट्रिक ट्रैक्टर कृषि प्रौद्योगिकी में एक क्रांतिकारी कदम है। जो पारंपरिक डीजल-चालित मशीनों के लिए एक हरित विकल्प प्रदान करता है। यह बात उन्होंने बुधवार को सीबीआरआई में आयोजित ई-ट्रैक्टर और ई टिलर अनावरण कार्यक्रम में कही।

उन्होंने कहा कि भारत का कृषि क्षेत्र, जो देश की अर्थव्यवस्था की धड़कन है, एक उल्लेखनीय परिवर्तन के कगार पर है। इलेक्ट्रिक ट्रैक्टरों को पेश करना और उनका सफलतापूर्वक क्रियान्वयन स्थिरता, परिचालन लागत और उत्पादकता जैसी चुनौतियों से निपटने का वादा करता है।

सीबीआरआई के डायरेक्टर प्रो. आर प्रदीप कुमार ने कहा कि हिमालयी क्षेत्र में सतत कृषि के लिए एक ऐतिहासिक कार्यक्रम के तहत काउंसिल ऑफ साइंटिफिक एंड इंडस्ट्रियल रिसर्च-सेंट्रल मैकेनिकल इंजीनियरिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट (सीएसआईआर-सीएमईआरआई) दुर्गापुर ने सीबीआरआई रुड़की के सहयोग से अपने अत्याधुनिक ई-ट्रैक्टर और ई-टिलर तकनीकों का प्रदर्शन किया है। जहां किसानों ने ई-ट्रैक्टर चलाते हुए इसकी मजबूती एवं फायदे के बारे में जानकारी ली।

सीबीआरआई के डायरेक्टर ने कहा कि यह पहल भारत के स्वच्छ ऊर्जा अभियान में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। जो नवाचार और स्थिरता के माध्यम से कृषि को बदलने पर केंद्रित है।

आयोजित कार्यक्रम के दौरान किसानों द्वारा पूछे गए सवालों का सीबीआरआई के वैज्ञानिकों ने जवाब दिया। उन्हें आधुनिक कृषि पद्धति के बारे में भी जानकारी दी। सीएसआईआर-सीएमईआरआई के निदेशक डॉ. नरेश चंद्र मुर्मू ने कहा कि हमारी इलेक्ट्रिक कृषि मशीनरी केवल दक्षता के लिए नहीं, बल्कि समावेशिता और स्थिरता के लिए डिजाइन की गई है। हम हर क्षेत्र के किसानों, विशेष रूप से कठिन परिस्थितियों का सामना करने वालों का समर्थन करने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

बुधवार को आयोजित इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में आईआईटी के निदेशक प्रो. कमल किशोर पंत, विशिष्ट अतिथि के सहायक महानिदेशक (प्रोसेस इंजीनियरिंग) आईसीएआर नई दिल्ली डॉ. नरसैयाह कैरम, डॉ. नरेश चंद्र मुर्मू, डॉ. प्रदीप राजन, वैज्ञानिक चंदन कुमार मीणा आदि मौजूद रहे।

रुड़की में सीबीआरआई में बुधवार को आयोजित कार्यक्रम में ई ट्रैक्टर की ट्रायल करते अतिथि और संस्थान पदाधिकारी। हिन्दुस्तान

रुड़की में सीबीआरआई में बुधवार को आयोजित कार्यक्रम में ई ट्रैक्टर की ट्रायल करते अतिथि और संस्थान पदाधिकारी। • हिन्दुस्तान

ई-ट्रैक्टर कृषि प्रौद्योगिकी क्रांतिकारी कदम:पंत

कृषि प्रौद्योगिकी

सीबीआरआई में ई-ट्रैक्टर और ई-टिलर का किया गया अनावरण
किसानों ने ई-ट्रैक्टर चलाकर देखा इसकी मजबूती

रुड़की, कार्यालय संवाददाता। आईआईटी रुड़की के निदेशक प्रो. केके पंत ने कहा है कि इलेक्ट्रिक ट्रैक्टर कृषि प्रौद्योगिकी में एक क्रांतिकारी कदम है। जो पारंपरिक डीजल-चालित मशीनों के लिए एक हरित विकल्प प्रदान करता है। यह बात उन्होंने बुधवार को सीबीआरआई में आयोजित ई-ट्रैक्टर और ई टिलर अनावरण कार्यक्रम में कही।

उन्होंने कहा कि भारत का कृषि क्षेत्र, जो देश की अर्थव्यवस्था की धड़कन है, एक उल्लेखनीय परिवर्तन के कगार पर है। इलेक्ट्रिक ट्रैक्टरों को पेश करना और उनका सफलतापूर्वक क्रियान्वयन स्थिरता, परिचालन लागत और उत्पादकता जैसी चुनौतियों से निपटने का वादा करता है।

सीबीआरआई के डायरेक्टर प्रो. आर प्रदीप कुमार ने कहा कि हिमालयी क्षेत्र में सतत कृषि के लिए एक ऐतिहासिक कार्यक्रम के तहत काउंसिल ऑफ साइंटिफिक एंड इंडस्ट्रियल रिसर्च-सेंट्रल मैकेनिकल इंजीनियरिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट (सीएसआईआर-सीएमईआरआई) दुर्गापुर ने सीबीआरआई रुड़की के सहयोग से अपने अत्याधुनिक ई-ट्रैक्टर और ई-टिलर तकनीकों का प्रदर्शन किया है। जहां किसानों ने ई-ट्रैक्टर चलाते हुए इसकी मजबूती एवं फायदे के बारे में जानकारी ली।

सीबीआरआई के डायरेक्टर ने कहा कि यह पहल भारत के स्वच्छ ऊर्जा अभियान में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। जो नवाचार और स्थिरता के माध्यम से कृषि को बदलने पर केंद्रित है।

आयोजित कार्यक्रम के दौरान किसानों द्वारा पूछे गए सवालों का सीबीआरआई के वैज्ञानिकों ने जवाब दिया। उन्हें आधुनिक कृषि पद्धति के बारे में भी जानकारी दी। सीएसआईआर-सीएमईआरआई के निदेशक डॉ. नरेश चंद्र मुर्मू ने कहा कि हमारी इलेक्ट्रिक कृषि मशीनरी केवल दक्षता के लिए नहीं, बल्कि समावेशिता और स्थिरता के लिए डिजाइन की गई है। हम हर क्षेत्र के किसानों, विशेष रूप से कठिन परिस्थितियों का सामना करने वालों का समर्थन करने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

बुधवार को आयोजित इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में आईआईटी के निदेशक प्रो. कमल किशोर पंत, विशिष्ट अतिथि के सहायक महानिदेशक (प्रोसेस इंजीनियरिंग) आईसीएआर नई दिल्ली डॉ. नरसैयाह कैरम, डॉ. नरेश चंद्र मुर्मू, डॉ. प्रदीप राजन, वैज्ञानिक चंदन कुमार मीणा आदि मौजूद रहे।

Presented in Hindustan Times

- **<u>Television clips :-</u>**

<u>Television telecast on News 18 Uttar Pradesh</u>

आधुनिकीकरण व विरासत संरक्षण के बीच संतुलन जरूरी

Figure 1

सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई), रुड़की में सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण और पुनरुद्धार पर चल रही चार दिवसीय कार्यशाला और प्रदर्शनी "भगवान एक खोज"

उत्खनन अब केवल खुदाई नहीं है-यह विज्ञान के माध्यम से सभ्यता को डिकोड कर रहा है, सिनौली उत्खनन पर प्रो. (डॉ.) संजय मंजुल

Published in Dainik Jagran Newspaper